दुनिया के मज़दूरो, एक हो!

समकालीनों की नज़रों
मार्क्स और एंगेल्स

संस्मरण

फ्रेडरिक एगेल्स
व्ला० इ० लेनिन
पाल लफार्ग
विल्हेल्म लीब्कनेख्त
फ्रेडरिक लेसनर
फ्रेडरिक अदोल्फ ज़ोर्गे
ग० अ० लोपातिन
जेनी मार्क्स
एल्योनोरा मार्क्स-एवेलिंग
एडगर लांगे
फ्रांसिस्का कुगेलमान
नि० मोरोज़ोव
एडुअर्ड एवेलिंग
फ० म० कव्चीन्स्काया



प्रगति प्रकाशन • मास्को

अनुवादक सुरेन्द्र बालूपुरी
सम्पादक मदन लाल 'मधु'

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर आभारी होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। कृपया हमें इस पते पर लिखिये

प्रगति प्रकाशन,
२१ जूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

श्री जे वगारहट्टा श्री रामचन्द्र शर्मा
श्री ह... शर्मा एवम्
श्री ...
द्वारा ... में भेंट
... अगरहट्टा

अनुक्रम

फ्रेडरिक एंगेल्स

कार्ल मार्क्स की कब्र पर भाषण

१४ मार्च को तीसरे पहर पौने तीन बजे संसार के सबसे महान विचारक की चिन्तन क्रिया बन्द हो गयी। उन्हें मुश्किल से दो मिनट के लिए अकेला छोड़ा गया होगा लेकिन जब हम लोग लौट कर आये तो देखा कि वे आरामकुर्सी पर शान्ति से सो गये हैं—परन्तु सदा के लिए।

इस मनुष्य की मृत्यु से यूरोप और अमरीका के जुझारू सर्वहारा वर्ग और ऐतिहासिक विज्ञान की अपार क्षति हुई है। इस ओजस्वी आत्मा के महाप्रयाण से जो अभाव पैदा हो गया है लोग शीघ्र ही उसे अनुभव करेंगे।

जैव जगत में जैसे डार्विन ने विकास के नियम का पता लगाया था वैसे ही मार्क्स ने मानव इतिहास में विकास के नियम का पता लगाया। उन्होंने इस सीधी-सादी सचाई का पता लगाया—जो अब तक विचारधारात्मक आवरण से ढकी हुई थी—कि राजनीति, विज्ञान, कला, धर्म आदि की ओर ध्यान दे सकने के पूर्व मनुष्य को खाना-पीना, पहनना-ओढ़ना और सिर के ऊपर साया चाहिए। इसलिए जीविका के तात्कालिक भौतिक साधनों का उत्पादन और फलतः किसी युग में अथवा किसी जाति द्वारा उपलब्ध आर्थिक विकास की अवस्था ही वह आधार है जिस पर राजकीय संस्थाएं, कानूनी धारणाएं, कला और यहां तक कि धार्मिक धारणाएं का भी विकास होता है। इसलिए उसके ही प्रकाश में इन सब की व्याख्या की जानी चाहिए, न कि इसके उलटे, जैसा कि अब तक होता रहा है।

परन्तु इतना ही नहीं। मार्क्स ने गति के उस विशेष नियम का भी

त्था उसका निजी उत्पादन का वर्तमान पूंजीवादी प्रणाली और इस प्रणाली से उत्पन्न पूंजीवादी समाज दोनों ही नियंत्रित हैं। अतिरिक्त मूल्य के आविष्कार ने अर्थशास्त्र की उस समस्या पर प्रकाश डाला जिसे हल करने का हाल में पूंजीवादी अर्थशास्त्रियों और समाजवादी आलोचकों दोनों द्वारा किया गया प्रत्येक पूर्व का सारा अन्वेषण अंध अन्वेषण ही था।

ऐसे दो आविष्कार एक जीवन के लिए काफी हैं। वह मनुष्य भी भाग्यशाली है जिसे इस तरह का एक भी आविष्कार करने का सौभाग्य प्राप्त होता। परन्तु जिस भी क्षेत्र में मार्क्स ने खोज की — और उन्होंने बहुत से क्षेत्रों में, यहां तक कि गणित के क्षेत्र में भी, खोज की — एक में भी उनका ज्ञानकोश तक सीमित न रहकर स्वतंत्र खोज की।

ऐसे वैज्ञानिक थे वे। परन्तु वैज्ञानिक का उनका रूप उनके समग्र व्यक्तित्व का आधा भी न था। मार्क्स के लिए विज्ञान ऐतिहासिक रूप से गति प्रदान करने वाली एक क्रांतिकारी शक्ति था। वैज्ञानिक सिद्धान्तों में किसी भी नई खोज से, जिसके व्यावहारिक प्रयोग का अभी अनुमान लगाना सर्वथा असम्भव था, उन्हें कितनी भी प्रसन्नता क्यों न होती उसकी तुलना में उस प्रकार से उन्हें किसी दूसरे ढंग की खोज का अनुभव होता जिससे उद्योग में और सामान्यतः ऐतिहासिक विकास में कोई तात्कालिक क्रांतिकारी परिवर्तन पैदा होता हो। उदाहरण के लिए बिजली के क्षेत्र में हुए आविष्कारों के विकास का और मार्सेल देप्रे के हाल के आविष्कारों का वे बड़े गौर से अध्ययन करते थे।



वाल मावम १८७२





जेनी फान वेस्टफालेन—मार्क्स की पत्नी



कार्ल मार्क्स

कार्ल मार्क्स का जन्म ५ मई १८१८ को त्रियर नगर (प्रशा के राइन प्रान्त) में हुआ था। उनके पिता एक वकील, यहूदी थे, जिन्होंने १८२४ में प्रोटेस्टेन्ट मत स्वीकार किया था। यह परिवार समृद्ध और सुसंस्कृत, परन्तु क्रान्तिकारी नहीं था। त्रियर के हाई स्कूल में शिक्षा पाने के बाद मार्क्स पहले बॉन, फिर बर्लिन विश्वविद्यालय में दाखिल हुए। वहां उन्होंने कानून पढ़ा, पर मुख्यतः इतिहास और दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। १८४१ में एपीक्यूरस के दर्शनशास्त्र पर अपनी थीसिस प्रस्तुत करके उन्होंने विश्वविद्यालय की शिक्षा पूर्ण की। इस समय तक मार्क्स हेगेलवादी-आदर्शवादी थे। बर्लिन में वह ब्रूनो बावर आदि "वामपंथी हेगेलवादियों" के मंडल में शामिल हो गये, जो हेगेल के दर्शन से अनीश्वरवादी और क्रान्तिकारी निष्कर्ष निकालना चाहते थे।

विश्वविद्यालय से निकलने के बाद मार्क्स प्रोफेसर बनने की आशा से बॉन आ गये। परन्तु सरकार की प्रतिक्रियावादी नीति ने, जिसके फलस्वरूप १८३२ में लुडविग फायरबाख को प्रोफेसरी से वंचित किया गया

था, १८३६ मे उनके विश्वविद्यालय मे वापस आने पर रोक लगायी गयी थी, और १८४१ मे नवयुवक प्रोफेसर ब्रूनो बावेर को बोन मे अध्यापन-काय करन से रोका गया था, मार्क्स को शक्षिक वत्ति का विचार तजने के लिये बाध्य किया। उस समय जमनी म वामपथी हेगेलवादि के विचार जोर पकड रहे थे। लुडविग फायरबाख विशेष रूप से १८३६ के बाद धमदशन की आलोचना करने लगे थे और भौतिकवाद की ओर रुख कर रहे थे। १८४१ तक उनके दाशनिक विचारो मे भौतिकवाद की प्रधानता हो गयी थी ('ईसाई धम का सार')। १८४३ म उनकी पुस्तक 'भावी दशन के मूल सिद्धात प्रकाशित हुई। फायरबाख की इन कृतियो के बारे मे एगेल्स ने बाद मे लिखा था – इन पुस्तको ने जिस "स्वाधीन चेतना को जम दिया था, वह तो अनुभव करन की वस्तु थी"। "हम" (अर्थात मार्क्स समेत वामपथी हेगेलवादी) तुरन्त फायरबाख के अनुयायी हो गये"। उस समय राइन प्रान्त के कुछ उग्रवादी पूजीपतियो न, जिनका वामपथी हेगेलवादियो से सम्पक था, कोलोन म एक विरोधी पत्र *«Rheinische Zeitung»* (राइनी समाचारपत्र) निकाला (पहला अक १ जनवरी १८४२ को निकला था)। मार्क्स और ब्रूनो बावेर से इसके प्रमुख मजमून निगार बनने का अनुरोध किया गया। अक्तूबर १८४२ म मार्क्स उसके प्रधान सम्पादक हो गये और बोन से कोलोन चले आये। मार्क्स के सम्पादन काल मे पत्र का रुझान अधिकाधिक क्रान्तिकारी-जनवादी होता गया, इसलिय सरकार ने पहले तो पत्र पर दोहरी और तेहरी सेंसरी बिठायी, फिर १ जनवरी १८४३ स उसे एकदम बद ही कर दने का निश्चय कर लिया। मार्क्स को उस तिथि तक अपना त्यागपत्र देना पडा। परन्तु उनके अलग होने से भी पत्र बच नही सका। माच १८४३ म वह ठप हो गया। *«Rheinische Zeitung»* मे प्रकाशित मार्क्स के अधिक महत्त्वपूण लेखो म से एगेल्स न – उन लेखो के अतिरिक्त जिनका उल्लेख नीचे किया गया है (देखिये सदभ ग्रथ सूची*) – एक और लेख की चर्चा की है जो मार्क्स

---

*इस लेख के अत म जिसे व्ला० इ० लेनिन न ग्रानात विश्वकोप के लिए १९१४ मे लिखा था, मार्क्सवाद की तथा मार्क्सवाद सम्बधी साहित्य की समीक्षा दी गयी थी जिसे प्रस्तुत पुस्तक म नही दिया गया है। – स०

ने मार्क्स को ... मजदूर किसानों की स्थिति के बारे में लिखा था। मार्क्स ने पत्रकारिता के अपने अनुभव से जान लिया था कि अभी वे मजदूर आंदोलन से अच्छी भांति परिचित नहीं हैं, इसलिये वे उसका अध्ययन करने में जुट गये।

सन १८४३ में मार्क्स ने क्रूज़नाख में जेनी फ़ान वेस्टफ़ालेन से विवाह किया। जेनी उनकी बचपन की मित्र थी और मार्क्स जब विद्यार्थी थे, तभी दोनों के बीच स्नेह गाढ़ हो गया था। जेनी का जन्म प्रशा के एक प्रतिक्रियावादी अभिजात परिवार में हुआ था। १८५०–१८५८ के अत्यन्त प्रतिक्रियावादी काल में जेनी का बड़ा भाई प्रशा का गृहमंत्री रहा था। १८४३ की शरद में मार्क्स एक उग्रवादी पत्रिका निकालने के उद्देश्य से पेरिस गये। उनके साथ आर्नोल्ड रूगे भी थे (जीवन-काल १८०२–१८८०, वामपंथी हेगेलवादी। १८२५ से १८३० तक जेल में, १८४८ के बाद राजनीतिक प्रवासी। १८६६–१८७० के बाद बिस्मार्क के अनुयायी)। इस पत्रिका का नाम *Deutsch-Französische Jahrbücher* (जर्मन-फ्रांसीसी वार्षिकी) था। इसका केवल एक अंक प्रकाशित हुआ। जर्मनी में इसके वितरण की कठिनाइयों और रूगे से मतभेद होने के कारण उसका प्रकाशन बंद हो गया। इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से ... मार्क्स क्रान्तिकारी के रूप में सामने आते हैं। वे "समस्त वर्तमान व्यवस्था की निर्मम आलोचना", ... "हथियारों की आलोचना", की घोषणा और जनता और मजदूर वर्ग से अपील करते हैं।

दिया गया। परिस मे व ब्रमेत्स आ गय। १८४७ के वमन्त मे मार्क्स और एगेल्स एक गुप्त प्रचार सभा 'कम्युनिस्ट लीग' के सदस्य हा गय। उनकी दूसरी काग्रेस (लदन, नवम्बर १८४७) मे उन्होंने प्रमुख भाग लिया, और उसके निर्देश पर उन्होने अपना प्रसिद्ध 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' तैयार किया, जो फरवरी १८४८ मे प्रकाशित हुआ। इस रचना म प्रतिभापूण स्पष्टता और भव्यता के साथ एक नया विश्वदष्टिकोण – सुसगत भौतिकवाद जिसका प्रसार सामाजिक जीवन तक हुआ है, विकास के सर्वांगीण और गहनतम सिद्धात के रूप मे द्वद्ववाद, वग सघष का सिद्धात और एक नये कम्युनिस्ट समाज के सजनकर्त्ता, सर्वहारा वग की विश्व ऐतिहासिक क्रातिकारी भूमिका – प्रस्तुत किया गया है।

फरवरी १८४८ की क्राति भडक उठने पर मार्क्स बेलजियम स निवासित कर दिय गय। वे परिस लौट आय और माच की क्राति के बाद वहा से कोलोन, जमनी, चले गये। १ जून १८४८ से १९ मई १८४९ तक कोलान से «*Neue Rheinische Zeitung*» (नया राइनी समाचारपत्र) निकलता रहा जिसके प्रधान सम्पादक मार्क्स थे। १८४८–१८४९ के क्रानिकारी घटनाक्रम से नये सिद्धान्त की जारदार पुष्टि हुई जसे कि बाद म भी ससार के सभी दशो के सवहारा और जनवादी आदालना मे उसकी पुष्टि हुई है। विजयी प्रतिक्रान्तिकारिया के उकसावे पर मार्क्स पर पहले तो मुकदमा चलाया गया (९ फरवरी १८४९ को वे बरी कर दिय गये) और फिर १६ मई १८४९ को उन्हे जमनी स निकाल दिया गया। वे पहल परिस गये जहा से १३ जून १८४९ के जुलूस के बाद उन्हे फिर निवासित कर दिया गया। इसके बाद व लदन चले गय और फिर देहात तक वहीं रहे।

जैसा कि मार्क्स और एगेल्स के पत्र व्यवहार (१९१३ म प्रकाशित) से साफ पता चलता है, प्रवास-जीवन अत्यन्त कठोर था। मार्क्स और उनके परिवार को दुसह निधनता का सामना करना पडा। यदि एगेल्स न सदा निस्वाथ भाव से मार्क्स की आर्थिक सहायता न की होती तो न केवल मार्क्स 'पूजी' का ही पूरा न कर पाते, वरन अभावग्रस्त होकर निश्चय ही मर मिटते। इसके अलावा निम्नपूजीवादी समाजवाद और सामान्यत गर सवहारा समाजवाद के प्रचलित सिद्धान्तो और प्रवृत्तियो न मार्क्स को निरन्तर ही निममता स लडते रहने के लिय बाध्य किया। कभी

[illegible] और [illegible] व्यक्तियों [illegible] का उत्तर देना पड़ता था (*All or Vogt*)। [illegible] राजनीतिक [illegible] से दूर रहकर मार्क्स ने राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन को अपना अधिकांश समय देते हुए, [illegible] कृतियों में (देखें ग्रंथ सूची परिशिष्ट) अपने भौतिकवादी सिद्धान्त का [illegible] किया। 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास'[1] (१८५९) और पूंजी (खंड १, १८६७) में मार्क्स ने इस सिद्धान्त का [illegible] किया। (देखिये मार्क्स की शिक्षा)

[illegible] के अन्तिम वर्षों तथा सातवें दशक में जनवादी आन्दोलना का [illegible] फिर उभर [illegible], [illegible] मार्क्स फिर राजनीतिक कार्यक्षेत्र में [illegible]। [illegible] १८६४ [illegible] में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ — [illegible] की नींव डाली गयी। मार्क्स [illegible] संगठन के प्राण [illegible] प्रथम [illegible] और [illegible] प्रस्तावों, वक्तव्यों तथा [illegible] थे। विभिन्न [illegible] के मजदूर आन्दोलना को [illegible] मार्क्सवाद [illegible] से पहले के समाजवाद के विभिन्न रूपों (मात्सिनी, प्रूधों, बाकूनिन, इंग्लैंड में उदारतावादी ट्रेड-यूनियन आन्दोलन, [illegible] लस्साल्लवादी दक्षिणपन्थ) [illegible] संयुक्त मोर्चे में [illegible] [illegible] सिद्धान्तों व सिद्धान्तों से संघर्ष [illegible] विभिन्न [illegible] में मजदूर [illegible] संघर्ष [illegible] [illegible] पेरिस कम्यून के पतन (१८७१) के बाद [illegible] मार्क्स ने [illegible] गहरे, स्पष्ट, प्रखर, सुन्दर [illegible] और [illegible] प्रभावशाली [illegible] इस में विश्लेषण (फ्रांस में गृह युद्ध, १८७१) किया था — और [illegible] द्वारा इन्टरनेशनल [illegible] के बाद इस संगठन का यूरोप में अस्तित्व [illegible] गया। इन्टरनेशनल की हेग कांग्रेस (१८७२) के बाद मार्क्स के [illegible] उसकी जनरल कौंसिल को न्यूयार्क ले जाया गया। [illegible] इन्टरनेशनल [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मजदूर आन्दोलन [illegible]

---

[1] [illegible]

विकास हुआ, जिसमे आदोलन का प्रसार हुआ, उसकी परिधि विस्तत हुई और अलग अलग जातीय राज्या मे आम समाजवादी मजदूर पाटिया बनी।

इटरनेशनल, और उससे भी ज्यादा अपन कठिन सैद्धातिक कार्या मे परिश्रम करन के कारण माक्स का स्वास्थ्य बिल्कुल गिर गया था। वे राजनीतिक अथशास्त्र का नया रूप दन और 'पूजी' का समाप्त करन के अपने काम मे लगे रहे, इसक लिय उ होने बहुत सी नयी सामग्री एकत्रित की और कई भापाए (उदाहरण के लिय रूसी) सीखी, परन्तु अस्वस्थ रहन के कारण वे 'पूजी' को पूरा न कर सके।

२ दिसम्बर १८८१ को उनकी पत्नी का देहात हो गया। १४ माच १८८३ को आरामकुर्सी पर बठे-बठे माक्म न भी सदा के लिये आखे मूद ली। व लदन की हाईगेट सेमेट्री म अपनी पत्नी की कब्र की बगल म दफनाय गय। माक्म के बच्चा म से कुछ उनकी भयानक गरीबी की हालत म बचपन म ही लदन म मर गये। उनकी तीन बेटियो ने अग्रेज और फ्रासीसी समाजवादिया स शादी की। इन बेटिया के नाम है एल्योनोरा एवेलिग, लौरा लफाग, जेनी लॉगे। जेनी लॉगे का बेटा फ्रामीसी समाजवादी पार्टी का सदस्य है।

कभी उन्हें बबर और बीभत्स व्यक्तिगत आक्षेपों का उत्तर देना पडता था («Herr Vogt»*)। प्रवासियों के राजनीतिक हलकों से दूर रहकर मार्क्स ने राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन को अपना अधिकाश समय देते हुए, कई ऐतिहासिक कृतियों में (सदर्भ ग्रथ सूची देखिये) अपने भौतिकवादी सिद्धान्त को विकसित किया। 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' (१८५९) और 'पूजी' (खड १, १८६७) में मार्क्स ने इस विज्ञान को क्रान्तिकारी रूप प्रदान किया। (देखिये मार्क्स की शिक्षा)

छठे दशक के अन्तिम वर्षों तथा सातवें दशक में जनवादी आदोलनों की लहर फिर उठने लगी, इससे मार्क्स फिर राजनीतिक कार्यक्षेत्र में उतर पडे। २८ सितम्बर १८६४ को लन्दन में 'अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघ'— प्रसिद्ध पहले इटरनेशनल—की नींव डाली गयी। मार्क्स इस सगठन के प्राण थे। वे ही उसकी पहली अपील और ढेरो प्रस्तावों, वक्तव्यों तथा घोषणापत्रों के लेखक थे। विभिन्न देशों के मजदूर आदोलनों को एकताबद्ध करते हुए, गैर-सर्वहारा, मार्क्सवाद से पहले के समाजवाद के विभिन्न रूपों (मात्सिनी, प्रूदों, बकूनिन, इगलैंड में उदारतावादी ट्रेड-यूनियन आदोलन, जर्मनी में लासाल के दक्षिणपथी ढुलमुलपन) को एक सयुक्त मोर्चे में लाने की कोशिश करते हुए, इन सभी मतों और शाखाओं के सिद्धान्तों से सघर्ष करते हुए मार्क्स ने विभिन्न देशों में मजदूर वर्ग के सर्वहारा सघर्ष की एक ही कार्यनीति निश्चित की। पेरिस कम्यून के पतन (१८७१) के बाद— जिसका मार्क्स ने मर्मभेदी दृष्टि से, बडी स्पष्टता, अद्भुत सूझबूझ के साथ और अत्यन्त प्रभावशाली तथा क्रातिकारी ढग से विश्लेषण ('फ्रास में गृहयुद्ध', १८७१) किया था—और बकूनिनवादियों द्वारा इटरनेशनल में फूट डाल दिये जाने के बाद इस सगठन का यूरोप में अस्तित्व असम्भव हो गया। इटरनेशनल की हेग काग्रेस (१८७२) के बाद मार्क्स के आग्रह पर उसकी जनरल कौंसिल को न्यूयार्क ले जाया गया। पहले इटरनेशनल ने अपना ऐतिहासिक कार्य पूरा कर दिया। उसके बाद एक ऐसा युग आया जिसमें ससार के सभी देशों में मजदूर आन्दोलन का पहले से कहीं ज्यादा

---

* 'श्री फोग्ट'—कार्ल मार्क्स की रचना जो जर्मन पूजीवादी जनवादी कार्ल फोग्ट के विरुद्ध लिखी गयी थी।—स०

विकास हुआ, जिसमे आदोलन का प्रसार हुआ, उसकी परिधि विस्तृत हुई और अलग अलग जातीय राज्यो मे आम समाजवादी मजदूर पार्टिया बनी।

इटरनेशनल, और उससे भी ज्यादा अपने कठिन सैद्धान्तिक कार्यो मे परिश्रम करने के कारण मार्क्स का स्वास्थ्य बिल्कुल गिर गया था। वे राजनीतिक अर्थशास्त्र को नया रूप देने और 'पूजी' को समाप्त करने के अपने काम मे लगे रहे, इसके लिये उन्होने बहुत सी नयी सामग्री एकत्रित की और कई भाषाए (उदाहरण के लिये रूसी) सीखी, परन्तु अस्वस्थ रहने के कारण वे 'पूजी' को पूरा न कर सके।

२ दिसम्बर १८८१ को उनकी पत्नी का देहान्त हो गया। १४ मार्च १८८३ को आरामकुर्सी पर बैठे-बैठे मार्क्स ने भी सदा के लिये आखें मूद ली। वे लन्दन की हाईगेट सेमेट्री मे अपनी पत्नी की कब्र की बगल मे दफनाये गये। मार्क्स के बच्चो मे से कुछ उनकी भयानक गरीबी की हालत मे बचपन मे ही लन्दन मे मर गये। उनकी तीन बेटियो ने अंग्रेज और फ्रासीसी समाजवादियो से शादी की। इन बेटियो के नाम है एल्योनोरा एवेलिग, लौरा लफार्ग और जेनी लोगे। जेनी लोगे का बेटा फ्रासीसी समाजवादी पार्टी का सदस्य है।

व्ला० इ० लेनिन

फ्रेडरिक एंगेल्स

कैसा अद्भुत बुद्धिदीप जो निर्वापित है!
कैसा अद्भुत हृदय, नहीं जो अब स्पन्दित है!'*

५ अगस्त १८९५ को लंदन में फ्रेडरिक एंगेल्स का देहांत हुआ। अपने मित्र कार्ल मार्क्स (जिनका देहांत १८८३ में हुआ था) के बाद एंगेल्स ही सबसे विख्यात पंडित और समूचे सभ्य संसार के आधुनिक सर्वहारा वर्ग के शिक्षक थे। जब से भाग्य ने कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स को एक सूत्र में बांध दिया तब से ही इन दोनों मित्रों का जीवन कार्य एक ही समान ध्येय को अर्पित हो गया। अतः फ्रेडरिक एंगेल्स ने सर्वहारा वर्ग के लिए क्या कुछ किया, यह समझने के लिए समकालीन मजदूर आंदोलन के विकास के विषय में मार्क्स की शिक्षा और कार्य के महत्त्व की स्पष्ट धारणा आवश्यक है। सबसे पहले मार्क्स और एंगेल्स ने ही यह दिखाया कि अपनी मांगों समेत मजदूर वर्ग वर्तमान अर्थव्यवस्था का एक अनिवार्य परिणाम है जो पूंजीपति वर्ग के साथ-साथ अनिवार्य रूप से सर्वहारा वर्ग को जन्म देता है और उसे संगठित करता है। उन्होंने दिखा दिया कि आज मानवजाति को उन उत्पीड़ित करनेवाली मुसीबतों के चंगुल

---

* न० अ० नेक्रासोव की 'दोब्रोल्यूबोव की स्मृति में' कविता से।—सं०

से मुक्त करने का काय कुछ उदारचित्त व्यक्तियो के सन्ताशयतापूण प्रयत्नो से नही, बल्कि सगठित सवहारा के वग-सघष से सपन्न होगा। अपनी वैज्ञानिक रचनाओं म सबसे पहले माक्स और एगेल्स न ही यह स्पष्ट किया कि समाजवाद कोई स्वप्नदर्शियो की कल्पना नही, बल्कि आधुनिक समाज की उत्पादक शक्तियो के विकास का चरम लक्ष्य और अनिवाय परिणाम है। आज तक का समूचा लिखित इतिहास वग-सघष का किन्ही सामाजिक वर्गों द्वारा दूसरे वर्गों पर प्रभुत्व जमाने और विजय पाने के सिलसिले का इतिहास रहा है। और यह तब तक जारी रहेगा जब तक वग सघष और वग प्रभुत्व की बुनियादो – निजी सपत्ति और अव्यवस्थित सामाजिक उत्पादन का लोप नही हो जायेगा। सवहारा वग के हितो की दृष्टि से इन बुनियादो का अवश्य नाश होना चाहिए और इसलिए सगठित मजदूरो के सचेतन वग-सघष का रुख इनके विरुद्ध मोड देना चाहिए। हर वग सघष राजनीतिक सघष है।

माक्स और एगेल्स के ये विचार अब अपनी मुक्ति के लिए सघषरत सभी सवहाराओं ने अगीकार कर लिये ह। पर पाचवे दशक म, जब इन दोनो मित्रो ने अपने समय के समाजवादी साहित्य सजन और सामाजिक आदोलनो म भाग लिया, ये मत पूणतया नवीन थे। उस समय बहुत-से ऐसे प्रतिभासम्पन्न और प्रतिभाहीन, ईमानदार और बेईमान लोग थे जो राजनीतिक स्वतत्रता के सघष मे राजा महाराजाओं पुलिस और पादरियो की स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध सघष म इस तरह लीन थे कि वे पूजीपति वग और सवहारा वग के हितो के विरोध को न देख पाये। ये लोग इस विचार को स्वीकार करने तक को तैयार न थे कि मजदूर एक स्वतत्र सामाजिक शक्ति के रूप म काम करे। दूसरी ओर, कितने ही ऐसे स्वप्नदर्शी थे, और इनमे से कुछ प्रतिभाशाली भी थे, जो मानते थे कि बस, शासको और प्रभुत्वसम्पन्न वर्गों को समकालीन सामाजिक व्यवस्था के अन्यायपूण होने के बारे म विश्वास दिलाने भर की जरूरत है, फिर धरती पर शाति और आम खुशहाली की स्थापना करना बाये हाथ का खेल हो जायगा। वे बिना सघष के समाजवाद के स्वप्न देखा करते थे। अतन, उस समय के लगभग सभी समाजवादी और मजदूर वग के मित्र सवहारा को सामान्यत व्रण मात्र मानते थे और यह देखकर भयग्रस्त होते

थ कि उद्योग की वृद्धि के साथ साथ यह व्रण भी बढता जा रहा था। अत , वे सब इस बात पर विचार कर रहे थे कि उद्योग और सर्वहारा वर्ग का विकास, ' इतिहास का चक्र" कैसे रोका जाये। सर्वहारा वर्ग के विकास के त्रास भय के विपरीत मार्क्स और एंगेल्स तो सर्वहारा वर्ग की अप्रतिहत वृद्धि पर ही अपनी सारी आस लगाये हुए थ। सर्वहाराओं की सख्या जितनी अधिक बढेगी, क्रांतिकारी वर्ग के रूप म उनकी शक्ति उतनी ही अधिक होती जायगी और समाजवाद उतना ही समीपतर और सभवतर बनता जायगा। मार्क्स और एंगेल्स द्वारा की गयी मजदूर वर्ग की सेवाओं को कुछ शब्दों म यो व्यक्त किया जा सकता है उन्होंने मजदूर वर्ग को स्वय अपने को पहचानने और अपने प्रति सचेत होने की शिक्षा दी, और स्वप्न दर्शन के स्थान पर विज्ञान की स्थापना की।

इसी लिए हर मजदूर को एंगेल्स के नाम और जीवन से परिचित होना चाहिए। यही कारण है कि इस लेख-सग्रह म जिसका उद्देश्य हमारे अन्य सभी प्रकाशनों की ही तरह रूसी मजदूरों म वर्ग चेतना को जागृत करना है, हम आधुनिक सर्वहारा के दो महान शिक्षकों मे से एक, फ्रेडरिक एंगेल्स के जीवन और कार्य की रूपरेखा प्रस्तुत करना आवश्यक मानते है।

एंगेल्स का जन्म १८२० म प्रशा राज्य के राइन प्रान्त मे स्थित बार्मेन नगर म हुआ था। उनके पिता कारखानेदार थे। पारिवारिक परिस्थितियों के कारण १८३८ म एंगेल्स को स्कूली शिक्षा पूरी किये बिना ही ब्रेमन की एक कम्पनी म क्लर्क की नौकरी करनी पडी। पर एंगेल्स की वैज्ञानिक और राजनीतिक शिक्षा जारी रही, व्यापारिक मामले उसम कोई बाधा न डाल सके। स्कूल के समय से ही वे निरकुश शासन और पदाधिकारियों के अत्याचारों से घृणा करने लगे थे। दर्शन का अध्ययन उन्हे और आगे ले गया। उन दिनो जर्मन दर्शन पर हेगेल का मत छाया हुआ था और एंगेल्स उनके अनुयायी बन गये। यद्यपि स्वय हेगेल निरकुश प्रशियाई राज्य के प्रशसक थे और बर्लिन विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर के नाते उसकी सेवा कर रहे थे, फिर भी उनकी शिक्षा क्रांतिकारी थी। मनुष्य की तर्कबुद्धि और उसके अधिकारों म हेगेल का विश्वास और हेगेलवादी दर्शन का यह आधारभूत सिद्धान्त कि विश्व परिवर्तन और

विकास की एक सतत प्रक्रिया के अधीन है, वर्लिन के इस दार्शनिक के उन शिष्यों को, जो तत्कालीन परिस्थिति को अस्वीकार करते थे, इस विचार की ओर अग्रसर कर रहा था कि इस परिस्थिति के विरुद्ध संघर्ष की, वर्तमान अन्याय और फली हुई बुराई के विरुद्ध संघर्ष की जड़ भी अनन्त विकास के इस सर्वव्यापी नियम में ही निहित है। यदि संसार की प्रत्येक वस्तु विकास करती है, यदि एक प्रकार की संस्था दूसरे प्रकार की संस्था की जगह ले लेती है, तो क्या कारण है कि प्रशियाई राजा या रूसी ज़ार की निरंकुशता, विशाल बहुमत की हानि पर आधारित नगण्य अल्पमत की समृद्धि या जनता पर पूंजीपति वर्ग का प्रभुत्व सदैव बना रहे? हेगेल के दर्शन ने मन और भावों के विकास की बात की, यह भाववादी दर्शन था। उसने प्रकृति, मनुष्य और मानवीय, सामाजिक संबंधों के विकास को मन के विकास के परिणाम के रूप में ग्रहण किया। विकास की अनंत प्रक्रिया* विषयक हेगेल का विचार सुरक्षित रखते हुए मार्क्स और एंगेल्स ने अग्रधारित भाववादी दृष्टिकोण अस्वीकार किया, जीवन के तथ्यों की ओर मुड़ते हुए उन्होंने अवलोकन किया कि मन के विकास से प्रकृति के विकास को समझना सम्भव नहीं, बल्कि इसके विपरीत मन को प्रकृति द्वारा, भूतद्रव्य द्वारा ही समझा जा सकता है हेगेल और अन्य हेगेलवादियों के विपरीत मार्क्स और एंगेल्स भौतिकवादी थे। संसार और मानवजाति को भौतिकवादी दृष्टिकोण से देखते हुए उन्होंने अनुभव किया कि जिस प्रकार प्रकृति के सभी व्यापारों के मूल में भौतिक कारण रहते हैं, उसी प्रकार मानव-समाज का विकास भी भौतिक शक्तियों, उत्पादक शक्तियों के विकास द्वारा निर्धारित होता है। मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित वस्तुओं के उत्पादन में मनुष्य मनुष्य के बीच जो परस्पर संबंध स्थापित होते हैं, वे उत्पादक शक्तियों के विकास पर ही निर्भर करते हैं। और इन संबंधों में ही सामाजिक जीवन के सभी व्यापारों,

---

*मार्क्स और एंगेल्स अक्सर कहा करते थे कि अपने बौद्धिक विकास के लिए वे महान जर्मन दार्शनिकों और विशेषकर हेगेल के ऋणी हैं। एंगेल्स कहते हैं "जर्मन दर्शन के बिना वैज्ञानिक समाजवाद का जन्म ही न होता।" (लेनिन का नोट)

मानवीय ग्राकाक्षाग्रा विचारो ग्रौर नियमो की व्याख्या निहित होती है। उत्पादक शक्तियो का विकास निजी सपत्ति पर ग्राधारित सामाजिक सबधो को जन्म देता है पर ग्रव हम जानते है कि उत्पादक शक्तियो का यही विकास बहुमत को उसकी सपत्ति से वचित कर उसे नगण्य ग्रल्पमत के हाथो मे केंद्रित कर देता है। यह विकास सपत्ति को, ग्रर्थात ग्राधुनिक सामाजिक व्यवस्था के ग्राधार को नष्ट कर देता है, वह स्वय उसी लक्ष्य की ग्रोर बढता है जिसे समाजवादी ग्रपने सामने रखे हुए है। समाजवादियो को बस इतना ही समझने की जरूरत है कि कौनसी सामाजिक शक्ति वर्तमान समाज मे ग्रपनी स्थिति के कारण समाजवाद की स्थापना मे दिलचस्पी रखती है, ग्रौर यह समझकर इस शक्ति को उसके हितो ग्रौर उसके ऐतिहासिक मिशन की चेतना प्रदान करनी चाहिए। यह शक्ति है सर्वहारा वर्ग। सर्वहारा वर्ग से एगेल्स का परिचय इगलैड मे, ब्रिटिश उद्योग के केंद्र मचेस्टर मे हुग्रा जहा वे एक कम्पनी की नौकरी करके १८४२ मे बस गये थे। उनके पिता इस कम्पनी के एक हिस्सेदार थे। यहा एगेल्स बस फैक्टरी के दफ्तर मे ही नहीं बैठे रहे, उन्होने उन गदी बस्तियो के चक्कर लगाये जहा मजदूर दरबो की सी जगहो मे रहते थे। उन्होने ग्रपनी ग्राखो से उनकी दरिद्रता ग्रौर दयनीय दशा देखी। पर वे केवल वैयक्तिक निरीक्षण करके ही नही रह गये। ब्रिटिश मजदूर वर्ग की स्थिति के सबध मे जो भी सामग्री प्रकाश मे ग्रा चुकी थी उन्होने वह सारी की सारी पढ डाली ग्रौर जो भी सरकारी कागजात उपलब्ध हो सके, उन्होने उन सब का भी ध्यान से ग्रध्ययन किया। इन ग्रध्ययनो ग्रौर निरीक्षणो का फल १८४५ मे प्रकाशित 'इगलैड के मजदूर वर्ग की स्थिति' नामक पुस्तक के रूप मे प्रगट हुग्रा। 'इगलैड के मजदूर वर्ग की स्थिति' के लेखक के नाते एगेल्स ने जो मुख्य सेवा की उसका उल्लेख हम पहले ही कर चुके है। एगेल्स के पहले भी कितने ही लोगो ने सर्वहारा वर्ग के कष्टो का वर्णन ग्रौर उसकी सहायता की ग्रावश्यकता के प्रति सकेत किया था। पर एगेल्स ही वह पहले व्यक्ति थे जिन्होने कहा कि सर्वहारा वर्ग न केवल कष्टग्रस्त वर्ग है, पर यह कि वस्तुत सर्वहारा वर्ग की घृणित ग्रार्थिक स्थिति ही वह चीज है जो उसे ग्रप्रतिहत रूप से ग्रागे बढा रही है ग्रौर उसे ग्रपनी पूर्ण मुक्ति के लिए लडने को विवश कर रही है। ग्रौर सघर्षरत सर्वहारा वर्ग

स्वयं अपनी सहायता करेगा। मजदूर वर्ग का राजनीतिक आंदोलन अनिवार्य रूप से मजदूरों को यह अनुभव करायेगा कि उनकी मुक्ति एकमात्र समाजवाद में निहित है। दूसरी ओर, मजदूर वर्ग के राजनीतिक संघर्ष का उद्देश्य बनने पर ही समाजवाद एक शक्ति बनेगा। ये हैं इंगलैंड के मजदूर वर्ग की स्थिति से संबंधित एंगेल्स की पुस्तक के मुख्य विचार। ये विचार अब सभी विचारशील और संघर्षरत सर्वहाराओं ने स्वीकार कर लिये हैं, पर उस समय वे पूर्णतया नवीन थे। इन विचारों का प्रकाशन हृदयग्राही शैली में लिखी हुई और ब्रिटिश सर्वहारा वर्ग की दयनीय दशा के अत्यंत प्रामाणिक और स्तंभित कर देनेवाले चित्रों से भरपूर एक पुस्तक में हुआ है। इस पुस्तक ने पूंजीवाद और पूंजीपति वर्ग को भयानक अपराधी करार किया और लोगों पर गहरा असर डाला। तत्कालीन सर्वहारा वर्ग की स्थिति का सर्वोत्तम चित्र प्रस्तुत करनेवाली पुस्तक के रूप में एंगेल्स की इस रचना का सर्वत्र हवाला किया जाने लगा। और वस्तुतः मजदूर वर्ग की दयनीय दशा का इतना प्रभावोत्पादक और सत्यस्पर्शी चित्र न तो १८४५ के पहले और न उसके बाद ही और कहीं प्रस्तुत किया गया है।

इंगलैंड में आ बसने के बाद ही एंगेल्स समाजवादी बने। मैनचेस्टर में उन्होंने उस समय के ब्रिटिश मजदूर आंदोलन में सक्रिय भाग लेनेवाले लोगों से संपर्क स्थापित किया और अंग्रेजी समाजवादी प्रकाशनों के लिए लेख लिखना आरंभ किया। १८४४ में जर्मनी लौटते समय पेरिस में मार्क्स से उनका परिचय हुआ। मार्क्स के साथ उनका पत्र-व्यवहार इससे पहले ही शुरू हो गया था। पेरिस में फ्रांसीसी समाजवादियों और फ्रांसीसी जीवन के प्रभाव से मार्क्स भी समाजवादी बन गये थे। यहां दोनों मित्रों ने मिलकर एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक है 'पवित्र परिवार या आलोचनात्मक आलोचना की आलोचना'। यह पुस्तक 'इंगलैंड के मजदूर वर्ग की स्थिति' पुस्तक के एक वर्ष पहले प्रकाशित हुई और इसका अधिकांश मार्क्स ने लिखा। ऊपर जिस क्रांतिकारी भौतिकवादी समाजवाद के मुख्य विचारों की व्याख्या हम कर चुके हैं उसके आधारभूत सिद्धान्त इस पुस्तक में प्रस्तुत किये गये हैं। 'पवित्र परिवार'—यह दार्शनिक बावर बंधुओं और उनके अनुयायियों को दिया गया मजाकिया लकब है। इन सज्जनों ने ऐसी आलोचना का ढिंढोरा पीटा जो समूची वास्तविकता के परे है, जो पार्टियों और राजनीति के परे

है, जो सारे व्यावहारिक क्रियाकलाप को ठुकरा देती है और जो केवल चारों ओर के संसार और उसमें घट रही घटनाओं का "आलोचनात्मक ढंग से" चिंतन करती है। इन सज्जनों ने, अर्थात बावेर बंधुओं ने सर्वहारा वर्ग को नीची नजर से देखते हुए उसे एक आलोचना शून्य समूह माना। मार्क्स और एंगेल्स ने इस बेतुकी और हानिकारक प्रवृत्ति का ज़ोरदार विरोध किया। एक वास्तविक मानवी व्यक्तित्व – अर्थात शासक वर्गों और राज्य द्वारा पददलित मजदूर के नाम पर उन्होंने चिंतन की नहीं, बल्कि बेहतर समाज व्यवस्था के लिए संघर्ष की मांग की। कहने की ज़रूरत नहीं कि वे सर्वहारा वर्ग को ही इस संघर्ष को चलाने में समर्थ और उसमें दिलचस्पी रखनेवाली शक्ति मानते थे। 'पवित्र परिवार' के प्रकाशित होने के पहले ही एंगेल्स मार्क्स और रूगे की 'जर्मन फ्रांसीसी पत्रिका' में 'राजनीतिक अर्थशास्त्र विषयक आलोचनात्मक निबंध' प्रकाशित कर चुके थे जिनमें उन्होंने समाजवादी दृष्टिकोण से समकालीन आर्थिक व्यवस्था के प्रधान व्यापारों का परीक्षण किया था और यह निष्कर्ष निकाला था कि वे निजी संपत्ति के प्रभुत्व के अनिवार्य परिणाम थे। राजनीतिक अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के मार्क्स के निश्चय में निःसंशय एंगेल्स के साथ उनका संपर्क एक कारक तत्व था। इस विज्ञान के क्षेत्र में मार्क्स की रचनाओं ने वस्तुतः एक क्रांति कर दी।

१८४५ से १८४७ तक एंगेल्स ब्रसेल्स और पेरिस में रहे और वैज्ञानिक कार्य के साथ साथ उन्होंने ब्रसेल्स और पेरिस के जर्मन मजदूरों के बीच अमली कारवाइयां भी कीं। यहां मार्क्स और एंगेल्स ने गुप्त जर्मन 'कम्युनिस्ट लीग' के साथ संपर्क स्थापित किया और लीग ने उन्हें उस समाजवाद के, जिसका उन्होंने निरूपण किया था मुख्य सिद्धांतों की व्याख्या करने का कार्य सौंप दिया। इस प्रकार मार्क्स और एंगेल्स के सुप्रसिद्ध 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र' का जन्म हुआ। यह १८४८ में प्रकाशित हुआ। यह छोटी सी पुस्तिका अनेकानेक ग्रंथों से भी मूल्यवान है। आज भी उसकी जीवन्त भावधारा समूचे सभ्य संसार के संगठित और संघर्षरत सर्वहारा वर्ग को स्फूर्ति और प्रेरणा प्रदान करती है।

१८४८ की क्रान्ति ने, जो पहले फ्रांस में भड़की और फिर पश्चिमी यूरोप के अन्य देशों में फैल गयी, मार्क्स और एंगेल्स को फिर से उनकी

मातभूमि के दशन कराय। यहा राइनी प्रशा म उन्हान कालोन से प्रकाशित होनेवाले जनवादी «*Neue Rheinische Zeitung*» की बागडोर अपने हाथा म ली। य दोना मित्र राइनी प्रशा की सारी क्रातिकारी-जनवादी आकाक्षाग्रा के केद्र ग्रौर उत्स थे। जनता के हिता ग्रौर स्वतत्रता की रक्षा के लिए उन्हान एडी चोटी का ज़ोर लगाकर प्रतिक्रियावादी शक्तियो से लोहा लिया। जैसा कि हम जानते हैं प्रतिक्रियावादी शक्तियो का पलडा भारी पडा। «*Neue Rheinische Zeitung*» का गला घोट दिया गया। माक्स को जो पिछ उत्प्रवासन-काल मे अपनी प्रशियाई नागरिकता खो चुके थे, निर्वासित क दिया गया मगर एगेल्स ने सशस्त्र जन विद्रोह म भाग लिया, स्वतत्रता के लिए तीन लडाइया म जूझे ग्रौर विद्रोहियो की पराजय के बाद स्विटजरलड से होकर लदन भाग गय।

माक्स भी लदन मे ही बस गय। एगेल्स फिर एक बार मचेस्टर की उसी कम्पनी मे क्लर्क ग्रौर फिर हिस्सेदार बन गये जहा वे पाचवे दशक म काम करते थे। १८७० तक वे मचेस्टर म रहे जब कि माक्स लदन मे रहते थे। फिर भी इसस उनके अत्यत स्फूर्तिप्रद विचार विनिमय के जारी रहने म कोई बाधा नही ग्रायी लगभग हर रोज उनकी चिट्ठी पत्री चलती थी। इस पत्र व्यवहार द्वारा दोना मित्र विचारो एव खोजो का ग्रादान प्रदान करते ग्रौर वैज्ञानिक समाजवाद की रचना म उनका सहयोग जारी रहा। १८७० म एगेल्स लदन चले गये ग्रौर वहा उनका कठिन साधना का सयुक्त बौद्धिक जीवन १८८३ तक ग्रर्थात माक्स के देहात तक चलता रहा। इस साधना का फल माक्स की ग्रोर से 'पूजी' रहा जो राजनीतिक ग्रर्थशास्त्र के क्षेत्र म हमारे युग की सबसे महान रचना है, ग्रौर एगेल्स की ग्रोर से कितनी ही छोटी ग्रौर बडी रचनाए। माक्स ने पूजीवादी ग्रर्थव्यवस्था के जटिल व्यापारो के विश्लेषण पर काम किया। एगेल्स ने सीधी सादी ग्रौर ग्रक्सर खडन मडनात्मक प्रकार की ग्रपनी रचनाग्रो म इतिहास की भौतिकवादी धारणा ग्रौर माक्स के ग्रार्थिक सिद्धात के प्रकाश म ग्रधिक सामान्य वैज्ञानिक समस्याग्रो ग्रौर ग्रतीत तथा वतमान के विविध व्यापारो का विवेचन किया। एगेल्स की इन रचनाग्रो म से हम निम्नलिखित रचनाग्रो का उल्लेख करेगे डयूहरिंग के विरुद्ध खडन मडनात्मक रचना (जिसमे दशन, प्राकृतिक विज्ञान ग्रौर सामाजिक विज्ञानो के क्षेत्र

की अ[illegible]न महत्वपूर्ण समस्याओं का विश्लेषण किया गया है)*, 'परिवार, निजी सम्पत्ति और राज्य की उत्पत्ति' (रूसी में अनूदित, सेंट-पीटर्सबर्ग में प्रकाशित तृतीय संस्करण, १८९५), 'लुडविग फायरबाख' (टिप्पणियां सहित रूसी अनुवाद गे० प्लेखानोव द्वारा, जेनेवा, १८९२), रूसी सरकार की विदेश नीति के संबंध में एक लेख (जेनेवा के 'सोत्सियल-देमोक्रात' के पहले और दूसरे अंकों में रूसी में अनूदित), आवास की समस्या पर कुछ उत्कृष्ट लेख, और अंत में, रूस के आर्थिक विकास के संबंध में दो छोटे छोटे पर अतिमूल्यवान लेख ('रूस के संबंध में फ्रेडरिक एंगेल्स के विचार' वेरा ज़ासुलिच द्वारा रूसी में अनूदित, जेनेवा, १८९४)। पूंजी से संबंधित विशाल काम पूरा होने के पहले ही मार्क्स का देहांत हो गया। फिर भी पुस्तक अपने मूल रूप में तैयार हो चुकी थी। अपने मित्र की मृत्यु के बाद एंगेल्स ने 'पूंजी' के द्वितीय और तृतीय खंडों की प्रकाशनार्थ तैयारी और प्रकाशन का श्रम-साध्य काम अपने कंधों पर लिया। उन्होंने द्वितीय खंड १८८५ में और तृतीय खंड १८९४ में प्रकाशित किया (चतुर्थ खंड तैयार होने के पहले ही उनकी मृत्यु हो गई)। उक्त दो खंडों के प्रकाशन की तैयारी का काम बहुत ही परिश्रमपूर्ण था। आस्ट्रियाई सामाजिक-जनवादी एडलर ने ठीक ही कहा है कि 'पूंजी' के द्वितीय और तृतीय खंडों के प्रकाशन द्वारा एंगेल्स ने अपने प्रतिभाशाली मित्र का भव्य स्मारक खड़ा किया, जिसपर न चाहते हुए भी उन्होंने अपना नाम अमिट रूप से अंकित कर दिया। वस्तुतः 'पूंजी' के ये दो खंड दो व्यक्तियों – मार्क्स और एंगेल्स – की कृति हैं। प्राचीन गाथाओं में मैत्री के कितने ही हृदयस्पर्शी उदाहरण मिलते हैं। यूरोपीय सर्वहारा वर्ग कह सकता है कि उसके विज्ञान की रचना दो ऐसे विद्वानों और योद्धाओं ने की, जिनके पारस्परिक संबंधों ने मानवीय मैत्री की अत्यंत हृदयस्पर्शी पुराण-कथाओं को पीछे छोड़ दिया है। एंगेल्स सदा ही – और आम तौर पर न्यायसंगत रूप से – अपने को मार्क्स के बाद रखते थे।

* यह बहुत सारगर्भित और शिक्षाप्रद पुस्तक है। दुर्भाग्य से उसका एक छोटा-सा हिस्सा ही रूसी भाषा में अनूदित किया गया है। इस हिस्से में समाजवाद के विकास की ऐतिहासिक रूपरेखा दी गयी है ('वैज्ञानिक समाजवाद का विकास', द्वितीय संस्करण, जेनेवा, १८९२)। (लेनिन का नोट)

'मार्क्स के जीवन-काल मे', उन्होने अपने एक पुराने मित्र को लिखा था, मैने गौण भूमिका अदा की।" जीवित मार्क्स के प्रति उनका प्रेम और मृत मार्क्स की स्मृति के प्रति उनका आदर असीम था। इस दृढ योद्धा और कठोर विचारक का हृदय गहरे प्रेम से परिपूर्ण था।

१८४८-१८४९ के आदोलन के बाद निर्वासन-काल मे मार्क्स और एंगेल्स केवल वैज्ञानिक शोधकार्य मे ही नही व्यस्त रहे। १८६४ मे मार्क्स ने 'अतर्राष्ट्रीय मजदूर सघ' की स्थापना की और दशक भर इस सस्था का नेतृत्व किया। एंगेल्स ने भी इस सस्था के कार्य मे सक्रिय भाग लिया। अतर्राष्ट्रीय मजदूर सघ का कार्य, जिसने मार्क्स के विचारानुसार सभी देशो के सर्वहारा को एकजुट किया, मजदूर आदोलन के विकास के लिए अत्यत महत्त्वपूर्ण था। पर आठवे दशक मे उक्त सघ के बद होने के बाद भी मार्क्स और एंगेल्स की एकीकरण विषयक भूमिका समाप्त नही हुई। इसके विपरीत, कहा जा सकता है कि मजदूर आदोलन के आध्यात्मिक नेताओ के रूप मे उनका महत्त्व सतत बढता रहा, क्योकि यह आदोलन स्वय भी अप्रतिहत रूप से प्रगति करता रहा। मार्क्स की मृत्यु के बाद अकेले एंगेल्स यूरोपीय समाजवादियो के परामर्शदाता और नेता बने रहे। उनका परामर्श और मार्गदर्शन जर्मन समाजवादी, जिनकी शक्ति सरकारी यत्रणाओ के बावजूद शीघ्रता से और सतत बढ रही थी, और स्पेन रूमानिया, रूस आदि जैसे पिछडे देशो के प्रतिनिधि, जो अपने पहले कदम बहुत सोच विचार कर और सभल कर रखने को विवश थे, दोनो ही समान रूप से चाहते थे। वे सब वृद्ध एंगेल्स के ज्ञान और अनुभव के समृद्ध भडार से लाभ उठाते थे।

मार्क्स और एंगेल्स दोनो रूसी भाषा जानते थे और रूसी पुस्तके पढा करते थे। रूस मे उनकी गहरी दिलचस्पी थी, वे रूसी क्रातिकारी आदोलन की गतिविधि को सहानुभूति की दृष्टि से देखते थे और रूसी क्रातिकारियो से सपर्क बनाये हुए थे। समाजवादी बनने से पहले वे दोनो जनवादी थे और राजनीतिक स्वेच्छाचारिता के प्रति घृणा की जनवादी भावना उनमे बहुत ही बलवती थी। इस प्रत्यक्ष राजनीतिक भावना ने और उसके साथ-साथ राजनीतिक स्वेच्छाचारिता और आर्थिक उत्पीडन के बीच के सबधो की गभीर सैद्धातिक समझ और जीवन के उनके समृद्ध अनुभव ने मार्क्स

ग्रौर एंगेल्स का यथावत राजनीतिक दृष्टि से ग्रसाधारण रूप में संवेदनशील बना दिया था। यही कारण है कि शक्तिशाली ज़ारशाही सरकार के विरुद्ध रूस में रूसी क्रांतिकारियों के वीरत्वपूर्ण संघर्ष ने इन तपे हुए क्रांतिकारियों के हृदयों में गहरी सहानुभूति उत्पन्न की। दूसरी ग्रोर, काल्पनिक ग्रार्थिक सुविधाग्रों की प्राप्ति के लिए रूसी समाजवादियों के सबसे फौरी ग्रौर सबसे महत्त्वपूर्ण काम की ग्रोर से, यानी राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त करने की ग्रोर से मुंह मोड़ लेने की प्रवृत्ति को उन्होंने संदेह की दृष्टि से देखा, ग्रौर इतना ही नहीं, उन्होंने उसे सामाजिक क्रांति के महान ध्येय के प्रति सीधे-सीधे विश्वासघात माना। "सर्वहारा की मुक्ति स्वयं सर्वहारा का काम है", – मार्क्स ग्रौर एंगेल्स बराबर यही शिक्षा देते रहे। पर ग्रपनी ग्रार्थिक मुक्ति के लिए संघर्ष करने के लिए यह जरूरी है कि सर्वहारा वर्ग कुछ निश्चित राजनीतिक अधिकार प्राप्त कर ले। इसके ग्रलावा मार्क्स ग्रौर एंगेल्स ने स्पष्ट रूप से यह भी देखा कि रूस में राजनीतिक क्रांति पश्चिमी यूरोपीय मजदूर ग्रांदोलन के लिए भी ग्रत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगी। निरंकुश रूस सदा से ही यूरोपीय प्रतिक्रिया का ग्राधार-स्तम्भ रहा था। एक लंबे समय तक जर्मनी ग्रौर फ्रांस के बीच ग्रनबन के बीज बोनेवाले १८७० के युद्ध के परिणामस्वरूप रूस को प्राप्त हुई ग्रत्यधिक ग्रनुकूल ग्रंतर्राष्ट्रीय स्थिति ने ग्रवश्य ही प्रतिक्रियावादी शक्ति के रूप में निरंकुश रूस का महत्त्व बढ़ा दिया। केवल स्वतंत्र रूस, यानी वह रूस, जिसे न पोलों, फिनियों, जर्मनों, ग्रर्मनियाइयों या ग्रन्य छोटी-मोटी जातियों को उत्पीड़ित करने की ग्रौर न ही फ्रांस ग्रौर जर्मनी को बराबर एक दूसरे के विरुद्ध भड़काने की ग्रावश्यकता होगी, वही ग्राधुनिक यूरोप को युद्ध के भार से मुक्त होकर चैन की सांस लेने देगा, यूरोप के सभी प्रतिक्रियावादी तत्त्वों को निर्बल करेगा ग्रौर यूरोपीय मजदूर वर्ग की शक्ति बढ़ायेगा। इसलिए एंगेल्स की उत्कट इच्छा थी कि पश्चिम के मजदूर ग्रांदोलन की प्रगति के हितार्थ भी रूस में राजनीतिक स्वतंत्रता की स्थापना हो। एंगेल्स की मृत्यु से रूसी क्रांतिकारी ग्रपना बेहतरीन दोस्त खो बैठे।

सर्वहारा वर्ग के महान योद्धा ग्रौर शिक्षक फ़ेडरिक एंगेल्स की स्मृति ग्रमर रहे!

पाल लफाग

मार्क्स मेरे मानसपट पर*

> इनसान थे, हर चीज मे इनसान
> होगा न कोई दूसरा
> उनके कभी समा[न]
> (शेक्सपियर 'हैमलेट')

१

मै कार्ल मार्क्स से पहले पहल फरवरी १८६५ म मिला। पहले इटरनेशनल की स्थापना २८ सितम्बर १८६४ को लदन के सेट मार्टिस हॉल म हुई एक सभा मे हो चुकी थी और म मार्क्स को पेरिस से नवजात सगठन के विकास की खबर देने लदन गया। श्री तालै ने जो अब पूजीवादी जनतत्र म सेनेटर है मेरे लिए एक परिचय पत्र दिया। म तब २४ साल का था। उस पहली भेट की मुझपर जो छाप पडी उसे मैं आजीवन नही भूल सकूगा। मार्क्स 'पूजी' के पहले खण्ड पर काम कर रहे थे जो वहीं दो वर्ष बाद, १८६७ म प्रकाशित हुआ। वे उस समय कुछ अस्वस्थ थे और उन्हें भय था कि वे अपना काम पूरा नही कर सकेगे इसलिए नौजवानो के मुलाकात के लिए आने से प्रसन्न होते थे। "अपने बाद कम्युनिस्ट प्रचार को जारी रखने के लिए मुझे नौजवानो को अवश्य प्रशिक्षित करना चाहिए", वे कहा करते थे।

कार्ल मार्क्स उन विरले लोगो मे से थे जो विज्ञान और सार्वजनिक जीवन, दोनो म एकसाथ नेतृत्व कर सकते है। ये दोनो पहलू उनम इतने

---

*लफाग, पाल (१८४२–१९११) – फ्रासीसी तथा अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आदोलन के प्रख्यात नेता, मार्क्स तथा एगेल्स के मित्र और शिष्य, मार्क्स की बेटी लौरा के पति। लफाग के संस्मरण १८९० म प्रकाशित किये गये। – स०

घुर मिर हुए थे कि विद्वान मार्क्स और समाजवादी योद्धा मार्क्स, दोनों को ध्यान में रखकर ही उन्हें समझा जा सकता है।

मार्क्स का विचार था कि अनुसंधान के अंतिम फल की चिन्ता किये बिना विज्ञान का अनुशीलन विज्ञान के लिए ही किया जाना चाहिए, लेकिन इसके मानी यह नहीं कि सार्वजनिक जीवन में सक्रिय सहभागिता का त्याग करके अथवा बिल के चूहे की तरह अपने को अध्ययन-कक्ष या प्रयोगशाला में बन्द करके और समकालीनों के सार्वजनिक जीवन तथा राजनीतिक संघर्ष से अलग रहकर वैज्ञानिक महज अपने को हेय ही बना सकता है। वे कहा करते थे, "विज्ञान को आत्मानन्द नहीं होना चाहिए। जिन्हें अपने को वैज्ञानिक अनुष्ठान में लगाने का सौभाग्य प्राप्त है, उन्हें सबसे पहले अपने ज्ञान को मानवजाति की सेवा में अर्पित करना चाहिए।" "मानवजाति के लिए काम करो", यह उनका एक प्रिय कथन था।

यद्यपि मेहनतकश वर्गों के दुखभोग के प्रति मार्क्स गहरी सहानुभूति रखते थे फिर भी भावुकता के कारण नहीं, बल्कि इतिहास तथा राजनीतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन से वे कम्युनिस्ट विचारों पर पहुंचे। उनका दावा था कि निजी हितों के प्रभाव और वर्गीय पूर्वाग्रहों की अंधता से मुक्त कोई भी पक्षपातहीन व्यक्ति लाजिमी तौर से इन्हीं निष्कर्षों पर पहुंचेगा।

लेकिन किसी अग्रधारित मत के बिना मानव समाज के आर्थिक तथा राजनीतिक विकास का अध्ययन करते हुए भी मार्क्स ने मात्र अपने अनुसंधान के नतीजों का प्रचार करने के इरादे और उस समाजवादी आन्दोलन के लिए वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत करने की अटल इच्छा से प्रेरित होकर ही चयन नहीं किया जो उस समय तक कल्पनाविहार के बादलों में खोया हुआ था। उन्होंने मजदूर वर्ग को विजयी बनाने के लिए ही जिसका एतिहासिक ध्येय समाज का आर्थिक तथा राजनीतिक नेतृत्व प्राप्त करते ही कम्युनिज्म की स्थापना करना है अपने विचारों का प्रचार किया।

मार्क्स ने अपनी सरगर्मी को अपनी जन्मभूमि तक ही सीमित नहीं रखा। वे कहा करते थे, "मैं विश्व नागरिक हूं, मैं जहां कहीं भी हूं, सक्रिय हूं।" वस्तुतः फ्रांस, बेल्जियम, ब्रिटेन, चाहे जिस देश में भी

घटनाओ तथा राजनीतिक अत्याचारो से बाध्य होकर वे गए उन्होने वहा उठनेवाले क्रान्तिकारी आन्दोलनो म प्रमुख भाग लिया।

लेकिन मेटलैण्ड पार्क रोड के उनके अध्ययनकक्ष म मैने पहले पहल एक अथक, अतुल्य समाजवादी प्रचारक को नही बल्कि वैज्ञानिक को देखा। यह अध्ययनकक्ष ही वह केन्द्र था, जहा सभ्य ससार के सभी हिस्सो से समाजवादी चिन्तन के आचार्य की राय जानने के लिए पार्टी के साथी आया करते थे। उस ऐतिहासिक कक्ष को जानने के बाद ही मार्क्स के भावनात्मक जीवन के अतरग म प्रवेश किया जा सकता है।

वह दूसरी मजिल पर था और पार्क की ओर खुलनेवाली एक चौडी खिडकी से आनेवाले प्रकाश से आप्लावित था। खिडकी की उलटी दिशा म तथा अग्निष्ठिका के दोनो तरफ दीवार से लगी किताबो से भरी आलमारियो की कतार थी, जो अखबारो और पाण्डुलिपियो से छत तक अटी थी। अग्निष्ठिका की उलटी दिशा म तथा खिडकी के एक तरफ कागजो किताबो और अखबारो से लदी दो मेजे थी। कमरे के बीचोबीच खासी रोशनी म एक छोटी (३ फीट लम्बी और २ फीट चौडी) सादी मेज और लकडी की हत्थेदार कुर्सी थी। कुर्सी और आलमारी के बीच खिडकी की उलटी दिशा म चमडे से मढा सोफा था, जिसपर मार्क्स जब तब लेटकर आराम करते थे। अग्निष्ठिका के पास पर और किताबे सिगार, दियासलाई की डिबिया, तम्बाकू के डिब्बे, पपरवेट और मार्क्स की पत्नी तथा पुत्रियो के विल्हेल्म वोल्फ* और फ्रेडरिक एगेल्स के फोटो रखे थे।

मार्क्स धूम्रपान बहुत करते थे। उन्होने मुझसे एक बार कहा, ''पूजी' से उतने भी पैसे नही मिलेगे जितने के सिगार मैने उसको लिखने म फूक डाले ह।' लेकिन दियासलाइयो का खर्च तो उनका और भी अधिक था। पाइप या सिगार की अक्सर सुध न रहने और थोडे ही समय म उन्हे बार-बार सुलगाने से दियासलाई की न जाने कितनी डिबिया खाली हो जाती थी।

---

*वोल्फ, विल्हेल्म (१८०६–१८६४)– जर्मन सर्वहारा क्रान्तिकारी मार्क्स तथा एगेल्स के मित्र और सहकर्मी। मार्क्स ने अपनी महान कृति 'पूजी' उन्ही को समर्पित की है।–स०

वे अपनी किताबों या कागज़ों को तरतीब से — या कहें कि बेतरतीब — रखने की इजाजत किसी को नहीं देते थे। सिर्फ देखने में ही ऐसा लगता था कि वे बेतरतीब हैं। दर असल सब कुछ अभिप्रेत स्थान पर होता था, जिससे उन्हें आवश्यक किताब या नोटबुक पा लेना आसान था। बातचीत के दौरान भी वे अक्सर उल्लिखित पुस्तक में से कोई उद्धरण या आंकड़ा दिखाने के लिए रुक जाते थे। अपने अध्ययनकक्ष के साथ उनका तादात्म्य हो गया था। वहां की पुस्तकों और कागज़ों पर उन्हें उतना ही काबू था, जितना अपने अंगों पर।

मार्क्स के लिए उनकी किताबों की रस्मी तरतीब का कोई उपयोग नहीं था। विभिन्न आकार की जिल्दें और पैम्फलेट एक दूसरे से सटे हुए रखे थे। वे उन्हें आकार की दृष्टि से नहीं, बल्कि विषय की दृष्टि से तरतीब देते थे। किताबें उनके दिमाग के लिए विलास सामग्री नहीं, औज़ार थीं। वे कहा करते थे, "ये मेरी बांदियां हैं और इन्हें मेरी इच्छा के अनुसार मेरी सेवा करनी होगी।" वे आकार या जिल्दबन्दी पर, कागज़ या टाइप की किस्म पर कोई ध्यान नहीं देते थे। वे पन्नों के कोने मोड़ देते, हाशिये में पेंसिल के निशान बना देते और पूरी की पूरी पंक्तियां रेखांकित कर देते। वे किताबों पर कभी कुछ नहीं लिखते थे, लेकिन कभी-कभी लेखक के अति कर देने पर विस्मयबोधक अथवा प्रश्नवाचक चिह्न लगाए बिना नहीं रह पाते थे। उनकी रेखांकन पद्धति से, आवश्यकता होने पर किसी पुस्तक में कोई अंश ढूंढ लेना आसान हो जाता था। उन्हें अपनी नोटबुकों और किताबों के रेखांकित अंशों को कई-कई बरस बाद फिर फिर पढ़ने की आदत थी, ताकि वे उनकी याद में ताज़ा बने रहें। उनकी स्मरणशक्ति असाधारण थी, जिसे उन्होंने अपनी जवानी के दिनों में हेगेल के परामर्श पर अनजानी विदेशी भाषा की कविताएं कंठस्थ करके संवर्द्धित किया था।

उन्हें हाइने और गेटे कंठस्थ थे और अपनी बातचीत में उन्हें अक्सर उद्धृत करते थे। वे सभी यूरोपीय भाषाओं में कवियों के अनुष्ठावान पाठक थे। वे हर साल एस्कीलस* को मूल यूनानी में पढ़ते थे। वे उन्हें और

---

*एस्कीलस (५२५–४५६ ई० पू०) — प्रख्यात प्राचीन यूनानी नाटककार, [illegible] दुखान्त नाटकों के रचयिता। — सं०

शेक्सपियर का नाटककारिता के क्षेत्र में मानवजाति की महानतम प्रतिभाएं मानते थे। शेक्सपियर के प्रति उनका सम्मान असीम था उन्होंने उनकी कृतियों का ब्योरेवार अध्ययन किया था और उनके मामूली से मामूली पात्रों तक को जानते थे। महान अंग्रेज़ी नाटककार के प्रति मार्क्स का पूरा परिवार सच्ची श्रद्धा रखता था। उनकी तीनों बेटियों को शेक्सपियर की अनेक कृतियां कंठस्थ थीं। १८४८ के बाद जब मार्क्स ने अंग्रेज़ी भाषा में पारंगत होना चाहा, जिसे पढ़ सकने में वे समर्थ हो चुके थे तो उन्होंने शेक्सपियर की सारी मौलिक अभिव्यक्तियों को ढूंढ निकाला और उनका वर्गीकरण किया। विलियम कॉबेट* की वादानुवादी कृतियों के एक अंश के साथ भी उन्होंने यही किया। वाल्टेर के बारे में उनकी राय ऊंची थी। दान्ते और रॉबर्ट बर्न्स उनके प्रियतम कवियों में से थे और वे स्कॉटी कवि के पवाड़ों या विद्रूप-काव्य का अपनी पुत्रियों द्वारा पाठ अथवा गायन अत्यन्त आनन्दपूर्वक सुनते थे।

विज्ञान-क्षेत्र के अथक कार्यकर्त्ता और परम आचार्य कुविए के निजी उपयोग के लिए पेरिस म्यूज़ियम में, जिसके वे संचालक थे कई कमरे थे। हर कमरा किसी विशेष अनुष्ठान के लिए अभिप्रेत था और उसमें उसी प्रयोजन की किताबें, औज़ार, विश्लेषणकारी उपकरण इत्यादि रखे थे। जब वे एक प्रकार के काम से थकान महसूस करते तो दूसरे कमरे में जाकर दूसरे काम में लग जाते। बौद्धिक व्यस्तता की यह अदला-बदली ही उनके लिए आराम होती थी।

मार्क्स उतने ही अथक परिश्रमी थे, जितने कुविए। लेकिन उनके पास कई अध्ययनकक्षों को आवश्यक सामग्री से सज्जित करने के लिए साधन नहीं थे। वे कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चहलकदमी करके आराम करते जिससे कालीन पर दरवाज़े से खिड़की तक एक पट्टी-सी बन गई थी और वह घास के मैदान में बनी पगडंडी की तरह स्पष्टतः अंकित थी।

बीच-बीच में वे सोफे पर लेट जाते और कोई उपन्यास पढ़ने लगते। कभी कभी वे एकसाथ ही दो या तीन उपन्यास बारी बारी से पढ़ते थे।

---

*कॉबेट, विलियम (१७६२–१८३५)–अंग्रेज़ी राजपुरुष तथा सार्वजनिक लेखक, ब्रिटिश राजनीतिक व्यवस्था के जनवादीकरण के योद्धा।–सं०

भाविन की भांति वे भी उपन्यास पठन के बड़े शौकीन थे और १८वीं सदी के उपन्यासों को, खास तौर से फील्डिंग के 'टाम जोन्स' को, तरजीह देते थे। अपेक्षाकृत अधिक आधुनिक उपन्यासकारों में, जिन्हें वे सर्वाधिक रुचिकर पाते थे, पॉल द कॉक, चार्ल्स लेवर, सीनियर अलेक्जैंडर ड्यूमा और वाल्टर स्काट थे। स्काट के «Old Mortality» को वे मूर्द्धन्य कृति मानते थे। साहसिक कारनामों और हास्यरस की कहानियों को वे निश्चित रूप से तरजीह देते थे।

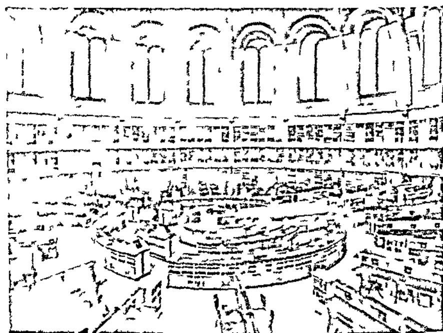
वे सर्वांतेस और बाल्ज़ाक को अन्य सभी उपन्यासकारों से ऊंचा स्थान देते थे। डान क्विक्ज़ोट को वे उस दम तोड़ते हुए शौर्य का महाकाव्य समझते थे जिसके गुणों की उदीयमान पूंजीवादी जगत में हंसी उड़ाई जाती थी, अवमानना की जाती थी। वे बाल्ज़ाक को इतना सराहते थे कि राजनीतिक अर्थशास्त्र पर अपनी कृति को समाप्त करते ही उनकी महान कृति «La comedie Humaine» की समीक्षा लिखना चाहते थे। वे बाल्ज़ाक को महज अपने युग का इतिवृत्त-लेखक ही नहीं, बल्कि ऐसे भावी चरित्रों के स्रष्टा भी मानते थे जो लुई फिलिप के युग में अभी भ्रूण रूप में थे और जो बाल्ज़ाक की मृत्यु के बाद नेपोलियन तृतीय के शासनकाल में ही पूर्णतः विकसित हुए थे।

मार्क्स सभी यूरोपीय भाषाएं पढ़ सकते थे और जर्मन, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं में लिखते हुए अपने को इतने सुंदर ढंग से व्यक्त करने में समर्थ थे कि भाषा पारखी मुग्ध हो उठते थे। वे इस उक्ति को बार-बार दोहराना पसन्द करते थे कि "जीवन-संघर्ष में विदेशी भाषा एक हथियार है।'

भाषाओं के लिए उनकी मेधा प्रबल थी, जिसे उनकी बेटियों ने विरसे में पाया। उन्होंने रूसी भाषा का अध्ययन तब शुरू किया, जब वे ५० साल के हो चुके थे और इस भाषा के कठिन होने के बावजूद छै महीने में ही उन्होंने इतनी रूसी सीख ली कि रूसी कवियों तथा गद्य-लेखकों की कृतियों का आनन्द लेने लगे। वे पुश्किन, गोगोल और श्चेद्रीन को अधिक पसन्द करते थे। उन्होंने रूसी भाषा इसलिए सीखी कि सरकारी जांचों की उन दस्तावेज़ों को पढ़ सकें, जिनके प्रकाशन पर रूसी सरकार ने इसलिए रोक लगा दी थी कि उनसे भयानक तथ्य सामने आते थे। श्रद्धालु मित्रों ने मार्क्स के लिए



कार्ल मार्क्स १८६६



ब्रिटिश म्युज़ियम (लंदन) का वाचनालय, जिसमे मार्क्स
अध्ययन करते थे

उन दस्तावेजों को हासिल किया और पश्चिमी यूरोप में निश्चय ही वे अकेले राजनीतिक अर्थशास्त्री थे जिन्हें उन दस्तावेजों की जानकारी थी।

कविताओं और उपन्यासों के अलावा, मार्क्स के बौद्धिक विश्राम का एक और अद्भुत साधन गणित था जिसमें उनकी विशेष रुचि थी। बीजगणित से तो उन्हें मानसिक सांत्वना तक प्राप्त होती थी और अपने घटनापूर्ण जीवन की अधिकतम शोकमयी घड़ियों में वे उसका सहारा लेते थे। अपनी पत्नी की अन्तिम बीमारी के दौरान वे अपने नित्य के वैज्ञानिक कार्य में दत्तचित्त होने में असमर्थ थे और उनके लिए पत्नी के कष्टभोग से पैदा होनेवाले क्लेश से छुटकारा पाने का एकमात्र रास्ता गणित में डूब जाना ही था। मानसिक कष्ट की उस मुद्दत में उन्होंने अत्यल्पीयकलन पर एक पुस्तक लिखी, जिसका विशेषज्ञों की राय में भारी वैज्ञानिक मूल्य है और जो उनकी सम्पूर्ण कृतियों में प्रकाशित की जाएगी। उन्होंने उच्च गणित में द्वंद्वात्मक गति का अधिकतम तार्किक और साथ ही अधिकतम सीधा सादा रूप पाया। उनका विचार था कि जब तक कोई विज्ञान गणित का उपयोग करना नहीं सीख लेता, तब तक वस्तुतः विकसित रूप नहीं प्राप्त कर सकता।

यद्यपि मार्क्स के निजी पुस्तकालय में उनके आजीवन अनुसंधान-कार्य के दौरान यत्नपूर्वक जमा की गई एक हजार से अधिक पुस्तकें थीं, फिर भी वे उनके लिए नाकाफी थीं और मार्क्स सालों तक नियमित रूप से ब्रिटिश म्यूजियम में बैठकर अध्ययन करते रहे। वहां के पुस्तक-भण्डार की वे अत्यधिक सराहना करते थे।

मार्क्स के विरोधियों तक को उनके व्यापक तथा गहन पाण्डित्य का, सो भी न केवल उनके विशेष विषय – राजनीतिक अर्थशास्त्र में, बल्कि इतिहास, दर्शन और सभी देशों के साहित्य के क्षेत्र में भी, सिक्का मानना पड़ा।

मार्क्स रात को बहुत देर से सोते, लेकिन इसके बावजूद सुबह आठ और नौ बजे के बीच उठ जाते, थोड़ी काली कॉफी पीते, अखबार पढ़ते और तब अपने अध्ययनकक्ष में जाकर रात के दो या तीन बजे तक काम करते। वे केवल खाना खाने और मौसम उपयुक्त होने पर हैम्पस्टेड हीथ*

---

*लंदन का पहाड़ी पार्क। – सं०

म शाम को टहलन के लिए ही काम छोडत। दिन म व कभी-कभी साफ पर घटा दो घटे मो लेत थ। जवानी म व अक्सर सारी सारी रात काम वग्न रहत थे।

मार्क्स का काम का व्यसन था। व उसम इतना डूब जाते थ कि अक्सर खाना भी भूल जाते थे। वे अक्सर कई बार बुलाए जाने पर नीचे खान क कमरे म आत और आखिरी ग्रास खाते न खात फिर अपन अध्ययनकक्ष म पहुच जाते।

व बहुत कमखाती थ और भूख की कमी के भी शिकार थ। खट्टी और चटपटी चाजें जस कि हैम, भुनी मछलिया, केवियर और अचार आदि खाकर व भूख की कमी को दूर करन की काशिश करते थे। मस्तिष्क का प्रचण्ड क्रियाशीलता का फल पट का भागना पडता था।

उन्हान अपन मस्तिष्क के लिए शरीर को कुर्बान कर दिया। चिन्तन उनका सबस बडा सुख था। मन अक्सर उन्ह उनकी जवानी के दशन-गुरु हगेल क शब्द दुहराते हुए सुना "किसी कुकर्मी क अपराधमूलक चिन्तन म भी स्वग क चमत्कारा स अधिक वभव तथा गरिमा होती है"।

जीवन क इस असाधारण ढग तथा क्लातिकर दिमागी काम क लिए उनका शारीरिक गठन का अच्छा होना जरूरी था। दर असल उनकी काठी बडी मजबूत थी व औसत स अधिक लम्बे, चौडे कधा, उभरे सीन और सुगठ अगा वाल व्यक्ति थे, हालाकि टागा की तुलना म मेरुदड किसी कदर लम्बा था जसा कि यहूदिया के अक्सर होता है। अगर उन्हान जवानी म व्यायाम किया होता, तो व बहुत ही बलिष्ठ आदमी बन गय होत। कवल टहलना ही एक ऐसा शारीरिक व्यायाम था जो उन्हान कभी भी नियमित रूप स किया। व बात और धूम्रपान करत हुए घटा चहलकदमी कर सकत थ या पहाडिया पर चढ सकत थ और बिलकुल थकत नही थे। कहा जाता है कि व अपन कमर म टहलत हुए ही काम करत थ और टहलत हुए जो कुछ सोच लत थ उस लिखन क लिए ही थोडी-थोडी दर को बठ जात थ। व बातचीत करत हुए कमर क एक सिर स दूसर सिरे तक टहलना पसन्द करत थ और बीच-बीच म जब सभाषण अधिक जोरदार अथवा बातचीत अधिक गभीर हो जाती थी, तो रुक जात थ।

म हैम्पस्टेड हीथ मे उनके सध्या भ्रमण मे सालो उनके साथ जाता रहा और उनके साथ चरागाहो म टहलते हुए ही मन अपनी अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। वे 'पूजी' का पहला खण्ड जैसे-जैसे लिखते जाते थ, वैस-वैसे बिना खुद इस बात पर ध्यान दिये मुझे उसका पूरा अन्वय समझाते जाते थे।

मैं जो कुछ उनसे सुनता था, घर लौटकर उसके जहा तक मुमकिन होता, बेहतर स बेहतर नोट तयार करता। शुरू-शुरू मे मार्क्स के गहन तथा जटिल तर्क को समझ पाना मेरे लिये कठिन होता था। दुर्भाग्यवश वे मूल्यवान नोट अब मेरे पास नही हैं, क्योकि पेरिस कम्यून के बाद पुलिस न पेरिस और बोर्दो म मेरे कागजात छीनकर जला दिये थ।

मुझे उन नोटो को खो देने का सबसे ज्यादा अफसोस है, जो मैंने उस शाम को लिखे थे, जब मार्क्स ने अपने चारित्रिक प्रमाण प्राचुर्य तथा तर्क वपुल्य के साथ मुझे मानव-समाज के विकास-सम्बन्धी अपना तेजस्वी सिद्धान्त समझाया था। तब मुझे ऐसे लगा था मानो मेरी आखो के सामने स पर्दा हट गया हो। मन पहले पहल विश्व इतिहास की तर्क-सगति को स्पष्ट रूप से देखा और सामाजिक विकास के व्यापारो का, जो देखने मे इतने अन्तर्विरोधपूर्ण हैं, उनके भौतिक कारणो के साथ ताल मेल बिठा पाया। म चकित रह गया और उसकी छाप बरसो तक बनी रही।

जब मैंने मैड्रिड के समाजवादियो के सामने अपनी अपर्याप्त शक्ति का पूरा जोर लगाकर मार्क्स के उस सर्वाधिक तेजोमय सिद्धान्त की व्याख्या की, जो निस्सन्देह मानव मस्तिष्क द्वारा सृजित एक महानतम सिद्धान्त है, तब उनपर भी ऐसा ही प्रभाव पडा।

मार्क्स का मस्तिष्क इतिहास तथा प्रकृति विज्ञान के तथ्यो तथा दार्शनिक सिद्धान्तो के असाधारण भडार स भरपूर था। बरसो के बौद्धिक काम के दौरान सचित ज्ञान और ध्यान का उपयोग करने मे व अद्भुत रूप से दक्ष थे। उनसे किसी भी समय किसी भी विषय पर प्रश्न करके मनोवाछित अधिकतम ब्योरेवार उत्तर पाया जा सकता था, जो सदा सामान्य उपयोग के दार्शनिक विचारो से सयुक्त होता था। उनका मस्तिष्क चिंतन के किसी भी क्षेत्र म पिल पडने के लिए बन्दरगाह पर भाप तैयार रणपोत की तरह था।

निम्न दह पूंजी के रूप म हम आश्चर्यजनक ओज और प्रकाण्ड ज्ञान स भरपूर मस्तिष्क के दर्शन होते हैं। लेकिन मेरे लिए और मार्क्स को घनिष्ठतापूर्वक जाननेवाले सभी लोगों के लिए न तो 'पूंजी' और न कोई अन्य कृति ही उनकी प्रतिभा की सारी विराटता अथवा उनके ज्ञान की सम्पूर्ण समृद्धता प्रदर्शित करती है। वे अपनी कृतियों से भी कहीं अधिक ऊंचे थे।

मैंने मार्क्स के साथ काम किया। मैं केवल लिपिक था, जिसे वे बोलकर लिखवाते थे। लेकिन उससे मुझे उनके सोचने और लिखने का ढंग देखने का सुयोग मिला। काम उनके लिए आसान होने के साथ ही कठिन भी था। आसान इसलिए कि संगत तथ्यों तथा विचारों को उनकी पूर्णता में ग्रहण करना उनके मस्तिष्क के लिए आसान था। लेकिन यही पूर्णता ही उनके विचारों के प्रतिपादन को दरअसल और कठिन काम बना देती थी

मार्क्स वस्तु के सारतत्त्व का ग्रहण करते थे। वे केवल परिमुख नहीं, बल्कि अंतरंग भी देखते थे। वे सभी संघटक अंगों की उनकी अन्योन्य क्रिया प्रतिक्रिया में छानबीन करते थे। वे उनमें से सभी को अलग अलग करके उनके विकास के इतिहास का पता लगाते थे। उसके बाद वे वस्तु से उसके परिवेश पर जाते थे और उनकी अन्योन्य क्रिया का निरीक्षण करते थे। वे फिर वस्तु के उद्गम की ओर लौटते थे, उसमें घटित हुए परिवर्तनों, क्रम विकासों और उत्क्रमों का पता लगाते थे और अन्त में उसके दूरतम प्रभावों का जायजा लेने की ओर अग्रसर होते थे। वे वस्तु को एकल, उसी में और उसी के लिए उसके परिवेश से अलग नहीं, बल्कि एक अत्यन्त जटिल, निरन्तर गतिमान संसार को देखते थे।

मार्क्स उस पूरे संसार को उसकी बहुविध और निरन्तर परिवर्तनमान क्रिया और प्रतिक्रिया में उद्घाटित करना चाहते थे। फ्लाबेयर और गाकूर की परम्परा के साहित्यकार शिकायत करते हैं कि जो कुछ दृश्यमान है उसका ठीक-ठीक वर्णन करना कितना कठिन है। लेकिन जो कुछ वे वर्णन करना चाहते हैं वह मात्र ऊपरी सतह है, मात्र उनके मन पर पड़ी छाप की अनुभूति है। उनकी साहित्यिक कृति मार्क्स की कृति की तुलना में बच्चों का खेल है। यथार्थ को इतनी गहराई से समझने के लिए असाधारण

चिन्तन शक्ति की आवश्यकता थी और जो कुछ उन्होंने देखा और कहना चाहा उसके वर्णन के लिए भी विरल कला की आवश्यकता कुछ कम नहीं थी।

मार्क्स अपनी कृति से कभी संतुष्ट नहीं होते थे, उसमें बाद का हमेशा परिवर्तन करते रहते थे और निरन्तर पाते थे कि उनकी अभिव्यक्ति उनके चिंतन की ऊंचाई तक नहीं पहुंच पाती।

मार्क्स में मेधावी चिन्तक के दो गुण विद्यमान थे। वे विषय वस्तु को उसके संघटक भागों में विलक्षणतापूर्वक विच्छिन्न कर देते थे और बाद में उसके सारे ब्योरों तथा उसके विकास के विभिन्न रूपों के साथ, उनकी आन्तरिक परस्पर निर्भरता को उद्घाटित करते हुए, उसे पुनर्गठित कर देते थे। उनके तर्क विविक्त विचारण नहीं थे जैसा कि चिन्तन करने में असमर्थ अर्थशास्त्री दावा करते थे। उनकी प्रणाली ज्यामिति की प्रणाली नहीं थी जो अपनी परिभाषाएं परिपार्श्विक जगत से लेता है और अपने निष्कर्ष निकालने में यथार्थ की पूर्णतः उपेक्षा करता है। 'पूंजी' में हम वियुक्त परिभाषाएं अथवा वियुक्त सूत्र नहीं पाते, बल्कि यथार्थ का उच्चतम कोटि का सूक्ष्म क्रमबद्ध विश्लेषण पाते हैं जो अधिक से अधिक हल्के रंगों और छोटे से छोटे भेदों को सामने लाता है।

मार्क्स इस प्रत्यक्ष तथ्य के कथन से प्रारंभ करते हैं कि उस समाज की सम्पदा, जिसमें पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली का बोलबाला है, पण्यों के विराट संचयन में निहित है। इसलिए पण्य, जो गणितीय विविक्ति नहीं बल्कि मूर्त पदार्थ है, पूंजीवादी सम्पदा का घटक है, उसका प्रारंभिक बीज कोष है। मार्क्स इस पण्य को पकड़ लेते हैं उसे हर पहलू से पलटते हैं, यहां तक कि अन्दर-बाहर को उलटकर रख देते हैं और एक के बाद एक उसके रहस्यों को उद्घाटित करते जाते हैं, जिनसे आधिकारिक अर्थशास्त्री तनिक भी परिचित नहीं थे हालांकि वे रहस्य कैथोलिक धर्म के रहस्यों से अधिक बहुसंख्यक तथा गहन हैं। पण्य के प्रश्न की सर्वांगीण समीक्षा करके वे विनिमय में एक पण्य के साथ दूसरे पण्य के सम्बन्धों पर विचार करते हैं और फिर उसके उत्पादन तथा उस उत्पादन के विकास की ऐतिहासिक शर्तों पर आते हैं। वे पण्य के अस्तित्व के रूपों पर विचार करके दर्शाते हैं कि कैसे उनमें से एक रूप दूसरे में रूपान्तरित होता है कैसे एक आवश्यक रूप में दूसरे को जन्म देता है। वे व्यापारों के विकास की तार्किक गति को इतनी खूबी

ग्रार कमाल के साथ पेश करते हैं कि वह खुद मार्क्स की कल्पना प्रतीत हो सकती है, लेकिन फिर भी वह यथार्थ की देन है, पण्य की वास्तविक द्वंद्वात्मकता का तथ्य कथन है।

मार्क्स हमेशा घोर ईमानदारी से काम करते थे। उनके द्वारा पेश किया गया हर तथ्य, हर आंकडा श्रेष्ठतम अधिकारियों के हवाले से पुष्ट होता था। वे अमूल सूचनाओं से संतुष्ट नहीं होते थे। वे हमेशा खुद मूल स्रोत तक पहुंचते थे, चाहे उसमें कैसी भी कठिनाइयां क्यों न पेश आवें। किसी गौण तथ्य की पुष्टि के लिए भी वे ब्रिटिश म्युजियम में पुस्तक देखने जाते। उनके आलोचक यह कभी सिद्ध नहीं कर सके कि वे लापरवाह थे अथवा अपने तर्कों को ऐसे तथ्यों पर आधारित करते थे, जो जांच की कड़ी कसौटी पर खरे न उतर सकें।

मूलस्रोत तक पहुंचने की इसी आदत के अनुसार वे अक्सर ऐसे लेखकों को पढ़ा करते थे, जो बहुत कम प्रसिद्ध थे और जिन्हें उद्धृत करनेवाले अकेले वे ही थे। 'पूंजी' में इतने अधिक ऐसे उद्धरण हैं कि यह गुमान हो सकता है कि उन्होंने अपना व्यापक अध्ययन प्रदर्शित करने के लिए उन्हें जान बूझकर उद्धृत किया है। मार्क्स ऐसा कुछ नहीं चाहते थे। वे कहते थे, "मैं तो ऐतिहासिक न्याय बरतता हूं प्रत्येक को उसका प्राप्य प्रदान करता हूं।" वे अपने को उस लेखक का नामोल्लेख करने के लिए बाधित समझते थे, चाहे वह लेखक जितना भी नगण्य अथवा कम प्रसिद्ध क्यों न हो, जिसने किसी विचार को सबसे पहले अभिव्यक्त किया हो अथवा उसे अधिक से अधिक सही ढंग से निरूपित किया हो।

मार्क्स की साहित्यिक ईमानदारी भी उतनी ही जबर्दस्त थी, जितनी वैज्ञानिक ईमानदारी। केवल इतना ही नहीं कि उन्होंने कभी किसी ऐसे तथ्य का हवाला नहीं दिया, जिसका उन्हें पूरा यकीन न हो, बल्कि पूर्ण पूर्वाध्ययन के बिना किसी विषय पर वे बात करने की भी आजादी नहीं लेते थे। उन्होंने पुनर्लेखन और सावधान परिमार्जन द्वारा अधिकतम उपयुक्त रूप में निखार बिना एक भी कृति प्रकाशित नहीं कराई। किसी कच्ची चीज को लेकर जनता के सामने आने का विचार उन्हें असह्य था। अपनी पाण्डुलिपि को अच्छी तरह मांज बिना उसे दिखाना तो उनके लिए सच्ची यातना था। इस सम्बन्ध में तो वे इतने कठोर थे कि उन्होंने एक दिन मुझसे

कहा कि म अपनी पाण्डुलिपि को अपूर्ण छोडने से उसे जला देना बेहतर समझता हू।

उनके काम करने का ढग अक्सर उनके ऊपर ऐस कायभार लाद देता था जिनकी गुरता की कल्पना पाठक मुश्किल स कर सकत है। मसलन, 'पूजी' म ब्रिटिश फैक्टरी-कानून की बाबत लगभग २० पृष्ठ लिखने के लिये उहोने इगलैंड और स्कॉटलैण्ड के मजदूर आयोगो और फैक्टरी इन्सपक्टरो की ढेरो की सरकारी रिपोर्टें पढ डाली। उहोने उह शुरु से आखिर तक पढा जैसा कि उनम लगाए गये पेंसिल के निशानो से प्रगट है। उन रिपोर्टों को वे उत्पादन की पूजीवादी पद्धति के अध्ययन के लिये अत्यधिक महत्त्वपूण और प्रामाणिक दस्तावेज मानते थे। ये दस्तावेज जिन लागो द्वारा तयार की गई थी, उनके बारे म माक्स की राय इतनी ऊची थी कि उहे 'ब्रिटिश फक्टरी इन्सपेक्टरो जैसे निष्पक्ष और दृढ निश्चय आदमी यूरोप के किसी दूसरे देश मे पाने सभावना म सदेह था। उहोने 'पूजी की भूमिका म उनकी बहुत ! की है।

माक्स ने उही सरकारी रिपोर्टों से तथ्यगत सूचनाओ का एक भ प्राप्त कर लिया। इन रिपोर्टों की मुफ्त प्रतिया पानेवाले पालमेण्ट के अ सदस्य उहे केवल चादमारी के निशाने के लिय इस्तेमाल करते थे और छिद्रे प की सख्या से पिस्तौल की आघात शक्ति का हिसाब लगाते थे। कुछ दूस सदस्य उहे रद्दी के भाव बेच देते थे और यही सबसे अधिक समझदार की बात थी, जो वे कर सकते थ क्योकि इस तरह माक्स उहे लाग एकर म पुरानी किताबो और दस्तावेजो की दुकान से जहा वे उनकी तलाश म जाया करते थे, सस्ते दामो खरीद सकते थे। प्रोफेसर बीस्ली का कहना है कि माक्स ने ही ब्रिटेन की सरकारी जाच रिपोर्टों का अधिकतम उपयोग किया और दुनिया को उनकी जानकारी कराई। पर उहे यह मालूम नही था कि १८४५ से पहले ही ब्रिटेन के मजदूर वग की दशा पर अपनी पुस्तक लिखते समय एगेल्स ने इन सरकारी रिपोर्टों से ढरा दस्तावेजे थी।

और कमाल के साथ पश करत ह कि वह ख़ुद मार्क्स की कल्पना प्रनीत हो सकती ह, लेकिन फिर भी वह यथाथ की दन है, पण्य की वास्तविक द्वद्वात्मक्ता का तथ्य-कथन है।

मार्क्स हमेशा घोर ईमानदारी स काम करत थ। उनक द्वारा पश किया गया हर तथ्य हर आकडा श्रेष्ठतम अधिकारियो क हवाला स पुष्ट होता था। व अमूल सूचनाओ स सतुष्ट नही होत थे। व हमशा ख़ुद मूल स्रोत तक पहुचत थे चाहे उसम कसी भी कठिनाइया क्या न पेश आवें। किसी गौण तथ्य की पुष्टि के लिए भी व ब्रिटिश म्युज़ियम म पुस्तक दखन जात। उनके आलोचक यह कभी सिद्ध नहीं कर सक कि व लापरवाह थ अथवा अपने तर्कों का ऐसे तथ्यो पर आधारित करत थ, जो जाच की कडी कसौटी पर खरे न उतर सक।

मूलस्रोत तक पहुचन की इसी आदत के अनुसार वे अक्सर एस लखको का पढा करते थे, जो बहुत कम प्रसिद्ध थे और जिन्ह उद्धत करनवाल अकेले वे ही थे। 'पूजी' म इतन अधिक एस उद्धरण ह कि यह गुमान हो सकता है कि उन्होन अपना व्यापक अध्ययन प्रदर्शित करन के लिए उन्ह जान बूझकर उद्धत किया है। मार्क्स ऐसा कुछ नही चाहते थे। व कहते थ, "मैं तो ऐतिहासिक न्याय बरतता हू प्रत्यक को उसका प्राप्य प्रदान करता हू।' वे अपने को उस लेखक का नामोल्लेख करने के लिए बाधित समझत थे, चाह वह लेखक जितना भी नगण्य अथवा कम प्रसिद्ध क्या न हो, जिसने किसी विचार को सबसे पहले अभिव्यक्त किया हो अथवा उस अधिक से अधिक सही ढग से निरूपित किया हो।

मार्क्स की साहित्यिक इमानदारी भी उतनी ही ज़बदस्त थी, जितनी वज्ञानिक इमानदारी। केवल इतना ही नही कि उन्होंने कभी किसी ऐस तथ्य का हवाला नही दिया, जिसका उन्ह पूरा यकीन न हो, बल्कि पूण पूर्वाध्ययन के बिना किसी विषय पर वे बात करने की भी आज़ादी नहा लेते थे। उन्होने पुनर्लेखन और सावधान परिमाजन द्वारा अधिकतम उपयुक्त रूप मे निखारे बिना एक भी कृति प्रकाशित नही कराई। किसी कच्ची चीज को लेकर जनता के सामने आन का विचार उन्हे असह्य था। अपनी पाण्डुलिपि को अच्छी तरह माजे बिना उस दिखाना ता उनक लिए सच्ची यातना थी। इस सम्बध म तो व इतन कठोर थे कि उन्होने एक दिन मुझसे

कहा कि मैं अपनी पाण्डुलिपि को अपूर्ण छोडने से उसे जला देना बेहतर समझता हू।

उनके काम करने का ढग अक्सर उनके ऊपर ऐसे कायभार लाद देता था जिनकी गुरुता की कल्पना पाठक मुश्किल से कर सकते है। मसलन, 'पूजी' म ब्रिटिश फैक्टरी-कानून की बाबत लगभग २० पष्ठ लिखने के लिये उन्होंने इगलैंड और स्कॉटलैण्ड के मजदूर आयोगो और फैक्टरी इन्सपेक्टरो की ढेरो की सरकारी रिपोर्टें पढ डाली। उन्होंने उन्ह शुरू से आखिर तक पढा जसा कि उनम लगाए गये पेंसिल के निशानो से प्रगट है। उन रिपोर्टों को वे उत्पादन की पूजीवादी पद्धति के अध्ययन के लिये अत्यधिक महत्त्वपूण और प्रामाणिक दस्तावेजे मानते थे। ये दस्तावेज़े जिन लोगो द्वारा तयार की गई थी, उनके बारे मे मार्क्स की राय इतनी ऊची थी कि उन्ह "ब्रिटिश फैक्टरी इसपेक्टरो जैसे दक्ष निष्पक्ष और दढ निश्चय आदमी यूरोप के किसी दूसरे देश मे पाने की सभावना म सदेह था। उन्होंने 'पूजी' की भूमिका मे उनकी बहुत प्रशसा की है।

मार्क्स ने उन्ही सरकारी रिपोर्टों से तथ्यगत सूचनाओ का एक भडार प्राप्त कर लिया। इन रिपोर्टों की मुफ्त प्रतिया पानेवाले पालमेण्ट के अनेक सदस्य उन्ह केवल चादमारी के निशाने के लिये इस्तेमाल करते थे और छिदे पन्नो की सख्या से पिस्तौल की आघात-शक्ति का हिसाब लगाते थे। कुछ दूसरे सदस्य उन्हें रद्दी के भाव बेच देते थे और यही सबसे अधिक समझदारी की बात थी, जो वे कर सकते थे, क्योकि इस तरह मार्क्स उन्ह लाग एकर मे पुरानी किताबो और दस्तावेजो की दुकान से, जहा वे उनकी तलाश मे जाया करते थे, सस्ते दामो खरीद सकते थे। प्रोफेसर बीस्ली का कहना है कि मार्क्स ने ही ब्रिटेन की सरकारी जाच रिपोर्टों का अधिकतम उपयोग किया और दुनिया का उनकी जानकारी कराई। पर उन्ह यह मालूम नही था कि १८४५ से पहले ही ब्रिटेन के मजदूर वग की दशा पर अपनी पुस्तक लिखते समय एगेल्स ने इन सरकारी रिपोर्टो से ढेरो दस्तावेज़े ली थी।

उस हृदय को जानने और प्यार करने के लिये, जो विद्वान मार्क्स के सीने में धड़कता था उन्हें उस समय देखना जरूरी था, जब वे अपनी किताबें और नोटबुक बंद करके अपने परिवार के बीच, अथवा जब रविवार की शामों को अपने दोस्तों के साथ होते थे। उस समय वे बहुत ही खुशगवार संगी साबित होते थे – हाजिर दिमाग, मजाक-पसंद और दिल खोलकर हंसने में समर्थ। बातचीत के दौरान कोई पैनी उक्ति अथवा जवाबी फब्ती सुनकर उनकी झुकी हुई घनी भौंहों के नीचे काली-काली आंखें खुशी और व्यंग्यात्मक उपहास से चमक उठती थीं।

वे स्नेही, सदय और दयालु पिता थे। वे कहा करते थे कि "बच्चों को अपने माता पिता को शिक्षण करना चाहिए।" उनके प्रति उनकी बेटियों का प्यार असाधारण था, जिनके साथ उनके सम्बन्धों में शासक पिता की कहीं झलक तक भी नहीं थी। वे कभी उन्हें कोई हुक्म नहीं देते थे। अगर उनसे कुछ चाहते थे तो आभार के रूप में करने को कहते थे और अगर किसी काम के लिए मना करना चाहते थे, तो उन्हें महसूस कराते थे कि वह नहीं करना चाहिए। लेकिन इसके बावजूद किसी भी पिता को विरले ही उनके जैसे आज्ञाकारी बच्चे नसीब होंगे। बेटियां उन्हें अपना मित्र मानती थीं और वे उनसे साथी की तरह व्यवहार करती थीं। वे उन्हें पिता नहीं बल्कि "मूर" कहती थीं जो मजाकिया नाम उन्हें अपने सांवले रंग और गहरे काले बालों तथा दाढ़ी के कारण प्राप्त हुआ था। दूसरी तरफ कम्युनिस्ट लीग के सदस्य उन्हें १८४८ से पहले ही "पिता मार्क्स" कहते थे, जब वे अभी तीस साल के भी नहीं हुए थे।

मार्क्स अपने बच्चों के साथ खेलते हुए कभी-कभी घंटों बिता देते थे। पानी भरे बड़े टब में होनेवाले समुद्री युद्ध और उन कागजी रणपोतों का जलाया जाना उन्हें अब तक याद है, जो मार्क्स उनके लिए बनाया करते थे और फिर उनमें आग लगा देते थे तथा जिन्हें जलते देखकर बच्चे बहुत खुश होते थे।

रविवारों को उनकी बेटियां उन्हें काम नहीं करने देती थीं। वे पूरे दिन उनकी मरजी के तावे होते थे। अगर मौसम अच्छा होता, तो पूरा परिवार देहात में सैर के लिए जाता। रास्ते में वे किसी भटियारखाने में रुककर

रोटी और पनीर के साथ अदरक की शानदार बियर पीते। जब उनकी बेटियां छोटी थीं, तब वे उन्हें चलते-चलते अन्तहीन अद्भुत कहानियां गढ़कर सुनाते जाते। दूरी की अधिकता अथवा कमी के लिहाज से उन कहानियों की घटनाओं का विस्तार अथवा संक्षिप्त बनाते जाते, ताकि लम्बी सैर का फासला कम महसूस हो और श्रोता अपनी थकान भूल जाएं।

उनकी कल्पना अतुलनीय उर्वरा थी। उनकी प्रथम साहित्यिक कृतियां कविताएं थीं। उनकी पत्नी ने अपने पति द्वारा जवानी में लिखी गई कविताएं सावधानी से सजो रखी थीं, लेकिन कभी किसी को दिखाती नहीं थीं। मार्क्स के माता-पिता ने उनके साहित्यिक अथवा प्रोफेसर बनने का स्वप्न पाला था और यह समझते थे कि समाजवादी आन्दोलन में पड़कर और राजनीतिक अर्थशास्त्र को अपना विषय चुनकर, जिसे तत्कालीन जर्मनी में उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता था, वे अपने को हीन बना रहे हैं।

मार्क्स ने अपनी बेटियों से ग्राक्खसों* पर एक नाटक लिखने का वायदा किया था। दुर्भाग्य से वे अपनी बात रख न सके। वे, जो 'वर्ग-संघर्ष के सूरमा" कहलाते थे, प्राचीन इतिहास के वर्ग-संघर्ष के उस भयानक तथा शानदार उपाख्यान का किस प्रकार परिपाक करते, यह देखना दिलचस्प होता। मार्क्स की ढेरों योजनाएं थीं, जिन्हें अमली शक्ल कभी नहीं दी जा सकी। अन्य विषयों के अलावा वे तर्कशास्त्र और दर्शन का इतिहास जो नौजवानी में उनका प्रिय विषय था, लिखने का इरादा रखते थे। अपनी सारी साहित्यिक योजनाओं की तामीली और संसार को अपने मस्तिष्क में छिपी निधि का एक अंश भी भेंट करने के लिए उन्हें शतायु होना चाहिए था।

मार्क्स की पत्नी अधिक से अधिक सच्चे और पूरे अर्थ में जीवन पर्यन्त उनकी संगिनी रहीं। वे बचपन से एक दूसरे को जानते थे और एकसाथ बड़े हुए थे। सगाई के समय मार्क्स की उम्र केवल १७ साल थी।

---

*ग्राक्खस, टाइबेरियस (१६३-१३३ ई० पू०) तथा गयस (१५३-१२१ ई० पू०)—भ्राता, प्राचीन रोम के जन-प्रवक्ता जिन्होंने बड़ी भू-सम्पत्ति को सीमित करने के लिए कृषि कानूनों को अमल में लाने के लिए संघर्ष किया।—सं०

नौजवान जोडे को सात साल इन्तज़ार करना पडा, तब कहीं १८४३ मे उनका विवाह हुआ। उसके बाद वे कभी अलग नही हुए। मार्क्स की पत्नी उनसे कुछ ही समय पहले चल बसी। यद्यपि वे एक अभिजात जर्मन परिवार मे पैदा हुई, फिर भी उनमे बढकर समता की भावना कभी किसी मे नहीं रही होगी। उनके लिए सामाजिक हैसियत के आधार पर भेदभाव का अस्तित्व ही नहीं था। वे अपने घर मे और अपने दस्तरखान पर काम की वर्दी पहने मेहनतकशो का उसी विनम्रता और शिष्टता के साथ सत्कार करती थी जैसे कि वे राजा रईस हो। बहुत-से देशो के अनेक मजदूरो को उनकी मेहमान-नवाज़ी हासिल हुई और मुझे विश्वास है कि उनमे से किसी एक को भी यह गुमान न हुआ होगा कि अपने व्यवहार मे निराडम्बर, उन्मुक्त हार्दिकता प्रदर्शित करनेवाली यह महिला मातपक्ष से आर्गाइल के ड्यूक की वशजा थी और उनके भाई प्रशियाई बादशाह के मन्त्री थे। अपने काल की अनुगामिनी बनने के लिए उन्होने सब कुछ त्याग दिया था और घोर अभावो की घडी मे भी उन्हे ऐसा करने का पछतावा नही हुआ था।

उनका दिमाग साफ और रोशन था। अपने मित्रो के नाम लिखे उनके सहज सुगम पत्र ओजस्वी तथा मौलिक चिन्तन की अप्रतिम उपलब्धिया है। श्रीमती मार्क्स का पत्र पाना हर्ष पर्व होता था। जोहान फिलिप बेकर* ने उनके कई पत्र प्रकाशित कराए। निर्मम व्यगकार हाइने मार्क्स की वक्रोक्ति से डरते थे, और वे उनकी पत्नी की तीक्ष्ण तथा सूक्ष्म बुद्धि की बहुत सराहना करते थे। जब मार्क्स परिवार पेरिस मे रहता था, तब हाइने उनके घर नियमित रूप से आने-जानेवाला मे से थे। खुद मार्क्स अपनी पत्नी की बुद्धि और आलोचना शक्ति का इतना अधिक सम्मान करते थे कि उन्हे अपनी सारी पाण्डुलिपिया दिखाते थे और उनकी राय को बडा महत्त्व देते थे, जैसा कि उन्होने खुद १८६६ मे मुझसे कहा था। मार्क्स की पत्नी अपने पति की पाडुलिपियो की प्रेस के लिये नकले तैयार करती थी।

---

*बेकर, जोहान फिलिप (१८०६–१८८६) – जर्मन तथा अन्तर्राष्ट्रीय मज़दूर आन्दोलन के प्रख्यात नेता पहले इटरनेशनल के सदस्य, पेशे से मज़दूर ब्रशर मार्क्स तथा एगेल्स के मित्र और सहकर्मी। – स०

श्रीमती मार्क्स के कई बच्चे हुए। उनमे से तीन बहुत छोटी उम्र म उन कठिनाइया के दौर म मर गये जो १८४८ की क्रान्ति के बाद परिवार को झेलनी पडी। उस समय वे साहो स्क्वेयर की डीन स्ट्रीट पर दो छोटे छोटे कमरो म उत्प्रवासी जीवन बिता रहे थे। मैं केवल तीन बेटिया को ही जानता हू। १८६५ म जब मार्क्स से मेरा परिचय हुआ तब उनकी सबसे छोटी बेटी एल्योनोरा, अब श्रीमती एवलिंग लडका जैसे स्वभाव की मोहिनी बच्ची थी। मार्क्स कहा करते थे कि उनकी पत्नी ने उसे बेटी के रूप में जन्म देकर गलती की है। दूसरी दोना बटिया हर दृष्टि से पूर्ण भिन्न रूपता का अद्भुत नमूना थी। सबसे बडी, अब श्रीमती लान्गे, जो पिता की तरह सावला स्वस्थ रूप और आबनूसी बाल मिले थे। दूसरी, अब श्रीमती लफाग, मा की तरह थी गुलाबी रग, स्वर्णाभा बिखराते घुघराले केश कुण्डल, जिनमें मानो अस्तायमान सूर्य की रश्मिया निरतर दीप्तिमान रहती हो।

मार्क्स परिवार की एक और उल्लेखनीय सदस्य हेलन देमुत थी। किसान परिवार की यह महिला अपने बचपन म, श्रीमती मार्क्स की शादी के बहुत पहले ही उनकी सेविका हो गई थी और मालकिन की शादी के बाद भी उन्ही के साथ बनी रही। अपनी तनिक भी परवाह न करते हुए उसने मार्क्स परिवार के लिय अपना पूर्ण उत्सर्ग कर दिया था। वह अपनी मालकिन और उनके पति के सारे यूरोपी भ्रमणो मे उनके साथ और उनके निर्वासन म सहभागी रही। वह घर की सचमुच मगला प्रतिभा थी और अधिकतम कठिन परिस्थितियो म भी निस्तार का मार्ग ढूढ निकाल लेती थी। उसकी ही व्यवहारकुशलता, किफायतशारी और चतुराई की बदौलत मार्क्स परिवार को कम से कम जीवन की आवश्यकतम वस्तुओ का तीखा अभाव कभी नही झेलना पडा। ऐसा कुछ भी नही था जो वह न कर सकती हो। वह खाना पकाती थी, घर सभालती थी, बच्चो के कपडा की देखभाल करती थी, उनके वस्त्रा की कटाई सिलाई भी श्रीमती मार्क्स के साथ मिलकर करती थी। वह गृहसेविका और गृहस्वामिनी दोनो थी वह ही सारी गृहस्थी चलाती थी।

बच्चे मा की तरह उसे प्यार करते थे और उनके प्रति उसकी मातृत्व भावना उसे मा का अधिकार प्रदान करती थी। श्रीमती मार्क्स उसे दिली

दोस्त मानती थी और खुद मार्क्स उसके प्रति अत्यन्त मैत्रीभाव रखते थे। वे उसके साथ शतरंज खेलते थे और उससे अक्सर हार जाते थे।

मार्क्स परिवार के प्रति हेलेन की अगाध अनुरक्ति थी। इस परिवार के सदस्य जो कुछ भी करते थे, उसकी निगाह में वह अच्छा होने के सिवा और कुछ हो ही नहीं सकता था। उसे लगता था कि मार्क्स पर आक्षेप करने वाले मानो खुद उसी पर आक्षेप कर रहे हों। परिवार के साथ जिसकी भी घनिष्ठता हो गई, उसी के साथ उसने मातृवत संरक्षकीय स्नेह व्यवहार किया। ऐसा लगता था, जैसे उसने उन सभी को, पूरे परिवार को गोद ले लिया था। वह मार्क्स और उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद भी जीवित रही और तब एंगेल्स के घर जाकर उनकी चिन्ता करने लगी। जब वह लड़की थी, तभी से एंगेल्स को जानती थी और उनके प्रति मार्क्स परिवार जैसा ही अनुराग रखती थी।

कहना चाहिये कि एंगेल्स भी मार्क्स परिवार के सदस्य थे। मार्क्स की बेटियां उन्हें अपना दूसरा पिता मानती थीं। वे मार्क्स का प्रतिरूप थे। जर्मनी में बहुत दिनों तक उनके नामों को अलग नहीं किया गया और इतिहास में वे सदा ही जुड़े रहेंगे।

मार्क्स और एंगेल्स हमारे युग में पुराकालीन कवियों द्वारा वर्णित मित्रता के आदर्श का मूर्त रूप थे। युवावस्था से ही उन दोनों का एकसाथ और एक ही दिशा में विकास हुआ, उनके बीच विचारों तथा भावनाओं की घनिष्ठतम हार्दिकता रही और उन्होंने एक ही क्रान्तिकारी आन्दोलन में योग दिया।

वे जब तक एकसाथ रह सके, तब तक मिलकर काम करते रहे। अगर घटनाओं ने उन्हें प्राय: बीस साल के लिए अलग न कर दिया होता, तो वे संभवत: जीवन भर साथ ही काम करते रहते। लेकिन १८४८ की क्रान्ति की पराजय के बाद एंगेल्स को मैंचेस्टर जाना पड़ा और मार्क्स लन्दन में रहने के लिये बाध्य हुए।

फिर भी एक दूसरे को लगभग प्रति दिन पत्र लिखकर, वैज्ञानिक तथा राजनीतिक घटनाओं और स्वकृतियों पर अपनी रायें प्रगट करके उन्होंने अपना सम्मिलित बौद्धिक जीवन जारी रखा। ज्योंही एंगेल्स अपने काम से मुक्त हो पाए त्योंही वे मैंचेस्टर से लन्दन आ गए और अपने प्यारे मार्क्स से दस मिनट

की दूरी पर रहने लगे। १८७० से मार्क्स की मृत्युपर्यन्त कोई दिन ऐसा नही गुजरा, जबकि दोनो व्यक्ति, कभी एक के तो कभी दूसरे के घर एक दूसरे से मिले न हो।

वह दिन, जब एगेल्स ने सूचना दी कि मैं मैंचेस्टर से लन्दन आ रहा हूं, मार्क्स परिवार के लिए उत्सव पर्व बन गया। उनके प्रत्याशित आगमन की चर्चा बहुत पहले से होने लगी और उनके आगमन के दिन तो मार्क्स इतने उद्विग्न थे कि काम ही नही कर सके। दोनो मित्र साथ साथ धुआ उडाते, पीते पिलाते सारी रात उन घटनाओ का जिक्र करते रहे जो उनकी पिछली भेंट के बाद घटी थी।

अन्य किसी भी व्यक्ति की तुलना मे मार्क्स एगेल्स की राय की अधिक कद्र करते थे, क्योकि मार्क्स के ख्याल से एगेल्स ही वह व्यक्ति थे जो उनके सहकर्मी हो सकते थे। एगेल्स मे ही वे अपने पाठको का सामूहिक रूप देखते थे। वे एगेल्स को किसी बात के लिये कायल करने के निमित्त उनसे अपना कोई विचार मनवाने के निमित्त कोई भी कोशिश उठा नही रखते थे। मिसाल के लिए, अल्बिगोइया के राजनीतिक तथा धार्मिक युद्धो* से सम्बन्धित किसी गौण प्रश्न पर जो अब मुझे याद नही रहा एगेल्स की राय को बदलने के लिए आवश्यक तथ्य ढूढने की खातिर मैने उन्हे पूरी की पूरी पोथियां बार बार पढते देखा था। एगेल्स को अपनी राय से सहमत करके उन्हे बेहद खुशी होती थी।

मार्क्स को एगेल्स पर गर्व था। मुझसे उनके सारे नैतिक तथा बौद्धिक गुणो का बखान करने मे उन्हे आनन्द प्राप्त होता था। उन्होने एक बार मुझे एगेल्स से मिलाने के लिए ही मैंचेस्टर की यात्रा खास तौर से की। वे एगेल्स की बहुज्ञता की सराहना करते अघाते नही थे और उन्हे जरा सा

---

*अल्बिगोयन युद्ध (१२०६–१२२६)—ये युद्ध पोप के साथ मिलकर उत्तरी फ्रांस के सामंतो ने दक्षिण फ्रांस के विधर्मियो के विरुद्ध लडे और दक्षिण फ्रांस के अल्बी नगर के नाम पर अल्बिगोयन के नाम से प्रसिद्ध थे। अल्बिगोयन जो ठाठदार कैथोलिक संस्कारो तथा धार्मिक पदसोपानता के विरुद्ध थे, सामन्तवाद के विरुद्ध दक्षिणी नगरो की व्यापारिक-दस्तकार जनता का विरोध धार्मिक रूप मे प्रकट करते थे।—सं०

प्रचार करने लगे और यूरोप की गैर हड़ताल के दौरान मजदूरों को रुक रहने की प्रेरणा देने और उनकी मांगों की न्यायता को प्रदर्शित करने के लिए 'पूंजी' के उद्धरण पर्चों के रूप में प्रकाशित और वितरित किये गये।

मुख्य यूरोपीय भाषाओं—रूसी, फ्रान्सीसी और अंग्रेजी—में 'पूंजी' के अनुवाद हुए और जर्मन, इतालवी, फ्रांसीसी, स्पेनी और डच भाषाओं में उसके अनुकरण प्रकाशित किये गये। यूरोप या अमरीका में विरोधियों ने जब भी उसके सिद्धान्तों का खंडन करने के प्रयास किये, मार्क्सवादियों ने उन्हें ऐसे जवाब दिये कि उनके मुंह बन्द हो गये। आज 'पूंजी' वास्तव में मजदूर वर्ग की इंजील बन गई है, जैसा कि इंटरनेशनल की कांग्रेस ने उसका नामकरण किया था।

अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादी आन्दोलन में सरगर्मी से भाग लेने के कारण मार्क्स को वैज्ञानिक काम के लिए कम समय मिलता था। उनकी पत्नी और सबसे बड़ी बेटी श्रीमती लाँगे, की मृत्यु से भी उस काम की हानि हुई।

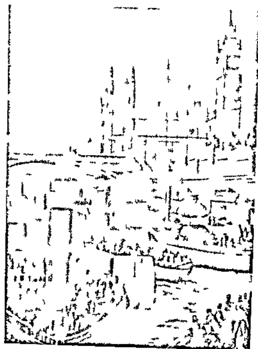
अपनी पत्नी के प्रति मार्क्स का प्रेम अगाध और प्रगाढ़ था। उनके सौंदर्य पर मार्क्स गर्व करते थे उससे आनन्द विभोर होते थे। पत्नी के विनम्र तथा कोमल स्वभाव से मार्क्स के चिन्तापूर्ण और अनिवार्यतः अभाव ग्रस्त क्रान्तिकारी समाजवादी जीवन का बोझ हल्का हुआ। जेनी की बीमारी ने, जो उन की मौत का कारण भी बनी, उनके पति की उम्र भी कम कर दी। उनकी लम्बी और दर्दनाक बीमारी के दौरान अनिद्रा के कारण तथा व्यायाम और ताजा हवा के अभाव में नैतिक तथा शारीरिक रूप से श्रान्त क्लान्त मार्क्स को निमोनिया हो गया जो आखिर उनकी जान लेकर ही रहा।

श्रीमती मार्क्स कम्युनिस्ट और भौतिकवादी रहते हुए ही २ दिसम्बर, १८८१ को इस संसार से विदा हुई। मृत्यु उनके लिए त्रासकारी नहीं थी। जब उन्होंने अपना अन्त निकट आते देखा तो बोलीं 'कार्ल, मेरी शक्ति जवाब दे रही है'। ये ही उनके अंतिम स्पष्ट उच्चरित शब्द थे।

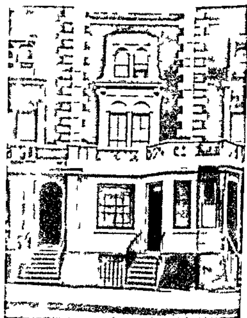
वे हाइगेट कब्रिस्तान में असंस्कारित ("धर्मच्युत' लोगों के लिए अलग की गई) भूमि में ५ दिसम्बर को दफनाई गई। उनके और मार्क्स के स्वभाव का ध्यान में रखते हुए इस बात की पूरी सावधानी बरती गयी थी कि उनकी अन्त्येष्टि को सार्वजनिक न बनाया जाए और केवल चन्द



मार्क्स का जन्म-नगर — त्रियर



लंदन, टेम्स



लंदन के ग्रैफ्टन टिरसवाला घर
जिसमे मार्क्स रहते थे

निकट के मित्र ही उनके चिरविश्राम-स्थल तक उनके साथ गए। मार्क्स के पुराने मित्र एंगेल्स ने अन्त्येष्टि भाषण किया।

पत्नी की मृत्यु के बाद मार्क्स का जीवन शारीरिक तथा नैतिक दुर्भाग्य की एक कड़ी बन गया, जिसे उन्होंने महान धैर्य के साथ झेला। वह मात्र भर बाद ही उनकी बड़ी बेटी, श्रीमती लांगे, की मृत्यु से और भी उग्र बन गया। वे टूट चुके थे और फिर कभी संभल नहीं सके।

वे ६५ साल की उम्र में १४ मार्च, १८८३, को काम करते हुए ही चल बसे।

पाल लफाग

एंगेल्स मेरी स्मृतियो में*

१८६७ म, जिस साल 'पूजी' का पहला खण्ड प्रकाशित हुआ, एंगेल्स से मेरा परिचय हुआ।

मार्क्स ने मुझसे कहा "अब चूकि तुम मेरी बेटी के वर हो, मुझे तुमको एंगेल्स से मिलाना चाहिए" और हम मैंचेस्टर के लिए रवाना हो गए।

एंगेल्स नगर के छोर पर एक छोटे-से मकान मे अपनी पत्नी और उनकी भतीजी के साथ रहते थे, जो उस समय छ या सात साल की थी। मकान के बिल्कुल पास ही खुला मैदान था। तब वे अपने पिता द्वारा स्थापित किसी कारोबार म हिस्सेदार थे।

मार्क्स की तरह एंगेल्स भी यूरोप मे क्रान्ति के विफल हो जाने पर लन्दन उत्प्रवासित हो गए और उन्ही की तरह व भी अपने को राजनीतिक प्रचार और वैज्ञानिक अध्ययन म लगाना चाहते थे।

लेकिन क्रान्ति के तूफान मे मार्क्स सपत्नीक अपनी जीविका के साधन खो चुके थे और एंगेल्स के पास भी जीवन निर्वाह के लिए कुछ नही रह गया था। इसलिए एंगेल्स को अपने पिता का निमन्त्रण स्वीकार करके मैंचेस्टर लौटना पडा। वहा उन्होने अपने पिता के कारोबार म फिर से क्लर्क का वही काम करने लगे, जो वे १८४३ म कर रहे थे और मार्क्स «New York

---

*१९०५ म प्रकाशित।—स०

Daily Tribune के लिए साप्ताहिक सम्वादपत्र लिखने लगे जिससे उनके परिवार की अनिवार्यतम ज़रूरतें मुश्किल से पूरी हो पाती थी।

तब से १८७० तक एंगेल्स एक प्रकार का दोहरा जीवन बिताते रहे। रविवार के अलावा बाकी दिन व १० बजे से ४ बजे तक कारोबार में लगे रहते। उन्हें कई भाषाओं में फ़र्म का पत्रव्यवहार निपटाना और स्टाक एक्सचेंज जाकर फ़र्म की ओर से काम करना होता था। नगर के केन्द्र में उनका औपचारिक निवास-स्थान था, जहा वे अपने कारोबारी मित्रों की आवभगत करते थे, लेकिन नगर के बाहरवाले अपने छोटे से मकान में ही अपने राजनीतिक तथा वैज्ञानिक मित्रों से मिलते-जुलते थे। इन मित्रों में रसायनविद शोर्लेम्मर तथा सैमुएल मूर भी शामिल थे, जिन्होंने बाद में 'पूजी' के पहले खण्ड का अंग्रेज़ी में अनुवाद किया।

एंगेल्स की पत्नी जो जन्म से आयरी और जोशीली देशभक्त थी मचेस्टर में रहनेवाले अनेक आयरिशों से निरन्तर सम्पर्क रखती और उन्हें उनके सारे षड्यन्त्रों की राई रत्ती खबर रहती। कई फीनियनों* को एंगेल्स के घर में पनाह मिली और उनकी पत्नी की बदौलत ही उनके एक नेता, जिन्होंने फासी के तख्ते पर ले जाए जानेवाले फीनियनो को छुड़ा ले जाने का प्रयास किया था, पुलिस के चगुल में बच पाये थे। एंगेल्स ने, जो फीनियनों के आन्दोलन में दिलचस्पी रखते थे, आयरलैण्ड में ब्रिटिश प्रभुत्व का इतिहास लिखने के लिए दस्तावेज़ें जमा की थी। उसके कुछ हिस्से उन्होंने लिख भी लिए होंगे, जिन्हें उनके कागज़ों में होना चाहिए।**

शाम को कारोबार की गुलामी से मुक्त होकर वे घर जाते थे। वे मचेस्टर के कारखानेदारों के कारोबारी जीवन में ही नहीं, बल्कि उनके जशनों और जलसों में भी भाग लेते थे। उनकी सभाओं, दावतों और

---

*फीनियन – १९वीं शताब्दी के छठे तथा आठवें दशकों में आयरलैण्ड के निम्नपूजीवादी क्रान्तिकारी, जो आयरलैण्ड की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष करते थे। – स०

**एंगेल्स की असमाप्त पाण्डुलिपि – 'आयरलैण्ड का इतिहास' और इसकी प्रारम्भिक सामग्री का कुछ भाग मार्क्स-एंगेल्स के अभिलेखों के अंग्रेज़ संस्करण के १०वें खण्ड में ५९–२६३ पृष्ठों पर छापा गया है। –

ग्रामोद क्रीडाग्रो मे शरीक होते थे। वे बढिया घुडसवार थे और उनके पास लोमडी के शिकार के लिए अपना खास घोडा था। जब प्राचीन सामन्ती प्रथा के अनुसार बडे और मझाले रईस ग्रमीर ग्रासपास के घुडसवारो को लोमडिया का शिकार करने के लिए निमत्रित करते थे, तब वे उनमे भाग लेने से कभी नही चूकते थे। शिकार का पीछा करने के मामले मे वे सदा खाइया, झुरमुटा तथा अन्य बाधाओ को लाघ जानेवाले तेज घुडसवारो की पहली पक्ति मे रहते। मार्क्स ने मुझसे एक बार कहा था "मुझे हमेशा यह खटका बना रहता है कि किसी दिन उनके दुघटना-ग्रस्त होने की बात सुनने को मिलेगी "

मुझे नही मालूम कि उनके पूजीपति वग के परिचितो को उनके जीवन के दूसरे पहलू का ज्ञान था अथवा नही, क्योकि अग्रेज इतने ग्रात्मसयत होते है कि अपने से असम्बधित चीज के प्रति बहुत ही कम जिज्ञासा प्रगट करते है। बहरहाल, वे उस व्यक्ति के महान बौद्धिक गुणो को तो नही ही जानते थे, जिसके साथ उनका हर रोज वास्ता पडता था, क्योकि एगेल्स उनके सामने अपने ज्ञान का बहुत ही कम प्रदशन करते थे। वह व्यक्ति, जिसका यूरोप के सबसे बडे विद्वान के रूप मे मार्क्स सम्मान करते थे, उनके लिए महज खुशमिजाज साथी था, जो अच्छी शराब की कद्र कर सकता था

एगेल्स सदा युवाजन की सगति पसद करते थे और बहुत ही मेहमान नेवाज व्यक्ति थे। लन्दन के कितने ही समाजवादी, ब्रिटेन मे गुजरनेवाले कितने ही साथी और सभी देशो के कितने ही उत्प्रवासी रविवारो का उनकी मेहमानी का लुत्फ उठाते। ऐसी शामो को वे सभी बहुत खुश होकर उनके घर से जाते। अपनी हाजिर दिमागी, अपनी मोहक जिन्दादिली और अपनी सतत खुशमिजाजी से वे उन शामो मे जान डाल देते थे।

* *

एगेल्स का ध्यान आते ही फौरन मार्क्स का ध्यान आता है और ऐसा ही इसके उलटे होता है। दोनो के जीवन इतने अधिक गुथ गये थे कि वे एक ही जीवन प्रतीत होते थे। फिर भी उनके व्यक्तित्व मे बहुत भेद था और वे न केवल बाह्य रूप मे, बल्कि मिजाज, चरित्र और चिन्तन तथा अनुभूति के मामले मे भी भिन्न थे।

१८४२ के नवम्बर के अन्त मे उनका परिचय हुआ जब एगेल्स «*Rheinische Zeitung*» के सम्पादकीय कार्यालय म मार्क्स से मिले। सेंसर द्वारा उस अखबार का प्रकाशन स्थगित कर दिए जाने के बाद मार्क्स ने शादी की और फ्रान्स चले गए। सितम्बर १८४४ मे एगेल्स चन्द दिना तक परिस म उनके साथ रहे। एगेल्स द्वारा लिखित मार्क्स की जीवनी से पता चलता है कि «*Deutsch Franzosische Jahrbucher*» के लिए सयुक्त काय करने के समय से उनका आपसी पत्राचार प्रारभ हुआ और उसी समय उनके बीच सहयोग का सूत्रपात हुआ, जो मार्क्स की मत्यु तक चलता रहा। १८४५ के शुरू म मार्क्स गिजो के मन्त्रिमण्डल द्वारा प्रशियाई सरकार की माग पर फ्रास से निर्वासित कर दिए गए और ब्रसेल्स चले गए। कुछ ही दिना बाद एगेल्स भी वहा पहुच गए और जब १८४८ की क्रान्ति ने «*Rheinische Zeitung*»* को पुनरुज्जीवित कर दिया तब एगेल्स फिर मार्क्स के साथ उसके सम्पादन के लिए आ गए और मार्क्स की अनुपस्थिति मे पत्र का सचालन करते थ।

अपनी बौद्धिक वरिष्ठता के बावजूद सम्पादकीय मडल के साथिया की दष्टि म, जो मेधा, क्रान्तिकारी भावना तथा पुरुषाथ से भरे हुए युवक थ, एगेल्स को मार्क्स के समान प्रतिष्ठा प्राप्त नही थी। मार्क्स ने मुझे बताया कि एक बार विएना के दौरे से लौटने पर उन्होंने सम्पादकीय मडल म फूट और झगडा पाया, जिसे एगेल्स तय नही करा सके थ। विरोध अत्यन्त तीव्र था और सम्पादक मण्डल मे फिर से शांति-स्थापन के लिए मार्क्स को अपनी सम्पूण नीतिकुशलता का इस्तेमाल करना पडा।

मार्क्स पैदाइशी नेता थे। उनके सम्पक म आनेवाला हर व्यक्ति उनसे प्रभावित हो जाता था। एगेल्स इस बात को स्वीकार करनेवाला मे प्रथम थे। वे मुझसे अक्सर कहते थे कि मार्क्स अपने चरित्र की स्पष्टता तथा दढता द्वारा अपनी युवावस्था स ही हर किसी पर अपनी छाप डाल देते थे और अपने क्षेत्र के बाहरवाले मामला मे भी सभी के पूणविश्वासभाजन सच्चे नेता थे, जैसा कि निम्न तथ्य से सिद्ध होता है।

---

* अभिप्राय है «*Neue Rheinische Zeitung*» से, जो १८४८–१८४९ कालोन मे निकलता था। मार्क्स उसके प्रधान सम्पादक थे।—स०

वोल्फ जिन्हें 'पूंजी' का पहला खण्ड समर्पित किया गया था, एक बार मैंचेस्टर में अपने घर पर बहुत बीमार हो गए। डाक्टरों ने सारी उम्मीद छोड दी थी, लेकिन एंगेल्स और उनके मित्र इस भयानक निर्णय पर विश्वास नहीं कर सके और उन्होंने एकमत से मार्क्स की राय जानने के लिए उन्हें तार देकर बुलाने का निर्णय किया

मार्क्स और एंगेल्स को एकसाथ मिलकर काम करने की आदत थी। यद्यपि एंगेल्स स्वयं वैज्ञानिक काम की अचूकता में बेहद निष्ठा रखते थे, फिर भी कभी-कभी मार्क्स की अतिसतर्कता पर परेशान हो उठते थे, क्योंकि मार्क्स दसियों ढंग से अपनी बात को सिद्ध किए बिना एक वाक्य भी नहीं लिखते थे।

१८४८ की क्रान्ति की विफलता के बाद दोनों मित्रों को जुदा होना पडा। एक मैंचेस्टर चले गए और दूसरे लन्दन में रहे। लेकिन एक दूसरे के विचारों में निरंतर बसे रहे और बीस साल तक प्रतिदिन, अथवा लगभग प्रतिदिन पत्रों द्वारा राजनीतिक घटनाओं की बाबत अपनी धारणाओं तथा विचारों और अपने अध्ययन की प्रगति की एक दूसरे को सूचना देते रहे। यह पत्रव्यवहार आज तक सुरक्षित है।

कारोबारी जीवन से मुक्ति पाते ही एंगेल्स ने मैंचेस्टर छोड दिया और झटपट लन्दन आ गए, जहां मेटलैण्ड पार्क रोड वाले मार्क्स के निवासस्थान से दस मिनट की दूरी पर रीजेण्ट पार्क रोड पर रहने लगे। हर रोज़ लगभग एक बजे वे मार्क्स से मिलने जाते थे और अगर मौसम अच्छा होता और मार्क्स की तबीयत होती तो दोनों हैम्पस्टेड हीथ पर घूमने निकल जाते, अन्यथा मार्क्स के अध्ययनकक्ष में एक कोने से दूसरे कोने तक विपरीत दिशाओं में टहलते हुए घंटा दो घंटे बातें करते रहते।

मुझे अल्बिगोइया के सम्बन्ध में एक बहस याद है जो कई दिनों तक चलती रही। उस समय मार्क्स मध्य युग में यहूदी और ईसाई महाजनों की भूमिका का अध्ययन कर रहे थे। अपनी मुलाकातों के मध्यान्तर काल में वे विवादग्रस्त प्रश्न का अध्ययन करते थे, ताकि एक राय पर पहुंच सकें। उनके लिए उनके विचारों और काम की ओर कोई आलोचना उतना महत्व नहीं रखती थी, जितनी उनकी आपसी आलोचना। वे एक दूसरे के सम्बन्ध में ऊंची से ऊंची राय रखते थे।

मार्क्स एंगेल्स के ज्ञान की सार्वभौमिकता तथा अद्भुत बहुमुखी समझ बूझ, जिससे उनके लिए एक से दूसरे विषय पर पहुचना बहुत आसान होता था, सराहना करते थकते नही थे। दूसरी तरफ एंगेल्स मार्क्स की विश्लेषण सश्लेषण शक्ति पर मुग्ध थे।

एक दिन एंगेल्स ने मुझसे कहा, "पूजीवादी उत्पादन पद्धति तो स्वभावत समझा जाता तथा उसकी व्याख्या तो बहरहाल स्वभावत की ही जाती और उसके विकास के नियम उदघाटित एव स्पष्ट तो होते ही, लेकिन उसम बहुत समय लगता और वह जहा-तहा से जुडा-जुडाया तथा पक्का लगा काम होता। सभी आर्थिक प्रवर्गों की द्वद्वात्मक गति का अनुसरण करन, उनके विकास की अवस्थाओ को निर्धारक कारणो के साथ जोडन और अर्थशास्त्र की उस सैद्धान्तिक इमारत को निर्मित करने म केवल मार्क्स ही समर्थ ह, जिसके अलग अलग हिस्से एक दूसरे को सहारा देते ह निर्धा रित करते है।"

केवल उनके दिमाग ही साथ मिलकर काम नही करते थे, बल्कि उनके बीच अत्यधिक स्नेहमय अनुराग भी था। उनम से प्रत्येक यह ध्यान रखता कि दूसरे को किस बात स खुशी होगी, उन्ह एक दूसरे पर गर्व था। एक दिन मार्क्स को उनके हैम्बग वाले प्रकाशक का पत्र मिला, जिसमे उन्होने लिखा था कि एंगेल्स उनसे मिले थे और एंगेल्स जसे माहक व्यक्ति से उनकी पहले कभी भेंट नही हुई थी। मार्क्स खुशी से कह उठे, "म जानना चाहता हू कि किसने फ्रेड को उतना ही प्रीतिकर नही पाया है, जितना विद्वान!'

उनका सब कुछ साझा था धन भी, मान भी। जब मार्क्स «*New York Daily Tribune*» के सम्वाददाता हुए, तब वे अभी अग्रेजी सीख ही रहे थे। इसलिए एंगेल्स उनके लेखो का अनुवाद करते थे, यहा तक कि जरूरत पडने पर खुद ही लिख भी देते थे। इसी तरह, जब एंगेल्स अपना 'ड्यूहरिग मतखण्डन' तैयार कर रहे थे, तब मार्क्स ने अपना काम स्थगित करके अर्थशास्त्र पर एक निबन्ध लिखा, जिसके एक अश का एंगेल्स ने अपनी पुस्तक मे इस्तेमाल किया और इस बात को सार्वजनिक रूप से स्वीकारा।

एगेल्स पूरे मार्क्स परिवार के मित्र थे। मार्क्स की बेटिया उनके लिए अपनी बच्चियो जैसी थी और उन्हे अपना दूसरा पिता कहती थी। यह मित्रता मार्क्स की मृत्यु के बाद भी कायम रही।

मार्क्स की मृत्यु के बाद मात्र एगेल्स ही ऐसे व्यक्ति थे, जो उनकी पाण्डुलिपिया का पारायण करके उनकी शेष रचनाओं को प्रकाशित करा सकते थे। उन्होने 'पूजी' के अतिम दोनो खण्डो को प्रकाशनार्थ तैयार करने म अपना पूरा समय लगाने की खातिर विज्ञाना का सामान्य दर्शन लिखने का काम उठाकर एक तरफ रख दिया, जिसे वे दस साल से अधिक अर्से से कर रहे थ और जिसके लिए उन्होने सभी विज्ञाना तथा उनकी नवीनतम प्रगति का सिंहावलोकन किया था।

एगेल्स परम अध्ययन प्रिय थे। उनकी दिलचस्पी सभी क्षेत्रो म थी। क्रान्ति की विफलता के बाद वे १८४६ मे एक बादबानी जहाज से जेनोआ से ब्रिटेन गए, क्योकि स्विट्जरलैण्ड से फ्रास के रास्ते जाना उन्होने खतरे स खाली नही समझा। इस अवसर से लाभ उठाकर उन्होने जहाजरानी के प्रश्नो का अध्ययन किया। इस यात्रा के दौरान वे एक डायरी म सूर्य की स्थिति म होनेवाले परिवर्तनो, हवा के रुख, समुद्र की अवस्था आदि के बारे म लिखते रहे। वह डायरी जरूर उनके कागजात मे होगी, क्योकि जरदबाज और सदैव गतिशील एगेल्स अनूठा बुढिया के समान व्यवस्थानिष्ठ थे। वे हर चीज सुरक्षित रखते थे और उस अत्यधिक सतर्कता स सूची म लिख लेते थे।

भाषाविज्ञान और युद्ध कला उनके अधिकतम प्रिय विषय थे। इन विषयो को उन्होने कभी भी छोडा नही और सदा उनकी प्रगति का अनुसरण करते रहे। वे छोटी स छोटी तफ्सील को भी महत्त्वपूर्ण मानते थे। मुझे याद है कि स्पेनी भाषा के स्वराघात सीखने के लिए वे कैसे स्पेन से आए अपने मित्र मेसा के साथ 'रोमान्सेरो' का ऊचे ऊचे पाठ किया करते थे। यूरोपीय भाषाओ, यहा तक कि बोलियो, का उनका ज्ञान आश्चर्यपूर्ण था।

जब कम्यून के पतन के बाद म इटरनेशनल की स्पेनी राष्ट्रीय समिति के सदस्यो से मिला, तो उन्होने मुझसे कहा कि कोई "एजल" नाम के व्यक्ति मेरी जगह जनरल कौसिल के स्पेन-सचिव बनाए जा रहे ह और वे शुद्ध कास्टाइली बोली म लिखते ह। "एजल" स उनका तात्पर्य एगेल्स से ही था, क्योकि स्पेनी भाषा मे इस नाम का ऐसा ही उच्चारण होता



फ्रेडरिख एंगेल्स, १८३९

Alte

Geschichte

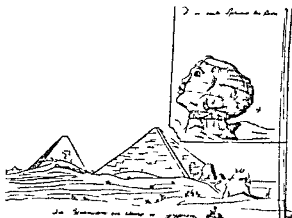
nach dem Vortrage

Herrn Dr Clausen

FR ENGELS







एगेल्स की स्कूली कापिया मे प्राचीन इतिहास की झाकिया



फ्रेडरिक एंगेल्स



ब्रसेल्स

है। जब मैं लिस्बन गया, तो पुतगाली राष्ट्रीय गमिनि के सचिव फ्राशिया न मुझसे वहा कि उन्हे एगेल्स से विशुद्ध पुर्तगाली म पत्र प्राप्त हुए है। स्पेनी और पुतगाली की आपसी तथा इतालवी भाषा के साथ, जिसमे भी एगेल्स उतने ही दक्ष थे, समानताओ और सूक्ष्म भिन्नताओ को देखते हुए यह एक बहुत बडी उपलब्धि थी।

अपने साथ पत्र-व्यवहार करनेवालो को उनकी मातृभाषा मे पत्र लिखना एगेल्स के लिये एक प्रकार की आत्मतुष्टि था। वे लाव्रोव* को रूसी म, फ्रासीसियो को फ्रासीसी म, पोलो को पोलिश म और इसी प्रकार अन्य को उनकी मातृभाषाओ मे पत्र लिखते थे। व स्थानीय बोलियो म लिखित चीजें पढकर आनन्दित होते थे। उन्होने बियामी** की लोकप्रिय कृतियो को उनके प्रकाशित होते ही मगा लिया। ये कृतिया मिलान की बोली मे थी।

रैम्सगेट के समुद्र तट पर ब्राज़ीली जनरल की वर्दी म एक दढियल बौना खास तमाशा बन रहता था, आम तौर पर दर्शको की भीड उसे घेर रहती थी। एगेल्स ने पहले तो उससे पुतगाली म बात की, फिर स्पेनी म। लेकिन जवाब नदारद। अन्त म "जनरल" न कुछ एक दो शब्द कहे। एगेल्स कह उठे, "अरे, ये ब्राज़ीली महाशय तो आयरी है!" – और उन्होने "जनरल" का उनकी ही बोली म अभिनन्दन किया। अपनी बोली सुनकर उस बेचारे की खुशी से आख छलछला आई।

कम्यूनवाले एक उत्प्रवासी न आवेश के क्षणो म एगेल्स के हकलाने पर मजाक करते हुए कहा, "एगेल्स बीस भाषाओ म हकलाते हैं।"

एगेल्स ज्ञान के किसी भी क्षेत्र के प्रति उदासीन नही रहे। अपन जीवन के अन्तिम वर्षों मे व प्रसूति विज्ञान पर पुस्तके पढने लगे, क्योकि

---

*लाव्रोव, प्योत्र लाव्रोविच (१८२३–१९००) – रूसी सावजनिक लेखक, नरोदवादी, पहले इटरनेशनल के सदस्य, परिस कम्यून मे भाग लेनेवाले। – स०

**बियामी, एनरीको (१८४६–१९२१) – इटली मे राष्ट्रीय मुक्ति आदोलन मे भाग लेनेवाले, सावजनिक लेखक तथा प्रकाशक। – स०

उनके घर मे रहनेवाली श्रीमती फैबगर* डाक्टरी की परीक्षा दन की तयारी कर रही थी।

'मानवजाति के लिए काम करने की वात न सोचकर" मात्र ग्रानद क लिए इतने सारे विषया पर ध्यान विखराने के लिए मार्क्स उन्हे झिडका करते थे। एगेल्स का तुर्की वतुर्की जवाव होता था, "कृपि सम्बधी उन रूसी प्रकाशनो को जलाकर मुझे खुशी होगी, जो तुम्हे वरसो से 'पूजी' को पूरा नही करने दे रहे है।"

उस समय मार्क्स रूसी भाषा सीख रहे थे, क्योकि उनके एक पीटसवर्गी मित्र डेनियलसन ने उनके पास रूस म कृपि की ग्रवस्था सम्बधी जाच पडताल की अनेक मोटी मोटी रिपोर्टें भेज दी थी, जिनका प्रकाशन रूसी सरकार न इसलिए वर्जित कर दिया था कि उनसे उस समय की भयानक स्थिति पर प्रकाश पडता था।

किसी भी विषय की छोटी से छोटी तफसील तक पारगत हुए विना एगेल्स की ज्ञान पिपासा शान्त नही होती थी। उनके ज्ञान की विविधता ग्रौर व्याप्ति ग्रौर साथ ही उनके सक्रिय जीवन को ध्यान म रखनेवाले हर व्यक्ति का इस वात स ग्राश्चय होता है कि एगेल्स, जो किसी भी रूप म अध्ययन कक्षी विद्वान नही थे, कैसे ग्रपने मस्तिष्क म इतना ज्ञान भडार भर सके। सटीक ग्रौर सवग्राही स्मरण शक्ति के साथ-साथ उनमे काम की ग्रसाधारण गति थी तथा वे उतनी ही अधिक ग्राश्चयजनक सुगमता से सव कुछ समझ भी जाते थे।

वे शीघ्रता ग्रौर सरलता से काम करते थे। उनके दो बडे-बडे, रोशन अध्ययनकक्षा म, जिनकी दीवारो के साथ किताबो की ग्राल्मारिया सजी हुई थी, कागज का एक टुकडा भी फश पर नही होता था ग्रौर उनकी मेज़ पर की दस वारह किताबो को छोडकर वाकी सभी किताबें ग्रपने स्थान पर होती थी। वे कमरे किसी विद्वान के ग्रध्ययनकक्ष की ग्रपेक्षा दीवानखाना जसे अधिक लगते थे।

वे ग्रपनी वेशभूषा का भी वहुत ध्यान रखते थे। वे सदा लक-दक ग्रौर चुस्त-दुरस्त रहते थे। सदा ऐसे दिखाई पडते थे, मानो प्रशिया की सेना

---

*फ्रेवगर लुईजा, या काउत्स्की लुईजा—ग्रास्ट्रियाई समाजवादी, १८६० से एगेल्स की सेक्रेटरी।—स०

म अपनी एकवर्षीय स्वेच्छित सेवा के दिना की तरह परेड पर जाने को तयार हो। मैं दूसरे किसी भी ऐसे आदमी को नही जानता, जो इतने अधिक दिनो तक वही पोशाकें पहनता रहे और उनमे न तो सिकुडन पडने दे और न उन्हे गदा होने दे। जहा तक उनकी निजी आवश्यकताओं का सम्बध था, वे किफायतशार थे और केवल उन्ही चीजो पर पैसे खर्च करते थे जिन्हे नितात आवश्यक समझते थे। लेकिन पार्टी और पार्टी के जरूरतमद साथियो के लिए उनकी उदारता की कोई सीमा नही थी।

* * *

पहले इटरनेशनल की स्थापना के समय एगेल्स मैन्चेस्टर म रहते थे। उन्होने इटरनेशनल को आर्थिक सहायता दी और जनरल कौंसिल द्वारा स्थापित उसके अखबार «*The Commonwealth*» के लिए लेख लिखे। फ्रासीसी-प्रशियाई युद्ध की घोषणा और अपने लदन आ जाने के बाद* वे अपने सर्वलक्षित उत्साह के साथ इटरनेशनल के काम म लग गए।

युद्ध के सम्बध म उनकी प्रमुख दिलचस्पी सैनिक दाव पेंच म थी। वे विरोधी सेनाओ की रोज रोज की गतिविधि का अनुशीलन करते थे और एकाधिक बार उन्होने जर्मन महाकमान के अगले कदम की पूर्वघोषणा भी कर दी थी, जैसा कि «*Pall Mall Gazette*»** म प्रकाशित उनके लेखो से प्रगट है। उन्होंने सेदान से दो दिन पहले नेपोलियन की सेना के घिर जाने की भविष्यवाणी की थी।*** प्रसगवश कह कि इन भविष्यवाणियो के कारण, जिनकी ब्रिटिश अखबारो मे बहुत चर्चा हुई थी, मार्क्स की सबसे बडी बेटी जेनी ने उन्हे "जनरल" की उपाधि दे दी। फ्रासीसी साम्राज्य के पतन के बाद एगेल्स की एकमात्र कामना और एकमात्र आशा फ्रासीसी जनतत्र की विजय थी। एगेल्स और मार्क्स का कोई पितदेश नही था। मार्क्स के शब्दो मे वे दोनो ही विश्व नागरिक थे।

---

*सितम्बर, १८७० मे।—स०

**«*Pall Mall Gazette*»—अग्रेजी समाचारपत्र, १८६५ म लन्दन से प्रकाशित।—स०

***१ सितम्बर, १८७० को सेदान की लडाई मे नेपोलियन तृतीय समेत फ्रासीसी सेना घेरे मे ले ली गई और २ सितम्बर को उसने आत्मसमर्पण किया।—स०

उनके घर मे रहनेवाली श्रीमती फ्रैबगर* डाक्टरी की परीक्षा देने की तैयारी कर रही थी।

"मानवजाति के लिए काम करने की बात न सोचकर" मात्र आनन्द के लिए इतने सारे विषयो पर ध्यान बिखराने के लिए मार्क्स उन्हे चिढाया करते थे। एगेल्स का तुर्की बतुर्की जवाब होता था, "कृषि सम्बन्धी उन रूसी प्रकाशनो को जलाकर मुझे खुशी होगी, जो तुम्हे बरसो से 'पूजी' को पूरा नही करने दे रहे हैं।"

उस समय मार्क्स रूसी भाषा सीख रहे थे, क्योकि उनके एक पीटसबर्गी मित्र डेनियलसन ने उनके पास रूस मे कृषि की अवस्था सम्बन्धी जाच पडताल की अनेक मोटी मोटी रिपोर्टें भेज दी थी, जिनका प्रकाशन रूसी सरकार ने इसलिए वर्जित कर दिया था कि उनसे उस समय की भयानक स्थिति पर प्रकाश पडता था।

किसी भी विषय की छोटी से छोटी तफसील तक पारगत हुए बिना एगेल्स की ज्ञान पिपासा शान्त नही होती थी। उनके ज्ञान की विविधता और व्याप्ति और साथ ही उनके सक्रिय जीवन को ध्यान मे रखनेवाले हर व्यक्ति को इस बात से आश्चर्य होता है कि एगेल्स, जो किसी भी रूप मे अध्ययन कक्षी विद्वान नही थे कैसे अपने मस्तिष्क मे इतना ज्ञान भडार भर सके। सटीक और सर्वग्राही स्मरण शक्ति के साथ साथ उनमे काम की असाधारण गति थी तथा वे उतनी ही अधिक आश्चर्यजनक सुगमता से सब कुछ समझ भी जाते थे।

वे शीघ्रता और सरलता से काम करते थे। उनके दो बडे-बडे, रोशन अध्ययनकक्षो मे, जिनकी दीवारो के साथ किताबो की आल्मारिया सजी हुई थी, कागज का एक टुकडा भी फर्श पर नही होता था और उनकी मेज पर की दस बारह किताबो को छोडकर बाकी सभी किताबे अपने स्थान पर होती थी। वे कमरे किसी विद्वान के अध्ययनकक्ष की अपेक्षा दीवानखाना जैसे अधिक लगते थे।

वे अपनी वेश भूषा का भी बहुत ध्यान रखते थे। वे सदा चक-दक और चुस्त-दुरुस्त रहते थे। सदा ऐसे दिखाई पडते थे, मानो प्रशिया की सेना

---

*फ्रैबगर लुईज़ा, या काउत्स्की लुईज़ा—आस्ट्रियाई समाजवादी, १८६० से एगेल्स की सेक्रेटरी।—स०

विल्हेल्म लीब्कनेख्त

मार्क्स के संस्मरणों* के कुछ अंश

मुझसे सैकडा बार मार्क्स और उनके साथ अपने निजी सम्बन्ध की बाबत लिखने का तकाजा किया गया है और मैंने हर बार इनकार कर दिया है। *मैंने मार्क्स के प्रति गहरे सम्मान के कारण ही ऐसा किया था,* क्योंकि शायद काम मेरे बस का नही था या समयाभाव के कारण उनकी बाबत जल्दबाजी मे, बेढंगे तरीके से लिखना मार्क्स की स्मृति के लिए अपमानकर होता।

इसपर यह आपत्ति उठाई गई कि सरसरी तौर से अंकित शब्द चित्र का भी बेढंगा अथवा उतावली भरा होना आवश्यक नही है, कि मैं जो बात बता सकता हू वह कोई और नहीं बता सकता, कि जो कुछ भी मार्क्स की बेहतर जानकारी मे हमारे मजदूरों और हमारी पार्टी की सहायता कर सकता है, वह निर्विवाद रूप से मूल्यवान है। तो या तो जो कुछ मुझे मालूम है उसे चाहे अपूर्ण ढंग से ही कहूं या बिलकुल मौन रहूं? जाहिर है कि पहली चीज ही बेहतर है। इस तरह मुझे अन्त मे राजी होना पडा

---

*लीब्कनेख्त, विल्हेल्म (१८२६–१९००) – जर्मन तथा अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन के प्रख्यात नेता, जर्मन सामाजिक-जनवाद के एक संस्थापक तथा नेता, मार्क्स और एंगेल्स के मित्र और सहकर्मी। संस्मरण १८९६ मे प्रकाशित किये गये। – सं०

वैज्ञानिक, «*Rheinische Zeitung*» के सम्पादक, «*Deutsch Französische Jahrbücher*» के सहसंस्थापक, 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के सहलेखक «*Neue Rheinische Zeitung*» के सम्पादक तथा 'पूजी' के रचयिता के रूप मे मार्क्स समाज के है उन मार्क्स की बाबत लिखना मेरे लिए मूर्खता होगी, क्योकि मेरे लिए अपने तात्कालिक दैनिक कामो से जितना थोडा समय निकाल सकना सभव था, उतने समय मे उस तरह की चीज नही लिखी जा सकती थी। उसके लिए गभीर वैज्ञानिक कार्य की आवश्यकता होती। लेकिन उसके लिए मै समय कहा से पाता?

इसलिए इस सक्षिप्त शब्द चित्र मे वैज्ञानिक तथा राजनीतिज्ञ मार्क्स का जिक्र मै केवल प्रसगवश और जीवन वृत्त के सिलसिले मे ही करूगा। मार्क्स का वह पक्ष हर किसी के लिए स्पष्ट है। मै मार्क्स के उस मानवीय रूप को ही दर्शाने की चेष्टा करूगा, जैसा कि मै खुद उसे जानता था।

१

मार्क्स के साथ पहली भेंट

मार्क्स की दोनो बडी बेटियो के साथ, जो उस समय ७ और ६ साल की थी, मेरी मित्रता मेरे लदन पहुचने के चद दिनो बाद शुरू हुई। मै "आजाद" स्विटजरलैण्ड की जेल से छूटकर गुजरने की अनुमति लिए हुए फ्रास के रास्ते वहा पहुचा था। मार्क्स परिवार से मेरी भेंट कही लदन के पास, मुझे याद नही कि ग्रीनविच मे अथवा हैम्पटन कोर्ट मे, मजदूरो की कम्युनिस्ट शिक्षा समिति* के ग्रीष्मोत्सव के अवसर पर हुई।

"पिता मार्क्स", जिन्हे मैने पहले कभी नही देखा था, पनी नजर से मेरी आखो मे झाकते और मेरे सिर को गौर से जाचते हुए तत्काल मेरी कठोर परख करने लगे

---

*मजदूर शिक्षा समिति १८४० मे लदन मे स्थापित हुई। १८४७-१८५० मे तथा १९वी शताब्दी के सातवे तथा आठवे दशको मे वह मार्क्स के अत्यधिक प्रभाव मे थी।—स०

परख सकुशल समाप्त हुई और मैं उस सघन काले केश मडित सिहवत शाशवाले आदमी की तीक्ष्ण दृष्टि झेल गया। तब शुरू हुइ दिलचस्प और हसी-खुशी की बात और हम शीघ्र ही उल्लसित उत्सव-समाराही जमघट के बिलकुल केन्द्र मे पहुच गए, जिसम मार्क्स सबसे अधिक जिदादिला मे दिखाई पड रहे थे। फौरन श्रीमती मार्क्स, नौउर्मी से ही उनकी वफादार सहायिका हेलेन और सभी बच्चो से मेरा परिचय कराया गया। उस दिन से मैं मार्क्स के घर का अपना आदमी बन गया और लगभग हर दिन ही वहा जाने लगा। वे तब ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट के पास डीन स्ट्रीट पर रहते थे और मैंने पडोस मे ही चर्च स्ट्रीट पर डेरा लगा लिया था।

२

पहली बातचीत

उपर्युक्त उत्सव म मिलने के दूसरे दिन मार्क्स के साथ मेरी पहली लम्बी बातचीत हुई। जाहिर है कि हम लोग वहा कोई गभीर बातचीत नहा कर सके थे, इसलिए मार्क्स न अगले दिन मजदूरो की शिक्षा समिति की इमारत मे आने का निमत्रण दिया और कहा कि शायद एगेल्स भी वहा होगे।

म नियत समय से कुछ पहले ही पहुच गया। मार्क्स अभी नहा आए थे, लेकिन कई पुराने परिचिता से मुलाकात हो गई और म उनके साथ उल्लासपूवक बातचीत मे मस्त था, जब मार्क्स ने मेरा कधा थपथपाकर दोस्ताना ढग से अभिवादन किया और कहा कि एगेल्स "बठक खाने" म है, जहा हम लोग अधिक निर्विघ्न रहगे।

मै नहा जानता था कि तथाकथित 'बैठकखाने" स उनका क्या अभिप्राय है और मुझे लगा कि अब "बडी ' परख शुरू होनेवाली है। फिर भी म भरोस क साथ मार्क्स क पीछे-पीछे हो लिया। मार्क्स न पहले दिन के समान ही मर मन पर प्रीतिकर प्रभाव डाला, उनम भरोसा पदा करन की अद्भुत क्षमता था। व मरी बाह मे बाह डालकर मुझे "बठकखान '

म ले गए, जहा एगेल्स वाली बियर का मग लेकर बैठे हुए थे। उन्होने हसी मजाक करते हुए मेरा स्वागत किया।

फुर्तीली परिचारिका एमी को फौरन पीने और कुछ खाने क लिये लाने का आदेश दिया गया क्योकि हम उत्प्रवासियो के लिये भोजन की समस्या बहुत महत्त्वपूर्ण थी। हम बैठ गये, म मेज की एक तरफ और मार्क्स तथा एगेल्स दूसरी तरफ। महागनी की भारी मेज, चमकते हुए जाम, फेनिल बियर, असली इगलिश रास्टबीफ की प्रत्याशा और धूम्रपान के लिए आमंत्रित करते हुए मिट्टी क लम्बे-लम्बे पाइप – इन सारी चीजो से एक ऐसा सुखद वातावरण प्रस्तुत था कि मुझे डिकेस की कृति पर आधारित एक चित्र की बरबस याद आ गई। लेकिन परीक्षा तो होनी ही थी! खैर, कोई बात नहीं। मैं निभा लूगा! बातचीत अधिकाधिक अनुप्राणित होती गई

गत साल जेनेवा म एगेल्स से मिलने के पहले मार्क्स या एगेल्स से मेरा कभी कोई व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं हुआ था। पेरिस के «*Jahrbucher*» म प्रकाशित मार्क्स के लेख, उनकी पुस्तक 'दर्शन की दरिद्रता' तथा एगेल्स की 'इगलैण्ड मे मजदूर वर्ग की स्थिति', इन दोनो की बस यही कृतिया मैने पढी थी। १८४६ से कम्युनिस्ट होते हुए भी मैं राइख सविधान आदोलन* के बाद एगेल्स से मिलने के कुछ ही समय पहले 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' हासिल कर सका था, हालाकि मैं उसकी बाबत पहले से सुन चुका था और उसका अन्तय जानता था। जहा तक «*Neue Rheinische Zeitung*» का सम्बध है, मैं उसे बहुत कम देख पाया था, क्योकि उसके ग्यारह महीने के प्रकाशन-काल म या तो मैं विदेश मे था, या जेल मे, अथवा विद्रोही का अस्तव्यस्त तथा तूफानी जीवन बिता रहा था।

मेरे दोनो परीक्षको को मुझपर टुटपुजिया वर्गी "जनवादिता" और "दक्षिणी जर्मन भावुकता" का सदेह था और उन्होने लोगो तथा चीजो की बाबत व्यक्त की गई मेरी चन्द रायो की कडी आलोचना की लेकिन

---

*दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी मे क्रान्तिकारी सघर्ष १८४६ के वसत तथा गर्मी मे अखिल जर्मनी के (तथाकथित राइख) सविधान के नाम पर चला। – स०

कुल मिलाकर परीक्षा अच्छी ही रही और बातचीत धीरे धीरे दूसरे विषयो पर पहुच गई।

शीघ्र ही हमारे बीच प्राकृतिक विज्ञान की चर्चा चल पडी और मार्क्स यूरोप के विजयी प्रतिक्रियावादी हल्को की खिल्ली उडाने लगे, जो समझते थे कि उन्होने क्रान्ति का गला घोट दिया और यह अनुमान नही कर सकते थे कि प्राकृतिक विज्ञान नयी क्रान्ति की तैयारी कर रहा है। महारानी भाप ने पिछली सदी मे सारी दुनिया मे क्रान्ति पैदा कर दी थी, लेकिन आज उसने अपना सिहासन खो दिया है और उसका स्थान उससे भी बडी क्रान्तिकारी शक्ति—बिजली की चिनगारी—ले रही है। इसी सिलसिले मे मार्क्स ने बडे उत्साह के साथ मुझसे बिजली के इजन के उस नमूने की चर्चा की जो रीजेण्ट स्ट्रीट पर कुछ दिनो से प्रदर्शित था और जिससे रेलगाडी चलाई जा सकती थी।

उन्होंने कहा, "अब समस्या हल हो गई और उसके परिणामो का अन्दाजा नही लगाया जा सकता। आर्थिक क्रान्ति के बाद राजनीतिक क्रान्ति का होना लाजिमी है, क्योकि दूसरी तो पहली की अभिव्यक्ति मात्र है।"

मार्क्स ने जिस तरह विज्ञान और यान्त्रिकी के विकास की बात की, उससे उनका समस्त विश्वदष्टिकोण, विशेषत बाद मे इतिहास की भौतिकवादी अवधारणा कहलानेवाला दष्टिकोण, इतना स्पष्ट हो गया कि मेरे रहे सहे सन्देह भी बसन्ती धूप मे बर्फ की तरह गल गए।

मै उस रात घर नही लौटा। हम सुबह होने तक बतियाते, हसते-हसाते और पीते पिलाते रहे और जब मैं बिस्तर पर गया तो दिन चढ चुका था। लेकिन मै देर तक पडा नही रह सका। मुझे नीद नही आ रही थी, क्योकि मेरे दिमाग मे पिछली रात की सारी बाते चक्कर काट रही थी और विचारो की तुमुल शृखला ने मुझे बिस्तर छोडकर सडक पर निकल जाने के लिए बाध्य कर दिया।

मै रीजेण्ट स्ट्रीट की ओर चल पडा, ताकि उस आधुनिक त्रायन घोडे का नमूना देख सकू, जिसे पूजीवादी समाज अपनी आत्मघाती अन्धता मे गद्गद होकर पुराने त्रायवासियो की तरह अपने इलियन मे लाया था और जिसे उसके अनिवार्य विनाश का कारण बनना था। Esselai heemar— पावन इलियन के पतन का दिन आ रहा है!

जहा उक्त इजन प्रदर्शित था, वहा मुझे ताशा की भारी भीड दिखाई दी। म ठेलता हुआ आगे वढा और आगे व पीछे बिजली के इजन और रलगाडी के डिब्बा को तजी स भागत हुए पाया

यह बात १९५० के जुलाइ महीने के शुरू की है।

३

मार्क्स — क्रान्तिकारियो के शिक्षक और गुरु

"मूर" हम "तरुणा" से ५ या ६ साल ही वडे थ, लकिन हमारे सम्बध मे अपनी परिपक्वता की गुरुता का उन्ह पूरा एहसास था और हम लोगा की, खासकर मेरी, जाच के लिए हर अवसर से लाभ उठाते थे। उनके प्रकाण्ड अध्ययन तथा अद्भुत स्मरण शक्ति के कारण हमम स कइया का लोहे के चन चवाने पडते थे। हमम से किसी न किसी "विद्यार्थी" का कोई टेढा प्रश्न देकर और उसके आधार पर हमारे विश्वविद्यालया तथा हमारी वैज्ञानिक शिक्षा की पूण निस्सारता सिद्ध करन म उन्ह मजा आता था।

लेकिन उन्होंने शिक्षा भी दी और उनकी शिक्षा योजनाबद्ध थी। उनके वार मे मै सकुचित और व्यापक दोना अर्थों म कह सकता हू कि वे मरे गुरु थे और यह बात सभी क्षेत्रा पर लागू होती है। राजनीतिक अथशास्त्र की तो मै बात ही नही करता, क्योकि पोप के महल म पोप की बात नही की जाती। कम्युनिस्ट लीग म राजनीतिक अथशास्त्र पर उनके व्याख्याना की बात मै बाद मे करूगा। मार्क्स को प्राचीन और आधुनिक भाषाओ का वहुत अच्छा ज्ञान था। मै भाषाविज्ञ था और अरस्तू अथवा एस्कीलस का कोई ऐसा कठिन अश मुझे दिखाने का अवसर पाकर उन्ह बच्चा जसी खुशी होती थी, जो मै फौरन नही समझ सकता था। उन्होंने एक दिन मुझे इसलिए बहुत बुरा भला कहा कि मै स्पेनी भाषा नही जानता था और किताबा के एक ढेर म से 'डान क्विक्जोट' निकालकर मुझे सबक देने लगे। मै दीत्स लिखित लातीनी भाषाओ के तुलनात्मक व्याकरण से स्पेनी के व्याकरण तथा शब्द विन्यास के नियम जान चुका था,

इस लिए "मूर" के उत्कृष्ट पथ प्रदशन ग्रार मेरे रुकने या लडखडाने की सूरत मे उनकी सतक सहायता से काम काफी ढग से चलता रहा। व, जो वैसे तो इतन उतावले थे, पढाने मे कितने धैयवान थे! मिलनेवाल किसी व्यक्ति क ग्रा जाने पर ही सबक का ग्रन्त होता था। जब तक उन्होने मुझे पयाप्त योग्यता सम्पन्न नही समझ लिया, तब तक मुझसे रोज सवाल पूछते रहे ग्रार मुझे 'डान क्विक्जोट' ग्रथवा ग्रन्य किसी स्पनी पुस्तक क ग्रश का ग्रनुवाद करना पडता था।

मार्क्स ग्रदभुत भाषाशास्त्री थे, यद्यपि प्राचीन भाषाग्रो से ग्रधिक ग्राधुनिक भाषाग्रो के ज्ञाता थ। उन्ह ग्रिम के जमन व्याकरण का ग्रधिकतम ग्रचूक ज्ञान था। वे ग्रिम बन्धुग्रो के शब्दकोश को मुख्य भाषाविद का ग्रपक्षा ग्रधिक ग्रच्छी तरह समझते थे। वे किसी ग्रग्रेज या फ्रासीसी की भाति ही वढिया ग्रग्रेजी या फ्रासीसी लिख सकते थे यद्यपि उनका उच्चारण इतना ग्रच्छा नही था। *«New York Daily Tribune»* के लिए उनके लेख क्लासीकी ग्रग्रजी म ग्रार प्रूदा के 'दरिद्रता क दशन' के विरुद्ध उनकी 'दशन की दरिद्रता' क्लासीकी फ्रासीसी मे लिखे गए थे। छपने से पहले यह दूसरी रचना उन्होने जिस फ्रान्सीसी मित्र का दिखाई, उन्हान उसमे वहुत ही कम काट छाट की।

चूकि मार्क्स भाषा का मम समझते थे ग्रौर उन्होंने उसके उदगम, विकास तथा विन्यास का ग्रध्ययन किया था, ग्रत उनके लिए भाषाए सीखना कठिन नही था। लन्दन मे उन्हाने रूसी सीखी ग्रौर क्रीमियाई युद्ध के दौरान तुर्की ग्रौर ग्ररबी सीखने का भी इरादा किया, लेकिन उस पूरा नही कर सक। भाषा पर सचमुच ग्रधिकार जमाने के ग्राकाक्षी के ग्रनुरूप ही, वे पठन को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान करते थे। ग्रच्छी स्मरण शक्ति रखनवाला व्यक्ति – ग्रौर मार्क्स की स्मरण शक्ति इतनी ग्रदभुत थी कि उसे कभी कुछ नही भूलता था – शीघ्र ही शब्द भडार ग्रौर पदविन्यास सचित कर लेता है। उसने वाद व्यावहारिक इस्तेमाल ग्रासानी से सीखा जा सकता है।

मार्क्स न १८५० ग्रौर १८५१ म राजनीतिक ग्रथशास्त्र पर क्रमवद्ध रूप स कइ व्याख्यान दिय। व इसके लिय राजी तो नहा थे, लेकिन चूकि ग्रपन कुछ निकटतम मित्रा के बीच निजी तौर स चन्द व्याख्यान द चुक थे, इसलिय हमारे ग्रनुराध पर ग्रधिक विस्तत श्राताग्रा के सामन भाषण

करने को भी तैयार हो गये। उस व्याख्यान माला म, जिसे सुननवाल सभी सौभाग्यशील श्रोताओं को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ, माक्स ने अपनी मत पद्धति के उसूलों को ठीक वैसे ही विकसित किया, जैस 'पूजी' म उसका स्पष्टीकरण किया गया है। उस समय तक ग्रेट विण्डमिल स्ट्रीट पर ही स्थित कम्युनिस्ट शिक्षा-समिति के खचाखच भरे हाल म, उसी हाल मे, जहा डेढ साल पहले 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' स्वीकृत किया गया था, माक्स ने ज्ञान प्रचार की उल्लेखनीय प्रतिभा प्रदर्शित की। वे विज्ञान के भ्रष्टीकरण, अर्थात उसके मिथ्यापन, निकृष्टीकरण और जडीकरण, के अनन्य विरोधी थे। अपने विचारों को स्पष्टत अभिव्यक्त करने म उनस अधिक समथ कोई नही था। कथन की स्पष्टता चिन्तन की स्पष्टता का फल होती है और स्पष्ट विचार अनिवायत स्पष्ट अभिव्यक्ति का कारण होत है।

माक्स बहुत ढग से शिक्षण करते थ। व सक्षिप्ततम सभव रूप मे किसी प्रस्थापना का निरूपण करत और फिर अधिकतम सावधानी के साथ मजदूरों की समझ मे न आनेवाली अभिव्यक्तियो से बचते हुए उसकी विस्तृत व्याख्या करते। उसके बाद अपने श्रोताओं को प्रश्न पूछने के लिए आमंत्रित करते थे। अगर प्रश्न न पूछे जाते, तो वे जाच करना शुरू कर दते और ऐसी शैक्षणिक निपुणता के साथ जाच करते कि कोई खामी, कोई गलतफहमी उनकी निगाह से बच नही रहती थी।

एक दिन इस निपुणता पर जब मैंने आश्चय प्रगट किया, तब मुझे बताया गया कि माक्स ब्रसेल्स की जमन मजदूर समिति* म भी व्याख्यान दे चुके हैं। बहरहाल, उनमे श्रेष्ठ शिक्षक के सभी गुण मौजूद थे। शिक्षण मे वे श्याम पट्ट का भी इस्तेमाल करते थे, जिसपर सूत्र लिख देत थे। उन सूत्रों मे वे भी शामिल होते थे, जिन्ह हम सभी 'पूजी' के प्रारभिक पष्ठो से ही जानते थे।

---

*जमन मजदूर समिति—मजदूरो की राजनीतिक शिक्षा तथा वैज्ञानिक कम्युनिज्म के विचारो के प्रचार के हेतु अगस्त १८४७ म माक्स और एगेल्स द्वारा ब्रसेल्स मे स्थापित की गयी। फ्रास मे १८४८ की पूजीवादी फरवरी क्रांति के शीघ्र ही बाद इसका अस्तित्व समाप्त हो गया।—स०

इस लिए "मूर" व उत्कृष्ट पथ प्रदशन और मेरे रुकन या लडखडाने की सूरत म उनकी सतक सहायता स काम काफी ढग स चलता रहा। व, जो वैसे तो इतन उतावले थ, पढान म कितन धैर्यवान थ! मिलनवाल किसी व्यक्ति के आ जान पर ही सबक का अन्त होता था। जब तक उन्होंने मुझे पर्याप्त योग्यता सम्पन्न नही समझ लिया, तब तक मुझस राज सवाल पूछते रहे और मुझे डान क्विक्ज़ाट' अथवा अन्य किसी स्पेनी पुस्तक क अश का अनुवाद करना पडता था।

मार्क्स अद्भुत भाषाशास्त्री थ, यद्यपि प्राचीन भाषाओ स अधिक आधुनिक भाषाओ के ज्ञाता थ। उन्ह ग्रिम के जमन व्याकरण का अधिकतम अचूक ज्ञान था। वे ग्रिम बन्धुओ क शब्दकोश को मुख्य भाषाविद की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझते थ। व किसी अंग्रेज या फ्रासीसी की भाति ही बढिया अंग्रेजी या फ्रासीसी लिख सकते थ यद्यपि उनका उच्चारण इतना अच्छा नही था। «New York Daily Tribune» के लिए उनके लख क्लासीकी अंग्रेजी म और प्रूदो के 'दरिद्रता क दर्शन' के विरुद्ध उनकी 'दर्शन की दरिद्रता' क्लासीकी फ्रासीसी म लिखे गए थे। छपने स पहले यह दूसरी रचना उन्होंने जिस फ्रासीसी मित्र को दिखाई, उन्होंन उसम बहुत ही कम काट छाट की।

चूकि मार्क्स भाषा का मम समझत थे और उन्होने उसक उद्गम, विकास तथा विन्यास का अध्ययन किया था, अत उनके लिए भाषाए सीखना कठिन नही था। लन्दन मे उन्होंने रूसी सीखी और क्रीमियाई युद्ध क दौरान तुर्की और अरबी सीखने का भी इरादा किया, लेकिन उसे पूरा नही कर सके। भाषा पर सचमुच अधिकार जमाने के आकाक्षी क अनुरूप ही वे पठन को सर्वाधिक महत्व प्रदान करते थे। अच्छी स्मरण शक्ति रखनेवाला व्यक्ति – और मार्क्स की स्मरण शक्ति इतनी अद्भुत थी कि उस कभी कुछ नही भूलता था – शीघ्र ही शब्द भडार और पदविन्यास संचित कर लेता है। उसके बाद व्यावहारिक इस्तेमाल आसानी से सीखा जा सकता है।

मार्क्स ने १८५० और १८५१ म राजनीतिक अर्थशास्त्र पर क्रमबद्ध रूप स कई व्याख्यान दिये। वे इसके लिये राजी तो नही थे, लेकिन चूकि अपने कुछ निकटतम मित्रो क बीच निजी तौर स चन्द व्याख्यान द चुके थे, इसलिये हमारे अनुरोध पर अधिक विस्तृत श्रोताओ के सामने भाषण

करने को भी तैयार हो गये। उस व्याख्यान माला में, जिसे सुननेवाले सभी सौभाग्यशील श्रोताओं को अत्यन्त आनन्द प्राप्त हुआ, मार्क्स ने अपनी मत-पद्धति के उसूलों को ठीक वैसे ही विकसित किया, जैसे 'पूंजी' में उसका स्पष्टीकरण किया गया है। उस समय लंदन ग्रेट विण्डमिल स्ट्रीट पर ही स्थित कम्युनिस्ट शिक्षा-समिति के खचाखच भरे हॉल में, उसी हॉल में, जहां डेढ़ साल पहले 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' स्वीकृत किया गया था, मार्क्स ने ज्ञान प्रचार की उल्लेखनीय प्रतिभा प्रदर्शित की। वे विज्ञान के भ्रष्टीकरण, अर्थात् उसके मिथ्यापन, निकृष्टीकरण और जड़ीकरण, के अनन्य विरोधी थे। अपने विचारों को स्पष्टतः अभिव्यक्त करने में उनसे अधिक समर्थ कोई नहीं था। कथन की स्पष्टता चिन्तन की स्पष्टता का फल होती है और स्पष्ट विचार अनिवार्यतः स्पष्ट अभिव्यक्ति का कारण होते हैं।

मार्क्स बहुत ढंग से शिक्षण करते थे। वे संक्षिप्ततम संभव रूप में किसी प्रस्थापना का निरूपण करते और फिर अधिकतम सावधानी के साथ मजदूरों की समझ में न आनेवाली अभिव्यक्तियों से बचते हुए उसकी विस्तृत व्याख्या करते। उसके बाद अपने श्रोताओं को प्रश्न पूछने के लिए आमंत्रित करते थे। अगर प्रश्न न पूछे जाते, तो वे जांच करना शुरू कर देते और ऐसी शिक्षणिक निपुणता के साथ जांच करते कि कोई खामी, कोई गलतफहमी उनकी निगाह से बच नहीं रहती थी।

एक दिन इस निपुणता पर जब मैंने आश्चर्य प्रगट किया, तब मुझे बताया गया कि मार्क्स ब्रसेल्स की जर्मन मजदूर समिति* में भी व्याख्यान दे चुके हैं। बहरहाल, उनमें श्रेष्ठ शिक्षक के सभी गुण मौजूद थे। शिक्षण में वे श्याम पट्ट का भी इस्तेमाल करते थे, जिसपर सूत्र लिख देते थे। उन सूत्रों में वे भी शामिल होते थे, जिन्हें हम सभी 'पूंजी' के प्रारंभिक पृष्ठों से ही जानते थे।

---

*जर्मन मजदूर समिति – मजदूरों की राजनीतिक शिक्षा तथा वैज्ञानिक कम्युनिज्म के विचारों के प्रचार के हेतु अगस्त १८४७ में मार्क्स और एंगेल्स द्वारा ब्रसेल्स में स्थापित की गयी। फ्रांस में १८४८ की पूंजीवादी फरवरी क्रान्ति के शीघ्र ही बाद इसका अस्तित्व समाप्त हो गया। – सं०

खेद की बात है कि व्याख्यान माला केवल ६ महीने अथवा उससे भी कम चली।

कम्युनिस्ट शिक्षा समिति म ऐसे तत्त्व घुस आए, जि ह मार्क्स ना पसद करते थे। उत्प्रवास की लहर के शान्त हा जान पर समिति सकुचित हो गयी और उसने किसी क़दर सकीर्ण स्वरूप ग्रहण कर लिया। वाइटलिंग* और कावे** के पुराने अनुयायिया न फिर स सिर उठाया और मार्क्स उस समिति से अलग हा गये।

मार्क्स भाषा के मामले म हठधर्मी की हद तक शुद्धताग्रही थे। अपनी उत्तर हस्सी बोली के कारण, जो मुझसे त्वचा की भाति चिपकी रही, अथवा म उससे चिपका रहा, मुझे अनेक बार उनकी खरी-खोटी सुनना पडी। म सिफ यह स्पष्ट करन के लिये इन छाटी छोटा बाता का ज़िक्र कर रहा हू कि मार्क्स किस हद तक अपने को हम "नौजवाना" का शिक्षक समझत थे।

यह बात स्वभावत एक दूसरे रूप म भी सामन आती थी वे हमसे अत्यधिक का तकाज़ा रखते थे। हमारी जानकारी म जैसे ही वे कोई कमी पाते, वसे ही अत्यत ज़ोरदार ढग से उसकी पूर्ति के लिए आग्रह करते और ऐसा करने के लिए आवश्यक सलाह भी देते। जो कोई भी उनके साथ अकेला रह जाता, उसकी बाक़ायदा परीक्षा लेने लगते और वे परीक्षाए कुछ खेल नही होती थीं। उनकी आखो म धूल नहा झोकी जा सकती थी। अगर किसी पर अपनी मेहनत बेकार जाती देखते, तो उसके साथ उनकी दोस्ती का अन्त हो जाता। उनकी "मास्टरी" मे होना हमारे लिए गौरव की बात थी। म जब भी उनसे मिलता, अवश्य कुछ न कुछ सीखता

उन दिनो खुद मज़दूर वग की एक नगण्य अल्पसख्या ही समाजवाद के स्तर तक ऊपर उठी थी और समाजवादिया मे भी मार्क्स की वैज्ञानिक शिक्षा के अथ मे, 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के अथ मे, अल्पसख्यक ही

---

*वाइटलिंग, विल्हेल्म (१८०८–१८७१)—कल्पनावादी समतावादी कम्युनिज़म के एक सिद्धान्तकार, पेशे से दर्ज़ी।—स०

**कावे, एत्येन (१७८८–१८५६)—कल्पनावादी कम्युनिज़म के विख्यात प्रतिनिधि, अमरीका मे कम्युनिस्ट बस्ती के सस्थापक।—स०

समाजवादी थे। अधिकतर मजदूर, अगर वे राजनीतिक जीवन के प्रति कुछ जागरूक हुए भी थे, तो ऐसी भावुकतापूर्ण जनवादी आकांक्षाओं और लफ्फाजियों के कुहासे में फंसे हुए थे, जो १८४८ के क्रान्तिकारी आन्दोलन, उसकी पूर्वपीठिका तथा परिणति के लिए चारित्रिक था। मार्क्स के लिए लोगों की शाबाशी और वाहवाही इस बात का सबूत होती थी कि आदमी गलत रास्ते पर है और दान्ते की यह गर्वोक्ति उनका प्रिय कथन था कि «Segui il tuo corso e lascia dir le genti!» ("अपनी राह चलो और लोगों को कुछ भी कहने दो!")

कितना अक्सर वे उक्त पंक्तियों का हवाला देते थे, जिनके साथ उन्होंने 'पूंजी' की भूमिका भी समाप्त की थी। चोट, धक्के, अथवा मच्छरों और खटमलों के काटों के प्रति कोई भी उदासीन नहीं रह सकता। फिर मार्क्स ने, जिन पर हर तरफ से हमले होते रहते थे, रोटी की चिन्ता न करके सब निकाल दिया था, जिन्हें वे महनतकश ही सही तौर से नहीं समझते थे जिनकी आजादी की लड़ाई के लिए उन्होंने रात के सन्नाटों में हथियार गढ़े थे और जो कभी कभी कोरे बातूनियों, मक्कार गद्दारों या खुले दुश्मनों तक का अनुगमन करते हुए उनकी उपेक्षा भी करते थे — उन मार्क्स ने अपने को साहस तथा नूतन उत्साह से अनुप्राणित करने के लिए उन फ्लोरेंसी महापुरुष के उक्त शब्दों को अपने दर्पपूर्ण, सही मानी में सर्वहारा अध्ययनकक्ष में कितना अक्सर मन ही मन दुहराया होगा!

उन्हें गुमराह नहीं किया जा सकता था। मार्क्स अलिफ लैला के शाहजादे की तरह नहीं थे, जिसने विजय और उसके पुरस्कार को सिर्फ इस कारण खो दिया था कि वह अपने चारों तरफ के शोर शराबे और प्रेतछायाओं से भयभीत होकर बुजदिली के साथ चौतरफा देखता रह गया था। वे अपने उज्ज्वल लक्ष्य पर नजर टिकाये हुए आगे बढ़ते गए।

वे वाहवाही से जितनी नफरत करते थे, वाहवाही के पीछे दौड़ने वालों पर उन्हें उतना ही गुस्सा आता था। उन्हें लफ्फाजों से घृणा थी और अगर उनकी मौजूदगी में कोई लफ्फाजी के फेर में पड़ा तो उसकी तो शामत ही समझिए। ऐसे लोगों के प्रति वे निर्मम थे। उनकी जबान में "लफ्फाज" सबसे बड़ी गाली थी और जिसे वे एकबार लफ्फाज कह देते थे, उसके साथ हमेशा के लिए सम्बन्ध तोड़ लेते थे। हम "नौजवानों"

के सम्मुख वे "तात्विक चिन्तन और स्पष्ट अभिव्यक्ति" की आवश्यकता पर जोर देते रहते थे और हमें अध्ययन के लिए मजबूर करते थे।

उस समय तक पुस्तकों के अपार भण्डारवाला ब्रिटिश म्युजियम का शानदार वाचनालय निर्मित हो चुका था। मार्क्स वहां रोज जाते थे और हमसे भी जाने का तकाजा करते थे। "अध्ययन करो, अध्ययन करो"– यह था उनका दो टूक आदेश, जो हमें अक्सर सुनने को मिलता था और जो अपने महान मस्तिष्क के सतत कार्य की अपनी निजी मिसाल द्वारा भी वे हमें देते रहते थे।

दूसरे उत्प्रवासी जब हर दिन विश्व क्रान्ति की योजनाएं बनाया करते थे और 'क्रान्ति कल शुरू हो जाएगी' – जैसे अफीमी नारों से अपने को बदमस्त रखते थे, हम, "गंधकी गिरोहिए", "डाकेजन", "मानवजाति की तलछट" ब्रिटिश म्युजियम में अपना समय बिताते थे और अपने को शिक्षित करने तथा भविष्य की लड़ाई के लिए शस्त्रास्त्र तैयार करने की कोशिश करते थे।

कभी कभी हमारे पास खाने को कुछ भी नहीं होता था, फिर भी हम म्युजियम जरूर जाते थे। कारण कि वहां बैठने को आरामदेह कुर्सियां होती थीं और जाड़ों में वह स्थान हमारे घरों की तुलना में (जिनके अपने घर थे भी) अधिक गर्म तथा सुखद होता था।

मार्क्स कठोर शिक्षक थे। वे केवल हमसे अध्ययन करने का तकाजा ही नहीं, बल्कि इस बात की जांच भी करते थे कि हम सचमुच अध्ययन करते हैं।

मैं बहुत अर्से तक ब्रिटिश ट्रेड यूनियनों के इतिहास का अध्ययन करता रहा। वे हर रोज मुझसे पूछते कि मैं कहां तक पहुंचा हूं और जब तक मैंने एक बड़ी सभा में एक लम्बी वक्तृता नहीं दे डाली, उन्होंने मुझे चैन नहीं लेने दिया। वे सभा में मौजूद थे। उन्होंने मेरी प्रशंसा नहीं की, लेकिन कड़ी आलोचना भी नहीं की। चूंकि प्रशंसा करने की उनकी आदत नहीं थी और करते भी थे तो केवल दया भाव से, इसलिए उनकी प्रशंसा के अभाव पर मैंने अपने मन को तसल्ली दे ली। फिर जब वे मेरी एक प्रस्थापना पर मुझसे बहस में उलझ गए, तो मैंने उसे अप्रत्यक्ष प्रशंसा ही समझा।

मार्क्स में शिक्षक का एक विरल गुण था वे कठोर होते हुए भी हतोत्साहकर नहीं थे। उनका दूसरा, उल्लेखनीय गुण यह था कि वे हमें आत्मालोचना के लिए बाध्य करते थे और हमारी उपलब्धियों से हमें आत्मतुष्ट नहीं होने देते थे। वे सारहीन चिन्तन पर अपनी व्यंगोक्तियों के निमम चाबुक बरसाते थे।

४

मार्क्स की शैली

अगर बूफ़ां* का यह कथन कि "शैली ही व्यक्ति है" किसी के बारे में सही है, तो मार्क्स के बारे में ही। मार्क्स की शैली ही मार्क्स है। हद दर्जे के सच्चे, सत्य की उपासना के अतिरिक्त और कोई उपासना न जाननेवाले परिश्रमपूर्वक उपलब्ध अपने किसी प्रिय सैद्धान्तिक निष्कर्ष की असारता समय में आते ही उसे फ़ौरन त्याग देनेवाले मार्क्स ने लाजिमी तौर से अपनी कृतियों में उसी रूप में सामने आये हैं, जैसे वे यथार्थ में थे। पाखण्ड, मक्कारी अथवा छल छद्म में असमर्थ, वे जीवन की भांति अपनी कृतियों में भी सदा अपने असली रूप में दिखाई देते हैं। स्वभावतः ऐसी बहुमुखी, सर्वग्राही और सर्व-समावेशी व्यक्तित्व की शैली भी कम जटिल, कम व्यापक व्यक्तित्व की भांति एकरस, सपाट, यहां तक कि नीरस भी नहीं हो सकती थी। 'पूंजी' के मार्क्स, 'अठारहवीं ब्रूमेर' के मार्क्स और 'श्री फ़ोग्ट' के मार्क्स तीन भिन्न भिन्न मार्क्स हैं, पर अपनी भिन्नता के बावजूद वे एक ही मार्क्स हैं, उनके त्रित्व में एकत्व है, उनके महान् व्यक्तित्व का एकत्व, जो विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में अपने को अभिव्यक्त करता है और फिर भी सतत वही बना रहता है।

'पूंजी' की शैली बेशक कठिन है, लेकिन क्या उसका विषय आसान है? शैली केवल व्यक्ति ही नहीं होती, वह सामग्री भी है, उसे अवश्य ही

---

*बूफ़ों, जार्ज लुई (१७०७–१७८८)–प्रख्यात फ़ासीसी प्रकृतिविज्ञ। –सं०

सामग्री के अनुकूल होना चाहिए। विज्ञान का कोई सीधा-सरल मार्ग नहीं है, उसकी मंजिल पर पहुंचने के लिए तो हर किसी को, चाहे उसके साथ श्रेष्ठतम निदेशक भी क्या न हो, पूरा जोर लगाना पडता है। 'पूंजी' के बारे में यह शिकायत करना कि उसकी शैली कठिन, दुर्बोध अथवा बोझिल है, केवल अपनी मानसिक काहिली अथवा चिन्तन की अक्षमता स्वीकारना है।

क्या 'अठारहवीं ब्रूमर' अबोधगम्य है? क्या वह तीर अबोधगम्य है, जो सीधे निशाने पर जा लगता है और उसमें गहरे धंस जाता है? क्या वह बर्छा अबोधगम्य है जो सधे हाथों से फेंके जाने पर सीधे दुश्मन के कलेजे में उतर जाता है? 'अठारहवीं ब्रूमेर' के शब्द तीर और बर्छे हैं, वह ऐसी शैली है, जो गहरे घाव का निशान छोडती और हनन करती है। अगर घृणा, तिरस्कार और स्वतंत्रता का ज्वलंत प्रेम कभी दहकते, उन्मूलक तथा उदात्त शब्दों में अभिव्यक्त हुआ है, तो 'अठारहवीं ब्रूमेर' में ही, जिस में तासितुस* की आक्रोशभरी कठोरता के साथ जुवनाल** का घातक व्यंग्य तथा दान्ते का नैसर्गिक कोप मिश्रित है। यहां शैली – style – रोमियों की stilus, यानी वह तीखा फौलादी stiletto – कील–बन जाती है, जो लिखने और गडाने के काम में आती थी। शैली एक कटार है, जो दिल पर अचूक वार करती है।

फिर 'श्री फोग्ट' में कितनी प्रखर व्यंजना है, फल्स्ताफ*** और उसके रूप में विडम्बना का अनन्त स्रोत प्राप्त कर कैसा शेक्सपियरी उल्लास है!

मार्क्स की शैली सचमुच मार्क्स के ही अनुरूप है। इस बात के लिए उनकी भर्त्सना की गई है कि उन्होंने कम से कम शब्दों में अधिकतम संभव अन्तर्य घुसेडने की चेष्टा की है। लेकिन यही तो मार्क्स हैं।

---

*तासितुस (५५–लगभग १२०) – विख्यात रोमन इतिहासकार। – सं०

**जुवेनाल (पहली शताब्दी का मध्य – सन १२७ के बाद) – प्रसिद्ध रोमन प्रहसन कवि। – सं०

***शेक्सपियर के 'राजा हेनरी चतुर्थ' और 'विण्डसर की प्रोत्फुल्ल नारियां' नाम के नाटकों का एक पात्र। – सं०

मार्क्स अभिव्यक्ति की सटीकता और सुस्पष्टता का बेहद महत्त्व देते थे और भाषा के क्षेत्र मे गेटे, लेस्सिंग, शेक्सपियर, दान्ते और सेर्वान्ते का अपने गुरु मानते थे, जिनकी कृतियों का वे प्राय नित्य अध्ययन करते थ। भाषा की शुद्धता और अचूकता के मामले मे वे अत्यधिक सतर्क थ। मुझे याद है कि मेरे लन्दन प्रवास के शुरू के दिनो म जब मैंने अपने एक लेख म «stattgehabte Versammlung» लिखा था तो उन्होंने मुझे कैसे फटकारा था। मने रूढ प्रचलन का सहारा लेकर अपना पक्षपोषण किया, लेकिन मार्क्स उबल पडे "लानत है उन जमन स्कूलो पर, जहा जमन भाषा भी नहीं पढाई जाती, लानत है जमन विश्वविद्यालयो पर , इत्यादि। मैंने फ्रांसीसी साहित्य से उदाहरण प्रस्तुत करके, जितना भी कर सकता था, उतना अपना पक्षपोषण किया। लेकिन «stattgehabte» अथवा «stattgefundene Ereignisse का फिर कभी प्रयोग नही किया और दूसरा मे भी उसका व्यवहार छुडवाने की कोशिश की।

मार्क्स कठोर शुद्धतावादी थे और समुचित अभिव्यक्ति के लिए अक्सर परिश्रमपूवक देर तक सर खपाते रहते थे। वे विदेशी शब्दा का अनावश्यक उपयोग बदाश्त नही कर पाते थे और अगर विषय की माग न होने पर भी उनका अक्सर उपयोग करते थे, तो इसका कारण विदेशो मे, विशेषत इगलण्ड मे, उनका लम्बा प्रवास ही समझा जाना चाहिए लेकिन अपने जीवन का दो तिहाई भाग विदेशो मे गुजारने के बावजूद मार्क्स मे जो मौलिक, विशुद्ध जमन शब्द विन्यास तथा व्यवहार मिलत हैं, वे उन्हे जमन भाषा का महान अधिकारी बना देते हैं, जिसके वे एक प्रमुखतम आचार्य तथा निर्माता थे

५

मार्क्स – राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक तथा मानव

मार्क्स राजनीति को विज्ञान मानते थे। वे कहवाखाना के राजनीतिज्ञो और कहवाखाना की राजनीति से नफरत करते थे। वास्तव मे ही क्या बडी किसी हिमाकत की कल्पना की जा सकती है?

इतिहास मानव और प्रकृति म क्रियाशील सारी शक्तियो की, मानवीय चिन्तन, मानवीय उद्वेगो और मानवीय आवश्यकताओ की उपज है। लेकिन सिद्धान्त के रूप म राजनीति 'समय के चर्खे पर" कतनेवाले करोडो अरबो धागो का बोध है और व्यवहार के रूप म वह उक्त बोध पर आधारित कार्रवाई है। इसलिए राजनीति विज्ञान है और व्यावहारिक विज्ञान है

मार्क्स जब ऐसे बुद्धिहीनो की बात करते थ, जो चन्द घिसे पिटे फिकरो के जरिए सभी व्यापारो की व्याख्या करते ह और अपनी क्रमावश उलझी हुई कामनाओ तथा कल्पनाओ को तथ्य मानकर रसरानो की मेजो पर अखबारो के कार्यालयो, सार्वजनिक सभाओ अथवा ससदो म ससार की नियति निर्धारित करते है, तब वे रोष म आ जाते थे। सौभाग्यवश ऐसे लोगो की ओर कोई भी ध्यान नही देता। ऐसे बुद्धिहीनो म कभी-कभी बहुत प्रख्यात और महिमा मडित 'महापुरुष" भी होते ह।

इस सिलसिले म मार्क्स केवल आलोचना ही नही करते थे, बल्कि स्वय उच्च उदाहरण भी प्रस्तुत करते थे। विशेषत फ्रास की नवीनतम घटनाओ और नेपोलियन द्वारा राज्य पयुत्क्षेपण से सम्बधित अपने लेखो तथा «New York Daily Tribune» के सवादो म उन्होने राजनीतिक इतिहास-लेखन के क्लासीकी नमूने प्रस्तुत किए।

हठात् एक तुलना दिमाग म आती है, जिसे प्रस्तुत किए बिना नही रहा जाता। बोनापार्त का राज्य-पयुत्क्षेपण, जिसके सम्बध मे मार्क्स ने 'अठारहवी ब्रूमेर' मे लिखा है, वही महानतम फ्रान्सीसी रूमानी लेखक तथा वाग्विदग्ध विक्तोर ह्यूगो की एक प्रख्यात कृति का भी विषय बना। लेकिन दोनो कृतियो तथा दोनो लेखको मे कितनी विषमता है! एक ओर है अटपटा वागाडम्बर और वागाडम्बरपूर्ण अटपटापन तथा दूसरी ओर— व्यवस्थित ढग से सकलित तथ्य, उन तथ्यो को धैर्यपूर्वक तौलनेवाला वैज्ञानिक और रोष भरा राजनीतिज्ञ, जिसका रोष उसके विवेक को धुधला नही बनाता।

एक ओर तो तरगित, जाज्वल्यमान फेनिलता, भावावेगपूर्ण वाग्मिता के विस्फोट, विरूप व्यग चित्रण ह और दूसरी ओर—प्रत्येक शब्द सुसधानित शर है, प्रत्येक वाक्य तथ्य-गर्भित अभियोग है, नग्न सत्य है, जिसकी नग्नता अभिभूतकारी है, वह आक्रोश नही, बल्कि यथार्थ को

उद्घाटित करनेवाला सीधा-सादा वक्तव्य है। विक्तोर ह्यूगो की कृति «Napoléon le Petit» (छोटा नेपोलियन) के एक पर एक दस संस्करण हुए, लेकिन आज वह किसी को भी याद नहीं है। मार्क्स की कृति 'अठारहवां ब्रूमर' हजारों बरस बाद भी शौक से पढ़ी जाएगी।

जैसा कि मैं अयत्र कह चुका हूं, मार्क्स जो कुछ थे, वह केवल ब्रिटेन में ही बन सकते थे। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुए एक ऐसे देश में, जैसा कि जर्मनी वर्तमान शताब्दी के मध्य तक था, मार्क्स के लिए पूंजीवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र की अपनी आलोचना तथा उत्पादन की पूंजीवादी प्रणाली की जानकारी पर पहुंचना उतना ही असंभव था, जितना कि आर्थिक दृष्टि से पिछड़े जर्मनी में आर्थिक दृष्टि से विकसित ब्रिटेन की राजनीतिक संस्थाओं का अस्तित्व में आना। किसी भी अय व्यक्ति की तरह मार्क्स भी अपने परिवेश तथा उन स्थितियों पर आश्रित थे, जिनमें वे रहे और जिनके बिना वे वह कुछ नहीं बन सकते थे, जो थे। इस बात को उनसे बढ़कर किसी ने साबित नहीं किया।

ऐसी मेधा को परिवेश में प्रभावित होते और समाज के मर्म में अधिकाधिक गहरे उतरते हुए देखना खुद अपने आप में सर्वाधिक मानसिक आनंद का विषय था। मैं अपने उस सौभाग्य की जितनी भी सराहना करूं उतनी ही कम है कि मुझ अनुभवहीन, ज्ञानपिपासु युवक को मार्क्स जैसा पथप्रदर्शक प्राप्त हुआ और मैं उनके प्रभाव तथा उनकी शिक्षा का लाभ उठा सका।

उस बहुमुखी, मैं तो कहूंगा कि सर्वतोमुखी मेधा की, उस मेधा की, जो सर्वग्राही थी, जो प्रत्येक तात्त्विक ब्योरे की तह तक पहुंचती थी, जो किसी भी चीज का तिरस्कार नहीं करती थी और किसी भी चीज को निस्सार अथवा अनुल्लेखनीय नहीं समझती थी, उस मेधा की शिक्षा का भी बहुमुखी होना लाजिमी था।

मार्क्स उन लोगों में से थे, जिन्होंने सबसे पहले डार्विन की खोजों का महत्त्व समझा था। १८५९ से भी पहले, जो 'प्रजातियों के उद्भव' का, तथा एक अजीब संयोग के फलस्वरूप मार्क्स लिखित 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' के भी, प्रकाशन का वर्ष था, मार्क्स ने डार्विन के युगांतरकारी महत्त्व को समझ लिया था। कारण कि डार्विन

शहर में कोलाहल से दूर, अपने शांत जागीरी देहात में, उसी प्रकार की शान्ति की तैयारी कर रहे थे, जैसी शान्ति के लिए स्वयं मार्क्स संसार के कोलाहलपूर्ण केन्द्र में काम कर रहे थे। अंतर केवल यह था कि वहां उत्तोलक दूसरे बिन्दु पर लगा हुआ था।

मार्क्स हर नए प्रकाशन पर नजर रखते थे और हर प्रगति की ओर ध्यान देते थे और प्राकृतिक विज्ञानों, जिनमें भौतिकी तथा रसायन भी शामिल हैं, तथा इतिहास के बारे में यह विशेषतः सही है। हमारे बीच मोलेशोत, लीबीख और हक्सले* के नाम, जिनके सुबोध व्याख्यान हम आस्थापूर्वक सुनते थे, उतने ही अक्सर सुनाई देते थे, जितने रिकार्डो, ऐडम स्मिथ, मैक-कुल्लोह** और स्कॉटलैण्डी तथा इतालवी अर्थशास्त्रियों के। जब डार्विन ने अपनी खोजों के निष्कर्ष निकाले और उन्हें समाज के सामने प्रस्तुत किया, तब हमने डार्विन तथा उनकी वैज्ञानिक खोजों के प्रकाण्ड महत्त्व के अतिरिक्त महीनों तक और किसी सम्बन्ध में बात ही नहीं की।

दूसरों की योग्यता को स्वीकार करने में मार्क्स अत्यधिक उदार तथा न्यायप्रिय थे। वे इतने महान थे कि ईर्ष्या, द्वेष तथा अहंकार उनके पास नहीं फटक सकते थे। लेकिन छद्म महानता तथा मिथ्या यशस्विता की तड़क-भड़क दिखानेवाली अयोग्यता और छिछोरेपन से उन्हें उतनी ही अधिक घृणा थी, जितनी छल-कपट और ढोंग से।

मेरे महान, लघु, अथवा औसत परिचितों में से मार्क्स उन इने-गिने लोगों में एक थे, जिन्हें अहंकार छू तक नहीं गया था। वे इतने महान,

---

*मोलेशोत, जकोब (१८२२–१८९३)–हालैण्ड का शरीरक्रियाविद, बाजारू भौतिकवाद का प्रतिनिधि। लीबीख, यूस्तस (१८०३–१८७३)–प्रख्यात जर्मन वैज्ञानिक, कृषिरसायन के संस्थापकों में से एक। हक्सले, टामस हेनरी (१८२५–१८९५)–ब्रिटिश प्रकृतिविद, डार्विन के घनिष्ठ सहकर्मी तथा उनकी शिक्षा के प्रचारक।–सं०

**रिकार्डो, डेविड (१७७२–१८२३), स्मिथ, ऐडम (१७२३–१७९०)–ब्रिटिश अर्थशास्त्री, क्लासीकी पूंजीवादी राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रमुख प्रतिनिधि। मैक-कुल्लोह, जान (१७८९–१८६४)–ब्रिटिश पूंजीवादी अर्थशास्त्री, बाजारू राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रतिनिधि।–सं०

इतने सशक्त थे और उनमें इतना अधिक बड़प्पन था कि अहंकारी हो ही नहीं सकते थे। उन्होंने कभी कोई मुद्रा नहीं बनाई, सदा जो थे वही रहे। वे मुद्रा बनाने अथवा छद्म रूप धारण करने में बिल्कुल असमर्थ थे। जब तक सामाजिक अथवा राजनीतिक कारण अवांछनीय नहीं बना देते थे, तब तक वे अपने दिल की बात पूरी तरह और बिना किसी संकोच के कह जाते थे और उनका चेहरा उनके दिल की आईनादारी करता था। लेकिन जब परिस्थितियां संयम की मांग करती थीं, तब वे एक तरह की बच्चा जैसी झेंप प्रदर्शित करते थे, जिसका उनके मित्र अक्सर मजा लेते थे।

मार्क्स तो बहुत ही सच्चे आदमी थे, साकार सचाई थे। उन्हें तो देखते ही यह भांपा जा सकता था कि आप किस के साथ बरत रहे हैं। निरन्तर युद्ध की स्थिति में रहनेवाले हमारे "सभ्य" समाज में कोई हमेशा सच नहीं बोल सकता। वैसा करना दुश्मन के हाथ में खेलना अथवा समाज-बहिष्कार का खतरा मोल लेना होगा। लेकिन जहां सच बोलना अक्सर अनुपयुक्त हो सकता है, वहां झूठ बोलना भी सर्वथा आवश्यक नहीं है। मैं जो कुछ सोचता या महसूस करता हूं, वह हमेशा नहीं कह सकता, लेकिन मेरे लिए यह कुछ कहना भी तो लाजिमी नहीं है, जो मैं सोचता या महसूस नहीं करता हूं। पहली चीज बुद्धिमानी है, दूसरी—मक्कारी। मार्क्स कभी मक्कार नहीं थे। वे एक भोले-भाले बच्चे की तरह ही मक्कारी करने में असमर्थ थे। उनकी पत्नी उन्हें अक्सर "मेरा बड़ा बच्चा" कहा करती थीं और मार्क्स को उनसे बेहतर कोई भी नहीं जानता या समझता था, यहां तक कि एंगेल्स भी नहीं। सच तो यह है कि जब वे तथाकथित "शिष्ट समाज" में होते थे, जहां बाह्याचरण के आधार पर हर चीज की बाबत राय कायम की जाती है और जहां अपनी भावनाओं को कुचलना पड़ता है, हमारे "मूर" बड़े बच्चे जैसा ही व्यवहार करते थे, अभिभूत होकर अथवा झेंप के मारे लाल हो जाते थे।

अभिनेताओं की तरह बंधी-बंधाई भूमिका अदा करनेवालों से उन्हें नफरत थी। मुझे अभी तक याद है कि लुई ब्लां* के साथ अपनी पहली

---

*ब्लां, लुई (१८११–१८८२)—फ्रांसीसी निम्नपूंजीवादी समाजवादी, १८४८ की क्रान्ति के दौरान अस्थाई सरकार के सदस्य।—सं०

मुलाकात का वणन करते हुए वे कितना हसे थे। तब व डीन स्ट्रीट पर एक छोटे से फ्लैट मे ही रह रहे थे, जिसम दर असल केवल दो कमरे थे। आगेवाला कमरा बैठकखाना और अध्ययनकक्ष था और पीछेवाला बाकी सभी के लिए था। लुई ब्ला ने अपना मुलाकाती काड हेलेन को दिया। उसने उनको आगेवाले कमरे म बैठा दिया और उसी समय मार्क्स पीछे के कमरे म जल्दी जल्दी कपडे बदल रहे थे। दोनो कमरा के बीच का दरवाजा कुछ खुला छूट गया था, जिसस मार्क्स को एक मजेदार दृश्य देखने को मिला। 'महान' इतिहासवेत्ता और राजनीतिज्ञ बहुत ही नाटे थे, किसी आठ साल के बच्चे जितने ही। लेकिन व बहुत ही आडम्बरी व्यक्ति थे। उन्होंने उस सवहारा बैठकखाने पर चारो तरफ नजर दौडाई, जिसके एक कोने म उन्ह एक बहुत मामूली सा आईना दिखाई पडा। वे फौरन उसके सामने मुद्रा बनाकर खडे हो गए, अपने बौने कद को यथासभव खीच तानकर—उनकी जैसी ऊची एडिया मने किसी की नही देखी—आह्लादित होकर अपना रूप निरखा और बसन्ती खरगोश की तरह अपने को सवारते निखारते हुए प्रभावशाली दीखने की चेष्टा की। श्रीमती मार्क्स भी उस हास्योत्पादक दृश्य को देख रही थी। उन्ह होठ दबाकर अपनी हसी रोकनी पडी। मार्क्स जब कपडे पहन चुके, तो अपनी आमद की सूचना देने के लिए वे जोर से खासे और उन आडम्बरप्रिय जन प्रवक्ता ने आइने के सामने से हटकर उनको नमस्कार किया। निश्चय ही अभिनय करने और आडम्बर की मुद्रा बनाने से मार्क्स के सामने दाल नही गलती थी और "बौने लुई" ने, जैसा कि उन्ह पेरिस के मजदूर लुइ बोनापार्त से भिन्नता प्रदर्शित करने के लिए पुकारते थे, झटपट यथासभव स्वाभाविक रुख अपना लिया

६

कार्यरत मार्क्स

किसी ने कहा है कि "प्रतिभा अध्यवसाय है" और यह बात अगर पूर्णत नही, तो भी बहुत हद तक सही है।

अत्यधिक ओज तथा असाधारण कार्यक्षमता के बिना प्रतिभा हो ही

नहीं सकती। प्रतिभा अगर उक्त दोना गुणा म से किसी से भी रहित है, ता वह केवल साबुन का सुदर बुलबुला है अथवा वह चद्रनोर म स्थित भावी निधि द्वारा समर्थित हुडी है। जहा आज और कायक्षमता औसत से अधिक होती है, प्रतिभा वही होती है। मैं अक्सर ऐसे लागा स मिला हूँ जो अपने आपको प्रतिभाशाली समझते थे और जिह कभी कभी दूसरे भी प्रतिभाशाली मान लेते थे, लेकिन जिनम कायक्षमता का अभाव था। वस्तुत वे महज लच्छेदार बातें करने और अपना ढिढोरा पीटने की कला म पटु निकम्मे लोग थे। मेरी जान पहचान के वास्तविक महत्त्व रखनेवाले सभी लोग कठोर अध्यवसायी रहे हैं। मार्क्स के बारे मे तो यह बात खासतौर से सही है। वे बहुत ही मेहनती थे। चूंकि दिन का काम करने म, विशेषत उनके उत्प्रवासी जीवन के पहले दौर म, अक्सर बाधा पडती थी, इसलिए उन्होंने रात म काम करना शुरू कर दिया। किसी बैठक या सभा से बहुत देर म घर लौटने पर चद घटा तक काम करना उनके लिए मामूल था और ये चद घटे अधिकाधिक लम्बे होते गए, यहा तक कि अन्त म वे सारी रात काम करने लगे और सुबह होने पर सो जाते। उनकी पत्नी ने इस सम्बध मे उन्हें कितनी ही बार सख्ती से झिडका, लेकिन उन्होंने हसकर जवाब दिया कि यह तो मेरे स्वभाव के अनुरूप है

बेहद मजबूत काठी के बावजूद, पचासा खत्म होते न होते मार्क्स को विभिन्न प्रकार की शारीरिक व्याधियों की शिकायत शुरू हो गई और उन्हें डाक्टर के पास जाना पडा। फल यह हुआ कि उन्हें रात को काम करने की कतई मनाही कर दी गई और अधिक व्यायाम करने—टहलने और घुडसवारी करने—का निर्देश किया गया। उस समय हम मार्क्स के साथ लदन के उपात म, मुख्यत पहाडी उत्तर म, बहुत टहले। मार्क्स शीघ्र ही निरोग हो गए। वास्तव मे उनकी काया तो मानो घोर श्रम के लिए ही बनी थी।

लेकिन उन्होंने अपने को निरोगी महसूस करना शुरू ही किया था कि धीरे धीरे फिर से रात का काम करने की आदत बना ली। फिर से सकट आने पर ही व अधिक उचित जीवन चर्या अपनाने के लिए बाध्य हालाकि सिर्फ तभी तक के लिए, जब तक उन्होंने उसे सर्वथा

समझा। रोग के दौरे अधिकाधिक जोरदार होते गए। जिगर की बीमारी शुरू हो गई और घातक रसौलिया पदा हो गइ। धीरे-धीरे उनकी लौह काया जजर हो गई। म इस बात का कायल हू—और जिन डाक्टरा न उनके जीवन के अन्तिम दिना म उनकी चिकित्सा का थी उनकी भी यही राय थी—कि अगर मार्क्स स्वाभाविक जीवन बिताने का निश्चय कर लेते, यानी ऐसा जीवन बिताते जो उनकी कायिक माग के, अथवा कहू कि स्वास्थ्य क नियमा की माग के, अनुकूल होता, तो व आज भी जीते होते। जीवन के आखिरी बरसो मे ही जाकर, जब कि बहुत देर हो चुकी थी उन्होने रात को काम करना बन्द किया। हा, उसकी जगह वे दिन को अधिक काम करने लगे।

जब कभी जरा भी सभव होता, व तभी काम करन लगते। वे टहलने के समय भी अपनी नोटबुक साथ रखते और उसम अपनी टिप्पणिया लिखते रहते थे। उनका काम कभी सतही नही होता था। वस तो काम तरह-तरह से किया जा सकता है, लेकिन वे हमेशा गहराई म जाते थे, पूरी छानबीन करते थे। उनकी बेटी एल्योनारा ने मुझे एक इतिहास-सारिका दी, जिसे उन्होने अपने लिए बनाया था, ताकि उसे किसी गौण उल्लेख के लिए इस्तेमाल कर सक। लेकिन सच तो यह है कि मार्क्स के लिए कुछ भी गौण नही था और जो सारिका उन्होने अपने वक्ता इस्तेमाल के लिए तयार की थी, उसके लिए सामग्री इतने अध्यवसाय तथा ध्यानपूवक सग्रह की गई थी, मानो उसे छपवाना हो।

काम करने मे मार्क्स का धय देखकर तो म अक्सर आश्चयचकित रह जाता था। वे थकान का नाम ही नही जानते थे। थककर चूर हो जाने पर भी वे कमजोरी के कोई लक्षण नही प्रदर्शित करते थे।

अगर आदमी का मूल्य उसके काम के अनुसार आका जाए, जिस प्रकार चीजो का मूल्य उनमे लगे श्रम के अनुसार आका जाता है, तो उस दृष्टि से भी मार्क्स का मूल्य इतना अधिक है कि महज गिने चुने प्रकाण्ड मस्तिष्क ही उनकी तुलना म रखे जा सकते ह।

लेकिन पूजीवादी समाज ने इतने अधिक काम के बदले मे मार्क्स को क्या दिया?



[illegible]



पाल लफाग



फ्रेडरिक लेसनर



गेर्मन अलेक्सान्द्रोविच लोपातिन

मार्क्स ने 'पूंजी' पर ४० साल काम किया और वह भी ऐसा काम जिसे केवल मार्क्स ही कर सकते थे। मेरा यह कहना अतिशयोक्ति न होगा कि मार्क्स को हमारे युग की [illegible] ([illegible]) महानतम वैज्ञानिक कृति के लिए जितना पारिश्रमिक मिला [illegible] उजरत पानेवाले [illegible] को भी ४० साल में उससे अधिक मजदूरी [illegible]।

विज्ञान का विशेष मूल्य नहीं है [illegible] पूंजीवादी [illegible] भी नहीं की जा सकती कि वह अपनी ही मौत की सजा [illegible] का समुचित दाम अदा कर

७

डीन स्ट्रीट वाले मकान मे

१८५० की गर्मियों से लेकर १८६२ के शुरू तक, जब मैं जर्मनी वापस आ गया था, मैं मार्क्स के घर प्राय रोज जाता था और बरसो वहा पूरे के पूरे दिन गुजारता रहा। मै उस परिवार का मानो एक अग बन गया था

मेटलैण्ड पार्क रोड की बगलिया मे उठ आने से पहले मार्क्स सोहो स्क्वेयर की सुनसान डीन स्ट्रीट पर एक सादे-से मकान म रहते थे। जहा मुसाफिरो, आते-जाते लोगो और उत्प्रवासियो का जमघट रहता था और साधारण, महत्त्वपूर्ण तथा अत्यधिक महत्त्वपूर्ण लोग भी आ टपकते थे। इसके अलावा वह मकान ऐसे साथियो के मिलन-जुलन का स्थायी केन्द्र बन गया था, जो लन्दन मे रहते तो थे, लेकिन जिनके आवास म सदा कोई न कोई अडचन लगी रहती थी। बात यह थी कि लन्दन मे स्थिर रूप से बस पाना बहुत कठिन था। भूख अधिकतर उत्प्रवासियो को प्रातो म, अथवा अमरीका भगा देती थी और कुछ बेचारो का तो काम ही तमाम करके लन्दन के किसी कब्रिस्तान भेज देती थी, जहा उन्ह आवास के लिए न सही, चिर विश्राम के लिए स्थान मिल जाता था। लेकिन म

आजमाइश को येल गया और वफादार लेसनर और लौखनर* को छोडकर, जो बहरहाल डीन स्ट्रीट पर यदा कदा ही आते थे, हमारे लदनी "समुदाय" म से केवल म ही एक ऐसा था, जो एक छोटे से वक्फे के अलावा, जिसकी मैं और कहा चर्चा करूगा, उत्प्रवास की पूरी मुद्दत भर "मूर" के घर, परिवार के एक अग की तरह, आता जाता रहा। इसलिए म बहुतेरी एसी बात भी दख और जान सका, जो दूसरा की नजर से चूक गइ।

८

उत्प्रवासियो के कुचक्र

मेरे लदन जान से पहले के मेरे दोस्त और साथी माक्स क प्रति मेरी अनुरक्ति क कारण अक्सर मेरा मजाक बनाते थे। हाल ही म उस जमाने का एक पत्र मेरे हाथ लग गया। यह पत्र बावेर न मुझे लिखा था, जो अधिकतम कायकुशल बादेनी स्वयसेवका** म से थे और जिनकी चद साल पहले मिल्वाकी (सयुक्त राज्य अमरीका) मे मत्यु हो गइ है। वे वहा पर अपन ही द्वारा सस्थापित एक उग्रवादी-जनवादी अखबार का सपादन कर रहे थे। अन्य पर्याप्त साधन सम्पन्न उत्प्रवासियो की तरह व भी लदन म थोडे अर्से तक रहकर अमरीका चले गए थे, जहा शीघ्र ही अपनी योग्यता क अनुकूल अखबारी काम मे लग गए थे।

लदन म रहनेवाल उत्प्रवासियो क लिए वह सबसे कठिन दौर था और बावर मुझे अपने पास खीच लेना चाहते थे। वे सपादक के रूप मे उचित वेतनवाले काम का आश्वासन देत हुए मुझे आन के लिए कई बार

---

*लेसनर, फ्रेडरिक (१८२५-१६१०) – अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आदोलन के सक्रिय कायकर्त्ता, पेशे से दर्जी माक्स तथा एगेल्स के मित्र तथा सहकर्मी। लौखनर, गेओर्ग (जन्म १८२४ क लगभग – मत्यु की तिथि अज्ञात) – जमन मजदूर आदोलन के नेता, कम्युनिस्ट लीग तथा पहले इटरनेशनल के सदस्य, पशे स बढई, माक्स तथा एगेल्स के मित्र तथा समथक। – स०

** १८४६ के बादेन प्फाल्त्स विद्रोह म भाग लनेवाले कार्ल फ्रेडरिक बावर से अभिप्राय। – स०

पत्र लिख चुके थे। उन दिनों मेरे पास एक जो ग गेटी तक भी नहीं थी और ५० डालर साप्ताहिक का आश्वासन मेरे लिए बहुत ही आकर्षक चारा था। लेकिन मन उस लाभ का मसरण किया म पाम-क्षेत्र से आवश्यकता से अधिक दूर नहीं हटना चाहता था, क्योंकि म जानता था कि हजार म से ९९९ प्रतिशत सम्भावना इसी बात की ६ कि जो भी महासागर के पार गया, वह यूरोप के लिए खो गया।

अन्त मे वावेर ने आखिरी हथियार का सहारा लेते हुए मेरे अभाव को उकसाने की कोशिश की। एक पत्र म, जो मेरे कागजो म अब भी मौजूद ह, उन्होंने लिखा

" यहा तुम आजाद आदमी होओगे और स्वतत्र रूप स अपनी क्षमता प्रदर्शित कर सकोगे। लेकिन वहा तुम क्या हो? इधर उधर फेंका जानेवाला महज एक गेंद, एक गधा, जिसका इस्तेमाल भार ढोने के लिए किया जाता है और जिसकी पीठ पीछे मजाक उडाया जाता है। तुम्हारे स्वग राज्य म क्या स्थिति है? उच्चतम सिंहासन पर सवज्ञाता, सवबुद्धिमान, दलाई लामा—मावम आसीन हैं। उसके बाद बहुत-सी जगह खाली है और तब आते हैं एगेल्स। उसके बाद फिर से बहुत बडी जगह खाली है। तब वाल्फ आते है और उसके बाद फिर बहुत-सी जगह खाली रह जाती है। तब शायद आता है 'भावुक गदभ लीब्कनख्त' "

मने उत्तर म लिखा कि इसम मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि जो लोग मुझसे अधिक सम्मान के अधिकारी हैं, उनके बाद ही मेरा स्थान हो, कि एसे आदमियो की सोहबत की अपेक्षा, जिन्हे मुझे नीची निगाह स देखना पडे, जैसे कि वावेर के सभी "महापुरुष", मैं ऐसो की सोहबत मे रहना अधिक बेहतर समझता हू, जिनसे कुछ सीख सकू और जिन्हे ऊची निगाह से देखना पडे।

फलत म जहा का तहा बना रहा और सीखता पढता रहा। लेकिन हमारे हल्के से बाहर के उत्प्रवासी मार्क्स और हमारे "समुदाय" के बारे मे उक्त राय ही रखते थे। हम अपने को उन लोगो से इतना दूर रखते थे कि वे कल्पना के घोडे दौडाने को विवश हो जाते थे, और उन्होंने मनगढ़न्तो का एक अम्बार लगा लिया था। लेकिन हमने इसकी कोई परवाह नहीं की।

६

मार्क्स के घर मुलाकाते

मेरे विकास पर मार्क्स की पत्नी का प्राय उतना ही प्रभाव पड़ा, जितना स्वय मार्क्स का। म अभी तीन साल का ही था कि मेरी मा मर गई थी और खासी कठिन परिस्थितियो मे मेरा पालन-पोषण हुआ था मार्क्स की पत्नी मे मुझे एक ऐसी सुघड, उदार और समझदार महिला मिली, जो हालात द्वारा टेमस तट पर ला पटके गये मुझ उपेक्षित और मित्रहीन स्वयसेवक के लिए मा और बहन बन गयी। मुझे मानना पडेगा कि मार्क्स परिवार के साथ मेरे परिचय न मुझे उत्प्रवास की विपत्ति मे विनष्ट होने से बचा लिया

मार्क्स के घर पर और उनकी साहबत म जिन लागा के साथ उस दौर मे मेरी मुलाकाते हुइ, उन सब की सरसरी रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए भी यहा न तो पर्याप्त समय है और न स्थान। उन जमन तथा अन्य उत्प्रवासियो के अतिरिक्त, जो किसी उसूली विरोध क कारण हमसे अलग नही थे, म ब्रिटिश मजदूर आन्दोलन के नेताओ से भी मिला – चार्टिज्म* क दो अतिम महान प्रतिनिधि – स्पार्तकसी जाज जूलियन हार्नी और व्याख्यान पटु जन प्रवक्ता तथा ओजस्वी पत्रकार एर्नेस्ट जान्स, फ्रास्ट, जो "शारीरिक शक्ति के पक्षधरो ** क एक श्रेष्ठ प्रतिनिधि थे और जिन्हे चार्टिस्ट विद्रोह के नेता होने के कारण आजीवन निवासन दड दिया गया था और बाद म क्षमित होकर छठी दशाब्दी मे ब्रिटेन लौटे थे, तथा समाजवाद के वयोवृद्ध पितामह, वैज्ञानिक समाजवाद के पूर्व-पुरुषो मे सर्वाधिक परिग्राही गूढदर्शी तथा व्यवहार प्रिय राबट ओवेन इनमे शामिल थे। हमने उनकी ८०वी

---

*ब्रिटेन म मजदूर वग का पहला आम क्रातिकारी आन्दोलन (१९वा शताब्दी की चौथी–पाचवा दशाब्दी)।–स०

**चार्टिज्म म वामपथी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति, जो आन्दोलन का शान्तिमय हलचल की सीमाओ मे बाध रखने के आकाक्षी "नैतिक शक्ति के पक्षधरो के विपरीत शारीरिक बल प्रयोग के पक्ष मे थी।–स०

सालगिरह के समारोह मे भाग लिया और मुझे अवसर उनके घर जाने का भी सौभाग्य प्राप्त हुआ था

मेरे जल्दी ही बाद एक फ़ासीसी मजदूर लदन आए। उन्होंने न केवल फ़ासीसी, बल्कि हम सभी उत्प्रवासियो और हमारी 'छायाओं' यानी अतर्राष्ट्रीय पुलिस, मे भी खासी दिलचस्पी पैदा कर दी। उनका नाम बार्थेलेमी था। पेरिस की जेल से चालाकी और साहस के साथ उनके फ़रार हो जाने की बात हमने अखबारो मे पढी थी। औसत से कुछ ऊचा कद, पुष्ट और गठीला बदन, आबनूसी घुघराले बाल और तेजोद्दीप्त काली आख – वे विशिष्ट दक्षिणी फ़ासीसी और दृढ निश्चयता के अवतार थे।

उनका गर्वान्वित व्यक्तित्व दन्तकथाओ के उजले ताने-बाने से कुडलित था। उन्हे काले पानी की सजा दी गई थी और उनके कधे पर अमिट दाग अकित था। वे अभी केवल सत्तरह साल के ही थे कि उन्होंने १८३९ मे ब्लाकी–बार्बे विद्रोह* के दौरान एक पुलिसवाले की हत्या कर दी थी और एक दण्ड बस्ती मे भेज दिए गए थे। १८४८ की फरवरी क्रान्ति के दौरान आम रिहाई मे मुक्त होकर परिस लौटे थे और सर्वहारा वर्ग के सभी आदोलनो तथा प्रदर्शनो मे भाग ले चुके थे। वे जून की लडाई** मे लडे और अतिम मोर्चेबदी मे से एक पर लडते हुए पकड लिए गए। सौभाग्यवश पहले कई दिनो मे उन्हे कोई पहचान नही पाया, वरना अनेक अन्यो की भाति उन्हे भी "सरसरी अदालती कारवाई" के बाद गोली मार दी गई होती। जब उन्हे फौजी अदालत के सामने पेश किया गया, तो खून-खराबे की पहली लहर गुजर चुकी थी और उन्हे महज़ "ठडी फासी" की, यानी कायेन्ने मे आजीवन जलावतनी की, सजा दी गई। किसी कारणवश उनका मामला देर तक खिच गया और जून १८५० मे वे अभी जेल मे ही थे और उस स्थान पर जलावतन किये जाने से ठीक पहले, जहा मिर्च उगती है और इनसान मरते हैं, वे फरार हो जाने मे कामयाब हो गए।

---

*परिस मे मई १८३९ मे गुप्त क्रान्तिकारी 'ऋतु-अवधि समाज' द्वारा किया गया विद्रोह। – स०

**जून १८४८ मे परिस का सर्वहारा विद्रोह। – स०

यथावत वे लदन पहुच गए, जहा हमारे निकट सम्पक म आए और मार्क्स के यहा अक्सर आते थे

म अक्सर उनस दो दो हाथ करता था, बिलकुल शाब्दिक अथ मे। बात यह है कि फ्रासीसी उत्प्रवासियो ने आक्सफोड स्ट्रीट पर राथवान प्लेस म एक 'तलवार मडप' बना रखा था, जहा तेगा-तलवारो की पटवाज़ी और पिस्तौली निशानवाजी का अभ्यास किया जा सकता था। समय समय पर मार्क्स भी वहा जाते थे और फ्रासीसियो के साथ डटकर लोहा लेते थे। वे अपनी कौशलहीनता की कमी को उग्रता द्वारा पूरा करने की चेष्टा करते और कभी कभी धयहीनो पर हावी हो जाते। जसा कि सवविदित है, फ्रासीसी लोग तलवार का उपयोग प्रहार और चकमा देने के लिए भी करते ह और यह चीज शुरू म जमनो को हक्का बक्का देती है, लेकिन शीघ्र ही आदमी इसका आदी हो जाता है। व.बॅलेमी अच्छे पटवाज़ थे और वे अक्सर पिस्तौल से चादमारी का भी अभ्यास करते थे जिससे वे बहुत जल्दी अच्छे निशानवाज़ बन गए। लेकिन वे शीघ्र ही विलिख* के गुट मे जा मिले और मार्क्स के सरगम दुश्मन बन गए।

विलिख के गुट के साथ मतभेद कटुतर हो गए और एक शाम को विलिख ने मार्क्स को द्वद्व युद्ध की चुनौती दे दी। मार्क्स ने इस नेक प्रस्ताव को यथोचित रूप म ग्रहण किया जिससे छोटी प्रशियाई अफ्सरी की बू आ रही थी लेकिन तुनक मिज़ाज नौजवान कोनराद श्राम्म** ने अपनी ओर स विलिख का अपमान कर दिया। इसलिए विलिख ने उसे अपनी विद्यार्थी-सहिता के अनुसार द्वद्व युद्ध के लिए ललकारा। द्वद्व-युद्ध बेल्जियम के समुद्र तट पर होना तय पाया और उसके लिए हथियार चुनी गई पिस्तौल। श्राम्म न पहले कभी पिस्तौल को छुआ तक नही था और उधर विलिख का बीस कदम की दूरी से पान के एक्के का निशाना कभी नही

---

*कम्युनिस्ट लीग म १८५० म फूट पड गई थी। विलिख उस 'वामपथी जाखिमराज' दल के अगुआ थे जिसे लीग से निकाल दिया गया था।—स०

**श्राम्म, कोनराद (१८२२–१८५८)—जमन क्रान्तिकारी, कम्युनिस्ट लीग के सदस्य मार्क्स और एगेल्स के मित्र।—स०

चूकता था। बार्थेलेमी उनके परिचर बने। हम अपने मित्र नरमा श्राम्म की बडी चिन्ता थी।

द्वद्व-युद्ध के लिए निर्धारित दिन गुजर गया और हम एक एक मिनट गिनते रहे। दूसरी शाम को, जब माक्स घर पर नही थे और केवल उनकी पत्नी और हेलेन घर पर थी, दरवाजा खुला और बार्थेलेमी दाखिल हुआ। उन्होंने तनिक सिर झुकाकर अभिवादन किया और समाचार के लिए व्यग्र प्रश्नो के उत्तर मे उदास स्वर मे उत्तर दिया «Schramm a une balle dans la tete» – श्राम्म के सिर मे गोली लगी है! इसके बाद उन्होंने फिर तनिक झुककर अभिवादन किया, घूमे और बाहर चले गये। श्रीमती माक्स की भयाकुलता का आसानी से अनुमान लगाया जा सकता है वे तो बेहोश सी हो गई। एक घटे बाद उन्होंने उक्त बुरा समाचार हमे सुनाया। हम स्वभावत श्राम्म के जीवन के प्रति निराश हो गए। दूसरे दिन ठीक उस समय जब हम उनके बारे मे दु खपूवक बाते कर रहे थे, दरवाजा खुला और वही व्यक्ति, जिसे हम मरा समझ रहे थे, अदर आया। उसके सिर पर पट्टी बधी थी, लेकिन वह खुशी से हस रहा था। उसने हमे बताया कि गोली सिर को छीलती हुई ऊपर ही ऊपर गुज़र गई थी और म बेहोश हो गया था। होश आने पर मैंने अपने को परिचर और डाक्टर के साथ समुद्र-तट पर पाया। विलिख और बार्थेलेमी ओस्टेंड से मिलनेवाले पहले जहाज से लौट गये थे। श्राम्म दूसरे जहाज से लौटा था

१०

मार्क्स और बच्चे

हर पुष्ट और स्वस्थ व्यक्ति की तरह, मार्क्स भी बच्चो को बेहद प्यार करते थे। वे अपने बच्चो के साथ घटो बच्चा बने रह सकनेवाले अति-अनुरक्त पिता ही नही, बल्कि दूसरे बच्चो की ओर, विशेषत राह चलते मिलनेवाले असहाय और दुर्भाग्य ग्रस्त बच्चो की ओर भी चुम्बक की तरह खिचते थे। जब हम गरीब बस्तियो को देखने जाते, तो सैकडो बार ऐसा होता कि वे हमे छोडकर किसी दहलीज की चौखट पर चिथडे पहन बैठे

किसी बच्चे के पास जाकर उसके सिर पर हाथ फेरने लगते और उसके हाथ म एकाध पेनी का सिक्का थमा देते। वे भिखारियो का विश्वास नही करते थे क्योकि लन्दन म भीख मागना एक बाकायदा रोजगार बन गया था और वह भी लाभकर रोजगार जो बेशक तावे के टुकडे बटोर कर ही चलता था। फलत वे भिखमगे भिखमगिने जिन्हे शुरू के दिनो मे जब मे कुछ होने पर मार्क्स कभी भीख देने से इनकार नही करते थे, उन्हे बहुत दिनो तक धोखा नही दे सके। अगर उनमे से कोई बीमारी अथवा जरूरतमदी का ढोग रचकर मक्कारी से उन्हे करुणा विगलित करने की चेष्टा करता तो उन्हे गुस्सा आता था, क्योकि वे मानवीय दया से अनुचित लाभ उठाने की प्रवृत्ति को खास तौर पर बडी नीचता और गरीबो को लूटने के समान समझते थे। लेकिन अगर रोता हुआ बच्चा लिए कोई भिखारी या भिखारिन उनके पास आती जिसके चेहरे पर बेशक बिल्कुल साफ मक्कारी झलकती होती, तो मार्क्स बच्चे की अनुनय भरी आखो के सामने बेबस हो जाते थे।

शारीरिक दुर्बलता और असहायता से मार्क्स सदा दया द्रवित हो जाते तथा उनमे सहानुभूति का उद्रेक होता था अपनी पत्नी को पीटनेवाले पुरुष को—और उस समय लदन म यह आम प्रचलन था—कोडे लगवाकर अधमरा कर देने से मार्क्स को बहुत खुशी होती। एसी हालतो म उनकी उद्वेलनशील प्रकृति उन्हे और हमे अक्सर कठिनाई मे डाल देती थी।

एक शाम को हम मार्क्स के साथ बस म बठकर हैम्पस्टेड रोड जा रहे थे। रास्ते म एक मदिरालय के पासवाले स्टाप पर जब हमारी बस रुकी तो वहा हगामा मचा हुआ था और एक औरत चीख रही थी मार डाला! मार डाला! मार्क्स पलक झपकते ही बस से नीचे पहुच गये और मैं भी उनके पीछे हो लिया। म उन्हे रोकने की कोशिश कर रहा था लेकिन वह तो छूटी हुई गोली को हाथो से थामने की कोशिश के समान थी। आन की आन म हम हगामे के बीच मे थे और हमारे पीछे लोगो की रेलपेल हो रही थी। "आखिर मामला क्या है?" हम जल्दी ही इसका पता चल गया। कोई मदहोश औरत अपने पति से लड रही थी। वह उसे घर ले जाना चाहता था पर औरत प्रतिरोध कर रही थी और दीवानावार चीख रही थी। हमने समझ लिया कि हमारे हस्तक्षेप की कोई आवश्यकता

लेकिन "मूर" ने उन्हें झिड़का और मेरे उनकी "पाइथिया" की ओर संकेत किया, जो अपने आगमज्ञानी के नाटक को समाप्त कर उल्लासपूर्वक हंसते हुए उछल कूद रही थी और स्वास्थ्य की साक्षात प्रतिमा लग रही थी

मार्क्स के दोनों बेटे छुटपन में ही मर गए थे, लन्दन में पैदा होनेवाला तो बहुत ही छोटी उम्र में और ब्रसेल्स में जन्म लेनेवाला लम्बी बीमारी के बाद। दूसरे की मृत्यु मार्क्स के लिए भयानक चोट थी। मुझे उस आशारहित बीमारी के गमगीन हफ्ते अब भी याद हैं। लड़के का नाम एक मामा के नाम पर एडगर रखा गया था, लेकिन उसे पुकारा "मुश"* जाता था। वह अत्यन्त मेधावी, किन्तु बचपन से ही रोगी था, बिलकुल सन्ताप शिशु। सुन्दर आंखें, होनहार मस्तक, जो उसके दुर्बल शरीर के लिए अत्यन्त भारी प्रतीत होता था। बेचारे "मुश" को अगर देहात में अथवा समुद्र-तट पर शान्त वातावरण मिलता तथा उसकी निरन्तर अच्छी देखभाल होती, तो शायद वह जीता रह जाता। लेकिन उत्प्रवास के दौरान जगह जगह मारे मारे फिरने और लन्दन के जीवन की कठोरताओं में कोमलतम पैतृक स्नेह तथा मातृक सेवा भी दुर्बल पौधे को जीवन के लिए संघर्ष की आवश्यक शक्ति नहीं प्रदान कर सकती थी और "मुश" की मृत्यु हो गई

मैं वह दृश्य कभी नहीं भूल सकता मृत बच्चे के ऊपर झुकी मां मौन विलाप कर रही थी, पास ही खड़ी हेलेन सिसकियां भर रही थी और आश्वासन के किसी भी प्रयत्न पर मार्क्स भयानक रूप से उद्विग्न हो उठते थे, दोनों लड़कियां मां से चिपटकर मौन रुदन कर रही थी तथा शोकमग्ना मां तड़प तड़पकर अपनी बच्चियों को ऐसे अपने साथ सटा लेती थी, मानो पुत्र को लूट ले जानेवाली मौत से उनकी रक्षा कर रही हो।

दो दिन बाद "मुश" को दफनाया गया। लेसनर, फन्दर**, लौखनर,

---

*फ्रांसीसी में "मुश" («Mouche») का अर्थ है – मक्खी। – सं०

**फन्दर, कार्ल (लगभग १८१८–१८७६) – जर्मन मजदूर आन्दोलन के कार्यकर्त्ता, कम्युनिस्ट लीग की केन्द्रीय समिति तथा पहले इंटरनेशनल की जनरल कौंसिल के सदस्य पेशे से चित्रकार, मार्क्स और एंगेल्स के पक्षपाती। – सं०

कोनराद श्राम्म, लाल वोल्फ* और म मौजूद थे। मैं मार्क्स के साथ वग्घी म गया था। वे हाथो म गिर थाम गुम गुम वठे रहे

वाद म तुस्सी पैदा हुई। नन्ही गी प्रफुल्ल मजना, शेर जसी गात मटार, दूधिया और गुलाबी। पहले उस बच्चागाडी म घुमाया जाता रहा बाद म वह गादी चढी फिरती रहा और फिर अपन नन्हे नन्हे परो स ठुमकन लगी। जब मैं जमनी वापस लौटा, तो वह छ साल की थी मेरा सवस वडा वेटी की आधी उम्र की, और जो पिछले दो सालो म हैम्पस्टेड की वनस्थली म मार्क्स परिवार की रविवारी सैर के दौरान उसके साथ जाती थी।

मार्क्स के लिए बच्चा की सगत विश्राम और ताजगी का स्रोत थी। व उसके बिना रह ही नहीं सकते थे। उनक अपने बच्चा के बडे हो जान पर उनका स्थान नातियो-नातिनो न ले लिया। जेनी जिसन आठवी दशाब्दी के शुरू म कम्यून म भाग लेनेवाले एक उत्प्रवासी, लॉगे स शादी कर ली थी, मार्क्स को कई नटखट नाती दिए। जान अथवा जानी, जो सबमे बडा और सबसे अधिक नटखट था, अपन नाना का चहेता था। वह उन्ह जैसे चाहता अपन इशारो पर नचा सकता था और यह बात वह जानता भी था।

एक दिन का किस्सा मुझे याद आ रहा है। मैं लदन आया हुआ था। जॉनी के मा-बाप ने उसे पेरिस से लन्दन भेज दिया था, जैसा कि वे साल म कई बार करते थे। उसके दिमाग म अपन नाना को बस बनाकर उनपर, यानी "मूर" के कधो पर, सवारी करने का खयाल पैदा हुआ। मैं और एगेल्स घोडे बनाए गए। जब हम ठीक तरीके से नाध दिए गए, तब मेटलण्ड पार्क रोड पर स्थित मार्क्स की वगलिया के पीछेवाले छोटे से वाग के गिद दीवानावार घुडदौड–मेरा मतलब है कि सवारी–शुरू हो गई। हो सकता है यह घटना रीजेण्ट पार्क रोड पर एगेल्स के घर हुई हो, क्योकि लदन के मकान इतने समान है कि उनके बारे मे–बागो के बारे मे तो और भी अधिक–आसानी से धोखा हो सकता है। बजरी

---

*लाल वोल्फ–फर्दीनान्द वोल्फ, कम्युनिस्ट लीग के सदस्य तथा १८४८–१८४९ मे *«Neue Rheinische Zeitung»* के एक सम्पादक।–स०

और घास से ढके चद वग मीटर, जिनपर "काली वफ" अथवा लम्नी कालिख बिछी रहती है, जिसकी बदौलत यह तमीज नही की जा सकती कि कहा पर बजरी खतम और घास शुरू होती है—ऐसे होते ह लन्दन के 'बाग'।

सवारी चल पडी टिक टिक! अग्रेजी, जमन और फ्रासीसी—अतर्राष्ट्रीय सिसकार गूजन लगी «Go on! Plus vite! Hurrah!»* "मूर" उस वक्त तक दुलक्ते रहे, जब तक उनकी पेशानी से पसीना न बहन लगा। अगर एगेल्स या म चाल को धीमी करन की कोशिश करते तो बेरहम कोचवान का चाबुक हमारी पीठा पर पडता "नटखट घाडे! बढते चलो!" और यह सिलसिला तब तक चलता रहा, जब तक मार्क्स बेदम नहा हो गए और तब हम जॉनी से समझौता-वार्ता करनी पडी और विराम-सधि सम्पन्न हुई

११

हेलेन

मार्क्स की एक बेटी के शब्दो मे हेलेन, मार्क्स परिवार के प्रादुर्भाव के पहले दिन से ही घर का जीवन प्राण थी। वह क्या कुछ नही करती थी, और सब कुछ खुशी के साथ। हमेशा खुशदिल, मुस्कराती हुई, हर घडी सभी की सहायता के लिए तत्पर। लेकिन वह गुस्सा भी हो सकती थी और "मूर" के दुश्मना स बेहद घणा करती थी।

जब श्रीमती मार्क्स बीमार या खिन्न हाती, तब हेलेन मा का स्थान ग्रहण कर लेती। या भी, बहरहाल, वह बच्चा की दूसरी मा के समान थी। वह बहुत ही पक्के इरादेवाला, बहुत ही दढ थी। वह जा कुछ जरूरी समझती, उसे अमली शक्ल दकर ही दम लेती।

जसा कि कहा जा चुका है, घर म हेलेन एक प्रकार की अधिनायक थी। बल्कि यह कहना अधिक सही होगा कि हेलेन अधिनायक था और

---

* बढ्ते चलो! और तज! हुर्रा!—स०

थामती मावस स्वामिनी। मावस मसने की भांति उस शक्तिशालिनी को स्वीकारते थे।

कहा जाता है कि अपने नौकर की नजर में कोई भी महान नहीं होता, निश्चय ही मार्क्स भी हेलेन की निगाह में महान नहीं थे। पर उनके लिए अपने को कुर्बान कर सकती थी, आवश्यक और सभी का उन पर, उनकी पत्नी या उनके किसी भी बच्चे के लिए हजार बार अपने प्राण न्योछावर कर सकती थी। वास्तव में उसने उनके लिए अपना प्राण न्योछावर की भी। लेकिन मावस उसपर सिक्का नहीं जमा सकते थे। वह उनकी सारी सनकें और सारी कमजोरियां जानती थी और उन्हें अपने इशारों पर नचा सकती थी। यहां तक कि जब वे चिड़चिड़ाए होते और इस कदर गरजते-तड़पते होते कि कोई उनके पास फटकने का भी साहस नहीं कर पाता था, तब भी हेलेन सीधे शेर की मांद में घुस जाती और अगर मावस उनपर गुर्राते तो ऐसे फटकारती कि शेर भीगी बिल्ली बन जाता।

१२

मार्क्स के साथ हवाखोरी

हैम्पस्टेड हीथ की वह हवाखोरी! अगर मैं हजार साल भी जीता रहूं तो उन सैरों को नहीं भूल सकूंगा।

हैम्पस्टेड हीथ प्रिमरोज हिल की दूसरी तरफ है और गैर लन्दनवासी उस पहाडी की तरह ही डिकेन्स के पिकविकवालों की बदौलत उससे सुपरिचित है। उसका अधिकांश अब भी वीरान है, अब भी गैर आबाद है। यह झाड झखाडा, टीला तथा वादियों वाली पहाडी बनस्थली है। यहां कोई भी इस भय से निश्चित होकर घूम फिर सकता है कि पहरेदार अनधिकार प्रवेश के लिए पकडकर जुर्माना करवा देगा। अब भी वह लन्दनवासियों के सैर सपाटे का प्रिय स्थल है और जब रविवार को मौसम अच्छा होता है, तब वनस्थली में मर्दों के काले सूट और औरतों की रंग बिरंगी पोशाकें ही पोशाकें दिखाई देती हैं। औरतें तो वहां सवारी के लिए मिलनेवाले निस्सन्दिग्ध रूप से धैर्यशील खच्चरों और घोडों के धैर्य की परीक्षा लेना

खास तौर से पसन्द करती है। चालीस साल पहले हैम्पस्टेड हीथ ग्राज का ग्रपेक्षा कही अधिक लम्बी चौडी और कम कृत्रिम थी और वहा रविवार बिताना हमारे लिए अधिकतम आनन्द का स्रोत था।

बच्चे पूरे हफ्ते उसकी बात करते रहते और वयस्क भी, बूढे और जवान सभी, अगले रविवार की प्रतीक्षा किया करते थे। वहा का तो सफर ही बडा आनन्ददायक होता था। लडकिया चलने मे माहिर था, गिलहरियो जैसी फुर्तीली और अनथक। मार्क्स परिवार डीन स्ट्रीट पर रहते थे और कुछ ही कदमो की दूरी पर चर्च स्ट्रीट मे मै बस गया था। वहा से कोई डेढ घटे का रास्ता था और हम ग्राम तौर पर ग्यारह बजे रवाना हो जाते थे। लेकिन ऐसा हमेशा नही होता था, क्योकि लन्दन मे लोग तडके नही उठते और सब कुछ ठीक ठाक करते, बच्चो को तैयार करते और टोकरी को अच्छी तरह से भरते भराते कही अधिक देर लग जाती थी।

आह वह टोकरी! वह मेरे "मन की आखो" के सामने उतने ही वास्तविक और यथार्थ, आकर्षक और स्वादिष्ट रूप मे मडराती रहती है, जैसे अभी कल ही मैने हेलेन को उसे लेकर चलते देखा हो।

जब किसी स्वस्थ और सशक्त व्यक्ति की जेब मे ताबे के सिक्के भी बहुत न हो (उन दिनो चादी के सिक्को का तो सवाल ही नही पैदा होता था), तो भोजन का महत्त्व मुख्य बन जाता है। हमारी नेक हेलेन यह जानती थी और उसके दयालु हृदय को अपने मेहमानो पर तरस आता था, जिन्हे अक्सर भरपेट खाना नही मिलता था और जो इस कारण सदा भूखे रहते थे। हैम्पस्टेड हीथ की रविवारी सैर के लिए गोश्त का एक बडा सा भुना हुआ टुकडा परम्परा प्रतिष्ठित मुख्य भोजन होता था। हेलेन द्वारा त्रियेर से लायी गयी एक टोकरी मे, जो लन्दन के लिए असाधारण रूप से बडे आकार की थी, सब कुछ रखकर ले जाया जाता था। उसी मे चाय और शक्कर और कभी-कभी फल भी रख लिए जाते थे। रोटी और पनीर हैम्पस्टेड हीथ मे खरीदे जा सकते थे, जहा बर्लिन के काफे की तरह बर्तन, गरम पानी और दूध भी उपलब्ध होता था। इसके अलावा वहा जरूरत और जेब की समाई को देखते हुए मक्खन, झींगे, सलाद आदि भी खरीदे जा सकते थे

तो हमारा सैर इस प्रकार शुरू होता थी। आम तौर से

भी खुशी प्रदान करते थ—हम दुगुनी, क्योकि एक तो वे सवारी के फन म अनाडी थे और दूसरे हम उस हुनर मे अपने कमाल का विश्वास दिलाने के लिए जान कितनी अजीबोगरीब हरकत करते थे। उस हुनर म उनके कमाल का सार यह था कि कभी विद्यार्थी जीवन म उन्होने घुडसवारी के कुछ सबक लिए थे—एगेल्स का दावा था कि वे तीसरे सबक से आगे कभी नही बढे थे—और मैंचेस्टर की अपनी विरल यात्राओ म एक वयोवद्ध रोजिनान्टे* की सवारी करते थे, जो सभवत बूढे फ्रित्स द्वारा दिलेर गेलर्ट** को समर्पित परमधीर घोडे का पोता था।

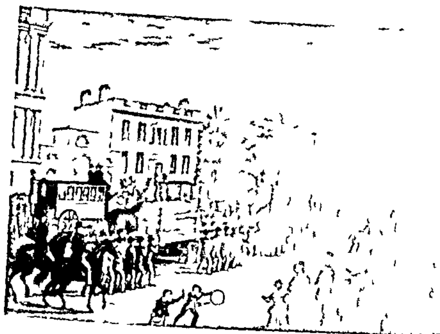
हेम्पस्टेड हीथ से घर को वापसी का रास्ता हमेशा बहुत आनन्ददायक होता था, हालाकि विगत आनन्द की अपेक्षा आगामी आनन्द हमेशा अधिक सुखकर होता है। हमारे लिए उदासी के पर्याप्त कारण थ, लेकिन हम अपनी असाध्य विनोदप्रियता द्वारा उससे सुरक्षित रहते थे। हमारे लिए उत्प्रवास की परेशानियो का अस्तित्व नही था और जो कोई भी उनकी शिकायत करता, उसे फौरन ज़ोर शोर से समाज के प्रति उसके कर्त्तव्यो की याद दिलायी जाती थी।

वापसी के समय सैलानियो का क्रम बदल जाता था। दिन भर की भागदौड से थके हुए बच्चे हेलेन के साथ सबसे पीछे पीछे चलते थे और टोकरी के खाली होने स भारमुक्त हेलेन उनकी देखभाल कर सकती थी। आम तौर स हम कोई न कोई गाना शुरू कर देते थे। हम राजनीतिक गाने विरले ही गाते थे। हमारे गान अधिकतर भावनापूर्ण लोक गीत होते थे—म यह बिलकुल सच कह रहा हू—देशभक्ति के गीत, जैसे कि 'ओ स्ट्रासबुर्ग स्ट्रासबुर्ग, तू है अदभुत नगर!", जो हमे खास तौर से प्रिय था। अथवा बच्चे हम नीग्रो लोगो के गान सुनाते और अगर बहुत थके न होते तो उनकी धुनो पर नाचते भी। सैर के दौरान राजनीति की भी उतनी ही कम बात होती थी, जितनी उत्प्रवास की परेशानियो की। अक्सर

---

*सेर्वान्ते के उपन्यास के पात्र डॉन क्विक्ज़ोट के घोडे से अभिप्राय है।—स०

**प्रशिया के बादशाह फ्रेडरिक द्वितीय ने दरबारी कवि गेलर्ट को भेटस्वरूप यह घोडा दिया था।—स०



मइ, १८४८ म चाटिस्टा का जुलू



सर्वहारा की पहली क्रान्तिकारी लड़ाइयां। १८३४ में लियों नगर के बुनकरों का विद्रोह

साहित्य और कला की ही चर्चा होती, जिससे मार्क्स को अपनी आश्चर्यजनक स्मरण शक्ति प्रदर्शित करने का अवसर मिलता था। «Divine comedy»* उन्हें प्राय कण्ठस्थ थी, जिसके लम्बे-लम्बे अंश तथा शेक्सपियर के नाटकों के दृश्य वे सुनाया करते थे। अक्सर उनके स्थान पर उनकी पत्नी शेक्सपियर सुनाती थी। शेक्सपियर सम्बन्धी उनका ज्ञान भी उत्कृष्ट था

छठी दशाब्दी के अन्त मे हम उत्तरी लन्दन के केंटिश टाउन और हैवर्स्टाक हिल नामक स्थानो पर बसे। तब हैम्पस्टेड और हाईगेट के बीच और परे के पहाडी मैदान हमारी हवाखोरी के प्रिय स्थान बन गये। वहा हम फूल चुनते और पौधो की जानकारी प्राप्त करने जिससे शहरी बच्चो को दोहरी खुशी होती जिनके मन मे बडे नगर के नीरस, कालाहलपूर्ण पाषाण-सागर के कारण हरियाली और प्राकृतिक सौदर्य के लिए लगाव पैदा हो गया था। उस दिन हम कितनी खुशी हुई थी, जब अपनी एक सैर के दौरान हमे कुछ पेडो की छाया मे एक तालाब मिल गया था और मन बच्चो को पहला वन्य "फोर्गेट मि नाट' फूल दिखाया था। उससे भी बढकर खुशी हमे तब हुई थी जब हम सावधानी से चारो तरफ का सुराग लेकर और "प्रवेश निषेध" की अवज्ञा करके गहरे हरे रग के मखमली कुज म पहुचे थे और एक पवन-सुरक्षित स्थान पर हमने हायसिन्थ के और अन्य वसती फूल पाये थ पहले तो मुझे अपनी आखो पर विश्वास नही हुआ क्योकि अब तक म यही जानता था कि वन्य हायसिन्थ पुष्प केवल दक्षिणी देशो म ही उगते ह – स्विटज़रलैण्ड म जेनेवा झील के पास, इटली म और यूनान म उससे आगे उत्तर म नही। यहा मने उक्त धारणा के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रमाण देखा और अग्रेजो के इस दावे की अप्रत्याशित पुष्टि हुई कि जहा तक फूलो का सम्बन्ध है, ब्रिटेन की जलवायु इटली जैसी ही है। निस्सन्देह वे हायसिन्थ के ही फूल थे – सामान्य, हल्के नीले उतने बडे नही जितने फुलवारियो मे उगनेवाले होते ह और एक डाली पर उतने बहुसख्यक भी नही, लेकिन वही खुशबू, यद्यपि कुछ अधिक तीखी।

हमने अपने इस सुगधिपूर्ण कुज से दुनिया पर, कुहासे के कुरूप रहस्य से आच्छादित अपनी विराटता मे सामने फले हुए ससार के उस प्रचण्ड असीम नगर पर गर्व के साथ दृष्टि डाली।

---

*महान इतालवी कवि दाते का महाकाव्य। – स०

१३

कुछ अप्रिय क्षण

रब्ले* के चद अप्रिय क्षणो से कौन परिचित नही, जिनके दौरान मदिरालय के मालिक का पैसे अदा करना जरूरी होता था, वरना हालत और बदतर हो सकती थी। ऐसे क्षण किसने नही झेले है? मन भी झेले ह। ऐसे क्षण आये परीक्षा से पहले, मेरे प्रथम भाषण के पूव और उस समय, जब पहली बार जेल के दरवाजे के सामने सन्तरी न मुझे अपनी पेटी और टाई उतार देने का आदेश दिया था, ताकि मै आत्महत्या करके कोट माशल से बचने की कोशिश न कर सकू। यह बात उसने मेरी चकित जिज्ञासा के उत्तर मे बेलाग साफदिली के साथ बताई थी। वे और वसी ही अय घडिया भी निश्चय ही अप्रिय थी। लेकिन जिन क्षणा का मै जिक्र करना चाहता हू, उनकी तुलना म उक्त क्षण सह्य ही नही, प्रिय भी थ। उनकी अवधि पद्रह मिनट भी नही रही होगी, हद से हद दस मिनट या शायद पाच मिनट ही। मैने समय जाचा नही, ऐसा करने का वक्त ही नही था। वक्त होता भी तो मेरे पास घडी नही थी। उत्प्रवासी और घडी! म केवल इतना ही जानता हू कि वे क्षण मेरे लिए अनन्त थे।

यह घटना लदन मे १८ नवम्बर १८५२ को हुई।

'लौह ड्यूक" और "शत युद्ध विजेता', लाड वेलिंगटन, जिह ब्रिटिश जनता न सुधार आदोलन के दौरान विनम्र विनीत बना दिया था, १४ सितम्बर को वामर की अपनी गढी म मर गए थे उस "राष्ट्रीय नायक की अत्येष्टि राष्ट्रीय सजधज' के साथ सत पाल के चच म होनी थी, जहा उहे अय राष्ट्रीय नायका' के पहलू म दफनाया जाना था। उनकी मौत के दिन स ही, यानी प्राय दो महीने तक सारा ब्रिटेन, खास तौर स सारा लदन इसी अत्येष्टि समारोह की बात कर रहा था, जो शान और शक्त मे पहल क सभी राष्ट्रीय अनुष्ठाना को मात द देनेवाला

---

*रब्ले, फ्रासुआ (लगभग १४९४-१५५३) – पुनर्जागरणकाल के महानतम फ्रामीसी लेखक मानवतावादी। – स०

था जैसे कि अंग्रेजो के दावे के अनुसार स्वय उक्त ड्यूक ने पहले के सभी नायको को पीछे छोड दिया था

सारा ब्रिटेन गतिमान था। अनुष्ठान का दिन आया। सारा लन्दन चल रहा था। देश के कोने-कोने से आनेवाले लाखो और विदेश से आनेवाले हजारो लोगो ने लन्दन की लाखो की सख्या को और भी बहुत बढा दिया था।

मै ऐसे तमाशो और जुलूसो को नापसन्द करता हू और अपने अनेक उत्प्रवासी साथियो की तरह उस समय या तो अपने घर पर पडे रहने अथवा जेम्स पार्क चले जाने को तरजीह देता हू। लेकिन दो सहेलिया ने मुझे अपना इरादा बदलने को मजबूर कर दिया

वे सचमुच ही मेरी बहुत पक्की सहेलिया थी – श्यामनयना तथा कृष्ण-कुचित-केशिनी जेनी, जो "मूर" की, अपने पिता की बिलकुल प्रतिमूर्ति थी, तथा कोमलागी, स्वर्णकेशिनी, चपलनयना लौरा, जो अपनी मा का ही रूप थी।

दोनो लडकिया प्रथम परिचय के समय ही मेरे साथ हिल मिल गई थी और मेरे पहुचते ही मुझ पर अपना अधिकार कर लेती थी। लन्दन के अपने उत्प्रवासी जीवन के दौरान अगर मै जिन्दगी को खुशगवार बनानेवाली अपनी खुशदिली कायम रख सका, तो उसका अधिकतर श्रेय उन्हे ही था। मन के अत्यधिक खिन्न होने पर मै अक्सर अपनी नन्ही प्रिय सहेलियो के पास भाग जाता था और उनके साथ सडको तथा बागो की सैर किया करता था। तब मेरी उदास चिन्तना के बादल छट जाते थे और सघर्ष के निमित्त शक्ति तथा सुख देनेवाली खुशमिजाजी लौट आती थी।

आम तौर से मुझे उन्हे कहानिया सुनानी पडती थी – परिचय के चन्द दिनो बाद ही मै अच्छा कथक्कड मान लिया गया था और मेरा सदैव तुमुल आह्लाद के साथ स्वागत होता था। सौभाग्य से मुझे बहुतेरी कहानिया याद थी और जब मेरा कथा भण्डार समाप्त हो गया, तब मुझे और कहानिया गढनी पडी

जब मै बेसब्री से उछलती कूदती लडकियो को लेकर तमाशे के लिए रवाना हुआ, तो श्रीमती मार्क्स ने कहा, 'बच्चो का ध्यान रखिएगा। जहा भीड बहुत अधिक हो, वहा मत जाइएगा। और हम अभी दरवाजे पर ही थे कि चिन्ताकुल भाव से हमारे पीछे दौडकर आनेवाली हेलेन ने

पुकारकर कहा, "प्यारे लाइब्रेरी, बहुत सावधान रहिएगा!" (यह अजीब-सा उपनाम मुझे बच्चो ने द रखा था)।

मेरी योजना तैयार थी। किसी खिडकी या किसी अड्डे पर जगह पाने के लिए हमारे पास पसे नही थे। चूकि जुलूस स्ट्रेण्ड से होकर नदी के किनारे-किनारे जानेवाला था, इसलिए हम स्ट्रेण्ड से नदी की ओर जानवाली किसी एक सडक पर ही वढ जाना था।

लडकिया दाना तरफ से मेरे हाथ पकडे हुई थी। मेरी जेब मे कलेवा था। हम अपने निर्धारित स्थान की ओर चल पडे, जो टेम्पुल वार और पुराने नगर-फाटको के पास वेस्टमिनस्टर तथा सिटि के वीच था। सुबह से ही सडको पर लोगा की भरमार थी और अब तो वे खचाखच भर गई थी। लेकिन चूकि जुलूस को राजधानी के दूरस्थ हलको स होकर गुजरना था, इसलिए भीड विभिन्न सडका पर वट गई और हम रेल पेल के बिना ही निर्धारित स्थान पर पहुच गए। जगह का मेरा चुनाव अच्छा साबित हुआ। मै वहा बनी सीढिया पर खडा हो गया और दोना लडकिया मुझस एक सीढी ऊपर, मेरा हाथ पकडे आर एक दूसरी से सटकर खडी हा गयी।

अरे, वह क्या हे? उमडता हुआ जन सागर। दूरस्थ सागर की दवी घुटी गूज निकट स निकटतर आती गया वच्चिया पुलकित हो उठी। कोई धक्कापल नही हुई और मेरी चिन्ता दूर हो गई।

वडी देर तक हमारे सामने से स्वणदीप्त जुलूस अन्तहीन तारतम्य मे गुजरता रहा, यहा तक कि साने की झालरा स सज्जित अन्तिम घुडसवार भी गुजर गया आर तमाशा समाप्त हो गया।

अचानक हमारे पीछे सकुलित भाड, जुलूस का अनुगमन करने का उत्सुकता म नोक के साथ आगे उझरी। मने पूरी ताक्त से अपन पर जमा दिए आर वच्चिया का वचाव करने की कोशिश की, ताकि भीड उनस टकराए वगैर ही आगे निकल जाए। किन्तु व्यथ! उमडती भीड की शक्ति के सामन काई भी मानवीय वल उसी तरह नही टिक सकता, जस कठोर शीत के वाद प्लावी हिमखण्ड को कोई नाजुक नौका नहा ताड सकती। मुझे अपना यह प्रयास छाडना पडा आर लडकिया का मजबूता स अपन साथ चिमटाए हुए मन मुख्य रले म स निकल जान की काशिश की। लगा कि म सफल हा रहा हू और मने इतमीनान की सास ला। लेकिन इतन

मे दाइ ओर से एक और प्रचडतर इसानी रेला हम पर पिल पडा हम तटवध पर ठेल दिए गए और वहा सकुलित हज़ारो-लाखा लोग जुलस का पीछा कर रहे थे, ताकि उस तमाशे को एक बार फिर देख सक। मन लडकिया का अपने कधा पर उठा लेने की काशिश की, लेकिन भीड का दबाव मेरे आस पास बेहद अधिक था। मैंने बच्चिया की बाह कसकर पकड ली, लेकिन जन-बवडर हमे रेलता चला गया। यकायक मुझे महसूस हुआ कि मेरे और बच्चियो के बीच कोई शक्ति चीरती हुई घुसी आ रही है जिसने बच्चिया को झटके के साथ मुझसे झपट लिया। प्रतिरोध व्यथ था। मुझे इस डर से उनकी बाह छोड देनी पडा कि कही वे टूट न जाए या कही उनकी हड्डी न उतर जाए। वह बहुत ही भयानक क्षण था।

अब क्या करू? अपनी तीन गुजरगाहा के साथ टेम्पुल बार का फाटक मेरे सामने था। बीच की गुजरगाह सवारियो के लिए थी और अगल-बगल की गुजरगाह पैदल चलनेवाला के लिए। मानवीय ज्वार फाटका पर वसे ही उमड रही थी, जस पुलो के स्तभो पर जलावत। मुझे इस भीड का चीरत हुए आगे जाना ही था! मेरे चतुर्दिक उठती हुई भयानक चीखा न परिस्थिति की समस्त विपन्नता स्पष्ट कर दी। अगर बच्चिया परा तले कुचली नही गईं, तो वे मुझे उस पार मिलगी, जहा दबाव हलका हो गया होगा। काश कि ऐसा ही हो! मने कुहनियो और सीने से दीवाना की तरह धक्के दिये। लेकिन ऐसी तूफानी ज्वार मे अकेला आदमी बवडर मे तिनके के समान होता है। लेकिन मैं जूझता ही गया, जूझता ही गया। दजना बार मुझे लगा कि मै निकल गया, लेकिन बार बार एक ओर का ठेल दिया जाता था। अत मे एक हिचकोला आया, प्रचड धक्कमपेल हुई और पलक मारते हा मै घनी भीड मे से निकल गया। मैन बेचनी से इधर उधर देखकर बच्चियो की तलाश की। कही नही! मेरा दिल बैठ गया। तभी दो स्पष्ट बचकानी आवाजें आइ

'लाइब्रेरी!"

मुझे लगा कि जसे म सपना देख रहा होऊ। मगर दाना बच्चिया मेरे सामने खडी थी, मुस्कुराती हुई और सही सलामत। मैंने उन्ह चूमा और गले लगाया।

क्षण भर को मै बिलकुल अवाक था। तब उन्होंने मुझे बताया कि कैसे उस तूफानी धारा ने, जिसने उन्हें मेरी मुट्ठियों से झटककर छीन लिया था, उन्हें फाटक से सुरक्षित रूप में पार निकालकर उन्ही दीवारों के पास एक तरफ को फेंक दिया था, जिनके कारण दूसरी जानिब भीड गतिरुद्ध हो गई थी। वहा पर वे दीवार के आगे को निकले हुए एक भाग के साथ सटकर खडी रह गई थी, क्योकि उन्हें मेरी यह हिदायत याद आ गई थी कि अगर हमारी सैरो मे वे कभी खो जाए, तो यथासभव जहा हो, वही बनी रहे।

हम विजयोल्लास के साथ घर लौटे। मार्क्स, उनकी पत्नी और हेलेन ने हमारा हर्षपूर्वक स्वागत किया, क्योकि वे सभी बहुत चिंतित थे। वे सुन चुके थे कि भीड भयानक थी और बहुत-से लोग कुचल दिये गये थे, घायल हो गए थे। बच्चियों को इस बात का गुमान तक भी नही था कि वे कितने बडे खतरे मे पड गई थी। वे तो बहुत ही खुश थी और मैने भी उस शाम किसी को यह नही बताया कि उन चन्द क्षणो मे मुझपर क्या कुछ गुज़र चुकी थी।

कई औरतो की उसी जगह जान चली गई थी, जहा बच्चिया मुझसे चिपट ली गई थी। उन मनहूस घडियो की याद मेरे लिए इस तरह ताज़ा है जैसे अभी कल की ही बात हो।

१४

मार्क्स और शतरज

मार्क्स ड्राफ्ट बहुत अच्छा खेलते थे। इस खेल मे वे इतने सिद्धहस्त थे कि उन्हें हराना मुश्किल था। शतरज खेलने मे भी उन्हें मजा आता था, लेकिन उसमे वे कुछ खास माहिर नही थे। उसमे दक्षता की कमी को वे जोश-खरोश और आकस्मिक हमले द्वारा पूरा करने की कोशिश करते थे।

छठी दशाब्दी के शुरू मे हम उत्प्रवासियो के बीच शतरज आम खेल था। हमारे पास जरूरत से ज्यादा समय था और हम लाल वोल्फ़ के नेतृत्व मे,

जो पेरिस के वेहतरीन शतरजी हल्को मे अक्सर खेले थे और खेल के कुछ दाव-पेच सीख चुके थे, यह "बुद्धिमानो का खेल" बहुत खेला करते थे।

कभा-कभी हमारे बीच पुरजोश शतरजी दगल होते थे। जो हार जाता था, उसका खूब मजाक बनाया जाता था। खेल के दौरान जिन्दादिली रहती थी और अक्सर बहुत शोर शरावा रहता था।

मार्क्स कठिन स्थिति म पडने पर चिढ जाते और हार जाने पर आग बबूला हो उठते। ओल्ड कॉम्प्टन स्ट्रीट के माडल लाजिग हाउस* म, जहा हम मे से कई लोग कुछ समय तक साढे तीन शिलिंग साप्ताहिक किराए पर रहते थे, हम हमेशा अग्रेजो से घिरे रहते थे। वे हमारे खेल को उत्कठित दिलचस्पी के साथ देखा करते थे (ब्रिटेन के मजदूरो म भी शतरज लोकप्रिय था) और खेल के साथ चलनेवाले हसी-खुशी के कोलाहल का भी मजा लेते थे, क्योकि दो एक दजन अग्रेजो की तुलना मे दो जमन कही अधिक शोर मचाते हैं।

एक दिन मार्क्स ने हमे उल्लासपूवक सूचना दी कि उन्होंने एक ऐसी नई चाल खोज निकाली है, जो हम सभी को पराजित कर देगी। उनकी चुनौती स्वीकार कर ली गई और उन्होंने सचमुच हम सभी को बारी बारी से हरा दिया। लेकिन हमने अपनी हार से शीघ्र ही सबक लिया और मैं मार्क्स को मात देने मे कामयाब हो गया। काफी देर हो चुकी थी, इसलिए उन्होंने दूसरी सुबह अपने घर पर जवाबी खेल के लिए आग्रह किया।

---

*माडल लाजिग हाउस—बैरक जैसी इमारत जिसमे किरायेदारो के लिये अलग-अलग कमरे, साझा रसोईघर और बठकखाना तथा पढ़ने और धूम्रपान का एक साझा कमरा होता था। लदन मे ऐसे अनेक मकान थे। ऐसी कुछ इमारतो मे परिवारो के लिये अनेक कमरो और उपयुक्त साझे कमरो के अलावा धुलाई का एक साझा कमरा भी होता था। एक विशेष कारिंदा ऐसी इमारतो का प्रबधक होता था। इमारत बेहद साफ-सुथरी रखी जाती थी। लदन मे अभी भी ऐसी कई सस्थाए सफलतापूवक चलाई जा रही है। (लीब्कनेख्त का नोट)

ठीक ग्यारह बजे, जो लन्दन के लिए बहुत सवेरा समझा जाता है, मैं मार्क्स के यहा पहुच गया। वे अपने कमरे मे नही थे, लेकिन मुझे बताया गया कि जल्द ही आनेवाले हैं। श्रीमती मार्क्स कही दिखाई नहा पडी और हेलेन का मूड भी कुछ अच्छा नही दिख रहा था। मैं पूछू-पूछू कि मामला क्या है कि "मूर" आ गए। उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और शतरज की बिसात निकाल ली।

मोचा जम गया। मार्क्स ने रात मे अपनी चाल को और बेहतर बना लिया था और जल्दी ही मैं बुरी तरह फस गया। मैं मात खा गया और मार्क्स बाग-बाग हो गए। उन्होने सैण्डविचा के साथ कुछ पीने को मगवाया। फिर हम दूसरी बाजी खेले और म जीत गया और इस प्रकार हम बदलते हुए मिजाज के साथ हारते-जीतते खेलते रहे

श्रीमती मार्क्स एक बार भी दिखाई नही पडी और किसी बच्ची ने भी नजदीक फटकने का साहस नही किया। बाजिया चलती रही, कभी एक के पक्ष म, तो कभी दूसरे के। अन्त मे मैंने मार्क्स को लगातार दो बार मात दे दी। उन्हाने खेल को जारी रखने का आग्रह किया, लेकिन तभी हेलेन ने निर्णायक ढग स कह दिया 'बस, बहुत हो चुका।"

१५

अभाव और तगदस्ती

मार्क्स की बाबत अविश्वसनीय सख्या म झूठी बात उडायी गयी ह। दूसरी बाता के अलावा यह भी कहा गया है कि व रगरेलिया का हगामी जीवन बिताते थ, जबकि उनके हल्के क अधिकतर उत्प्रवासी भूखे रहत थ। म यह दावा नही करता कि मुझे ब्यारे म जान का अधिकार है, लेकिन इतना कह सकता हू कि श्रीमती मार्क्स की टीपा से मुझे इस बात के बारम्बार और ज्वलन्त प्रमाण मिल हैं कि मार्क्स और उनके परिवार क लिए निधनता वा कटु घडिया विरली और सयोगवश ही नहा थी, जा सवथा असहाय उत्प्रवासित लागा क लिए सदा हा सभव ह, बल्कि उन्ह उत्प्रवास म बरसा

तीव्रतम ग्रभाव के कष्ट झेलने पडे। मार्क्स और उनके परिवार से अधिक कष्टभोगी उत्प्रवासी शायद बहुत नही थे। यहा तक कि बाद मे भी, जब उनकी आमदनी अपेक्षाकृत अधिक और ज्यादा नियमित हो गई थी वे अभाव की चिन्ता से मुक्त नही हुए। बदतरीन दिनो के बीत जाने पर भी बरसो तक «*New York Daily Tribune*» से लेखो के लिए हर सप्ताह मिलनेवाला एक पौण्ड ही मार्क्स की एकमात्र सुनिश्चित आमदनी था

१६

मार्क्स की बीमारी और मौत

(तुस्सी का पत्र)*

मुस्ताफा (अल्जीरिया) मे 'मूर' के आवास के बारे मे मैं बस इतना ही कह सकती हूँ कि मौसम बहुत बुरा था, कि 'मूर' एक बहुत अच्छा और योग्य डाक्टर पा गए और यह कि होटल मे हर कोई उन्हे चाहता था, उनका ध्यान रखता था।

१८८१–१८८२ की पतझड और जाडा मे 'मूर' पहले पेरिस के निकट आर्जेन्त्योए मे जेनी के साथ रहे। हम उनसे वही मिले और चन्द हफ्ते ठहरे। उसके बाद वे फ्रास के दक्षिण मे और अल्जीरिया चले गए। लेकिन जब लौटे तो उनकी तबीयत काफी खराब थी। १८८२–१८८३ की पतझड और जाडा उन्होने वेन्तनोर (व्हाइट टापू) मे बिताया और जेनी की मौत के बाद १२ जनवरी, १८८३ को वापस आये।

"अब सुनिए कार्लसबाद की बात। हम वहा पहले पहल १८७४ मे गए थे। तब 'मूर' को जिगर की तकलीफ और अनिद्रा के कारण वहा भेजा गया था। चूकि प्रथम आवास के दौरान उन्हे वहा असाधारण स्वास्थ्य-

---

*यहा लीब्कनेख्त ने मार्क्स की सबसे छोटी बेटी, एल्योनोरा (जिस परिवार मे तुस्सी कहा जाता था) से प्राप्त एक पत्र उद्धृत किया है।—स०

लाभ हुआ था, इसलिए १८७५ मे वे अकेले वहा दुबारा गए। अगले साल १८७६ मे मैं फिर उनके साथ गई, क्योकि उन्होने कहा कि पिछले साल मेरा अभाव उन्हे बहुत महसूस हुआ था। कार्ल्सबाद मे वे अपने इलाज के बारे मे अधिक विवेकशील थे और नियमनिष्ठा के साथ अपने लिए विहित सब कुछ का पालन करते थे।

'वहा हमारे अनेक मित्र बन गए। 'मूर' के साथ यात्रा करना आनन्ददायक था। वे हमेशा खुशमिजाज रहते और हर चीज से, चाहे वह कोई सुन्दर दृश्य हो अथवा एक गिलास बियर, आनन्द-लाभ करने को तत्पर रहते थे। उनका अपार इतिहास ज्ञान हर उस स्थान को जहा हम जाते वर्तमान की अपेक्षा अतीत मे अधिक सजीव और अधिक विद्यमान बना देता।

"मेरा अनुमान है कि 'मूर' के कार्ल्सबाद के आवास की बाबत थोडा-बहुत लिखा जा चुका है। मैंने एक लम्बे लेख की बात भी सुनी है, लेकिन मुझे यह याद नही रहा कि वह किस अखबार मे था।

"१८७४ मे हम आप से लाइप्जिग मे मिले थे। वापसी मे हम चक्कर काटकर बिन्गेन गए। 'मूर' मुझे बिन्गेन दिखाना चाहते थे, क्योकि वे मेरी मा के साथ मधुमास मनाने वहा गए थे। इन दो यात्राओ मे हमने ड्रेस्डेन, बर्लिन, प्राग, हैम्बर्ग और नुरेम्बर्ग का भी दौरा किया।

१८७७ मे 'मूर' फिर कार्ल्सबाद जानेवाले थे, लेकिन हमे पता चला कि जर्मन और आस्ट्रियाई अधिकारी उन्हे वहा से निकाल देने का इरादा रखते है और चूकि निकाले जाने का खतरा उठाने के लिए यात्रा बहुत खर्चीली और लम्बी थी, इसलिए 'मूर' वहा फिर नही गए। यह उनके स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकर बात थी, क्योकि कार्ल्सबाद मे इलाज के बाद वे सदा ऐसा महसूस करते थे मानो उनमे नई जिन्दगी आ गई हो।

"बर्लिन हम मुख्यत पिता के वफादार दोस्त, अपने प्रिय चाचा एडगर फान वेस्टफालेन से मिलने के लिए गए। हम वहा केवल कुछ ही दिन ठहरे। 'मूर' को यह सुनकर बडा मजा आया कि तीसरे दिन हमारे वहा से विदा होने के घटे भर बाद ही हमारे होटल पर पुलिस पहुचा।"

* *

"१८८१ की पतझड तक हमारी प्यारी मा इतनी बीमार हो गई कि कभी-कभी ही बिस्तर से उठती। 'मूर' अपनी तबीयत की खराबी के बारे मे हमेशा बहुत लापरवाही बरतते थे, सो उन्हे भी प्ल्यूरिसी ने बुरी तरह धर दबाया। डाक्टर की, हमारे नेक दोस्त डकिन की राय मे उनकी बीमारी प्राय असाध्य थी। वह भयानक समय था। प्यारी मा आगेवाले बडे कमरे मे पडी थी और 'मूर' बगलवाले छोटे कमरे मे। वे दोनो एक दूसरे के सान्निध्य के इतने आदी हो चुके थे, उनके जीवन एक दूसरे के अग बन चुके थे लेकिन अब वे साथ-साथ एक ही कमरे तक मे नही रह सकते थे।

"हमारी भली बूढी हेलेन—आप तो जानते ही है कि वह हमारे लिए क्या थी—और मैं उन दोनो की तीमारदारी करती थी। डाक्टर का कहना था कि हमारी तीमारदारी ने ही 'मूर' को बचा लिया। बात चाहे जो रही हो, मैं बस इतना ही जानती हू कि तीन हफ्ते तक न ता हेलेन ने बिस्तर को पीठ लगाई और न मैने ही। हम रात दिन पैरो पर ही काट देते और बेहद थक जाने पर बारी-बारी से घटे घटे भर को आराम कर लेते।

"मूर फिर अपनी बीमारी पर काबू पा गए। मुझे वह सुबह कभी न भूलेगी जब उन्होने अपने म मा के कमरे तक जान की ताकत महसूस की। एकसाथ होने पर वे दोना जसे फिर जवान हो उठे—एक दूसरे से हमेशा के लिए बिछडनेवाले रोगग्रस्त वद्ध और मरती हुई वद्धा के बजाए जसे प्रेमी युवक और युवती बन गए।

"'मूर' कुछ अच्छे हो गए और हालाकि उनकी कमजोरी अभी पूरी तरह दूर नही हुई थी, फिर भी ताकत आन लगी थी।

तभी २ दिसम्बर, १८८१ को मा का देहात हा गया। उनके अन्तिम शब्द—अजीब बात थी कि व अग्रेजी म कहे गए थे—उनके 'कार्ल' के लिए थे।

"जब हमारे प्रिय 'जनरल' (एगेल्स) आए, ता उन्होने एक ऐसी बात कही जिसे सुनकर उस समय म प्राय आपे के बाहर हो गई थी। उन्होने कहा 'मूर' भी मर गये'।

"ग्रार यह बात सच थी।

"प्यारी मा के जीवन क साथ ही 'मूर' का जीवन भी चुक गया। उन्होने जीवन से चिपके रहने के लिए घोर सघष किया—सघषप्रिय तो वे ग्रन्त तक बन रहे—लेकिन वे टूट चके थे। उनके स्वास्थ्य की ग्राम हालत वद स वदतर होती गई। ग्रगर उन्ह केवल स्वचिन्ता होती, तो व सब कुछ से किनारा करके बैठ रहते। लेकिन उनके लिए एक चीज सर्वोपरि थी—हेतु के प्रति वफादारी। उन्होने ग्रपनी महान कृति को पूरा करने का कोशिश की ग्रौर इसी लिए ग्रपने स्वास्थ्य सुधार के लिए फिर से यात्रा करने को राजी हो गए।

"१८८२ के बसन्त मे वे पेरिस ग्रौर ग्रार्जेन्त्योए गए, जहा म उनस मिली। हम लोगो ने जेनी ग्रौर उनके बच्चो के साथ वास्तविक खुशी के चन्द दिन बिताए। उसके बाद 'मूर' फ्रास के दक्षिण, ग्रौर ग्रत म ग्रल्जीरिया गये।

"ग्रल्जीरिया, निस ग्रौर कान के उनके पूरे ग्रावास-काल म मौसम खराब रहा। उन्होने मुझे ग्रल्जीरिया से लम्बे लम्बे खत लिखे। उनम स ग्रनक मर पास नही रहे, क्योकि उनकी मरजी के मुताबिक म उन पत्रो को जेनी को भेज देती थी जिनमे से बहुतरे मुझे वापस नही मिले।

'ग्रन्तत जब 'मूर' घर लौटे, तो उनकी हालत बहुत खराब थी ग्रौर हमे भयानक ग्रनिष्ट की ग्राशका होने लगी। डाक्टर की सलाह स उन्होने पतझड ग्रौर जाडा व्हाइट द्वीप के वेटनार नामक स्थान पर बिताया। यहा मुझे इस बात का जिक्र कर देना चाहिए कि मूर' की मरजी क मुताबिक उस समय म तीन महीने जेनी के सबस बडे लडके जान (जानी) के साथ इटली म रहा। १८८३ के शुरू म म जानी को साथ लेकर मूर' क पास पहुच गई। जानी उनका सबस चहेता नाती था। फिर मुझे वहा से वापस ग्राना पडा, क्योकि मेरी पढाई मरी प्रतीक्षा कर रही थी।

'तब पडी ग्राखिरी भयानक चोट जेनी की मौत की खबर मिली। 'मूर की प्रथम सतान जेनी, उनकी सबस चहती बेटी ग्रकस्मात (११ जनवरी को) चल बसी। हम 'मूर' क पत्र मिल थ—व इस समय मर सामन पडे ह—जिनम उन्होने लिखा था कि जेनी की सहत सुधर रही थी ग्रौर हमारे (मरे ग्रौर हलन क) चिन्तित हान की काई बात नही थी।

जिस पत्र मे 'मूर' ने यह बात लिखी थी, उसके घटे ही भर बाद हम मत्यु के समाचार का तार मिला। मैं फौरन वेटनोर के लिए रवाना हो गई।

"मेरी जिदगी मे बहुत वार गम की घडिया आई है, लेकिन उस दिन से अधिक गमनाक वे कभी नही थी। मुझे महसूस ही रहा था जैसे म पिता को मोत की सजा सुनाने जा रही होऊ। उस लम्बी चिताकुल यात्रा मे म लगातार यही सोचती रही कि उह यह खबर किस तरह सुनाऊगी। लेकिन मुझे इसकी जरूरत नही पडी, मेरी सूरत ने ही सब कुछ कह दिया और 'मूर' फौरन बोल उठे 'हमारी जेनी चल बसी!' उसके बाद उहाने मुचे फौरन बच्चो के पास पेरिस जाने को कहा। मैं उनके साथ रहना चाहती थी, लेकिन उहाने कुछ भी सुनना गवारा नही किया। वटनोर म मुश्किल से आधा घटा रुककर म लदन की गमनाक यात्रा के लिए चल पडी और वहा से पेरिस पहुची। बच्चा के हित मे मूर ने जो चाहा, मैंने वही किया।

"मैं अपनी घर-वापसी की बाबत कुछ नही कहूगी। उस वक्त की याद करके मैं काप उठती हू, कैसी व्याकुलता थी, कैसी वेदना! लेकिन नही, यह चर्चा बहुत हो चुकी। मैं वापस आई और 'मूर' भी अपनी अन्तिम सासे लेने के लिए घर लौटे।

"अब प्यारी मा के बारे म चद शब्द और। वे महीनो से घुल रही थी और कैसर की सारी भयानक यन्त्रणाए चेल रही थी। लेकिन इसके बावजूद उनकी खुशमिजाजी, उनकी अनत विनोदप्रियता, जिससे आप भली भाति परिचित है, हमेशा बनी रही। वे जमनी के चुनावा (१८८१) के नतीजो की बाबत बच्चे जैसी बेसब्री के साथ पूछती रही और जीत पर कितनी अधिक खुश हुइ! वे आखिरी घडी तक जिदादिल बनी रही और मजाका से अपने बारे मे हमारी चिता दूर करने की कोशिश करती रही। जी हा, इतनी भयानक पीडा भोगती हुई वे मजाक करता रही, हम लोगो के ऊपर और डाक्टर के ऊपर हसता रही, क्योकि हम बहुत चिंतित थे। वे प्राय अतिम क्षण तक होश म रही और जब बोलना सभव नही रह गया—उनके अतिम शब्द 'काल' के लिए थे—तब हमारे हाथ अपन हाथो से लेकर मुस्कुरान की कोशिश करती रहा।

'जहा तक 'मूर' का सम्बन्ध है, सो तो आप जानते हैं कि वे मेटलण्ड पार्क में अपने शयन-कक्ष से निकलकर अध्ययनकक्ष मे अपनी आराम कुर्सी में जा बैठे थे और वहीं शान्तिपूर्वक गुजर गए थे।

"वह आरामकुर्सी 'जनरल' के पास उनकी मौत के समय तक रही और अब मेरे पास है।

"जब 'मूर' के बारे में लिखियेगा, तब हेलेन को न भूलिएगा (मां को तो आप नहीं ही भूलेंगे, यह मैं जानती हूं)। हेलेन एक प्रकार से वह धुरी थी, जिसके गिर्द घर में सब कुछ घूमता था। वह श्रेष्ठतम और अधिकतम वफादार दोस्त थी। इसलिए 'मूर' के सम्बन्ध में लिखते समय उसे न भूलिएगा।"

* * *

"अब मैं दक्षिण में 'मूर' के आवास के सम्बन्ध में कुछ ब्योरे दूंगी, जैसा कि आपने करने को लिखा है। १८८२ के शुरू में हम दोनों आर्जेंत्याए में चन्द हफ्ते जेनी के साथ रहे। मार्च और अप्रैल में 'मूर' अल्जीरिया में थे और मई में मोन्टे-कार्लो, निस और कान में। जून के अन्त से जुलाई भर वे फिर जेनी के यहां रहे। तब हेलेन भी आर्जेंत्योए में थी। वहां से वे लौरा के साथ स्विटजरलैण्ड, वेवे इत्यादि गए। सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के शुरू में वे ब्रिटेन लौट आए और सीधे वेन्टनोर चले गए, जहां जानी के साथ मैं उनसे मिलने गई।

"अब आपके सवालों के जवाब में चन्द टीपें। मेरे खयाल में हमारा नन्हा एडगर (मुश) १८४७ में पैदा हुआ था और अप्रैल १८५५ में गुजर गया। नन्हा फाक्स (हाइनरिख) पैदा हुआ था ५ नवम्बर, १८४९, को और लगभग दो साल की उम्र में चल बसा था।* मेरी बहन फ्रांसिस्का

---

*उसका नाम "बारूद षड्यन्त्र" के वीर—गायस फाक्स के नाम पर रखा गया (लीब्कनेख्त का नोट)। ५ नवम्बर, १६०५ को षड्यन्त्रकारियों ने, जिनमें गायस फाक्स भी था, पार्लमेंट की इमारत को—दोनों सदनों के सदस्यों तथा राजा समेत—उड़ाने का इरादा किया।—सं०

१८५१ मे पैदा हुई थी और लगभग ग्यारह महीने की उम्र मे ही मर गई थी।'

* * *

'अब हमारी नेक हेलेन, या 'निम' के बारे मे आपके सवालो पर आती हू। हम उन्हे आखिरी दिनो मे 'निम' पुकारने लगे थे, क्योकि न जाने क्यो जानी लागो ने उसे छुटपन मे ही यह नाम दे दिया था। वह जब ८ या ९ साल की बच्ची थी तभी हमारी नानी फॉन वेस्टफालेन के घर मे नौकर हुई थी और 'मूर', मेरी मा और मामा एडगर फान वेस्टफालेन के साथ-साथ बडी हुई थी। वृद्ध फान वेस्टफालेन दम्पति के लिए सदा उसके मन मे बडा अनुराग था। वैसा ही अनुराग 'मूर' को भी था। बूढे बैरन फान वेस्टफालेन और शेक्सपियर तथा होमर के साहित्य के उनके आश्चर्यजनक ज्ञान की बाते करते वे कभी नही अघाते थे। बैरन होमर के पूरे के पूरे गीत आद्योपान्त ज़बानी सुना सकते थे और शेक्सपियर के अधिकतर नाटक उन्हे जर्मन और अग्रेजी दोनो मे याद थे। उनसे भिन्न 'मूर' के पिता जिनकी 'मूर' बडी कद्र करते थे, सही अर्थ मे अठारहवी शताब्दी के 'फासीसी' थे और जिस तरह बूढे वेस्टफालेन को होमर और शेक्सपियर याद थे, उसी तरह उन्हे वाल्टेयर और रूसो याद थे। 'मूर' की आश्चर्यजनक बहुमुखी विद्वत्ता निस्सन्देह इन वशागत प्रभावो के कारण ही थी।

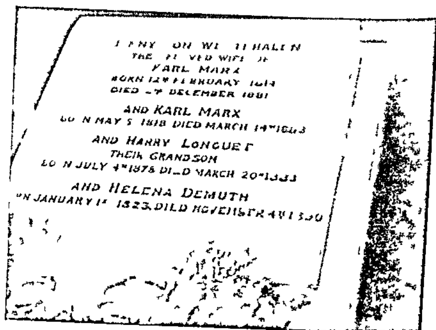
'खैर, अब हेलेन की बात पर लौटें। मै नही कह सकती कि वह मेरे माता पिता के पास उनके पेरिस जाने (जो उनकी शादी के शीघ्र ही बाद हुआ) के बाद आयी या उससे पहले। मै केवल इतना ही कह सकती हू कि नानी ने इस लडकी को 'जो कुछ वे बेहतरीन भेज सकती थी उसी के रूप मे 'वफादार और स्नेहमयी' हेलेन को मा के पास भेजा। और वफादार और स्नेहमयी हेलेन मेरे माता पिता के साथ बनी रही। बाद मे उसकी छोटा बहन मरिआन भी उसके पास आ गई। इसका तो आप को शायद ही स्मरण हो, क्योकि यह आपके बाद की बात है ,

मार्क्स की समाधि

वास्तव म उसे माक्स परिवार की समाधि कहना चाहिए। वह उत्तरी ल दन के हाईगेट कब्रिस्तान मे है। यह कब्रिस्तान एक पहाडी पर है, जहा से पूरे विराट नगर की झाकी मिलती है

हम सामाजिक जनवादी पीर पैगम्बर नही मानते और उनकी समाधिया का भी हमारे लिए कोई अस्तित्व नही है। लेकिन करोडा लोग साभार और ससम्मान उस व्यक्ति को याद करते है, जो उत्तरी ल दन के उस कब्रिस्तान म दफ्न है और हजारो साल बाद, जब मजदूर वग की आजादा की तम न्ना के रास्ते मे आनेवाली बबरता और तगदिली अतीत की अविश्वसनाय कथाए बन जाएगी, तब आजाद और कृतज्ञ लोग इस कब्र क पास नग सिर खडे होकर अपने बच्चा से कहगे "यहा दफ्न ह काल माक्स।'

यहा दफ्न हैं काल माक्स और उनका परिवार। सगमरमर का समाधि के सिरे पर सिरपेंचे की लता से आच्छादित सगमरमर की एक सादी पटरी तकिए की तरह पडी हे, जिस पर खुदा है



पारिवारिक समाधि मे परिवार के सभी मृत व्यक्ति नही दफन है। लदन म मरे तीन बच्चे लदन के दूसरे कब्रिस्ताना मे दफन हैं एडगर (मुश) तो निश्चय ही, और दूसरे दा शायद टाटेनहम कोट रोड पर व्हाइटफील्ड चैपल के कब्रिस्तान मे। माक्स की चहेती बेटी जेनी पेरिस के पास आर्जेन्त्योए मे दफन है, जहा उह मौत ने उनके फूलते फलते परिवार से छीन लिया था।

यद्यपि सभी मत बच्चा और नातिया को पारिवारिक समाधि मे जगह नही मिली फिर भी "वफादार हेलेन" को, हेलेन दमुत का, मिल गई, जो खून का रिश्ता न रखते हुए भी परिवार की सदस्या थी।

श्रीमती माक्स और उनके बाद खुद माक्स ने पहले ही यह फैसला कर लिया था कि उसे पारिवारिक समाधि मे ही दफनाया जायेगा। एगेल्स न, जो हेलेन के समान ही वफादार थे, उस कत्तव्य की पूत्ति जीवित वचे बच्चो के साथ मिलकर की, जिसे वे खुद ही अपनी मरजी से अजाम देते।

माक्स की सबसे छोटी बेटी द्वारा लिखित और उद्धत पत्र से प्रगट होता है कि माक्स के बच्चे हेलेन को कितना मानते थे, उसे कितना

जेनी फॉन वेस्टफालेन
काल माक्स की
प्रिय पत्नी
जन्म १२ फरवरी १८१४
मत्यु २ दिसबर १८८१
और कार्ल मार्क्स
जन्म ५ मई १८१८, मत्यु १४ माच १८८३
और हेरी लॉन्गे
उनका नाती
जन्म ४ जुलाई १८७८, मृत्यु २० माच १८८३
और हेलेन देमुत
जन्म १ जनवरी १८२३, मृत्यु ४ नवबर १८९०

स्नेह करते थे और कितनी निष्ठा के साथ उसकी स्मृति का सम्मान करते थे।

मैं अपनी आखिरी लदन-यात्रा से लौटता हुआ पेरिस से गुजरा और द्रावइ गया, जहा लफाग और उनकी पत्नी लौरा माक्स की एक सुदर बगलिया है। वहा लौरा और मने लदन की यादा म गात लगाए और मैंने इस छोटी सी किताब के लिखने का इरादा बताया। लौरा ने मुझसे ठीक वही बात कही, जो ऊपर उद्धत किए गए पत्र मे तुस्सी ने लिखी और बाद मे जबानी दुहराई थी "हेलेन को न भूलिएगा।"

नही, मैं हेलेन को नही भूला हू और नही भूलूगा। वह चालीस साल तक मेरी मित्र रही और लदन के उत्प्रवासी जीवन म अनेक वार मेरा "भाग्य" भी बनी। कितनी ही वार उसने मुझे चद पेनी देकर उस समय सहायता की, जब मेरी जेब बिलकुल खाली होती और माक्स के घर म बहुत तगी नही होती—क्योकि तब तो हेलेन के पास देन को कुछ हो हा नही सकता था। और मेरी दर्जीगीरी की कला के जवाब दे जान पर उसन कितनी ही वार किसी ऐसे आवश्यक वस्त्र की मरम्मत करके उसे चद हफ्ते और चलने योग्य बना दिया था, जिसके बदले नया वस्त्र लेना आर्थिक कारणो से मेरे लिए किसी प्रकार सभव नही था।

जब म हलेन स पहली बार मिला, तब वह २७ साल की थी। यह सच हे कि वह सुदरी नही थी, लेकिन अपन लम्बे, सुघड शरीर और खुशनुमा चहरे मोहरे की बदौलत आकपक थी। उसे चाहनेवालो का कमी नही थी और अनेक वार ऐस अवसर आए जब वह अच्छा वर प्राप्त कर सकती थी। लेकिन किसी भी प्रकार की बाध्यता न होते हुए भा उसके अनुरक्त मन के लिए यह स्वाभाविक ही था कि वह 'मूर' क साथ, उनकी पत्नी और उनके बच्चा के साथ बनी रहती।

वह उनके साथ ही बनी रही और उसकी जवानी के साल गुजर गए। वह अभावो और कठिनाइया मे, दुख और सुख म उनके ही साथ रही। उसन उस समय तक विश्राम नही जाना, जब तक मौत ने उन लोगा को नहा छीन लिया, जिनके साथ उसने अपना भविष्य बाध रखा था। विश्राम मिला उसे एगेल्स के घर और वहा उसका अन्त हुआ। अन्तिम घडी तक उसन कभी अपनी चिन्ता नहा की। आज वह पारिवारिक समाधि म दफ्न है।

• •

हमारे मित्र मोटेल्लेर, उर्फ "लाल डाक्मुशी", जो अब हाईगेट के निकट ही हैम्पस्टेड मे रहते है, मार्क्स की समाधि के बारे म यो लिखते है

"मार्क्स की समाधि सफेद सगमरमर की है। काले अक्षरो मे नाम और तारीखो वाली पटरी भी उसी पत्थर की है। दूब, जिसे मैं स्विट्जरलैण्ड से लाया था, सिरपेंचे और गुलाब के च द छोटे छोटे पौधे, बजरिया के बीच से उगी हुई घास—समाधि की बस यही मामूली सजावट है। मैं आम तौर से हफ्ते मे दो बार हाईगेट के कब्रिस्तान के पास से गुजरता हू और अगर समाधि पर घास बहुत घनी हो जाती है, तो उसे साफ कर देता हू। कभी-कभी पानी देना भी जरूरी होता है, खास तौर से तब, जब गर्मिया पिछली दो गर्मिया जैसी होती ह (इस साल जबकि शेष यूरोप म इतनी बारिश हुई, ब्रिटेन मे ऐसा सूखा पडा कि वैसा सूखा शायद ही किसी को याद हो और पार्कों तक म घास पूरी तरह सूख गई)। लेमनर की मदद से भी मैं समाधि को ताप की तबाही से बचाने मे असमथ रहा और हमे एवेलिग परिवार की सहमति से, जो बहुत दूर रहने के कारण वहा विरल ही जा पाते हैं समाधि की निगहबानी कब्रिस्तान के रखवाले को सौंपनी पडी।'

१८

पुरानी जगहो पर

इस साल* की मई मे अपनी ब्रिटेन यात्रा के समय मने यह फैसला किया कि आदोलन सम्बधी अपने कत्तव्य की पूर्ति के बाद जमनी वापस लौटने से पहले शहर के उस हिस्से मे जाऊगा, जहा हम उत्प्रवास काल मे रहे थे और विशेष रूप से उन जगहो को देखूगा, जहा मार्क्स परिवार रह चुका था।

८ जून, सोमवार, को हम (मैं, एल्योनोरा और उनके पति एवेलिग) साइडेनहैम के लिए रवाना हुए, ताकि वहा से रेलगाडी, घोडागाडी और

*१८९६।—स०

बस के जरिए सोहो स्क्वेयर के पास टोटेनहैम कोट रोड के नुक्कड पर पहुच सके। वहा से हमने अपनी खोज शुरू की। हमने त्राय की खुदाई सम्पन्न करनवाले श्लीमान की भाति ही व्यवस्थित ढग से यह काम शुरू किया। श्लीमान त्राय को उसी रूप म खोद निकालना चाहते थे, जसा वह प्रियाम और हेक्टोर के जमाने मे था और इसी तरह हम पाचवी दशाब्दी के अत स लेकर छठी और सातवी दशाब्दी तक के उत्प्रवासिया वाल लदन को "खाद" निकालना चाहते थे।

तो हम सोहो स्क्वेयर और लिसेस्टर स्क्वेयर से बिलकुल लगे हुए टोटेनहैम कोट रोड के नुक्कड पर पहुचे, जहा जमन और फ्रासीसी उत्प्रवासी अपनी बेसहारगी के कारण सूत्रबद्ध होकर सकद्रित हो गये थे।

पहले हम साहो स्क्वेयर पहुचे। कुछ भी बदला नही दिखाई पडा। वे ही मकान थे और उनपर धुए की वही कालिख छाई हुई थी। यहा तक कि साइनबोर्डो पर कई फर्मों के वही पुराने नाम भी कायम थे जसे हम सपना देख रह हो। जसे मेरे सामने जवानी के दिन आ खडे हुए, ४०–४५ साल की मुद्दत हवा के झोके से कुहासे की तरह छट गई। लगा कि मै, २५ साल का युवक उत्प्रवासी स्क्वेयर को पार करके एक परिचित कूचे से होकर ओल्ड काम्पटन स्ट्रीट की ओर जा रहा हू। पुराना मॉडल लाजिग हाउस जिसम कोई डेढ पीढी पहले हमने बडी मस्त और साथ ही दुष्कर जिदगी बितायी थी, ज्यो का त्यो मौजूद था। मै तो "लाल वोल्फ" क अचानक पास से गुजरन या कोनराद श्राम्म के आकर सामने खडे हो जान की भी आशा करन लगा। सब कुछ ऐसा था, जैसे कि मै अभी कल ही वहा स गया होऊ। कितनी आश्चर्यजनक बात है कि लदन म मकाना के उस आवास-समुद्र मे ऐसी सडक और ऐसे महल्ले है, जहा समय के गुजरन का आभास नहा हाता, जा पछाड खाती तरगा से अक्षत रह जाते ह

सा, हम आगे बढे। सीधे आगे, चच स्ट्रीट तक। वह रहा चच, अब भी वसा ही जसा पहले था और उसक सामने का अपरिहाय मदिरालय, वह भी नितान्त अपरिवर्तित और आगे की तरफ़ दो खिडकिया वाल व तिमजिले मकान, उनम भी कोई तब्दीली नहीं। इसी तरह नबर १६ भी अपरिवर्तित था, जहा मन आठ साल गुजारे थे।

हम पीछे लौटते है और मोड से घूम जाते है। यह मैक्सफील्ड स्ट्रीट है। लेकिन नबर ६ कहा है? उसे यही होना चाहिए था। लेकिन नही, उसकी तलाश व्यर्थ है, क्योकि एक नई सडक उस मकान को निगल गई है। वह मकान अब नही है, जिसमे एगेल्स लदन के उत्प्रवासी जीवन के प्रारभ से उस समय तक रहे थे, जब तक उनके अनुशासनप्रिय पिता ने पारिवारिक कारोबार की देखभाल के लिए उन्हे मैंचेस्टर नही भेज दिया था।

हम और आगे बढते है। यह है डीन स्ट्रीट। लेकिन वह मकान कहा है, जिसमे मार्क्स अपने परिवार के साथ बसा रहे थे? मै एक बार पहले भी उसकी असफल खोज कर चुका था। बाद मे मुझे एगेल्स ने बताया था कि वहा मकानो के नम्बर बदल गए है। यहा एक मकान से दूसरे मकान मे भेद कर सकना उतना ही मुश्किल है, जितना दो अडो का अन्तर पहचानना और पहले की लदन-यात्राओ मे मुझे लम्बी तलाश के लिए समय नही मिला था। हेलेन भी, जिससे मैने यह बात उसकी मौत से कुछ ही पहले कही निश्चय के साथ नही कह सकती थी कि वह मकान कौनसा था। जाहिर है कि तुस्सी को तो यह याद ही कैसे रह सकता था, जो उस समय केवल साल भर की थी, जब परिवार डीन स्टीट से हटकर केंटिश-टाउन मे आ बसा था।

तलाश मे व्यवस्थित ढग से आगे बढने की जरूरत थी। उस सडक पर बहुत कम तबदीली पैदा हुई थी। ओल्ड काम्पटन स्ट्रीट के सिरे पर दाहिने बाजू के कई मकानो के बीच हम पसोपेश मे पड गए। ओल्ड काम्पटन स्ट्रीट के नजदीक दूसरी दिशा मे स्थित एक रगशाला ही मेरे लिए एक पक्की निशानी थी। उन दिनो कोई कुमारी केली उसकी मालिकिन थी। लेकिन उसे तोडकर नवनिर्मित किया जा चुका था और अब रॉयलटी थिएटर कहलाता था—पहले की अपेक्षा कही अधिक बडा और विस्तृत। चूकि मुझे यह नही मालूम था कि उसे दाहिनी तरफ या बाइ तरफ बढाया गया है, इसलिए मै अपनी निशानीवाली जगह को सुनिश्चित नही कर सकता था। अत मे मैने यह फैसला किया कि दो ही मकान है जिनमे से एक को चुनना होगा। मकान को बाहर से देखकर अब काम नही चल सकता था। मुझे अदर जाकर देखने की जरूरत थी। उन दोनो मकानो

मे से एक का दरवाज़ा खुला था और म अन्दर दाखिल हो गया। मुझे जीन जाने पहचाने प्रतीत हुए और जहा तक दरवाज़े से देखकर अनुमान लगाया जा सकता था, मकान का पूरा ढाचा भी मेरी याद स मेल खाता हुआ लगा। लेकिन लन्दन के अधिकतर मकान इसी तरह सिलसिलेवार और एक ही साचे मे ढले हुए है। उनमे कोई निजी विशेषताए नहा, कोई मौलिकता नही। मैं पहली मजिल पर गया, जहा मुझे कुछ भी परिचित नही लगा, कुछ भी पहचान म नही आया।

इस बीच मार्क्स की पुत्री और उनके पति इसी सडक पर और छानबीन कर चुके थे। मैंने उन्हे अपनी छानबीन का अनिश्चित नतीजा बताया।

पास के मकान पर २८ नम्बर लिखा था। क्या म उसके अन्दर जाऊ? अगर म भूल नही करता, तो मार्क्स के मकान का यही नम्बर था। हा! यहा नम्बर था क्योकि मुझे फौरन याद आया कि लन्दन की अपनी रिहाइश के शुरू मे ही मन उस नम्बर को एक स्मति-सहायक कौशल द्वारा याद कर लिया था—वह मेरे मकान के नम्बर का दुगुना था। तो, एगल्स ने शायद यह कहने में भूल की थी कि वहा मकानो के नम्बर बदल गए ह। यह भी हो सकता है कि ऐसा महज़ उनका अन्दाज़ ही हो।

हमने दरवाज़े की घटी बजाई। एक युवती ने किवाड खोले। हमने पूछा कि क्या आपको पहले के किराएदारो और मकान मालिक की याद है।

"जी हा लेकिन केवल पिछले नौ साल के ही।"

"क्या म अन्दर जाकर मकान को देख सकता हू?"

"अवश्य!"

और वह स्वय मुझे ऊपर ले चली।

सीढिया वही थी। सारी बनावट भी वही थी और मैं ज्यो-ज्यो आगे बढता गया, त्यो-त्यो हर चीज़ अधिकाधिक परिचित जान पडने लगी। पीछे के कमरे का सीढिया—सब कुछ जाना-पहचाना!

दुर्भाग्य स दूसरी मजिल के कमरे बन्द थे, जिनम मार्क्स रहे थे। लेकिन जहा तक मुझे याद पडता था, सब कुछ बिलकुल सटीक मिलता जुलता था। मेरे सन्देह एक एक करके दूर होते गए और अन्त म मुझे पूरा यकीन हो गया कि यहा मार्क्स रहते थे।

जब मैं नीचे आया, तब मने पुकारकर कहा "मैंने पा लिया! यही मकान है, यही!"

यही वह मकान था, जिसम म हजारो बार जा चुका था जिसमे उत्प्रवास के दुख-दैन्य और किसी भी अपवाद प्रसार से न हिचकनेवाले शत्रुओं की घृणा से अभिभूत, पीडित एव क्लान्त मार्क्स ने अपनी 'अठारहवी ब्रूमेर' और 'श्री फोग्ट' नामक कृतियां और «New York Tribune» के लिए अपने वे सवाद पत्र लिखे थे, जो अब 'क्रान्ति और प्रतिक्रान्ति' नामक पुस्तक मे सग्रहीत ह। यही उन्होने 'पूजी' लिखने की तैयारी का प्रकाण्ड काय सम्पन्न किया था

डीन स्ट्रीट के मकान से रवाना होने के पहले मैं यह बताना चाहता हू कि १८४९ के अत मे लन्दन आने पर मार्क्स पहले कैम्बरवेल मे रहे। वहा मकान मालिक के दिवालिएपन के कारण कई अप्रिय प्रसग सामने आए, क्योकि ब्रिटिश कानून के अनुसार लेनदार को अपने कज की वसूली के लिए किराएदारो का फर्नीचर जमानत के रूप म जब्त कर लेने का अधिकार है। उसके बाद अल्पकाल तक लिसेस्टर स्क्वेयर के पास एक पारिवारिक होटल मे रहकर मार्क्स परिवार मई १८५० म, प्राय उसी समय जबकि मैं लन्दन आया था, डीन स्ट्रीट पर चला गया था। वे लोग वहा कोई सात साल रहे और उसके बाद केन्टिश-टाउन चले गए, जो उस समय अभी लन्दन का अपेक्षाकृत देहाती इलाका था।

अस्तु, अब डीन स्ट्रीट पर हमारे देखने को कुछ भी नही रह गया था। इसलिए हम टोटेनहैम कोट रोड के नुक्कड पर लौटे और केन्टिश-टाउन के लिए बस पर सवार हो गए।

पर टोटेनहैम कोट रोड भी कुछ अधिक नही बदला था। अनेक पुरानी दुकानें और कारोबारी फर्में अब भी वहा मौजूद थी, जिससे सडक का रूप प्राय पहले जैसा ही था। बाए बाजू पर व्हाइटफीरड चैपेल ज्यो का त्यो था, हा केवल कब्रिस्तान अब बन्द कर दिया गया था। वही बेचारा "मुश" दफ्न है और अगर म गलती नही करता तो वे दूसरे दोनो बच्चे भी दफ्न ह, जो बहुत कम उम्र मे मर गए थे।

हम केन्टिश-टाउन के नजदीक पहुच गए वह रहा मदिरालय, जो परिचित-सा लगा और वह सचमुच पुराना 'रेड कैप ही निकला

हम वहा बस से उतरकर माल्डन रोड की ओर मुड गए। वहा मव सब कुछ अपना सा लगा, लेकिन बहुत देर तक नही। शीघ्र ही व सडक दिखाई पडी, जिनका मेरे लन्दन से विदा होते समय अस्तित्व ही नहा था। जहा पहले मैदान थे, वहा अब मकान बन गए हैं।

अकस्मात तुस्सी न एक मकान की ओर सकेत किया, जो लदन क उपान्ता की दृष्टि से अपक्षाकृत बडा था। "बस, वही है!"

वास्तव मे वही मकान था, जिसमे ग्रैफ्टन टिरेंस नामक सडक पर मार्क्स मरने से १० साल पहले तक रहे थे। और वह रहा बारजा, जहा से सख्त चेचक से नीराग होते समय श्रीमती मार्क्स अपनी तीन छोटी बच्चिया से बाते किया करती थी, जो उनकी बीमारी के दौरान मेरे साथ रह रही थी। शुरू-शुरू मे वे कमजोरी के कारण केवल फुसफुसाकर ही बाल पाता थी, लेकिन जब म बच्चियो को बारजे के निकट लाता था, ता उनका चेहरा किस प्रकार खुशी से चमक उठता था। मकान का नम्बर तब ६* था और अब ४६ है।

वहा स थोडी ही दूर, मेटलैण्ड पाक रोड पर, नम्बर ४१ है। वही मार्क्स की मत्यु हुई थी। उनका परिवार उस मकान म १८७२ या १८७३ म गया था। तब दोनो बडी लडकियो की शादी के बाद पहला मकान उनके लिए बहुत बडा हो गया था।**

हम चुपचाप चलते हुए हैम्पस्टेड हीथ पहुचे, जहा बहुत कुछ बदल गया है, फिर भी उसका पुराना रूप नितान्त समाप्त नही हुआ है। हमने पुरानी जगहा की तलाश की और अन्त म परिचित भटियारखाने 'जक स्ट्रा'

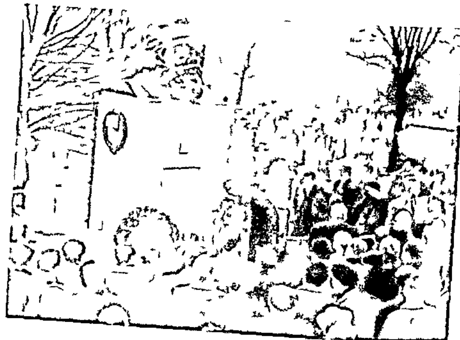
---

*तुस्सी का खयाल है कि बिलकुल शुरू म, या कम स कम जब उसम मार्क्स परिवार रहता था, तब उस मकान का नम्बर १ था। मेरा समझ म व गलती पर ह। बहरहाल, सचाई का पता शीघ्र ही लग जाएगा। **(लीब्कनेख्त का नोट)**

**मार्क्स अक्तूबर १८५६ स अप्रल १८६४ तक ग्रफ्टन टिरेंस क ६ नम्बर मकान म, अप्रल १८६४ स माच १८७५ तक माडेना विलास क १ नम्बर, मटलण्ड पाक राड, म और माच १८७५ स अपनी मौत क समय तक नम्बर ४१, मटलण्ड पाक राड, म रहे।—स०



कार्ल मार्क्स १८८२



मार्क्स की समाधि

म नाश्ता पानी किया, ताकि लम्बी और दुष्कर वापसी यात्रा के लिए शक्ति सचय कर सके।

उन पुराने दिनो म हम कितना अक्सर 'जैक स्ट्रा म जाते थे। हम जिस कमरे म बैठे, ठीक उसी कमरे म मैं मार्क्स श्रीमती मार्क्स उनके बच्चा, हेलेन तथा दूसरो के साथ दजना बार बैठ चुका था।

तब से अब तक बहुत बहुत जमाना गुजर चुका है

एंगेल्स की स्मृति में*

फ्रेडरिक एंगेल्स की मेधा दीप्त तथा निर्मल रूमानी अथवा भावावेश धुंध से मुक्त थी। वे व्यक्तियों और वस्तुओं को रंगीन अथवा धूमिल चश्मे से नहीं, बल्कि ज्योतित एवं निरभ्र दृष्टि से देखते थे। उनकी निगाह कभी भी सतही नहीं रही बल्कि हमेशा अधिक से अधिक गहरी उतरती हुई तह तक जाती थी। ऐसी उजली, साफ दृष्टि, शब्द के सच्चे अर्थ में वह 'स्पष्टदर्शिता', प्रकृति माता से विरलों को ही जन्मतः प्राप्त वह सूक्ष्मग्राहिता एंगेल्स की तात्त्विक विशेषता थी और उनके साथ अपनी पहली ही मुलाकात में मैं इस विशेषता से प्रभावित हुआ

वह मुलाकात नीली जेनेवा झील के किनारे १८४९ की गर्मियों के अन्त में हुई थी। वहां हम लोगों ने राइख संविधान आंदोलन की असफलता के बाद कई उत्प्रवासी बस्तियां बसा ली थीं

उससे पहले मुझे सभी तरह के अनेक "महापुरुषों", जैसे कि रूगे, हाइन्सन, जूलियस फ्रोएबेल, स्त्रूवे तथा वादेनी और सक्सनी "क्रान्तियों" के अन्य विभिन्न "नेताओं" से निजी तौर पर परिचित होने का अवसर मिल चुका था। लेकिन उनके साथ मेरा परिचय जितना ही घनिष्ठतर होता गया, उतना ही उनका यशःप्रभास मेरी दृष्टि में क्षीणतर होता गया और वे मुझे अधिकाधिक लघुतर प्रतीत होने लगे।

---

*१८९७ में प्रकाशित।—सं०

विल्हेल्म लीब्कनेख्त

एंगेल्स की स्मृति में*

फ्रेडरिक एंगेल्स की मेधा दीप्त तथा निर्मल रोमानी अथवा भावावेगी धुंध से मुक्त थी। वे व्यक्तियों और वस्तुओं को रंगीन अथवा धूमिल चश्मे से नहीं, बल्कि ज्योतित एवं निरभ्र दृष्टि से देखते थे। उनकी निगाह कभी भी सतही नहीं रही बल्कि हमेशा अधिक से अधिक गहरी उतरती हुई तल तक जाती थी। ऐसी उजली, साफ दृष्टि, शब्द के सच्चे अर्थ में वह 'स्पष्टदर्शिता', प्रकृति माता से विरलों को ही जन्मत प्राप्त वह सूक्ष्मग्राहिता एंगेल्स की तात्त्विक विशेषता थी और उनके साथ अपनी पहली ही मुलाकात में मैं इस विशेषता से प्रभावित हुआ।

वह मुलाकात नीली जेनेवा झील के किनारे १८४६ की गर्मियों के अन्त में हुई थी। वहां हम लोगों ने राइख संविधान आंदोलन की असफलता के बाद कई उत्प्रवासी बस्तियां बसा ली थीं।

उससे पहले मुझे सभी तरह के अनेक "महापुरुषों", जैसे कि रूग, हाइन्सेन, जूलियस फ्रोएबेल, स्त्रूवे तथा बादेनी और सक्सनी 'क्रान्तियों' के अन्य विभिन्न "नेताओं' से निजी तौर पर परिचित होने का अवसर मिल चुका था। लेकिन उनके साथ मेरा परिचय जितना ही घनिष्ठतर होता गया, उतना ही उनका यशोप्रभास मेरी दृष्टि में क्षीणतर होता गया और वे मुझे अधिकाधिक लघुतर प्रतीत होने लगे।

---

*१८६७ में प्रकाशित। – सं०

वातावरण जितना ही अधिक धूमिल होता है, उसमे व्यक्ति और वस्तुए उतनी ही बडी लगती हैं। फ्रेडरिक एगेल्स मे यह विशेषता थी कि धुधलका उनकी स्पष्ट दृष्टि के सामने तिरोहित हो जाता था और व्यक्ति तथा वस्तुए अपने वास्तविक रूप मे दिखलाई पडने लगती थी। उस तीक्ष्ण दृष्टि और तज्जनित ममभेदी विवेचन से शुरू मे मुझे परेशानी होती थी, कभी कभी ठेस तक लगती थी। यह सच है कि मेरे मन पर राइख सविधान आदोलन के "सूरमाओ" की छाप एगेल्स की अपेक्षा बेहतर नही पडी थी। फिर भी शुरू मे मुझे ऐसा प्रतीत होता था कि एगेल्स उस आदोलन का मूल्य कम करके आकते थे, जिसमे अनेक मूल्यवान शक्तिया तथा बहुतरा आत्मोत्सर्गी उत्साह निहित था।

फिर भी "दक्षिणी जमन भावुकता" के अवशेषो के कारण—यद्यपि मैं दक्षिणी जमनी का नही हू—जा मुझमे उस समय तक मौजूद थे और जिनका बाद को ब्रिटेन मे नाम निशान भी बाकी नही रहा, व्यक्तियो तथा वस्तुओ के सम्बध मे हमारी सहमति मे, चाहे तत्काल न सही, बाधा नही पडी। मुझे यह समझने म भी देर नही लगी कि एगेल्स के पास, जिनकी 'इगलैंड के मजदूर वग की स्थिति' सम्बधी पुस्तक मैं बहुत पहले ही पढ चुका था और जिनके ज्ञान की प्रचुरता तथा सर्वागीनता को मैं उनके निजी ससग मे आन के फलस्वरूप सराहने लगा था, अपने मत मण्डन के लिए सदा ही ठोस और निश्चित आधार होते हैं।

मैं उनका बहुत आदर करता था, वे बहुत महत्त्वपूण काम कर चुके थे, मुझसे पाच वष बडे थे, और इस उम्र मे पाच साल पूरी सदी के बराबर होते हैं।

जल्दी ही मेरी नजर मे यह बात भी आ गई कि एगेल्स फौजी मामलो के भी बहुत अच्छे जानकार हैं। उनसे बातचीत के दौरान मुझे पता चला कि हगरी के क्रान्तिकारी युद्ध पर *«Neue Rheinische Zeitung»* मे प्रकाशित लेख, जिनके लिखने का श्रेय हगरी के किसी उच्च सैन्य-अधिकारी को इसलिए दिया जाता था कि उनमे लिखी गई बाते सदा ही सही साबित हुई थी, एगेल्स ने लिखे थे। फिर भी, जैसा कि उन्होने खुद मुझसे हसते हुए कहा, उनके पास सभी दूसरे अखबारो मे उपलब्ध सामग्री के सिवा और कोई सामग्री नही थी, जो प्राय एकमात्र आस्ट्रियाई सरकार

से प्राप्त हुई थी और वह सरकार बेशर्मी के साथ झूठ बोलता था। उनके हगरी म सदा 'विजय प्राप्त का"—बिलकुल उसी तरह, जिस तरह आज स्पनी सरकार क्यूबा म*। लेकिन एगेल्स ने यहा अपनी स्पष्टदर्शिता से काम लिया। उन्होंने बात फराशी पर कोई ध्यान नहा दिया। उनके दिमाग म एक्स रे किरणे पहले हा मौजूद थी और जसा कि सभी जानते ह, न किरणा म वतन का गुण नही हाता और व विकृत तस्वीर नहा उतारता। उनकी सहायता से उन्होंने सत्य-स्थापना के लिए जो कुछ बेकार था उसे छोड दिया और किसी भी धुध अथवा छलाव स पथभ्रान्त न हाकर, जो कुछ तात्त्विक था उसे, यानी तथ्य का, आखा स ओझल नही हान दिया। आस्ट्रियाई सरकार अपने म्युखाउज्रेनी एलाना म सत्य का चाहे कितना भी हत्या क्यो नही करती थी, उसे कुछ तथ्या का, जैस कि उन स्थाना के नामा का जहा मुठभेडे होती थी, जहा सग्राम से पहले और उसके बाद फौजे होती थी, मुठभेडा के समय का, फौजा के गमन आगमन इत्यादि का जिक्र भी करना ही पडता था। और इन छोटे छाटे तथ्या से हमारे फ्रेडरिक अपनी दीप्त तथा स्पष्ट दृष्टि द्वारा रणक्षेत्र की घटनाओ का यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर देते थे। रणक्षेत्र के अच्छे नक्शे का उपयाग करके व तारीखा और स्थानो से गणितीय सटीकता के साथ यह निष्कर्ष निकालने म समर्थ थे कि आस्ट्रियाई 'विजेता' अधिकाधिक पीछे धक्ले जा रहे ह और पराजित हगरीवाले अधिकाधिक आगे बढ़त जा रहे ह। उनकी गणना इतनी सटीक थी कि जिस दिन आस्ट्रियाई सेना ने कागज पर हगरीवालो को पूरी तरह से पराजित कर दिया था, उसके दूसरे ही दिन वह हगरी से पूर्णत अस्तव्यस्त हालत मे बाहर निकाल दी गई

प्रसगवश कह कि एगेल्स मानो सैनिक बनने के लिए ही पैदा हुए थे स्पष्ट दृष्टि, शीघ्रग्राहिता और सूक्ष्मतम परिस्थिति को समझ लेने का क्षमता, अविलम्ब निर्णय-क्षमता तथा अखडय स्थिरचित्तता। उन्हान बाद मे फौजी प्रश्ना पर कई बहुत बढिया निबध लिखे और यद्यपि वे अज्ञात नाम से लिखे गए थ फिर भी उन्ह प्रथम कोटि के फौजी विशेषज्ञो ने

यहा क्यूबा के १८९५ के जन विद्रोह की ओर सकेत है जिस स्पनी सरकार दबाने मे असमर्थ रही थी। तब क्यूबा स्पेन का उपनिवेश था।—स०

सराहा, जिन्हे इस बात का कोई आभास नही था कि उनका गुमनाम लेखक अधिकतम "सदिग्ध" बागियो मे से है

लन्दन मे हम उन्हे मजाक मे "जनरल" कहा करते थे और अगर उनके जीवन काल मे कोई दूसरी क्रान्ति हुई होती, तो एगेल्स के रूप म हमारे पास अपना कार्नो*,–सेनाओ तथा विजयो का सगठनकर्त्ता, सनिक मस्तिष्क होता

स्विट्ज़रलैण्ड म कुछ समय तक एगेल्स के साथ रहने के बाद मै उनसे अगले साल लन्दन म मिला, जहा वे पहले ही पहुच चुके थे। उसके बाद से मै उनके निरन्तर सम्पर्क म रहा। वास्तव मे वे लन्दन से, जहा मै रहता था, १८५० मे अपने पिता के व्यवसाय-केन्द्र म मैंचेस्टर चले गए, क्योकि राइन के अन्य कारखानेदारो की तरह उनके पिता के कारोबार की भी ब्रिटेन मे एक शाखा थी। लेकिन एगेल्स लन्दन म हम लोगो से मिलने अक्सर आते रहते थे और कई बार वहा लम्बे अर्से तक ठहर जाते थे। वे मार्क्स को प्राय रोज़ पत्र भी लिखते थे और मार्क्स उनके पत्रो के वे अश जो बिलकुल निजी नही होते थे, हमे, यानी अक्सर बदलते रहनेवाली 'मार्क्स-मण्डली" के अधिक विश्वासपात्र सदस्यो को, नियमित रूप से बताते रहते थे।

यह सच है कि एगेल्स के साथ मेरे सम्बन्ध कभी भी मार्क्स के समान घनिष्ठ नही रहे थे। मार्क्स के घर तो मै बारह साल तक प्राय रोज़ का मेहमान रहा, प्राय परिवार का सदस्य बन गया था।

मार्क्स की मौत ने मुझे एगेल्स के और नजदीक कर दिया, जिनके सिर मार्क्स का स्थान लेने और उनकी वसीयत की तामील करने का दोहरा कार्यभार आ पडा था।

महज़ तभी उन्होने जो उन्ही के शब्दो मे उस समय तक गौण भूमिका अदा कर रहे थे, अपनी सारी योग्यता प्रदर्शित की। उन्होंने दिखा दिया कि वे प्रधान भी बन सकते थे।

---

*कार्नो, लज़ार निकोला (१७५३–१८२३)–१८वी शताब्दी के अन्त की फ्रासीसी पूजीवादी क्रान्ति के फ्रासीसी राजपुरुष और सेनानायक। –स०

जिस कमठता का उह दो दशाब्दियो तक अधिकतर कारोबार म खपाना पडा था, वह अब पूणत उक्त दाहर कायभार को समपित हो गई। उहोने यथासभव 'पूजी' के प्रणयन का काय पूरा किया, अपनी निजी वनानिक कृतियो के लिए आश्चयजनक रचनात्मक क्रियाशीलता विकसित की और इसके अलावा अपनी असाधारण काय-क्षमता के कारण व लम्बे चौडे अन्तर्राष्ट्रीय पत्रव्यवहार के लिए भी समय निकाल लेते थे। एगेल्स के पत्र तो अक्सर राजनीति और अथशास्त्र सम्बधी वैज्ञानिक निबध होते थे।

एगेल्स की जहा कहीं भी आवश्यकता होती, व वहा मदद देते, मजदूर सब का काय क लिए प्रेरित करते रहते। सलाह देते हुए, तकाजे करते हुए, चेतावनी देते हुए वे प्राय अपनी अन्तिम घडी तक एक सक्रिय योद्धा की भाति महान अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आदोलन के सघर्षों म भाग लेते रहे, जो उसी नारे की तामील कर रहा था, जिस फरवरी क्रान्ति की प्रभाती बयार का आभास पाकर उहोने और उनके मित्र मार्क्स ने १८४८ के प्रारभ म ही मजदूरो के लिए घोषित किया था

दुनिया के मजदूरो, एक हो!

व एक हो ही गए हैं।

और दुनिया की कोई भी शक्ति एकजुट सवहारा वग का पथ अवरुद्ध नही कर सकती।

२८ नवम्बर, १८९० को हमने लदन म एगेल्स की ७०वी सालगिरह मनाई। वे उतने ही तरोताजा, विनोदी और सघर्ष-तत्पर थे, जितने अपनी अधिकतम उल्लासपूण, उत्साह भरी जवानी म सदा रहते थे। और जब तीन साल बाद उहोने काकोदिया हॉल मे बलिन के मजदूरो का आह्वान किया* कि "साथियो, मुझे विश्वास है कि आप भविष्य म भी अपने कतव्य का पालन करेंगे!", तब उन हजारो लोगो म से, जो उत्साह के साथ उनकी

---

* २२ सितम्बर, १८९३ को एगेल्स ने बलिन के सामाजिक-जनवादियो की एक सभा मे भाषण दिया।—स०

बाते सुन रहे थे और सप्रेम तथा साभार उन्हे निहार रहे थे, एक भी ऐसा नही था, जिसने साश्चर्य अपने आप से यह न पूछा हो कि "क्या यह जवान सचमुच ७३ साल का हो चुका है ?"

पूरे दो साल भी नही बीते थे कि ६ अगस्त, १८९५ को ब्रेमन के ट्रेड-यूनियन महासमारोह से लौटने पर मुझे «Vorwärts» के सम्पादकीय दफ्तर मे अपनी मेज पर पडा हुआ यह दु खद तार मिला

"जनरल कल रात साढे दस बजे चुपचाप चल बसे। दोपहर से बेहोश। कृपया जोल्दात और जीगेर को सूचित कर।"

"जाल्दात' (सनिक) का आशय मुझसे था।

हम, यानी जमनी म तीन व्यक्ति*, वसन्त के दिनो म जानते थे कि "जनरल' को कण्ठ म असाध्य कसर की छूत लग गयी है। लेकिन चोट के अप्रत्याशित न होते हुए भी, वह गहरी और भयानक थी।

वह प्रकाण्ड चिन्तक, जिसन मार्क्स के साथ वैज्ञानिक समाजवाद की बुनियादें रखी थी, जिसन समाजवाद की कायनीति सिखलाई थी, जिसने २४ साल की कच्ची उम्र मे ही 'इगलड मे मजदूर वग की स्थिति' नामक क्लासीकी कृति का प्रणयन किया था, जो 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' का सहलेखक था, जो काल मार्क्स का "इतर अहम्" था और जिसने उन्हें अन्तराष्ट्रीय मजदूर सघ का सगठन करने मे मदद दी थी, जो हर चिन्तनशील व्यक्ति के लिए बुद्धिग्राह्य, स्फटिकवत पारदर्शी, वैज्ञानिक ज्ञानकोष 'ड्यूहरिग मतखण्डन' का रचयिता था, जो 'परिवार की उत्पत्ति' तथा अन्य अनेक कृतियो, निबन्धो, लेखो का प्रणेता था, जो मित्र, सलाहकार, नेता और योद्धा था, वह अब इस दुनिया मे नही रहा था।

लेकिन जहा कही भी वग चेतन सवहारा वग है और लडता है, वही उनकी भावना जीवित है।

---

*वि० लीब्कनेख्त, अ० बेबेल तथा प० जीगेर।–स०

१८४८ से पहले और उसके बाद*

(एक पुराने कम्युनिस्ट के कुछ सस्मरण)

१

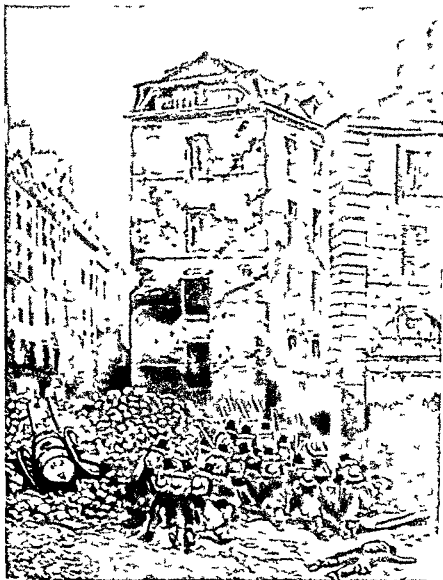
पाचवी दशाब्दी के उत्तरार्द्ध के तूफानी दिनो म म कम्युनिस्ट बन चुका था, उत्पादन साधनो के समाजीकरण और आदमियो के बीच बिरादराना सहयोग के लिए उत्कट सघष करनेवाला बन चुका था।

जब दर्जीगीरी के युवक अप्रेंटिस के रूप म मने १८४६ मे हैम्बग मे पहले पहल कम्युनिस्ट भाषण सुना और फिर वाइटलिग की 'सामजस्य और स्वतत्रता की जमानत' पढी, तब मने सोचा कि कम्युनिज्म चन्द बरसो मे यथाथ बन जाएगा। लेकिन १८४७ मे जब मने काल मार्क्स का भाषण सुना और 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' को पढा तथा समझा, तब यह बात मेरे लिए स्पष्ट हो गई कि मानव-समाज के रूपान्तरण के लिए व्यक्तियो का उत्साह और सदाशयता ही पर्याप्त नही है जोश और खयाली मसूबो का कुछ अश खोकर उसके बदले मे मने लक्ष्य की चेतना और ज्ञान प्राप्त किया।

जिस दर्जीखाने म मुझे काम मिला, वहा कइ ऐसे सहकर्मियो से मेरी दोस्ती हो गई, जो स्विट्जरलण्ड, पेरिस और लन्दन मे काम कर चुके थे। वहा वे कम्युनिस्ट विचारो से परिचित हो चुके थे

• • •

*१८६८ म प्रकाशित।—स०



१८४८ के जून विद्रोह के दिनों में पेरिस



जून, १८४८ मे परिस सर्वहारा का विद्रोह

उस समय हैम्बुर्ग में एक मजदूर शिक्षा समिति थी जो सभी प्रगतिशील मजदूरों के मिलने-जुलने की जगह बन गई थी। वहां वे हर शाम को अखबार पढ़ने, बहस करने या गाने और विदेशी भाषाएं सीखने के लिए जमा होते थे। अधिकतर अखबार विरोध पक्ष की ओर रुझान रखनेवाले होते, बहस मुख्यतः कम्युनिज्म के प्रश्न पर केंद्रित रहती और गान मण्डली में आजादी के गीत गाये जाते थे।

मजदूर शिक्षा समिति में विल्हेल्म वाइटलिंग को भविष्य का युगपुरुष समझा जाता था। उन्हें हमारे बीच असीम सम्मान प्राप्त था। वे अपने अनुयायियों के आराध्य थे।

मेरे साथी मुझे नवम्बर १८४६ में मजदूर शिक्षा समिति में ले गए और शीघ्र ही मुझे सदस्य बना लिया गया। उस समय से मैं बहसों को नियमित रूप से सुनने लगा।

मेरे एक साथी ने मुझे वाइटलिंग की 'सामंजस्य और स्वतंत्रता की जमानत' पढ़ने को दी। यह पुस्तक उस समय मजदूरों में बहुत पढ़ी जाती थी। वह एक के बाद दूसरे के पास पहुंचती थी क्योंकि बहुत कम लोगों के पास उसकी निजी प्रति थी। मैं उसे तीन बार पढ़ गया। तब पहले पहल मेरे दिमाग में यह बात आई कि संसार जैसा है, उससे भिन्न हो सकता है।

वह मुद्दत जिसके दौरान मजदूर शिक्षा समिति में होनेवाली बहसों और वाइटलिंग की 'जमानत।' ने मेरे विचारों को क्रांतिकारी और मेरे ज्ञान क्षितिज को विस्तृत बनाया, मेरे राजनीतिक विकास की निर्णयकारी मुद्दत थी।

१ अप्रैल, १८४७ को वाइमर के बारिका में जाने की बजाए जब मैं ब्रिटेन जानेवाले एक जहाज में बैठ गया, तो मुझे लगा कि मैंने अपने अतीत को यूरोप की भूमि पर छोड़ दिया है, ताकि ब्रिटेन में एक नई जिंदगी की शुरुआत करूं, एक ऐसी जिंदगी जिसे मैंने मानवजाति के मुक्ति-संग्राम में निछावर कर देने का निश्चय कर लिया था।

मुझे लन्दन मजदूर शिक्षा समिति के लिए सिफारिश पत्र दिया गया और वहा मेरा मत्रीपूर्ण स्वागत हुआ। लन्दन की मजदूर शिक्षा समिति की स्थापना ७ फरवरी, १८४० को हुई थी

चन्द दिनो बाद मै काम हासिल करने मे कामयाब हो गया और उसके बाद नियमित रूप से समिति मे जाने लगा और उसका सदस्य हो गया। मुझे न्याय सघ मे भी दाखिला मिल गया, जो ठीक उसी समय कम्युनिस्ट लीग मे परिवर्तित किया गया था। लन्दन मे वाइटलिंग का प्रभाव घटता जा रहा था और मार्क्स तथा एगेल्स के नामो ने प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था।

२

इस समय तक मै इन दोनो को नही जानता था। मुझे केवल इतना ही मालूम था कि वे ब्रसेल्स मे रहते है और «Deutsche Brusseler Zeitung» का सम्पादन करते है। उस समय तो मुझे इस बात का गुमान तक नही था कि ये दोनो व्यक्ति समाजवाद के इतिहास मे एक नये युग का सूत्रपात करेगे।

मेरे लन्दन आने के चन्द महीने बाद, १८४७ की गर्मियो मे कम्युनिस्ट लीग की पहली काग्रेस हुई, जिसमे एगेल्स और विल्हेल्म वोल्फ ने भाग लिया, लेकिन मार्क्स नही आये थे। काग्रेस ने लीग को पुन सगठित किया। एगेल्स ने कहा, "षडयन्त्रकाल के पुराने रहस्यमय नाम का जो कुछ भी बाकी रह गया था, उसे निश्शेष कर दिया गया है और अब इसका नाम कम्युनिस्ट लीग हो गया है।

१८४७ की गर्मियो मे 'इकारिया की यात्रा' के प्रख्यात लेखक एतियेन काबे ने फ्रासीसी कम्युनिस्टो के नाम एक अपील प्रकाशित की, जिसमे उन्होने कहा "चूकि यहा (फ्रास मे) सरकार, पादरी, पूजीपति वर्ग और यहा तक कि क्रातिकारी जनतत्रवादी भी हाथ धोकर हमारे पीछे पड़े हुए है हमे बदनाम करते है और हम पर लाछन लगाते है, चूकि हमारे अस्तित्व को खत्म करने हमे शारीरिक तथा नतिक रूप से तबाह करने तक की कोशिशे की जाती है, इस लिए आइए, हम फ्रास छोड दे और

इकारिया चलकर वहा कम्युनिस्ट बस्ती बसाव। कावे ने यह आशा प्रगट की थी कि इस योजना की तामील क लिए २०–३० हजार कम्युनिस्ट मिल जाएगे।

यह अपील लदन मजदूर शिक्षा समिति मे भी पहुची। सितम्बर १८४७ के आसपास हमारा समथन पान क लिए काबे खुद लदन आए। उनकी याजना पर हफ्ते भर बहस चलती रही। अत म समिति ने हर प्रकार के प्रयोगा के खिलाफ फैसला किया। हमने जवाब दिया कि हम कावे का अनुसरण इसलिए नही कर सक्ते थे कि हमारी राय मे वे गलत रास्ते पर है। स्वय काबे का हम सम्मान करते ह, लेकिन हमने उनकी उत्प्रवास याजना के विरुद्ध है। न्याय और सत्य के लिए लडनवाले हर व्यक्ति को समझना चाहिए कि देश म रहकर जनता को प्रबुद्ध करना और हिम्मत हारनेवाला म नया साहस जागत करना उसका कत्तव्य हे। उसका कत्तव्य है कि वह समाज क नए सगठन की बुनियाद डाले और दुष्टा का डटकर मुकाबला करे। अगर ईमानदार, बेहतर भविष्य के लिए लडने वाले लोग चले जाएगे और जाहिला तथा दुष्टा के लिए मैदान खाली छाड देगे, ता सारा यूरोप अनिवायत तबाह हो जाएगा।

ये ही मुख्य विचार थ, जिनके आधार पर हमने काबे क प्रस्ताव का घातक समझा आर सभी देशा के कम्युनिस्टा से अपील की कि "भाइयो, हम यही, पुराने यूरोप मे बाकस रह, यही काम करे और लडे, क्याकि हमे यही सावजनिक स्वामित्व की बुनियाद डालने क लिए आवश्यक परिस्थितिया उपलब्ध होगी आर सबसे पहले यही उसकी स्थापना होगी।

काबे के प्रस्ताव पर यह था हमारा जवाब इससे प्रगट हे कि विचारशील कम्युनिस्ट, जा मार्क्स और एगेल्स के प्रभाव म आ चुके थ उस जमाने मे भी सभी कल्पनापरक प्रयासा की निन्दा करत थे। काबे लदन स चले गए।

उसके शीघ्र ही बाद नवम्बर १८४७ के अत म कम्युनिस्ट लीग की दूसरी काग्रेस हुई और उसम काल मार्क्स शरीक हुए। व और एगेल्स काग्रेस मे वज्ञानिक कम्युनिजम के उसूलो का प्रतिपादन करन क लिए ब्रसेल्स स आए थे। काग्रेस दस दिन तक चलती रही।

अधिवेशना म केवल प्रतिनिधियो न भाग लिया जिनम मैं नहा था।

लेकिन हम लोग भी जानते थे कि क्या कुछ हो रहा है और बड़ी उत्सुकतापूर्वक बहसों के नतीजों का इन्तजार करते रहते थे। हम शीघ्र ही सुनने को मिला कि कांग्रेस ने मार्क्स और एंगेल्स द्वारा प्रतिपादित उसूलों का सर्वसम्मत पक्षपोषण किया और उन्हें एक घोषणापत्र तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी। जब १८४८ के शुरू में ब्रसेल्स से 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' की पाण्डुलिपि आई, तो मैंने उस युगान्तरकारी दस्तावेज के प्रकाशन में एक छोटी सी भूमिका अदा की : पाण्डुलिपि ले जाकर छापेखाने में दी और वहां से प्रूफ लाकर कार्ल शापर को पढ़ने को दिये।

लगभग उसी समय मैंने मार्क्स और एंगेल्स को पहले पहल देखा। मेरे मन पर उनकी जो छाप पड़ी उसे मैं कभी नहीं भूलूंगा।

मार्क्स तब लगभग २८ साल के ही थे, लेकिन उन्होंने हम सभी को बहुत प्रभावित किया। कद मंझोला, कंधे चौड़े, काठी मजबूत, चाल-ढाल में चुस्ती, ऊंचा और सुघड़ ललाट, बाल घने आबनूसी और दृष्टि मर्मभेदी,– ऐसे थे मार्क्स। उनके मुंह की बनावट में वह व्यंगरेखा, जिससे उनके विरोधी इतना डरते थे, इस समय भी मौजूद थी।

मार्क्स जन्मजात जन-नायक थे। उनका भाषण संक्षिप्त, सुसंगत और अकाट्य तर्कपूर्ण होता था। वे कभी कोई फालतू शब्द नहीं कहते थे। उनका हर वाक्य किसी एक विचार का वाहक और हर विचार उनकी तर्क शृंखला की एक कड़ी होता था। मार्क्स में कोरे स्वप्नद्रष्टा वाली कोई बात नहीं थी। वाइटलिंग के समय के और 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के कम्युनिज्म के अंतर को मैं जितना अधिक समझता गया, उतना ही अधिक मुझे यह स्पष्ट होता गया कि मार्क्स समाजवादी विचारधारा की पक्वावस्था का प्रतिनिधित्व करते हैं।

मार्क्स के रूहानी भाई फ्रेडरिक एंगेल्स, कुछ अधिक जर्मन ढंग के थे। छरहरे, चुस्त, सुनहरे बाल और सुनहरी मूछें, वे विद्वान की अपेक्षा गार्डों के फुर्तीले लेफ्टिनेन्ट जैसे अधिक प्रतीत होते थे। यह सही है कि एंगेल्स ने अपने अमर मित्र की महत्ता पर ही सदा जोर दिया, फिर भी वैज्ञानिक कम्युनिज्म के सृजन और प्रचार में उन्होंने स्वयं बहुत बड़ा योगदान किया। घनिष्ठ रूप से जान लेने पर हर कोई उनका सम्मान और उनसे प्यार करता था।

* * *

उस समय लन्दन में हम मजदूर शिक्षा समितिवाले कुछ उत्तेजित थे। हमारा यह दृढ़ विश्वास था कि शीघ्र ही ब्रिचडी पक जानी चाहिए लेकिन इस बात का हमें गुमान भी नहीं था कि पूंजीवादी जगत को चकनाचूर करने की सामर्थ्य जुटाने के लिए सर्वहारा वर्ग को शिक्षा तथा संगठन का अभी कितना और काम करना होगा।

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' फरवरी १८४८ में प्रेस से छपकर निकला। हमें उसकी प्रतियां परिस की फरवरी क्रांति की खबर के साथ ही साथ मिलीं।

उस खबर की जो जबर्दस्त छाप हमारे मन पर पड़ी, मैं उसे बयान नहीं कर सकता। हमारे जोश का कोई पार नहीं था। हम केवल एक ही भावना, एक ही विचार से अभिभूत थे मानवजाति की मुक्ति के लिए अपने जीवन अपने सर्वस्व की बाजी लगा देंगे।

कम्युनिस्ट लीग की लन्दन केन्द्रीय समिति ने फौरन अपने अधिकार ब्रसेल्स के नेतृत्वकारी संगठन को सौंप दिए जिसने अपनी तरफ से वे अधिकार मार्क्स और एंगेल्स को देकर परिस में एक नई केन्द्रीय समिति कायम करने को कहा।

इसके फौरन ही बाद मार्क्स ब्रसेल्स में गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें फ्रांस जाने के लिए मजबूर किया गया। वे वहीं तो जाना चाहते थे।

३

परिस की घटनाओं का ब्रिटेन के मजदूर वर्ग पर गहरा असर पड़ा। चौथी दशाब्दी के मध्य से ब्रिटिश सर्वहारा के मन पर अधिकार जमा लेनेवाले चार्टिस्ट आन्दोलन को फरवरी क्रांति की विजयी गति से नई प्रेरणा मिली। इस क्रांति की शुरुआत का ही लन्दन के मजदूरों ने एक बहुत बड़े प्रदर्शन द्वारा स्वागत किया। कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों ने इस प्रदर्शन में ठीक उसी तरह हिस्सा लिया, जिस तरह से उन्होंने सभी उपलब्ध साधनों द्वारा चार्टिस्ट आन्दोलन का समर्थन किया था।

चार्टिस्टों के सर्वाधिक लोकप्रिय और सुयोग्य नेता एर्नेस्ट जोन्स समय समय पर हमारी समिति में आते रहते थे जहां मुझे उस साहसी तथा

आत्मत्यागी आंदोलनकारी को जानने का अवसर मिला। जोन्स ठिगने, लेकिन गठे शरीरवाले आदमी थे। वे जर्मन भाषा लिख और पढ़ सकते थे और उन गिने चुने चार्टिस्ट नेताओं में से थे, जो साथ ही समाजवाद को समझते और उसका प्रचार भी करते थे।

१३ मार्च को लन्दन में एक सभा हुई, जिसमें जोन्स ने भाषण किया। उन्होंने जनता से अपील की कि वह दमनकारी कानून पालों से, पुलिस से, सैनिकों से या विशेष कांसटेबलों के रूप में भरती किए गए और सेन्ट के चन्द शरारती छोकरों को देखकर भाग चलने वाले व्यापारियों से न डरे। 'मंत्रिमंडल मुर्दाबाद! पार्लमेंट को भंग करो! चार्टर से कम कुछ भी नहीं!'

अप्रैल के शुरू में लन्दन में एक चार्टिस्ट कान्वेन्ट (प्रातिनिधिक सभा) बनी जिसे पहले से अधिक जोश-खरोश के साथ उस अर्जी (चार्टर) को पेश करना था, जो मजदूरों द्वारा राजनीतिक आजादी की मांग के लिए हर साल पार्लमेंट को भेजी जाती थी। वह अर्जी १० अप्रैल को पहले की तरह चन्द प्रतिनिधियों द्वारा नहीं, बल्कि सामान्य मजदूर समूह द्वारा दी जानी थी। ऐसा करके पार्लमेंट को यह स्पष्ट करना था कि आवश्यकता होने पर सर्वहारा वर्ग अपनी मांग की पूर्ति के लिए बल प्रयोग को भी तैयार है।

१० अप्रैल की सुबह को लन्दन की छटा निराली थी। सारी फैक्टरियां और दुकानें बन्द थीं। लन्दन का पूंजीपति वर्ग 'कानून और व्यवस्था' की रक्षा के लिए हथियारबन्द था। "कानून और व्यवस्था" के उन रक्षकों में नेपोलियन लघु, बाद का फ्रांस का सम्राट भी था।

कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों ने उस प्रदर्शन में भाग लेने का फैसला किया था। हमने अपने को सभी प्रकार के हथियारों से लैस किया। मुझे वह हास्यपूर्ण दृश्य अभी भी अच्छी तरह याद है जो गेओर्ग इक्करियस* द्वारा बड़ी सी तेज की गई छुरियों वाली कैंची दिखाने से मेरे मन पर

---

* **इक्करियस, गेओर्ग** (१८१८-१८८९) – जर्मन मजदूर दर्जी कम्युनिस्ट लीग तथा पहले इंटरनेशनल की जनरल कौंसिल के सदस्य मार्क्स और एंगेल्स के घनिष्ठ मित्र। – सं०

अक्ति हुआ था जिसस व पुलिसवालो के हमले से अपना बचाव करने का मसूबा बनाए हुए थे।

पार्लमेंट भवन को जानेवाले जुलूस मे शामिल होने के लिए मजदूर केनिंगटन कामन मे जमा हुए। लेकिन हमे अचानक पता चला कि जुलूस के नेता फर्गस ओ'कोनोर बडे जनप्रदर्शन के खिलाफ है, क्योकि सरकार हथियारबन्द शक्ति द्वारा उसका विरोध करने के लिए आमादा थी। बहुतेरे लोग ओ'कोनोर की राय मान गए, दूसरे झपटकर आगे बढे, जिसके फलस्वरूप चार्टिस्टो और पुलिस के बीच खूनी टक्कर हुई। चूकि सरकार को खुश करने की ओ'कोनोर की कोशिशो से प्रदर्शनकारियो की एकता नष्ट हो गई थी, इसलिए सफलता की आशा नही की जा सकती थी। प्रदर्शन-स्थल से, जहा घटे ही भर पहले हम जाने कितनी आशाओ के साथ जमा हुए थे, बहुत निराश होकर विदा हुए।

* * *

जिस समय पश्चिमी यूरोप मे ये तूफानी घटनाए घट रही थी, उसी समय मध्य यूरोप मे क्राति भडक उठी। इससे हम विशेष रूप से उत्तेजित हो उठे। मजदूर शिक्षा समिति की शाम की बहसे अधिकाधिक जोशीली और गर्मागर्म हो गई। हर कोई जर्मनी की रणभूमि मे झटपट पहुचने को तैयार था, लेकिन हम मे से अधिकतर के पास अपने इरादे की फौरी तामील के लिए साधन नही थे। जुलाई १८४८ तक ही मै जर्मनी की यात्रा के लिए साधन जुटाने मे समर्थ हुआ।

उन तैयारियो के दौरान हमे पेरिस मे जून विद्रोह की भयानक पराजय की दर्दनाक खबर मिली। हम लोगो पर उसका जो प्रभाव पडा, उसे शब्दो मे नही व्यक्त किया जा सकता। मुझे अब तक स्पष्ट याद है कि उस घटना की बाबत «*Neue Rheinische Zeitung*» (जून २९, १८४८) मे मार्क्स द्वारा लिखित लेख को मै कोई बीस बार पढ गया, क्योकि वह हमारी भावनाओ की सर्वोत्तम अभिव्यक्ति था।

१८४८ को गमिया म म कालान पहुचा। इस नगर का मर लिए विशेप ग्राकपण था, क्याकि नान्ति क लिए काम करनवाल लोग – काल माक्स, फ्रेडरिक एगेल्स, विल्हेल्म वाल्फ, फर्दीनाद फ्राइलिग्राथ*, काल शापर ग्रौर जोजेफ मोल्ल – तब वही रहते थ ग्रौर «*Neue Rheinische Zeitung*» वही स प्रकाशित हाता था।

सबसे पहले मन काम की तलाश शुरू की, ताकि कालान म ठहर सकू।

काम मिल जान पर मैं मजदूर समिति म शामिल हो गया। डाक्टर गाट्टशाल्क लेफ्टिनन्ट ग्रानक, शापर, मोल्ल, नौथयुग ग्रौर द'एस्टर इसके नता थ। इसक ग्रलावा एक जनवादी समिति** भी थी, जिसम विल्हेम वाल्फ, माक्स, फ्राइलिग्राथ इत्यादि प्राय जाया करते थे। वहा वाल्फ क साथ मेरी जान पहचान हुई, जो ग्रक्सर तत्कालीन राजनीतिक घटनाग्रा पर भापण दिया करत थे। उनका भापण सुनकर सचमुच बडा ग्रानन्द प्राप्त होता था। राजनातिक समीक्षा प्रस्तुत करन का उनका ग्रोजस्वी तथा दिलचस्प ढग सभी का पसन्द था। व सुविदित ग्रौर मामूली घटनाग्रा का बडे ढग से वर्गीकरण करके उन्ह विपयानुकूल हास्यपूण ग्रथवा गभीर ढग स पेश कर सकते थ। कभी कभी वहा फ्राइलिग्राथ भी ग्रात थे जिनस बाद का मेरी दोस्ती हा गई

नवम्बर १८४८ म जनवादी समिति की एक सभा हुई, जिसम माक्स न यह खबर सुनाई कि विएना मे फाजी ग्रदालत की दण्डाज्ञा से रावट ब्लूम का गाली मार दी गई। हॉल म तत्काल ही सन्नाटा छा गया। माक्स न

---

* फ्राइलिग्राथ, फर्दीनाद (१८१०–१८७६) – जमन क्रातिकारी कवि, «*Neue Rheinische Zeitung*» के एक सम्पादक। – स०

** कोलान म जनवादी समिति की स्थापना १८४८ के वसत म हुई थी। उसक सदस्य टुटपुजिया जनवादी कारीगर ग्रौर मजदूर थे। माक्स, एगेल्स ग्रौर उनके समथक उसके सदस्या विशेपत सवहारा तत्वा को प्रभावित करन के लिए उसम शामिल हुए थ। – स०

मच पर जाकर ब्लूम की मत्यु का तार पढ़कर सुनाया। हम पहले तो क्रोध के मारे जडीभूत हो गए। उसके बाद हॉल में एक तूफान उमडता हुआ प्रतीत हुआ। मुझे लगा कि अब सम्पूर्ण जर्मन जनता क्रांति करने के लिए एक होकर उठ खडी होगी। लेकिन ऐसा सोचना मेरी और अन्य लोगों की भूल थी। जो कुछ घटित हुआ वह बिलकुल भिन्न था। नगर प्रबंधकों ने उन्हीं जालिमों के हाथ चूमे, जिन्होंने जनता की श्रेष्ठतम संतानों को कत्ल करवा दिया था।

• • •

विरोध पक्ष के अखबारों विशेषत स्वतत्रता तथा न्याय की रक्षा में अटल और निर्भीक «*Neue Rheinische Zeitung*» के दमन के रूप में प्रतिक्रिया ने अपना उग्रतम रूप दिखाया। «*Neue Rheinische Zeitung*» के सम्पादकों के खिलाफ पहला मुकदमा ७ फरवरी १८४९ को दायर हुआ और दूसरा उसके ठीक दूसरे दिन। अत में १८ मई १८४९ को अखबार को बिलकुल ही खतम कर दिया गया। अंतिम अंक लाल अक्षरों में छपकर निकला।

इन मुकदमों में मार्क्स ने अपनी सफाई नहीं दी। उन्होंने उलटकर मंत्रिमण्डल पर अभियोग लगाए। प्रधान संपादक कार्ल मार्क्स के साथ एंगेल्स पर «*Neue Rheinische Zeitung*» में प्रकाशित एक लेख में "अपने कर्तव्यपालन करनेवाले बडे सरकारी वकील और जनदारोगों का अपमान करने' का आरोप लगाया गया था। अदालत खचाखच भरी हुई थी। सरकारी अभियोक्ता और वकीलों के बाद मार्क्स बोले। वे लगभग एक घंटे तक बोलते रहे। अनुत्तेजित गंभीर और ओजस्वी ढंग से गूंजनेवाली उनकी दलीलें अधिकाधिक जोर के साथ सरकारी अभियोक्ता, पुरानी शासन व्यवस्था पुरानी नौकरशाही, पुरानी सेना, पुरानी अदालतों, निरंकुश शासन-काल में पैदा शिक्षित और उसी की सेवा में वृद्ध हुए पुराने जजों पर गाज की तरह गिरती रहीं। मार्क्स ने कहा, "आज अखबारों का पहला कर्तव्य वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था की सारी बुनियादों को खोद फेंकना है।"

चंद महीने बाद मार्क्स प्रशिया से निर्वासित कर दिए गए, एंगेल्स बादेन चले गए और कोलोन में रहनेवालों ने अपने प्रचार कार्य को दुहाता

म फनाया, क्याकि हम किसाना म प्रचार काय क महत्त्व को समन चुके थे। (जब मैं १८६३ म सामाजिक जनवादी पार्टी की कालान काग्रेस मे शरीक हुआ, तब मुझे कोलान क निकट वारिगेन क किसाना न निमंत्रित किया। उन्ह १८४८ और १८४९ म अब तक मेरी याद बनी हुई थी।)

हम अपना खाली समय कारतूस बनान म लगाते थ, जिन्ह बाग्न भेजा जाता था। स्वभावत व गुप्त रूप से बनाए जात थ। लाल बकर* गोलियाँ और बारूद मुहैया करते थ और हर कोई क्रान्ति की मदद के लिए यथासम्भव योग देता था।

५

प्रतिक्रान्ति शीघ्र ही सभी मोर्चा पर जीत गइ, लेकिन सघष तो अभी खत्म नही हुआ था। कम्युनिस्ट लीग को पुनरुज्जीवित किया गया और गुप्त रूप से सर्वहारा वग की पार्टी सगठित करन क लिए कदम उठाए गए। चूकि लन्दन म लीग मे सभी प्रकार के सदिग्ध तत्त्व घुस गए थे, इसलिए मार्क्स के सुझाव पर (जो उस समय तक लन्दन मे थ) केन्द्रीय समिति को कोलोन स्थानान्तरित कर दिया गया।

मेरा कायभार माइन्त्स मे लीग क स्थानाय सगठन का फिर से निर्माण करना और मजदूरा को अपन लक्ष्या की ओर खीचना था। जाहिरा तौर से हमारा प्रचार काय महज पर्चे वितरित करने तक ही सीमित था। हम इतनी अच्छी तरह सगठित थ कि हम घटे भर म माइन्त्स को पर्चो से पाट सकते थे। पुलिस एक बार भी "अपराधियो को" नही पकड सकी।

अक्तूबर १८५० म फ्रैंकफुर्त के साथियो न मुझे नुरबग म लीग के पुन सगठन का काम सौंपा जिसे पूरा करने म मै सफल रहा। दुर्भाग्यवश हमारा प्रचार काय बहुत दिन नही चला। उस समय हमार जमन पितृदेश म गिरफ्तारियो क सिवा और कुछ सुनन म ही नही आता था। पुलिस को

---

* बेकर गेमन (उपनाम लाल बेकर) (१८२०-१८८५) - जमन सावजनिक लेखक कम्युनिस्ट लीग क सदस्य। - स०

अधिकारी उस काल का सूरमा था। आजादी के आन्दोलन को दबाने के लिए प्रतिक्रिया हर सम्भव साधन का उपयोग करती थी।

जून १८५१ में मैं माइन्स में गिरफ्तार कर लिया गया।

* * *

मुझे ४ अक्तूबर, १८५२ को, यानी लगभग डेढ साल बाद कोलोन की अदालत में पेश किया गया। मुकदमा पांच हफ्ते से अधिक चला। मैं यहां मुकदमे की तफसील में नहीं पडना चाहता, क्योंकि मार्क्स 'कोलोन के कम्युनिस्ट मुकदमे के बारे में रहस्योद्घाटन' में उसकी चर्चा कर चुके हैं।

सजा मेरे लिए गहरी चोट थी। मुझे एक किले में तीन साल की नजरबन्दी भुगतनी थी।

साढे चार साल का बन्दी जीवन मुझे दुस्स्वप्न प्रतीत होने लगा। मुझे २७ जनवरी, १८५६ को रिहा कर दिया गया।

"रिहा"! मानो जर्मनी खुद उस समय एक विराट कैदखाना न रहा हो! ब्रेस्लाउ, एर्फुर्त और फ्रेइबर्ग में अपने बन्दी साथियों के सम्बन्धियों से मिलने के बाद जब मैं वाइमर पहुंचा, तो मेरे मन पर फौरन यही छाप पडी। वहां मैंने कुछ प्रचार कार्य करने की कोशिश की, लेकिन लोग इतने आतंकित थे कि "कम्युनिज्म" शब्द मात्र से बिचक उठते थे।

मैं खुद बेठिकाना था। जिन अधिकारियों को मैंने पासपोर्ट के लिए दरख्वास्त दी, वे मुझ "बदनाम" कम्युनिस्ट को अपने देश का निवासी ही नहीं मानना चाहते थे। महज एक से दूसरे के पास बार-बार दौड़ने और खूब जोर देने पर ही मैं कुछ कागजात हासिल कर सका और हैम्बर्ग में होकर लन्दन चला गया।

६

मैं मई १८५६ में लन्दन पहुंचा। शीघ्र ही वहां फ्राइलिग्राथ से मिलने गया और उसके बाद कार्ल मार्क्स के यहां गया। उन्होंने मेरे जब्त कर लिए गए पुस्तक संग्रह की कमी पूरी करने के लिए उस समय तक प्रकाशित अपनी

कृतिया मुझे भट की। मन अपने १८४८ के पुरान दास्ता—काल फन्र, गेओग इक्करियस आदि का भी खाज निकाला। वहा मन जमन उत्प्रवासियो स भी जान पहचान की, जिनम से विल्हेल्म लीब्कनख्त समेत कई लन्दन म रह रहे थे।

काम मिल जान पर म फिर कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति म जान लगा। समिति उस समय बहुत बुरी दशा म थी। कारण कि १८४८ के क्रान्तिकारी आदोलन की असफलता के बाद बहुत स सदस्य समिति से अलग हो गए थे और बाकी धीरे धीरे दकियानूसी म डूब गय थे। समिति म अब वहा कम्युनिस्ट विचारा का लेश भी नही रह गया था। वह एकदम बेजान हो गई थी, बिलकुल वैसी ही, जैसी कि उदारतावादी चाहत थे।

कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति की दशा देखकर मुझे दुख हुआ। म सदस्यो से मिलने और उनसे दोस्ती बढान लगा। इसम सफल हो जान के बाद हमन काम शुरू किया। विल्हेल्म लीब्कनेख्त और माक्स ने भी फिर से समिति म आना शुरू कर दिया। माक्स न तो किसी तरह के पारिश्रमिक के बिना राजनीतिक अथशास्त्र पर एक व्याख्यान माला भी प्रस्तुत की। उन्होन अपने पूरे जीवन मे मजदूरा से कभी कुछ नही लिया था सदस्य-संख्या बढने लगी।

१८६० स १८६४ तक मन अपना समय अपने ज्ञान-वद्धन म लगाया। म नियमित रूप स लन्दन विश्वविद्यालय म शरीरक्रिया विज्ञान, भूगभ विज्ञान और रसायन विज्ञान पर हक्सले, टिंडाल और हाफमान जसे प्राफेसरा के व्याख्यान सुनता रहा। जमन मजदूर आम तौर से इन प्रमुख वज्ञानिका के व्याख्यान सुना करत थे। माक्स ने ही हम ऐसा करने की प्रेरणा दी थी और वे स्वय भी समय समय पर इन व्याख्याना मे उपस्थित हाते थे।

* * *

१८६४ म पुरानी विघटित कम्युनिस्ट लीग न अपना पुनरुज्जीवन, यद्यपि नये रूप म पुनरुज्जीवन का उत्सव मनाया। अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर सघ की स्थापना हुई। मजदूरा न समाजवाद म फिर से, और पहल म अधिक दिलचस्पी लनी शुरू कर दी। हमारी पहले की सरगर्मी फल ला रही थी

कम्यून के बाद इटरनशनल का कठिन समय का सामना करना पडा।

जनमत के निर्माण में प्रभुत्वशाली स्थिति रखनेवाले अंग्रेजी अखबार हमें बदनाम करते थे और हम पर कीचड़ उछालते थे। एक ऐसी स्थिति आ गई, जब हमें अपनी सभाओं के लिए लंदन में इमारतों का मिलना बंद हो गया। १८ मार्च, १८७२ को जब हमने कम्यून की पहली वार्षिकी मनानी चाही, तब हमने पाया कि जो हाल किराए पर लिया गया था उसे पुलिस ने घेरे में ले लिया गया है। तब मैंने एक विशेष इमारत को किराए पर लेने का बन्दोबस्त किया, जिसमें हमने जनरल कौंसिल की बैठक की।

१८७० के बाद बाहर में इंटरनेशनल के खिलाफ लड़ाई अधिक तीव्र होती गई और अधिकतर सरकारों ने उसके समर्थकों के खिलाफ कार्रवाइयां कीं। फ्रांस में तो एक विशेष कानून भी पास कर दिया गया और ब्रिटिश ट्रेड-यूनियनों में ऐसे लोग थे, जो उसके खिलाफ आंदोलन चलाते थे। इसके अलावा मिखाईल बकूनिन* संगठन के भीतर गंदी साजिशें कर रहे थे। उस समय मार्क्स की स्थिति स्पृहणीय नहीं थी। वे इंटरनेशनल के काम से दबे हुए थे। उन्होंने ही इंटरनेशनल की ओर से प्रकाशित किये जानेवाले सभी घोषणापत्र, अपीलें और अन्य सामग्री लिखकर तैयार की थी। उसके अलावा उनका विपुल पत्र-व्यवहार होता था और उत्प्रवासी कम्युनार्डों के सम्बन्ध में उनकी दौड़धूप भी बहुत-सा समय ले जाती थी। मार्क्स इन सारे कर्तव्यों की पूर्ति किसी पारिश्रमिक के बिना करते थे यद्यपि अपने अस्तित्व के लिए उन्हें भारी संघर्ष करना पड़ता था। उनकी गृहस्थी का खर्च बढ़ता गया, खास तौर से कम्यून के बाद। उनके घर में हमेशा ही कई कई फ्रांसीसी उत्प्रवासी पाए जा सकते थे, जिनके रहन सहन और भरण-पोषण का प्रबंध करना पड़ता था। श्रीमती मार्क्स के लिए तो वह खास तौर से बड़ा कठिन समय था। वे अक्सर मेरे और मेरी पत्नी के पास सलाह के लिए या किसी पारिवारिक कठिनाई पर बातचीत करने

---

*बकूनिन, मिखाईल अलेक्सान्द्रोविच (१८१४–१८७६) – रूसी क्रांतिकारी तथा सार्वजनिक लेखक, अराजकतावाद के एक सिद्धान्तकार, पहले इंटरनेशनल में मार्क्सवाद के कट्टर विरोधी, उन्हें उनकी फूटपरस्त गतिविधियों के कारण इंटरनेशनल से निकाल दिया गया। – सं०

के निए आती थी। लेकिन वह सब कुछ सवहारा आदोलन म उनकी हार्दिक और उत्साहपूर्ण शिरकत म बाधक नही बन सकता था।

हग काग्रेस म बकूनिन क खिलाफ निणयकारी सघष होना था। बकूनिन न उसमे शरीक होने का वायदा किया और इस वजह से मार्क्स न भी उसमे जाना तय किया, ताकि बकूनिन के साथ विवाद का निपटारा हो जाए। इटरनशनल की हेग काग्रेस ही एकमात्र काग्रेस थी, जिसमे मार्क्स उपस्थित थे। दूसरे अवसरो पर व लदन म ही बने रहे थ और काग्रेसो मे दूसरो को चमकने का अवसर देते थे। हेग जाने का फैसला उन्होने केवल इसलिए किया कि बकूनिन की साजिशो का मदा के लिए अन्त कर दिया जाए। एगेल्स भी वहा गए और मार्क्स की पत्नी तथा बच्चो ने भी वहा जाने क अवसर का लाभ उठाया।

काग्रेस १८७२ क सितम्बर के शुरू म हुई। उसम ६५ प्रतिनिधियो न भाग लिया

मिखाइल बकूनिन न अपनी बात नही रखी और काग्रेस मे नही आए। लेकिन उनके कठपुतल वहा मौजूद थ और उनकी वहा एक नही चली। काग्रेस को मुख्यत दो प्रश्नो का निपटारा करना था १) जनरल कौंसिल के हेडक्वाटर का स्थानातरण और २) इटरनेशनल स बकूनिन का निष्कासन। पहले प्रश्न पर फ्रेडरिक एगेल्स न भाषण किया और जनरल कौंसिल क हेडक्वाटर को न्यूयाक म स्थानातरित करने की तजवीज़ पश की। उनकी तजवीज़ मजूर कर ली गई। बकूनिन को एक बद अधिवेशन म इटरनेशनल से निकाला गया। मार्क्स के विरोधियो तक न बकूनिन की साजिशो की निदा की और उनके निष्कासन का समथन किया

हेग म मार्क्स की उपस्थिति के समय सभी मुख्य देशो क पत्रकार अक्षरश उन पर टूट पडे। हर कोई उन्हे देखना और इटरनेशनल के लक्ष्यो तथा चेष्टाओ के बारे मे उनकी राय जानना चाहता था

१८७२ की हग काग्रेस पुरान इटरनेशनल की अतिम घटना थी

७

इन्हा दिनो म मार्क्स परिवार म अक्सर जाया करता था। हर विश्वसनीय साथी के लिए उनके घर क दरवाजे खुले रहते थे। म उन प्रीतिकर घटो

ते कभी नहीं भूल सकता जो अनेक दूसरों की तरह मेरे मार्क्स परिवार से मिलाए। श्रीमती मार्क्स से तो मैं खास तौर पर बहुत प्रभावित हुआ। वे लम्बी और बहुत सुन्दर महिला थीं, विशिष्ट व्यक्तित्ववाली, प्रियदर्शिनी, तीक्ष्ण-बुद्धि और इतनी अहंकारहीन तथा बेतकल्लुफ कि उनकी उपस्थिति में मेरे या उनकी बहिन की उपस्थिति के ही समान निर्द्वन्द्वता और संकोचहीनता की अनुभूति होती थी। मैं पहले कह चुका हूँ कि वे मजदूर आन्दोलन के प्रति बहुत उत्साही थीं और पूंजीपति वर्ग के खिलाफ उसकी हर सफलता से, चाहे वह कितनी भी छोटी क्यों न हो, उन्हें महानतम सन्तोष और सुख प्राप्त होता था।

मजदूरों के साथ मुलाकातों और वार्तालापों को मार्क्स सदा विशेष महत्त्व देते थे। वे आन्दोलन के बारे में उनकी राय जानना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण समझते थे और ऐसे लोगों की सोहबत की तलाश में रहते थे, जो चाटुकार न होकर खरी बात कह सकते हों। उनके साथ अधिक से अधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक तथा आर्थिक समस्याओं पर विचार करने के लिए वे सदा तैयार रहते थे। मार्क्स शीघ्र ही जान लेते थे कि वे उन प्रश्नों को समझते हैं या नहीं और वे जितना ही अधिक समझते थे मार्क्स उतना ही अधिक आनन्दित होते थे।

इंटरनेशनल के जमाने में वे जनरल कौंसिल की बैठकों में जाने से कभी नहीं चूकते थे। बैठकों के बाद आम तौर से मार्क्स और जनरल कौंसिल के हम अधिकतर सदस्य किसी आपानशाला में जाकर कुछ बियर पीते थे और गपशप करते थे। घर लौटते हुए रास्ते में वे अक्सर सरसरी तौर से सामान्य कार्य दिवस और आठ घंटे के कार्य दिवस की विशेष चर्चा किया करते थे। वे कहा करते थे— हम आठ घंटे के कार्य दिवस के लिए लड़ रहे हैं, पर खुद अक्सर इससे दुगुना काम करते हैं।

हाँ, खुद मार्क्स तो बहुत ही अधिक काम करते थे। पराये लोग तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि अकेले इंटरनेशनल के ही काम में उनका कितना श्रम और समय लगता था। इसके साथ ही उन्हें निर्वाह के लिए कठोर परिश्रम करना पड़ता था और इतिहास तथा अर्थशास्त्र की अपनी कृतियों के लिए मसाला जुटाने के लिए ब्रिटिश म्यूजियम में घंटों अध्ययन करना पड़ता था।

म्युजियम से लन्दन के उत्तरी भाग में हैवरस्टाक हिल की मेटलैण्ड पार्क रोड पर स्थित अपने घर लौटते समय वे अक्सर मुझसे मिलने, इण्टरनेशनल से सम्बन्धित किसी प्रश्न पर विचार करने के लिए हमारे यहा आ जाते थे। मैं म्युजियम के पास ही रहता था। घर लौटकर मार्क्स कुछ खाते पीते थे और थोडा आराम करते थे। उसके बाद फिर काम में लग जाते थे और अक्सर रात को देर तक, यहा तक कि भोर तक, काम करते रहते थे। उनके शाम के सक्षिप्त आराम में भी मिलने के लिए आनेवाले पार्टी साथियो के कारण प्राय व्यतिरेक पड जाता था।

सभी महापुरुषो की तरह मार्क्स में भी दम्भ बिलकुल नही था। वे ईमानदारी के साथ की गई हर चेष्टा और आत्मनिर्भर चिन्तना पर आधारित हर राय की कद्र करते थे। जैसा कि मैं पहले ही कह चुका हू, वे मजदूर आन्दोलन के बारे में मामूली से मामूली मजदूर की राय सुनने को हमेशा उत्सुक रहते थे। चुनाचे वे अक्सर तीसरे पहर मेरे यहा आते, मुझे साथ लेकर टहलने निकलते और नाना विषयो पर मुझसे बात करते जाते थे। मैं स्वभावत उन्हें ही अधिक बात करने की सम्भावना देता था, क्योकि उनकी बात सुनना और उनके तर्कों का अनुसरण करना मेरे लिए सचमुच सुखकर होता था। मैं उनकी बातो में बिलकुल डूब जाता था और मन मारकर ही उनसे अलग होता था।

सामान्यत उनसे बात करके बडा आनन्द मिलता था और वे अपने सम्पर्क में आनेवाले सभी लोगो को बहुत आकर्षित करते थे, यहा तक कि मोह लेते थे। उनका विनोद भण्डार असीम था और उनकी हसी हार्दिक होती थी। हमारे पार्टी साथी जब किसी भी देश में विजय प्राप्त करते तो मार्क्स बेहद उन्मुक्त भाव से अपनी खुशी प्रगट करते थे और मुखरित ढग से आनन्द मनाते थे। आसपास के लोग भी उनके इस आनन्द प्रवाह में बहने लगते थे।

मार्क्स की तीनो बेटिया भी युवावस्था के प्रारम्भ से ही अपने समय के मजदूर आन्दोलन में बहुत दिलचस्पी रखती थी। मजदूर आन्दोलन मार्क्स परिवार में हमेशा ही बातचीत का मुख्य विषय रहता था। अपनी बेटियो के साथ मार्क्स के सम्बन्ध अधिकतम हार्दिक और बेतकल्लुफ थे। लडकिया उनके साथ पिता से अधिक भाई अथवा मित्र जैसा व्यवहार करती था,



पयर-लाशेज नामक कब्रिस्तान म कम्युनार्डों की मुठभेड



कम्युनार्डों की आखिरी लड़ाई

क्योंकि मार्क्स पिता के अधिकार की बाह्य विशेषताओं को नहीं मानते थे। गभीर मामलों में वे अपनी बच्चियों के सलाहकार होते थे अन्यथा अवकाश होने पर उनके खेलों में साथ देते थे।

बच्चे उन्हें आम तौर से बेहद पसंद थे। जब उन्हें शहर में कोई काम न होता और हैम्पस्टेड हीथ में टहलने जाते, तो अक्सर 'पूंजी' के लेखक को ढेरों बच्चों के साथ कोलाहलपूर्वक खेलते-कूदते देखा जा सकता था।

१८८३ में उनकी सबसे बड़ी लड़की की मृत्यु हो गई, जिसमें अपनी मां के सभी सद्गुण मौजूद थे। उससे मार्क्स को उस समय में एक और अत्यधिक कठिन और दुर्भाग्यपूर्ण गहरी चोट लगी, क्योंकि मुश्किल से १२ महीने पहले, २ दिसम्बर, १८८१ को वे अपनी वफादार जीवन संगिनी को खो चुके थे। ये चोटें ऐसी थीं, जिनसे वे कभी नहीं उबर सके।

मार्क्स को उस समय सख्त खांसी हो चुकी थी। उनको खांसते सुनकर लगता था कि उनकी चौड़ी फौलादी छाती फटी कि फटी। वह खांसी उन्हें इसलिए और भी कष्टकर थी कि उनका शरीर बरसों के अतिश्रम से जर्जर हो चुका था। आठवीं दशाब्दी के मध्य में डाक्टरों ने उन्हें धूम्रपान की मनाही कर दी। मार्क्स चूंकि धूम्रपान के बहुत शौकीन थे, इसलिए उसका त्याग उनके लिए असाधारण कुर्बानी थी। डाक्टरों के आदेश के बाद जब मैं उनसे पहली बार मिलने गया, तो उन्होंने उल्लास और गर्व के साथ यह बताया कि मैंने अमुक अमुक दिन से धूम्रपान नहीं किया है और जब तक डाक्टर अनुमति नहीं देंगे तब तक ऐसा करूंगा भी नहीं। उसके बाद की हर मुलाकात में वे बताते थे कि उन्हें धूम्रपान किए कितने दिन हो गए और उतने अर्से में उन्होंने एक बार भी धूम्रपान नहीं किया और न उसकी बात ही सोची। उन्हें तो स्वयं भी मानो यह विश्वास नहीं होता था कि वे ऐसा करने में समर्थ हो सकते थे। इसी लिए जब कुछ अर्से बाद डाक्टर ने उन्हें दिन में एक सिगार पीने की अनुमति दे दी तो उन्हें बेहद खुशी हुई।

* * *

१५ मार्च, १८८३ को मुझे एंगेल्स का पत्र मिला, जिसमें मार्क्स की मृत्यु की सूचना थी। वह सूचना पाकर मुझे गहरा सदमा हुआ। मार्क्स के निकट सम्पर्क में आनेवाले जानते थे कि उनकी मृत्यु से मजदूर आंदोलन

का कितना नुक्सान पहुचा है। मजदूर आन्दोलन ने एक महामेधावी और प्रकाण्ड पडित ही नही, बल्कि एक सुसगत तथा लौह चरित्र इसान भी खो दिया। जो कृतिया वे छोड गए, उनसे सिद्ध है कि कितना प्रचुर ज्ञान उनके साथ कब्र मे दफन हो गया, यद्यपि वे कृतिया उसका दशाश भी नही है, जितना कुछ लिखने का वे इरादा रखते थे। सघर्ष तथा बलिदानो स भरपूर उनका पूरा जीवन ही उनके पराक्रमी चरित्र का प्रमाण था।

मार्क्स को यह पक्का विश्वास था कि मेहनतकश जनता देर सबेर उनको समझेगी और उनकी शिक्षाओ से पूजीवादी समाज का तख्ता उलटने की शक्ति प्राप्त करेगी तथा स्पष्ट चेतना के साथ नए समाज के निर्माण के लिए काम करेगी।

फ्रेडरिक लेसनर

फ्रेडरिक एंगेल्स — एक मजदूर की स्मृतियों में*

सदा के लिए आंख बंद करने के पहले मेरे लिए महान योद्धा फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ अपनी लम्बी जान पहचान और दोस्ती की स्मृतियों को लिख डालना ठीक ही होगा। यद्यपि उनकी मृत्यु के बाद से उनकी बाबत बहुत कुछ लिखा और कहा गया है, फिर भी मेरे ख्याल में उनके साथ १८४७ में शुरू हुए अपने सम्बन्धों के अनुभव बयान करना उचित ही होगा।

निश्चय ही मैं उतने अच्छे ढंग से यह नहीं कर सकूंगा, जितना कि चाहता हूं। एंगेल्स के साथ मेरी जान पहचान हुए आधी सदी गुजर चुकी है और मुझे सारी बातों की याद ताजा करना पड़ेगी। मेरा बुढ़ापा भी मेरे लिए एक बाधा है। मेरा हाथ भी अब उतने ही सधे हुए ढंग से नहीं लिखता है, जितना कि मैं चाहता हूं। इस लिए मैं आशा करता हूं कि अगर मेरी विवृत्ति उतनी अच्छी न हो जितनी होनी चाहिए, तो मुझे क्षमा किया जाएगा।

१

कार्ल मार्क्स की तरह फ्रेडरिक एंगेल्स के साथ भी मेरा प्रथम परिचय १८४७ के अंत की महत्त्वपूर्ण अवधि में लन्दन में हुआ।

---

* १९०१ में प्रकाशित। — सं०

10*

वह परिचय कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति में हुआ, जो उस समय का एकमात्र संगठन है जो अब तक कायम है और मजदूर आंदोलन के काम आ रहा है*। हमारी जान पहचान उस चिरस्मरणीय कांग्रेस के समय हुई थी, जिसमें आज के अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर आंदोलन की नींव डाली गई थी। बल्जियमी साथी टेडेस्को को साथ लिए हुए मार्क्स, एंगेल्स और वि० वोल्फ नये संगठन के उसूलों और कार्यनीति के सम्बन्ध में एक सर्वमान्य निर्णय करने के लिए लंदन आए थे। आज सारी दुनिया जानती है कि उस कम्युनिस्ट कांग्रेस में ही मार्क्स और एंगेल्स को एक कम्युनिस्ट घोषणापत्र तैयार करने का भार सौंपा गया था।

मैं उससे पहले ही «*Deutsche Brüsseller Zeitung*» के माध्यम से, जो १८४७–१८४८ में प्रकाशित होता था, मार्क्स और एंगेल्स का नाम सुन चुका था। एंगेल्स की पुस्तक 'इंगलैंड के मजदूर वर्ग की स्थिति' जिसका प्रथम संस्करण १८४५ में प्रकाशित हुआ था, लंदन के कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति में बिक रही थी।

वह पहली पुस्तक थी, जिसे मैंने खरीदा और जिससे मुझे मजदूर आंदोलन का पहला परिचय मिला। दूसरी पुस्तक, जिससे मैंने उस समय शिक्षा ग्रहण की वह थी वाइटलिंग की 'सामंजस्य और स्वतंत्रता की ज़मानतें'।

केवल कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति के ही नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट लीग के सदस्यों पर भी लंदन में मार्क्स, एंगेल्स, वि० वोल्फ इत्यादि की उपस्थिति की प्रबल छाप पड़ी। उस कांग्रेस से बड़ी उम्मीदें लगाई गई थीं और वे न केवल विफल ही नहीं हुईं, बल्कि बढ़ चढ़कर पूरी हुईं। 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' का प्रकाशन, जो उस ऐतिहासिक कांग्रेस की महान देन था, मेरे कथन का तथ्यगत प्रमाण है।

देखने में एंगेल्स मार्क्स से भिन्न थे। लम्बे और छरहरे, तेज और स्फूर्तिमय गतिविधि, संक्षिप्त और नपी-तुली बात, चाल-ढाल सिपाहियाना। वे बहुत ही जिन्दादिल व्यक्ति थे और उनके मज़ाक तीर की तरह सधे

---

* उक्त समिति १९वीं सदी के अंत तक एक मामूली क्लब बनकर रह गया था।—सं०

हुए होते थे। उनके सम्पर्क में आनेवाले हर व्यक्ति पर अनिवार्यतः यह छाप पड़ती थी कि एक असाधारण प्रतिभाशाली व्यक्ति के साथ उसका सान्निध्य है।

अजनबियों के सामने एंगेल्स मितभाषी व्यवहार करते थे। उनकी आखिरी उम्र में उनकी यह प्रवृत्ति और भी बढ़ गई थी। उनके बारे में सही राय बनाने के लिए उन्हें अच्छी तरह जानना जरूरी था और वे भी जब तक किसी को पूरी तरह जान नहीं लेते थे तब तक उसे अपना विश्वासपात्र नहीं बनाते थे।

उनके सामने किसी की मक्कारी नहीं चल सकती थी। वे फौरन भाँप लेते थे कि उनके सामने किस्से गढ़े जा रहे हैं अथवा किसी प्रकार की मुलम्मासाज़ी के बिना सीधे-सीधे सच बात कही जा रही है। एंगेल्स लोगों के अच्छे पारखी भी थे, हालांकि कई मौकों पर उनसे गलती भी हुई।

१८४३ से उन्हें जाननेवाले उनके मित्र और चार्टिस्ट अखबार «*Nothern Star*» के सम्पादक जार्ज जूलियन हार्नी के शब्द उद्धृत किए बिना एंगेल्स का चित्र अधूरा रह जाएगा। एंगेल्स की मृत्यु के बाद हार्नी ने लिखा था कि "एंगेल्स १८४३ में ब्रैडफोर्ड से लीड्स आए और «*Nothern Star*» के दफ्तर में मुझसे मिले। वे एक लम्बे, सुघड़ युवक थे और उनके चेहरे पर किशोर सुलभ तरुणाई झलकती थी। जन्म से जर्मन होने और वहीं शिक्षा पाने के बावजूद उनकी अंग्रेज़ी उस समय भी उल्लेखनीय रूप से निर्दोष थी। उन्होंने मुझे बताया कि वे निरंतर «*Nothern Star*» पढ़ते हैं और चार्टिस्ट आंदोलन में उनकी हार्दिक दिलचस्पी है। इस प्रकार ५० से भी अधिक साल पहले हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई।"

हार्नी के अनुसार अपने सारे कामों के बावजूद एंगेल्स अपने मित्रों के लिए समय निकाल लेते थे और आवश्यकता होने पर उन्हें मदद और सलाह देते थे। उनके प्रकाण्ड पाण्डित्य और उनके प्रभाव ने उन्हें मगरूर नहीं बनाया। उलटे, ७५ की उम्र में भी वे उतने ही विनम्र तथा दूसरों की कृति के लिए श्रेय देने को तत्पर बने रहे, जितने २२ की उम्र में थे। उनकी मेहमाननेवाजी असाधारण थी, वे मज़ाकपसन्द थे और उनका ठहाका औरों को भी बरबस हँसा देता था। वे गोष्ठी की जान होते थे।

आवेनवादियो, चार्टिस्टो, ट्रेड यूनियनवालो और समाजवादियो से उनका निकट सम्पर्क रहता था, जिनमे से प्रत्येक को बेतकल्लुफी महसूस कराने में उन्हें कमाल हासिल था।

२

जून १८४८ के अन्त में मैं लन्दन से कोलोन आया और वही एंगेल्स और मार्क्स के साथ मेरी निकटता बढ़ी। वहा *«Neue Rheinische Zeitung»* के सम्पादन विभाग के सदस्यो से मेरा परिचय कराया गया। एंगेल्स जानते थे कि मैं पेशे से दर्जी हू और उन्होने मुझे अपना "दरबारी दर्जी" नामजद कर दिया, हालांकि मैने उनके कपडो की केवल मरम्मत ही की। अपनी पोशाको को न तो एंगेल्स और न मार्क्स ही बहुत महत्त्व देते थे। उनकी माली हालत उस समय कुछ बहुत अच्छी नही थी।

उस समय मैं बिलकुल कच्ची उम्र का युवक था और घुसपैठकर सामने आने की मेरी आदत नही थी। इसलिए हम अधिकतर सार्वजनिक सभाओ मे या अन्य बैठको मे ही मिलते थे और रणक्षेत्र के साथियो की तरह एक दूसरे का अभिवादन करते थे।

कोलोन मे हम थोडे ही अर्से तक सम्पर्क में आये, लेकिन उन दोनो विरल व्यक्तियो का ऊंचा मूल्याकन मैंने उसी समय कर लिया था और उनसे भविष्य के लिए बहुत कुछ की आशा करता था।

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' ने समसामयिक समाज के सम्बन्ध में उनके सटीक ज्ञान की बाबत लेश मात्र भी सन्देह बाकी नही रहने दिया और जिस सुबोध ढंग से वह लिखा गया था उससे साधारण मजदूर के लिए भी वर्ग विग्रह का गहन वैज्ञानिक सार समझना सुगम बन गया। लेकिन मार्क्स और एंगेल्स ने पहले पहल *«Neue Rheinische Zeitung»* मे ही यह प्रदर्शित किया कि ज्ञान के अतिरिक्त वे अदम्य इच्छा शक्ति के भी धनी हैं।

काली-सफेद* प्रतिक्रिया ने शीघ्र ही समझ लिया कि उस कैसे

---

*प्रशियाई प्रतिक्रान्ति। काला और सफेद—प्रशिया के राष्ट्रीय झडे के रंग थे।—सं०

अद्वितीय विरोधियो से पाला पडा है और उसने «*Neue Rheinische Zeitung*» को खत्म करने मे कोई कोर-कसर उठा न रखी। जब उसमे कामयाबी नही हुई तो उसने अखबार का अन्त करने के लिए और भी अधिक सख्त कारवाइया शुरु की। जनवादियो की राइनी हलका कमिटी के खिलाफ दो मुकदमे चालू किए गए। पहला ७ फरवरी और दूसरा ८ फरवरी को। मै दोनो मुकदमो की सुनवाई मे बडी दिलचस्पी के साथ मौजूद रहा। जिस महती वरिष्ठता तथा गहन ज्ञान के साथ मार्क्स और एगेल्स ने काली-सफेद प्रतिक्रिया के विरुद्ध मोर्चा लिया, उसे देख-सुनकर मन खिल उठता था। उन दोनो के विरोधी भी उनकी प्रशसा किए बिना नही रह सके।

«*Neue Rheinische Zeitung*» के जबरदस्ती बद और मार्क्स के देश-बदर कर दिए जाने के बाद सम्पादकीय विभाग के सदस्य बिखर गए। मार्क्स पेरिस चले गए और एगेल्स फ्काल्त्स, जहा राइख सविधान का आदोलन भडक उठा था फ्काल्त्स मे एगेल्स ने जो कुछ किया, वह कार्ल मार्क्स के सम्पादकत्व मे प्रकाशित «*Neue Rheinische Zeitung Politisch okonomische Revue*» (नया राइनी अखबार। एक राजनीतिक-आर्थिक समीक्षा), लदन, हैम्बर्ग और न्यूयार्क, १८५०, मे राइख सविधान आदोलन पर उनके द्वारा लिखित लेख मे देखा जा सकता है।

३

बादेन मे क्राति की पराजय के बाद एगेल्स और कई दूसरे विद्रोहियो को स्विटजरलैण्ड भाग जाना पडा। लेकिन एगेल्स वहा बहुत कम अर्से तक रहकर लदन चले गए, जहा मार्क्स तथा अनेक दूसरे जर्मन उत्प्रवासी पहले ही पहुच चुके थे।

लदन मे एगेल्स और मार्क्स परिवार के कठिन दिन शुरू हुए, क्योकि दोनो मे से किसी के पास जीवन निर्वाह के साधन नही थे। एल्योनोरा मार्क्स ने अपने एक लेख मे उन मुश्किल वक्तो का वर्णन किया है।

वही समय था, जब मार्क्स, एगेल्स, लीब्कनेख्त, वि० वोल्फ तथा दूसरो ने कम्युनिस्ट मजदूर शिक्षा समिति मे सक्रिय भाग लिया। उस समय

उक्त समिति मे नाना प्रवत्ति रखनेवाले अनक राजनीतिक उत्प्रवासी शामिल थे। उनम हाल की राजनीतिक घटनाओ तथा भविष्य सम्बधी विचारा क सिलसिले मे इतनी मत भिनता थी और उत्प्रवासी जीवन मे इतनी कटुता भरी थी कि शीघ्र ही रगडे झगडे पैदा हो जान मे कोई आश्चय की बात नही थी

जहा तक मुझे याद है, एगेल्स को लदन छोडकर १८५० म मचेस्टर जाना पडा था, जहा वे एक सूती मिल की नौकरी म भरती हो गए। उनक पिता उस सूती मिल के मालिको मे से एक थे। १८७० म ही अपना सारा समय अध्ययन और मार्क्स के साथ सहयोग म लगान के लिए उहोने मैचेस्टर छोडा था।

मैचेस्टर म एगेल्स मुख्यत विल्हेल्म वोल्फ, समुएल मूर और काल शार्लेम्मेर से ही मिलते-जुलते थे। कभी-कभी मार्क्स से मिलने लदन आ जाते थे, अथवा मार्क्स मैचेस्टर चले जाते थे। लेकिन ऐसा अक्सर नहा होता था और ये मुलाकात, लम्बे अर्से तक नही चलती थी। लेकिन उनका पत्र-व्यवहार उतना ही अधिक विशद होता था

मन १८५६ म एगेल्स का एक पत्र लिखा था, जिसमे प्रसगवश उनस अपना एक फोटो भेजने का कहा था। उस पत्र के बढिया जवाब के साथ फोटा प्राप्त हुआ। उनके जवाबी पत्र को यहा उद्धत करके मुझे खुशी होती, लेकिन बहुत खोजन के बाद भी वह मिल नही रहा है।

१८७० का पतझड म एगेल्स सपत्नीक लदन जाकर प्रिमरोज हिल के पासवाले प्रख्यात मकान मे रहने लगे। वह मकान मार्क्स के घर के पास ही था और एगेल्स उसम अपनी मृत्यु के कुछ समय पहल तक रहते रहे।

१८७० म फासीसी प्रशियाई युद्ध छिड गया, जिसम एगेल्स पूरी दिलचस्पी लन लगे और फलत उनका अधिकतर समय उसी के अध्ययन म बीतन लगा। उस युद्ध की बाबत «Pall Mall Gazette» म प्रकाशित उनके लेखा की बदौलत उन्हे "जनरल" उपनाम मिला और उनम फौजी मामलात म एगेल्स की जानकारी सिद्ध हो गई। उहोने फासीसियो की अनेक हारो की भविष्यवाणी की। जब जमन फौजें फासीसियो की उत्तरी सना के गिद जमा हो रही थी, तभी एगेल्स ने «Pall Mall Gazette» म भविष्यवाणी कर दी थी कि अगर



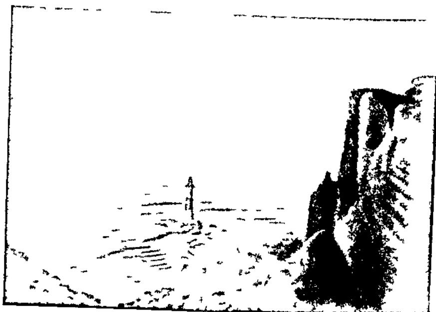
फ्रेडरिक एंगल्स १८५८



हाइड पाक म नदन के मजदूरो का १८९२ का
पहली मई वाला प्रदशन जिसम
एंगेल्स और एल्यानोरा माक्स न भाग लिया



एगल्स का जन्म नगर बामे



ईस्टबान के पासवाला स्थान जहा एगेल्स क फूल
खुले समुद्र म निसजित किय गय

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' के अनुवाद, उनके पास सशोधन और सम्पादन के लिए भेजे जानेवाले अन्य अनुवादो और विशेष अवसरा के लिए पम्फलेटो व लेखन म ही उनका अधिकतर समय खच होने लगा। इन सारे कामा के बावजूद उनका इतनी अधिक वज्ञानिक कृतिया के प्रणयन के लिए भी समय निकाल सकना इस बात का प्रमाण है कि हमारे वृद्ध मित्र म कितनी प्रकाण्ड श्रमप्रियता और कायक्षमता थी

१८७८ मे एगेल्स को बहुत भारी सदमा सहना पडा। उनकी पत्नी का, जो एक आयरी महिला थी और फीनियन आदोलन की प्राण रह चुकी थी, देहान्त हो गया। उनका एक भी बच्चा नही था, इसलिए एगेल्स के लिए पत्नी की मत्यु एक गहरी चाट थी

उसके बाद माक्स परिवार पर दुख के बादल घिर आए माक्स की बीमारी, उनकी पत्नी और पुत्री की बीमारी और उन दोना की मत्यु।

माच, १८८३ म माक्स की मत्यु की खबर मिली, जो अप्रत्याशित न होते हुए भी कुछ कम दुखद नही थी।

एगेल्स ने मुझे यह पत्र भेजा था

'लन्दन, १५ माच, १८८३

"प्रिय लेसनर

"हमारे पुराने मित्र माक्स ने कल दिन के तीन बजे सदा के लिए शान्तिपूवक आखे मूद ली। उनकी मत्यु का तात्कालिक कारण सभवत आतरिक रक्तस्राव था।

'अन्त्येष्टि शनिवार को दिन के १२ बजे होगी। तुस्सी आपकी उपस्थिति के लिए प्राथना करती है।

"म बहुत जल्दी म हू इसके लिए क्षमा कर।

"आपका फ्रे० एगेल्स।

माक्स की मत्यु के बाद हेलन दमुत, जो श्रीमती माक्स के विवाह के समय से बरसा तक माक्स परिवार के समस्त सुख-दुख की भागीदार रही थी, एगेल्स का घर चलाने लगी। वह ४ नवम्बर, १८९० को चल बसी। एगेल्स के लिए वह बहुत बडा क्षति था। सौभाग्यवश, उनके शास्त्र

के बाद श्रीमती लुईज़ा फ्राइबर्गर ने, जो पहले श्रीमती काउत्स्की थीं, विएना से लन्दन आकर एंगेल्स की गृहस्थी संभाल ली।

कौन नहीं जानता कि एंगेल्स ने नए ट्रेड यूनियन आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और ८ घंटे के काम दिवस के संघर्ष का समर्थन किया, यद्यपि वे स्वयं हर रोज़ १६ घंटे और रात को देर तक काम किया करते थे। अपने बुढ़ापे के बावजूद वे मई दिवस के जलूसों में हमेशा उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे, यहां तक कि ठेले पर भी चढ़ जाते थे, जो मंच का काम देता था। और एंगेल्स के मित्रों में से मई दिवस की शाम की उन दावतों को कौन भूल सकता है, जो आम तौर से सभाओं के बाद हुआ करती थीं?

एंगेल्स की जिन्दादिली और कार्यक्षमता में मृत्युपर्यन्त कोई कमी नहीं आई। विदेशी भाषाओं का उनका प्रकाण्ड ज्ञान तो सर्वविदित ही है। दस भाषाओं पर उनका पूर्ण अधिकार था। नार्वेई भाषा का अध्ययन तो उन्होंने ७० साल से अधिक का हो जाने के बाद शुरू किया, और सो भी इसलिए कि इब्सेन और करलाद की मूल रचनाओं को पढ़ सकें।

मार्क्स की तरह एंगेल्स भी सार्वजनिक सभाओं में विरले ही भाषण करते थे। उनका अंतिम सार्वजनिक भाषण १८९३ में हुआ। उन्होंने ज़ूरिख कांग्रेस में, वियना और बर्लिन में भाषण किया। जैसा कि उन्होंने मुझे बाद में बताया, ज़ूरिख में जिस प्रकार उनका स्वागत किया गया और आभार तथा प्रसन्नता की सहज अभिव्यक्ति देखने को मिली, उससे उनका हृदय गदगद् हो उठा था। आस्ट्रिया, स्विटज़रलैण्ड तथा जर्मनी में उनका दौरा हमारे विचारों की विजय का द्योतक था और एंगेल्स अक्सर इस बात पर अफसोस किया करते थे कि मार्क्स इसे देखने के लिए जीवित नहीं रहे।

एंगेल्स की धैर्यशीलता और दृढ़ निश्चयता उनके अंतिम समय तक कायम रही। अपने सभी व्यवहारों में वे सरल और निष्कपट रहे। किसी भी विषय का प्रश्न पूछा किया जाने पर, वे सदा संक्षिप्त और साधिकार उत्तर देते थे। चाहे किसी को पसन्द आये या न आये, वे अपनी राय लाग-लपेट के बिना प्रगट कर देते थे।

पार्टी की किसी बात से मतभेद होने पर वे फौरन और निस्संकोच अपनी असहमति व्यक्त कर देते थे। ढुलमुलपन या समझौतेबाज़ी उनकी प्रकृति में ही नहीं थी

बहुत सारे लोग उनसे मिलने आया करते थे, जिनमे पार्टी के अलावा दूसरे लोग भी होते थे। जब ९वी दशाब्दी क «Sozialdemokrat» को जूरिख से लन्दन ले जाना पडा, तो मि की सख्या और भी बढ गयी। पर एगेल्स की मेहमाननेवाजी मे का नही आया।

मार्क्स की मृत्यु के बाद मै अधिक अक्सर एगेल्स के यहा जान मुझे उनका उतना ही अधिक विश्वास प्राप्त था, जितना मार्क्स क उनसे मिलनेवालो की सख्या बहुत अधिक होती, तो मै उनके पा जाता जिसपर वे फौरन पूछते थे कि मै इतना कम क्यो दिखलाई पड

४

१८९५ की गर्मियो मे एगेल्स अपने स्वास्थ्य सुधार के लिए बार ईस्टबोर्न गए। लेकिन कोई सुधार नही हुआ और वे जुलाई के मे वापस आ गए। तुस्सी उनके सम्बन्ध मे बहुत चिन्तित थी और उ पत्र द्वारा मुझे स्थिति की सूचना दी। मैने निश्चय किया कि कुछ तक एगेल्स से मिलने न जाऊ, ताकि वे अधिक बातचीत की परेशानी से रहे। मुझे भय था कि मेरे मिलने से उन्हे प्रोद्दीपन होगा, क्योकि स्वभाव से ही अत्यन्त उद्दीपनशील थे। फल यह हुआ कि उनकी ल वापसी के बाद मै अपने महान मित्र को जीवित देखने से वचित रह गय

५ अगस्त को मुझे बर्नस्टीन* ने खबर दी कि एगेल्स की हालत ब खराब है और अगर मै उन्हे मरने से पहले एक बार और देखना चाह हू तो झटपट आ जाऊ। फिर भी मुझे इस बात का आभास तक न हुआ कि उनकी मौत इतनी निकट है और मैने उनसे दूसरे दिन, ६ अग को सुबह ही जाकर मिलने का निर्णय किया।

दूसरे दिन पहली ही डाक से श्रीमती फ्राइबर्गर द्वारा यह खबर पाक

---

* **बर्नस्टीन, एडुअर्ड** (१८५०-१९३२) – जर्मन सामाजिक-जनवादी एगेल्स की मृत्यु के बाद पथभ्रान्त, मार्क्सवाद के सशोधक के रूप मे साम आया। – स०

मैं स्तब्ध रह गया कि हमारे मित्र ५ अगस्त की रात को ही, ११ और १२ बजे के बीच चल बसे थे।

यह दुखद तथा अप्रत्याशित समाचार पाकर मुझपर क्या बीता, मैं शब्दों में इसे नहीं बता सकता

मैं फौरन उनके घर गया और पाया कि वे अपनी शैया पर उसी प्रकार मृत पड़े हुए हैं, जैसे हमारे मित्र मार्क्स १४ मार्च, १८८३ को पड़े हुए थे।

श्रीमती फ्राइबर्गर, जो मुझे एंगेल्स के कमरे में ले गयी, इतनी शोकाभिभूत थीं कि वे मुझसे एंगेल्स की अंतिम घड़ियों की बात नहीं कर पा रही थीं।

एंगेल्स की अंतिम इच्छा यह थी कि उनके फूल खुले समुद्र में विसर्जित कर दिए जाएं। २७ अगस्त को एल्योनारा मार्क्स, डा० ए० एवेलिंग, ए० बर्नस्टीन और मैंने उनकी इस अंतिम इच्छा की पूर्ति की। हम एंगेल्स के ग्रीष्म विश्राम के प्रिय स्थान, इस्टबोर्न गए, वहां दो डांडों वाली एक नाव किराए पर ली और उसमें अपने अविस्मरणीय मित्र के फूलों का कलश रखकर नाव को खेते हुए प्रायः दो मील खुले समुद्र में ले गए। उस प्रवाह-यात्रा का मेरे मन पर जो प्रभाव पड़ा, उसे शब्दों में नहीं बयान किया जा सकता

* * *

मार्क्स और एंगेल्स को दिवंगत हुए बरसों हो चुके हैं, लेकिन उनका कार्य अमर है। लाखों लाख मजदूर यह प्रदर्शित कर रहे हैं कि उनके उसूलों और इसी प्रकार उनकी कार्यनीति को समझा गया है, आत्मसात किया गया है और उनपर अमल किया जाता है और ऐसे मजदूरों की पांतें दिन-ब-दिन बढ़ रही हैं।

मेरे लिए यह अत्यधिक संतोष की बात है और मैं लाखों लाख सर्वहारा के स्वर में स्वर मिलाकर इस घोषणा के साथ इन संस्मरणों को समाप्त करता हूं कि

"आगामी भविष्य समाजवादी आन्दोलन का है!"

फ्रेडरिक अदोल्फ जोर्गे

मार्क्स के सम्बन्ध में *

१४ मार्च, १८८३ को मुझे लन्दन से यह तार मिला
"मार्क्स आज गुजर गए। एंगेल्स।"

सर्वहारा वर्ग के संघर्ष का नेता, मजदूर वर्ग की मुक्ति के हथियार गढनेवाला नही रहा। वह प्रकाण्ड प्रज्ञा, जो पूंजीवादी संसार के, तमिस्राजनित तथा तमिस्राजनक अज्ञान के निवारण और समस्त मानवजाति के निमित्त नए संसार, नए युग तथा नई स्थितियो की संभावनाये पैदा करने के लिए बिजलिया कौंधा रही थी, दिवगत हो गई।

मार्क्स नही रहे और इस समाचार पर लाखो लाख लोगो ने शोक मनाया कि उनके सबसे बडे वफादार और विश्वासपात्र सलाहकार के दिल की धडकन बन्द हो गई।

वैज्ञानिक मार्क्स ने, मजदूर वर्ग के वकील मार्क्स ने क्या कुछ उपलब्ध किया, उसे न तो ताम्रपत्रो पर खुदवाने की आवश्यकता है और न दहकते शब्दो मे बयान करने की। धातु या पत्थर का कोई स्मारक उसकी घोषणा नही करता, लेकिन सभी देशो और संसार के सभी भागो के सर्वहारा की

---

* जोर्गे, फ्रेडरिक अदोल्फ (१८२८–१९०६) – जर्मन कम्युनिस्ट, अमरीका मे उत्प्रवासी, अमरीकी तथा अंतराष्ट्रीय मजदूर आन्दोलन मे भाग लेनेवाले, मार्क्स और एंगेल्स के मित्र और सहकर्मी। जोर्गे ने संस्मरण १९०२ मे प्रकाशित हुए। – सं०

असत्य समवाय उसे महसूस करता है, जानता है और मार्क्स द्वारा उन्हे दिए गए इस महामंत्र--"दुनिया के मजदूरो, एक हो।" के तहत अपनी जुझारू पातो की वृद्धि द्वारा सिद्ध करता है।

केवल कुछ ही लोग जानते हैं कि मार्क्स और उनकी वफादार जीवन-सगिनी न अपने विश्वासो के लिए क्या कुर्बानिया की। अपनी अमर कृतिया का प्रणयन करत हुए, विज्ञान की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण शाखाग्रो मे नए पथ प्रशस्त करते हुए और सच्चे हृदय स मजदूर वग की उन्नति की चेष्टा करनेवाले सभी लोगा को अपने परामश तथा कार्यो स सहायता देते हुए उन्होंने कितने अभाव और कितनी कठिनाइया झेली।

इसके बावजूद मार्क्स को निरन्तर बदनाम किया गया, उनके इरादो और कार्यों पर कीचड उलीचा गया। यही कारण है कि आज से ५० साल पहले ७ नवम्बर, १८५३ को उनके तीन पुराने साथिया न एक दस्तावेज प्रकाशित कराई, जिसके कुछ अश यहा उद्धृत किए जा रहे ह

"जैसा कि सवविदित है, मार्क्स न क्राति के लिए अपनी कुर्बानिया की याद दिलाने का कभी एक पक्ति भी नही लिखी। उलटे, टुटपुजिया के दया प्रदशन से अधिक उनका आक्रोश जागत करनेवाली और कोई बात नही हो सकती थी कम से कम पार्टी को यह मालूम तो हो जाना चाहिए कि उनपर किए गए हमलो का मूल्य क्या है।

"मार्क्स और एगेल्स ने १८४३ से आज तक ब्रिटेन, बेल्जियम तथा पेरिस के कई पत्र पत्रिकाओ के लिए मुफ्त काम किया अस्थायी सरकार के सदस्य फ्लाकों न दोनो का मनमानी रकम देन का प्रस्ताव किया, लेकिन उन्होने इनकार कर दिया। इतना ही नही, जैसा कि हम भली भाति जानते ह, मार्क्स न फरवरी क्राति के भडक उठने पर कई हजार निजी थालर खच कर दिये, जिनम से कुछ तो ब्रसेल्स की आसन्न क्राति के लिए मजदूरो को हथियारबन्द करने मे लगे (जिसके लिए बेल्जियम के अधिकारियो न उन्हे और उनकी पत्नी को कैद कर लिया), कुछ जमनी मे क्रान्ति की तैयारी करने के लिए वहा भेजे गये मित्रो की मदद करने म और बाकी «*Neue Rheinische Zeitung*» का प्रारभिक लागत म। मार्क्स न १८४८ और १८४९ मे इस अखबार और क्रातिकारी प्रचार पर कोई ७,००० थालर खच कर दिए, जिनमे से कुछ तो उन्होने और उनकी पत्नी

ने नकद दिये और कुछ उनकी विरासत के रेहननामे के जरिए हासिल किए गये थे।

"यह कैसे हुआ कि अखबार इस सरमाए का अधिकतर हिस्सा खा गया? शुरू म पत्तीदारा की सख्या वडी थी, लेकिन जब जून का विद्रोह हुआ और जमनी म आरमत उसका समथन करनेवाला एकमात्र अखबार «Neue Rheinische Zeitung» ही रह गया, तो पूजीवादी पत्तीदार स्वभावत उससे अलग हो गए। उसके बाद कालोन म घेरे की स्थिति घोषित होन पर टुटपुजिया पत्तीदार भी छोड भागे। इसलिए मार्क्स न अखबार को अपनी 'निजी सम्पत्ति' के रूप म पत्तीदारा से ले लिया, यानी उन्होंने उसके सारे कर्जे और उसकी सारी देनदारी अपने ऊपर ले ली जब अखबार फिर से अपना बोझ उठान लायक हो गया, तो उसे जबरदस्ती दबा दिया गया। मई, १८४९ मे मार्क्स जब हेम्बुग के दौरे से वापस आए, तो उनके निर्वासन की आज्ञा उनकी पत्नी को प्राप्त हो चुकी थी।

'अखबार बन्द कर दिया गया। उसकी सम्पत्ति सूची म शामिल थे— १) एक भाप से चलनेवाली प्रेस, २) नए टाइपा से भरे कम्पोजीटरा के केस और ३) ग्राहकों के १,००० थालर चन्दे के पोस्टल आर्डर। मार्क्स ने यह सब कुछ अखबार के कर्जो की अदायगी के लिए छोड दिया

'३०० थालर कर्ज लेकर उन्होंने कम्पाजीटरो और मुद्रको का पावना चुकता किया और सपादकीय विभाग के सदस्यो की निकल भागने मे सहायता की। *एक धेला भी उनकी जेब म नही गया*

'इस प्रकार दुर्दशाग्रस्त होकर मार्क्स लन्दन पहुचे और महज अपनी हिम्मत की वदौलत ही उस दुर्दशा से मुक्त हुए। अगर लन्दन पहुचने के समय व एकदम खस्ताहाल थे, तो इसलिए कि क्रान्ति का सब कुछ अर्पित कर आए थे। अगर व और जल्दी अपनी हालत नही सुधार पाए, तो इसलिए कि व मजदूरो की निस्स्वार्थ सेवा करते थे लन्दन म जब उनके एक बच्चे की मृत्यु हो गई, तो उनके पास अन्त्येष्टि तक के लिए पैसे नही थे

"तो इस तरह मार्क्स बडी मुश्किल से महज गुजारा कर पाते थे और, इसके अलावा, पूजीपति वर्ग की 'शिष्ट' धोखेबाजी का शिकार होते थे।

"अगर जमन मजदूर पार्टी इस बात का मौका देती है कि हर प्रकार के कमीन माक्स जैसे लोगो पर कीचड उलीचे – ऐसे लोगों पर, जिन्होंने उसके लिए केवल अपने श्रम तथा अपनी हैसियत की ही नहीं, बल्कि अपनी दौलत और अपने परिवार के सुख चैन की भी कुर्बानी दी है, तब वह पार्टी हर किसी के सामने सजावार है।

जो० वेडेमेयर,* अदोल्फ क्लुस्स** डा० अ० जकोबी***।

माक्स पर महत्त्वाकाक्षा का आरोप और हृदयहीनता तथा अमानुषिक आचरण का दोष लगाया गया है। यह कितना अन्याय है।

उन्होने न तो कभी महत्त्वाकाक्षा प्रदर्शित की और न प्रभुत्वशील होने का प्रयास किया। उन्होने जो भी प्रभाव प्राप्त किया था, विशेषत लन्दन की पुरानी जनरल कौंसिल मे जिसमे सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दौर म चार पचमाश अंग्रेज और फ्रांसीसी और केवल दो या तीन जमन सदस्य थे उसका श्रेय मात्र उनके वरिष्ठ ज्ञान, उनके प्रकाण्ड पाण्डित्य, उनकी सर्वतोमुखी विद्वता तथा उनके उदात्त चरित्र को था।

माक्स पेरिस, ब्रसेल्स, कोलोन और लन्दन मे मजदूरो के बीच व्याख्यान देते थे, मजदूर समितियो म भाषण करते थे। जनरल कौंसिल म भी वे अपने विचारो और प्रस्तावो की, जो ही आम तौर से कौंसिल की आम नीति बनते थे, ऐसे सुपुष्ट तर्कों द्वारा व्याख्या करते थे कि उनकी सुसगतता का लोहा उनके विरोधी तक भी मानते थे। युक्तिसगतता के

---

*वेडेमेयर, जोजेफ (१८१८–१८६६) – जमन तथा अमरीकी मजदूर आन्दोलन के प्रख्यात नेता, जिन्होने १८४८–१८४९ की जमन क्रांति तथा सयुक्त राज्य अमरीका के गृहयुद्ध म भाग लिया। माक्स और एगेल्स के मित्र और सहकर्मी।– स०

**क्लुस्स, अदोल्फ – जमन इजीनियर, कम्युनिस्ट लीग के सदस्य, १८४९ के बाद अमरीका म उत्प्रवासी।– स०

***जकोबी, अब्राहम (१८३०–१९१९) – कम्युनिस्ट लीग के सदस्य, कम्युनिस्टो के कोलोन मुकद्दमे के एक अभियुक्त बाद म अमरीका म उत्प्रवासी।– स०

अतिरिक्त उनकी उक्तियो मे मार्मिकता भी होती थी। 'फ्रान्स मे गहयुद्ध' के अंतिम वाक्य इस बात को चरितार्थ करते है।

उस असाधारण व्यक्ति के साथ तनिक भी निकट सम्बन्ध का सौभाग्य पानेवाले सभी लोग इस बात पर एकमत होगे कि निजी सम्बन्धो मे मार्क्स बहुत ही सौहार्दशील, सजीव और प्रीतिकर थे।

लेकिन ढोंगिया, ज्ञानहीन और दभी व्यक्तियो के प्रति वे नितान्त निर्मम थे और ऐसे ही लोग मार्क्स के चरित्र को लाछित करते थे तथा उनकी 'महत्त्वाकाक्षा' इत्यादि के किस्से-कहानिया गढते और फलाते थे।

जीवन की कठिनाइयो का मार्क्स जैसा अनुभव रखनेवाला कोई भी व्यक्ति दूसरो की सहायता के लिए सतत प्रस्तुत रहता और जब कभी भी सभव होता सहायता करता। इसकी अनगिनत मिसाले दी जा सकती है, पर यहा एक ही पर्याप्त होगी। जुलाई १८७२ मे जब अतर्राष्ट्रीय मजदूर सघ के उत्तरी अमरीकी सघ की काग्रेस का अधिवेशन समाप्त हुआ और उसने हेग काग्रेस के लिए प्रतिनिधि चुन, तो एक मजदूर ने एक प्रतिनिधि को मार्क्स के लिए कुछ रकम दी। वह राइन प्रदेश का मजदूर था। उसे १८६४ या १८६५ मे विवश होकर अपना घर-बार त्यागना पडा था और लदन पहुचने पर उसके पास एक कानी कौडी भी नही थी। उसने अमरीका पहुचने के लिए मार्क्स से सहायता करने की प्रार्थना की। मार्क्स ने उसकी सहायता की थी यद्यपि तब खुद उनकी भी कुछ अच्छी स्थिति नही थी।

जब कम्यून के उत्प्रवासी लदन पहुचे, तो मार्क्स और उनके परिवार ने उनकी सहायता के लिए असाधारण प्रयास किए। आत-जाते उत्प्रवासियो के अतिरिक्त, उनके घर पर अक्सर आता, मचेस्टर और लिवरपूल, लन्दन, यूरोप और अमरीका तथा अन्य सुदूर स्थानो से आए मजदूरो को देखा जा सकता था।

ग० अ० लोपातिन

न० प० सिनेल्निकोव के नाम लिखित एक पत्र से*

१५ फरवरी, १८७३

विदेशों में मैंने अपना अधिकांश समय पेरिस या लन्दन में बिताया जहां मैं रूस की तरह ही साहित्यिक रोजीनदार की हैसियत से अपनी रोजी कमाता रहा। अपने अवकाश के समय में विदेश के मजदूर आन्दोलन और सामाजिक जीवन के अन्य रुचिकर पक्षों का अध्ययन करता था। अपने लन्दनवास के दौरान मैं कार्ल मार्क्स नामक एक सज्जन के सम्पर्क में आया, जो राजनीतिक अर्थशास्त्र के एक अधिकतम असाधारण लेखक और पूरे यूरोप में एक सर्वाधिक सुशिक्षित व्यक्ति हैं। कोई पांच साल पहले उन्हें रूसी भाषा पढ़ने की सूझी और वैसा करने के बाद उन्हें मिल्ल के प्रसिद्ध ग्रन्थ पर चेर्निशेव्स्की** की टीपें और उनके कुछ दूसरे लेख पढ़ने

---

*लोपातिन, ग० अ० (१८४५–१९१८) – रूसी क्रान्तिकारी, नरोदवादी पहले इन्टरनेशनल की जनरल कौंसिल के सदस्य, मार्क्स परिवार के मित्र। यहां पूर्वी साइबेरिया के गवर्नर जनरल न० प० सिनेल्निकोव के नाम इर्कुत्स्क जेलखाने से लोपातिन द्वारा लिखित एक पत्र का अंश दिया जा रहा है। – स०

**चेर्निशेव्स्की, निकोलाई गव्रीलोविच (१८२८–१८८९) – महान रूसी क्रान्तिकारी जनवादी, भौतिकवादी दार्शनिक, वैज्ञानिक, समीक्षक और लेखक। यहां राजनीतिक अर्थशास्त्र पर जान स्टुअर्ट मिल्ल के पहले ग्रन्थ में योग और टीपें नामक नि० चेर्निशेव्स्की की पुस्तक का हवाला है। – स०

का मिले। मार्क्स ने उन लेखों को पढ़ा और वे चेर्निशेव्स्की के लिए अत्यधिक सम्मान भावना अनुभव करने लगे। उन्होंने मुझे कई बार बताया कि चेर्निशेव्स्की ही वास्तविक मौलिक विचार रखनेवाले एकमात्र तत्कालीन अर्थशास्त्री हैं, जबकि सभी दूसरे वस्तुतः महज संकलनकर्त्ता हैं, कि चेर्निशेव्स्की की कृतियां मौलिकता, चिन्तन-शक्ति और गहनता से भरपूर हैं और उस विज्ञान पर वे ही एकमात्र ऐसी कृतियां हैं, जो सचमुच पढ़ने और अध्ययन किये जाने के योग्य हैं। उन्होंने कहा कि रूसियों को इस बात के लिए शर्म आनी चाहिए कि अब तक उनमें से एक ने भी ऐसे असाधारण विचारक से यूरोप को परिचित करने की परवाह नहीं की और चेर्निशेव्स्की की राजनीतिक मृत्यु न केवल रूस के, बल्कि पूरे यूरोप के विज्ञान जगत के लिए भारी क्षति है। यद्यपि उस समय भी मैं राजनीतिक अर्थशास्त्र पर चेर्निशेव्स्की की कृतियों का बड़ा आदर करता था, तथापि उस क्षेत्र में मेरा ज्ञान इतना काफी विस्तृत नहीं था कि उनके मौलिक और दूसरे लेखकों से लिए गये विचारों का अन्तर समझ सकता। स्वभावतः मार्क्स जैसे योग्यतावाले विवेचक की ऐसी राय ने चेर्निशेव्स्की के प्रति मेरे सम्मान को बढ़ा दिया। और जब मैंने लेखक के रूप में उनके बारे में व्यक्त की गई इस राय को उनके चरित्र की महान श्रेष्ठता तथा आत्मोत्सर्ग के बारे में ऐसे लोगों से सुनी रायों के साथ जोड़ा, जो उनसे घनिष्ठ रूप से परिचित थे और जो कभी भी अगाध भावप्रवणता के बिना उनकी चर्चा ही नहीं कर सकते थे, तब मेरे मन में उस महान सार्वजनिक लेखक तथा नागरिक को, जिसपर मार्क्स के ही शब्दों में रूस को गर्व होना चाहिए, फिर से दुनिया के सामने लाने की ज्वलन्त चाह पैदा हुई। मेरे लिए यह विचार असह्य था कि रूस का एक महानतम नागरिक, अपने युग का एक अधिकतम असाधारण विचारक जिसे रूस का आराध्य होना चाहिए था, वह साइबेरिया के किसी वदवख्त कोने में दफ्न रहकर यातना का व्यर्थ, दुर्दशाग्रस्त जीवन भोगता रहे। मैं शपथपूर्वक कहता हूं कि अगर मैं समर्थ होता और उस कुर्बानी द्वारा अपने देश की प्रगति के हेतु के एक अधिकतम प्रभावशाली पक्षधर को उस हेतु के निमित्त लौटा सकता, तो उनके साथ स्थान परिवर्तन के लिए जैसे आज तैयार हूं वैसे ही बिना किसी हिचक के उस समय भी तैयार था। मैं एक क्षण को भी हिचक बिना और वैसा

ही सहष तत्परता के साथ ऐसा करता, ठीक उसी तरह जसे कोई सैनिक अपने प्रिय सेनापति की रक्षा के लिए अपने प्राणा की बलि द देता है। लेकिन वह रोमानी सपना कभी भी सत्य नही होना था। इसके साथ ही उस समय मेरा खयाल था कि उस व्यक्ति की सहायता करने का एक दूसरा अधिक व्यावहारिक और उपयुक्त तरीका है।* वसी परिस्थितियो म अपने निजी अनुभव और दूसरो के बारे मे सुनी कई मिसालो के आधार पर मैं समझता था कि ऐसे उपक्रम म तत्त्वत कुछ भी असभव नही हे, आवश्यकता केवल कुछ निर्भीकता और थोडे पैसो की हे। अत उसके फौरन ही बाद मने पीटसबग के अपने दो निजी मित्रो को लिखकर सहायता मागी और उन्होन मुझे आवश्यक धन देना स्वीकार कर लिया और लिखा कि सफलता की सूरत म रकम लौटा दी जाये अन्यथा उसकी बाबत सब कुछ भूल जायेंगे। जब म पीटसबग से गुज़रा, तो उस रकम मे वहा के मेरे तीन अार मित्रो ने कुछ कुछ बढती कर दी और कुल मिलाकर १०८५ रूबल हो गए।

लन्दन से रवाना होते समय मैंने किसी को यह तक नही बताया कि मैं कहा जा रहा हू। मेरे इरादे को उन पाच व्यक्तिया के सिवा, जिनके साथ मैं इस सम्बध म पत्रव्यवहार कर चुका था और जिनसे मुझे पैसे प्राप्त हुए थे, अन्य कोई नही जानता था। कुछ सयागवश परिस्थितिया के कारण, जो ज़िक्र के काबिल नही हैं, जेनेवा मे एल्पीदिन भी मेरा इरादा पहले से ही जान गए थे। मार्क्स के साथ अपनी घनिष्ठता और उनके प्रति अपने प्रेम तथा सम्मान के बावजूद, मैंने उन से भी अपने इस इरादे की चर्चा नही की। मुझे यकीन था कि वे मुझे पागल समझेंगे, मुझे समझा बुझाकर रोकने की कोशिश करगे और मुझे पूव सुविचारित कारवाई से मुह माडना पसद नही है।

चेर्निशेव्स्की के सम्बधिया अथवा 'सोव्रेमेनिक' (समकालीन) कमचारी मण्डल मे उनके मित्रो से परिचित न होने के कारण म ठीक ठीक यह भी नहीं जानता था कि वे कहा पर हैं। साइबेरिया मे कोई परिचित अथवा वहा के

---

*लोपातिन का इरादा चेर्निशेव्स्की को कालेपानी से भगा ले जाने का था।—स०

लिए कोई परिचय पत्र न होने के कारण मुझे इर्कूत्स्क में लगभग एक महीना गुज़ारना पड़ा और तब जाकर मुझे सब कुछ पता लगा। इर्कूत्स्क में उस लम्बे पड़ाव के साथ मुझसे हुई कुछ जबदस्त गलतियां और कुछ ऐसी परिस्थितियों से, जो मेरे वश के बाहर थीं, स्थानीय प्रशासन का ध्यान मुझपर केंद्रित हो गया। अगर मैं गलती नहीं करता, तो मेरी असफलता में एल्पीदिन के अविवेक ने भी अधिक हाथ बटाया, क्योंकि उन्होंने जनेवा में रहनेवाले एक सरकारी गुप्तचर को साइबेरिया के लिए मेरी रवानगी की खबर दे दी। बात चाहे जो भी हो, मुझे गिरफ्तार कर लिया गया और मैंने अपने को चौथी बार जेल में पाया। यह समझकर कि मेरा प्रयास निष्फल गया और मेरे लिए संभाव्य भविष्य कुछ विशेष सुखकर नहीं है और यह भी देखते हुए कि इसी उम्मीद से अदालती कारवाई मुलतवी की जा रही है कि मैं कुछ इकबाली बयान दूंगा, जो मुझे नहीं करना चाहिए था, मैंने फरार होने की कोशिश की, मगर नाकाम रहा और इर्कूत्स्क की जेल में डाल दिया गया।*

---

* लोपातिन ने इर्कूत्स्क जेल में ३ जून, १८७१ को भाग निकलने की पहली असफल कोशिश की और फिर दूसरी बार, १० जनवरी, १८७३ को, दोनों बार असफल रहे। अगस्त १८७३ में लोपातिन पेरिस पहुंच चुके थे।—सं०

एक घटनापूर्ण जीवन पर विहगम दृष्टि*

१६ जून, १८४३ को मेरी शादी हुई।

हम एवनबर्ग होते हुए क्रेयत्स्नाख से प्फाल्त्स गए और बादेन बादेन होते हुए वापस लौटे। उसके बाद हम सितम्बर के अंत तक क्रेयत्स्नाख में रहे। मेरी प्यारी मां मेरे भाई एड्गार के साथ त्रियर लौट गई। काल के साथ में अक्तूबर में पेरिस पहुंची, जहां हेर्वेग** अपनी पत्नी के साथ हमसे मिले।

पेरिस में काल और रूगे ने «Deutsch Franzosische Jahrbucher» का सम्पादन किया, जिसके प्रकाशक जुलियस फ्रोबेल थे। पत्रिका पहले ही अंक के बाद बन्द हो गयी। हम सेंट जर्मे में वानो सड़क पर रहते थे। हमारी नन्ही जेनी १ मई, १८४४ को पैदा हुई। उसके बाद मैं लाफफीत के दफनाये जाने के दिन पहली बार घर से बाहर निकली और उसके ६

---

*यहां काल मार्क्स की पत्नी जेनी मार्क्स की आत्मकथात्मक टीपों के कुछ अंश दिये गये हैं, जो सिर्फ १८६५ तक के हैं। ये टीपें प्रकाशनार्थ नहीं लिखी गयी थीं, इसलिये काफी सुसम्बद्ध नहीं हैं, फिर भी वे मार्क्स के व्यक्तित्व चित्रण के लिये तथा मार्क्स परिवार की कठिन आर्थिक परिस्थितियों को स्पष्ट करने की दृष्टि से दिलचस्प हैं।—सं०

**हेर्वेग, गेओर्ग (१८१७-१८७५)—प्रसिद्ध जर्मन कवि, निम्नपूंजीवादी जनवादी।—सं०

हफ्ते बाद घोडा डाकगाडी से अपने बेहद बीमार बच्चे को लेकर ि आई

एक जर्मन धाय के साथ सितम्बर मे म पेरिस लौटी। उस स तक नन्ही जेनी के चार दात निकल आए थे।

मेरी अनुपस्थिति म काल के पास फ्रेडरिक एंगेल्स एक बार आ ये। एक दिन १८४५ के शुरू म यकायक हमारे घर पर पुलिस कमिश आ धमका और उसने प्रशियाई सरकार की दर्खास्त पर गीजो द्वारा जा किया गया निवासन का हुक्मनामा दिखाया। उसम लिखा था "का मार्क्स २४ घटे के भीतर जरूर पेरिस छोड दे।' मुझे कुछ अधिक मुहल दी गई, जिसका इस्तेमाल मने अपना फर्नीचर और कुछ कपडे बेचन किया। उनके दाम मुझे हास्यास्पद रूप से कम मिले, लेकिन यात्रा के लि पैसे तो जुटान ही थे। दो दिन तक मैं हेर्वेग परिवार की मेहमान रही बीमार और कडाके की सर्दी मे फरवरी के शुरू मे म काल के पीछे-पीछ ब्रसेल्स पहुची। वहा हम बूआ सोवाज होटल मे ठहरे, जहा म पहले पहल हाइन्सेन और फ्राइलिग्राथ से मिली। मई म हम पोर्ते दु लूवे क पीछ आल्यस सडक पर डा० ब्रोएर से किराए पर लिए गए एक छोटे-स मकान मे उठ आए।

हम यहा जमे ही थे कि एंगेल्स भी वहा आ गए। थोडे ही दिन बाद अपनी पत्नी के साथ हेस पहुच गए और कोई एक सेबास्तियन जाइलर भी यहा के छोटे-से जर्मन हल्के म आ मिले। उन्होन एक सवाद ब्यूरो खोल लिया और हमारी छोटी-सी जर्मन बस्ती यहा आनन्दपूर्वक रहन लगी।

उसके बाद कुछ बेल्जियमी, जिनमे जीगो भी थे, और कुछ पोल भी हमारे साथ आ मिले। वहीं एक साफ-सुथरे काफे म, जहा हम शाम को जाया करत थे, मेरा प्रथम परिचय नीला कुर्ती धारी बूढे लेलेवल* के साथ हुआ।

---

*लेलेवेल, जोहम (१७८६-१८६१)-प्रख्यात पोल क्रान्तिकारी जिन्होंने १८३०-१८३१ के पोल विद्रोह म भाग लिया, बाद म पार्लमेन्ट म उत्प्रवासी।-स०

गर्मियो के दौरान काल के साथ एगेल्स जर्मन दर्शन की आलोचना पर काम करते रहे। उक्त आलोचना एक विस्तृत कृति थी और वेस्टफेलिया मे प्रकाशित होने को थी।

वसन्त मे जोजेफ वेडेमेयर हमसे पहले पहल मिलने आए और कुछ दिन हमारे मेहमान रहे। अप्रैल मे मेरी प्यारी मा ने अपनी निजी और विश्वस्त सेविका को मेरी सहायता के लिए ब्रसेल्स भेज दिया। म उनके साथ चौदह महीने की जेनी को लेकर एक बार फिर मा से मिलने गई। मा के पास ६ हफ्ते रही और २६ सितम्बर को लौरा के जन्म से दो हफ्ते पहले अपनी छोटी-सी जर्मन बस्ती मे लौट आई। मेरे भाई एडगर ने ब्रसेल्स मे काम पाने की आशा मे जाडे हमारे साथ गुजारे। वे जाइलर के सवाद ब्यूरो मे काम करने लगे। बाद को, १८४६ के वसन्त मे हमारे प्रिय विल्हेल्म वोल्फ भी ब्यूरो मे दाखिल हो गए। वे साइलेसिया के एक किले से निकल भागे थे, जहा छपाई का कानून भग करने के कारण ४ साल से बन्द थे और "कार्जेमार्त्तेनवोल्फ" के नाम से प्रसिद्ध थे। उनके हमारे बीच आने से हम लोगो के प्रिय "लुपुस"* के साथ उस घनिष्ठ मित्रता का आरभ हुआ, जो मई १८६४ मे उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हुई।

इस बीच क्रांति के तूफानी बादल उमड घुमड कर अधिकाधिक घने होते गए थे। बेल्जियमी क्षितिज भी अन्धकारमय था। सत्ता सबसे अधिक तो मजदूरो, जनता के सामाजिक अशवो से, डरती थी। पुलिस, फौज, नागरिक गार्ड, सभी को रक्षा के लिए बुला लिया गया था, सभी को जगी कारवाई के लिए तैयार रखा जाता था। तभी जर्मन मजदूरो ने फैसला किया कि उनके लिए भी अपने को हथियारबन्द करने का समय आ गया है। तलवारे, रिवाल्वरे आदि हासिल की गइ। इसके लिए काल ने खुशी से पैसे दिए, क्योकि उन्हे इन्ही दिनो अपना विरासती हिस्सा प्राप्त हुआ था। इन सारी बातो मे सरकार को साजिश और मुजरिमाना योजनाए दिखा दी मार्क्स को पैसे मिलते ह और वह उनसे हथियार खरीदता है, इसलिए उससे पिड छुटाना ही चाहिए। काफी रात गये दो व्यक्ति हमारे

---

*लुपुस—विल्हेल्म वोल्फ। जर्मन भाषा मे «wolf» का अर्थ है भेडिया, लटिन भाषा मे «lupus» भेडिया होता है।—स०

घर म घुस आए। उन्हे काल की जरूरत थी। उनके सामन आन पर उन दोना ने अपने को पुलिस सर्जेंट बताया और कहा कि उनके पास काल को गिरफ्तार करके पूछ-ताछ के लिए ले जान का वारट है। वे काल को ले गए। मैं बहुत ही चिंताकुल होकर प्रभावशाली लोगा के यहा यह पता लगाने के लिए भागी कि आखिर मामला क्या है। मैं अधेरे म घर घर दौड़ रही थी कि अचानक एक गाड ने मुझे पकड लिया और गिरफ्तार करके एक अधेरे कैदखान म डाल दिया गया। वहा बेघर बार कगल, लावारिस आवार और किस्मत की मारी पतित महिलाए रखी जाती थी। मुझ एक काल कोठरी म ठूस दिया गया। जब म सिसकती हुई उसम दाखिल हुई, तो बदनसीबा की शिकार एक सहवासिनी न मुझे अपनी सोने का जगह पेश कर दी। वह सख्त तख्ता की बनी चौकी थी, जिसपर म लेट गई। सुबह की राशनी फूटते ही अपन सामने की खिडकी पर लाहे की छडा के पीछे मुझे एक मुरझाया मा गमगीन चेहरा दिखाई पडा। म खिडकी पर गई और अपने नक पुरान दोस्त जीगो को पहचान गई। मुझे देखकर उन्होंने नीचे की तरफ देखन का सकेत किया। मन उस दिशा मे निगाह डाली तो देखा कि काल को फौजी पहरे मे ले जाया जा रहा था। एक घटे बाद मुझे भी पूछ-ताछ करनेवाले मजिस्ट्रेट के सामन पेश किया गया।

दा घटे की पूछ-ताछ के बाद, जिसके दौरान उन्ह शायद ही मुझसे कुछ सूचना प्राप्त हुई होगी, पुलिसवाला न मुझे एक बग्घी तक पहुचा दिया और शाम के करीब म अपन बेचारे तीना नन्हे-नन्हे बच्चा के पास पहुच गई। इस घटना से भारी सनसनी फैल गई। सभी अखबारा में इसकी चर्चा हुई। कुछ समय बाद काल का भी रिहा कर दिया गया और फौरन ब्रसल्स छाड दने का हुक्म मिला।

वे पहले ही परिस लौटन का इरादा कर चुके थ और लुई फिलिप की सरकार द्वारा जारी किए गए अपन निवासन आदेश का रद्द करन के लिए फ्रास की अस्थायी सरकार के पास दर्खास्त भेज चुके थ। उन्ह तत्काल ही फ्लोकां के दस्तखत से एक पत्र मिला, जिसम बहुत ही चिकने चुपडे शब्दा म अस्थायी सरकार द्वारा उक्त हुक्म का मसूखी का सूचना दी गई थी। इस प्रकार हमारे लिए पुन पेरिस का दरवाजा खुल गया था और हमारे लिए नई क्रान्ति के चलते हुए तूफान रूप से अहतर ग्रार

कौनसी जगह हो सकती थी? हम वही जाना था, बस वही! मैंने जल्दी जल्दी अपना सामान बाधा, जो कुछ बेच सकी वह बेच दिया, लेकिन अपनी चादी की सारी चीजो और सबसे बढिया कपडा से भरी पेटिया ब्रसेल्स मे ही पुस्तक विक्रेता फयोग्लर की सुपुर्दगी मे छोड दी, जो हमारी विदाई की तैयारी के दौरान खास तौर से अनुग्रहशील तथा सहायता-तत्पर रहे थे।

इस प्रकार तीन साल तक ब्रसेल्स मे रहने के बाद हम वहा से विदा हुए। बहुत ही उदास और ठढा दिन था। हमारे लिए बच्चा को गरम रखना बहुत मुश्किल हो रहा था। सबसे छोटा बच्चा सिर्फ एक साल का था

* * *

मई १८४६ के अन्त मे कार्ल ने *«Neue Rheinische Zeitung»* का लाल स्याही मे छपा हुआ आखिरी अक, सुप्रसिद्ध "लाल अक", जो रग रूप और पाठय सामग्री दोनो की दृष्टि से जलती हुई मशाल की तरह था, निकाला। एगेल्स तत्काल ही बादन के विद्रोह मे शरीक हुए थे, जिसमे वे विलिख के एजीटाट थे। कार्ल ने कुछ समय के लिए फिर पेरिस चले जाने का फैसला किया, क्योकि जर्मनी मे बने रहना उनके लिए असभव हो गया था।* लाल वोल्फ भी उनके पीछे पीछे पेरिस पहुच गए। मै अपने तीनो बच्चो के साथ अपनी पुरानी जन्म-नगरी को देखने और अपनी प्यारी मा से मिलने के विचार से त्रिगेन होती हुई वहा गई। त्रिगेन से मै थोडे समय के लिए फ्रैंकफुर्त आन मे चली गई, ताकि ब्रसेल्स के गिरवीदार से उन्ही दिनो छुडाई गई चादी की चीजो को नकद मुद्रा मे बदल लू। वेडेमेयर और उनकी पत्नी ने हमे फिर आतिथ्य प्रदान किया और गिरवीदार के साथ निबटने मे मेरी बडी सहायता की। इस प्रकार फिर मैंने यात्रा के लिए धन जुटा लिया।

---

*चूकि मार्क्स ने १८४५ मे अपनी प्रशियाई नागरिकता त्याग दी थी, इसलिए उससे फायदा उठाकर वहा की सरकार ने उन्हे 'आतिथ्य का कानून" भग करनेवाले 'विदेशी' के रूप मे मई १८४६ मे निर्वासित कर दिया।–स०

लाल वोल्फ के साथ कार्ल फ्लाल्स और वहा से पेरिस गये। प्रतिक्रिया अपनी समस्त प्रचण्डता के साथ सवत्र खुल खेली। हगरियाई क्रांति, बादनी विद्रोह, इतालवी विप्लव—सभी पराभूत हो गए। हगरी और बादेन मे फौजी अदालतो का बोलवाला था। लुई नेपोलियन के सत्ताकाल म, जो १८४८ के अन्त मे बेहद बहुमत द्वारा राष्ट्रपति निर्वाचित हुए ४,५०,००० फ्रासीसी "सात पहाडियो के नगर" मे दाखिल हो गए और इटली पर कब्जा कर लिया।* विजयोल्लास मे प्रतिक्राति के अग्रण्य नार थ 'वासा म व्यवस्था का बोलबाला है" और "पराजितो की मुसीबत आई'। पूजीपति वग ने राहत की सास ली, टुटपुजिया वग फिर अपने कारोबार म लग गया, उदारतावादी दकियानूसी छुटभये जेबो म घूसे तानकर रह गये, मजदूरो का पीछा किया गया, उन्हे दमन का शिकार बनाया गया और जिन लोगो ने गरीबो और उत्पीडितो के राज के लिए तलवार और कलम से सघष किया था वे विदेशो म अपना पेट पालने के योग्य होकर ही खुश थे।

कार्ल ने पेरिस म रहते हुए मजदूर क्लबो और मजदूरो के गुप्त सगठनो के अनेक नेताओ के साथ सम्पक स्थापित कर लिया। म उनके पीछे जुलाई १८४९ म पेरिस पहुची और हम वहा एक महीना रहे। लेकिन हम वहा भी चैन नही मिलना था। एक दिन वही परिचित पुलिस सार्जेंट फिर आया और हमे सूचित कर गया कि 'कार्ल मार्क्स और उनकी पत्नी २४ घटे के भीतर पेरिस छोड दें'। दया प्रदर्शित करते हुए कार्ल को मोर्बिहान के अतगत वान म शरणार्थी की हैसियत से रहने की इजाजत द दी गई। जाहिर है कि कार्ल इस प्रकार का निवासन नही स्वीकार कर सकते थे। मने लदन म पक्के आश्रय-स्थल की तलाश के लिए फिर अपना बोरिया-बधना समेटा।

कार्ल वहा मुझसे पहले पहुचे। जब म अपने तीन छोटे छोटे, मासूम और उत्पीडित बच्चो के साथ बीमार और थकी मादी वहा पहुची, तो वे

---

*यहा रोम गणराज्य के खिलाफ १८४९ म हुए सशस्त्र फ्रासीसी हस्तक्षेप की ओर इशारा है। उसका लक्ष्य पोप की धर्मेतर सत्ता की बहाली था।—स०

१८५० के वसन्त मे हम अपना चेल्सी वाला मकान छाडने के लिए वाध्य होना पडा। मरा वेचारा नन्हा फॉक्स वरावर वीमार रहता था और दैनिक जीवन की चिताए मेरे स्वास्थ्य को भी नष्ट किय द रही था। सभी तरह स सते सताए और लेनदारो से परेशान हम एक हफ्ते तक लिसस्टर स्क्वेयर के एक जमन होटल म ठहरे। हम वहा अधिक नहा रह सके। एक दिन सुवह हमारे मेहरवान मेजवान न हमे नाश्ता दन से इनकार कर दिया और हमे विवश हाकर अपने लिए दूसरा वासा तलाश करना पडा। मेरी मा से मिलनवाली अल्प सहायता अक्सर हमे कटुतम अभावा स वचा लेती थी। एक यहूदी लेस व्यापारी के घर म हमे दो कमरे मिल जहा हमने चारा वच्चा के साथ कष्टमय गमिया विताइ।

उस साल की पतझड म काल और उनके कुछ निकटतम मित्रो न उत्प्रवासिया की कारवाइया से पूरी तरह नाता तोड लिया और उसके वाद से उनके किसी भी प्रदशन म भाग नही लिया। व मजदूर शिक्षा समिति स भी अलग हा गय लन्दन म लेखादि लिखकर जीविका उपाजन की नाकाम कोशिशा के वाद एगेल्स वहुत सख्त शर्ता पर अपन पिता की सूता मिल म क्लक की हैसियत स काम करने मचेस्टर चले गए। हमारे दूसरे सव दास्त शिक्षण काय इत्यादि करके अपना खच चलान की काशिश करत रहे। वह और आगामी दो साल हमारे लिए अधिकतम कठिनाइया, निरन्तर भारी चिताआ नाना प्रकार की जवदस्त महरूमिया तथा वास्तविक अभावा के साल थे।

अगस्त १८५० म अपनी खराव तन्दुरस्ती के वावजूद मन अपन वीमार वच्चे को छाडकर काल क चाचा स सान्त्वना तथा सहायता पाने की आशा स हालण्ड जान का फसला किया। म पाचव वच्च का आमद और भविष्य का चिन्ता स विक्षुब्ध थी। काल क चाचा अपन और अपन लडका के कारावार पर क्रान्ति क प्रतिकूल प्रभाव क कारण वहुत खिन्न थे। क्रान्ति और क्रान्तिकारियो क प्रति उनम कटुता फैल हा गई थी। उन्होंन मुझ सहायता दन स विनम्र इनकार कर दिया। लकिन जव म वहा स चलन का हुई, तव उन्होंने मेरे सवस छोटे वच्चे क लिए एक उपहार मुझ वरवस पकडा दिया और मन देखा कि उन्हें इस वात म कितना दद हुआ कि व मुझे और अधिक न द सके। वुजुग यह नहा समझ कर सके कि म कितने

भारी मन से उनस विदा हुई। मैं निराशा-क्षुब्ध घर लौटा। बेचारा नन्हा एडगर अपने हर्षोत्फुल्ल चेहरे से उछलता हुआ मेरे स्वागत को लपका और मेरे नन्हे फॉक्स ने मेरी ओर अपनी नन्ही-नन्ही बाह फैला दी। उनके लाड प्यार का सुख मुझे अधिक दिन नही प्राप्त हो सका। बच्चा फेक्डा के शोथ की एठन के दौरे से नवम्बर मे मर गया। मुझे दारुण दुख हुआ। मैंने यह अपना पहला बच्चा खोया था। उस समय मुझे इस बात का गुमान तक नही था कि अभी और ऐसे दुख भोगने पडेगे, जिनके सामने अन्य सभी दुख नगण्य प्रतीत होगे। उस बच्चे का दफनाने के शीघ्र ही बाद हम उस छोटे-से मकान का छोडकर उसी सडक पर एक दूसरे मकान मे चले गए

२८ मार्च, १८५१ का हमारी बेटी फ्रान्सिस्का का जन्म हुआ। हमे उस मुन्नी-सी बेचारी को एक धाय को सौंप देना पडा, क्योंकि छोटे छोटे कमरो मे और बच्चो के साथ उसे पालना हमारे लिए सभव नही था १८५१ और १८५२ हमारे लिए घोरतम और साथ ही क्षुद्रतम परेशानियो चिन्ताओ, निराशाओ और नाना प्रकार की मुहरूमियो के साल थे।

१८५१ की गर्मियो के शुरू मे एक ऐसी घटना हुई, जिसका म ब्योरेवार वर्णन नही करना चाहती, हालाकि उसमे हमारी निजी तथा अन्य प्रकार की चिन्ताए बहुत बढ गयी। बसन्त मे प्रशियाई सरकार न कोलोन के सभी राइन प्रान्तीय मित्रो पर बेहद खतरनाक क्रान्तिकारी कुचक्र रचने का आरोप लगाकर उन्ह जेलो मे ठूस दिया, जहा उनके साथ बेहद दरिंदगी का व्यव हार किया गया। १८५२ के अन्त तक खुली अदालत मे मुकदमा नही चलाया गया। वही था कोलोन के कम्युनिस्टो का प्रसिद्ध मुकदमा। डेनियल्स और जैकोबी को छोडकर बाकी सभी अभियुक्ता का ३ से ५ साल तक की कैद की सजा दे दी गई

* * *

शुरू म मार्क्स के सेक्रेटरी डब्ल्यू० पीपर थे, लेकिन शीघ्र ही वह पद मैंने सभाल लिया। कार्ल के छोटे-से अध्ययनकक्ष म उनके लेखो की गिचपिच पाण्डुलिपि की नकल उतारने म मने जो दिन बिताए, मेरी स्मृति म व जीवन के पुण्यतम दिनो के रूप म अकित है।

१८५१ के अंत म लुई नेपोलियन न राज्य का तख्ता पलटा और उसक अगले साल काल ने अपनी 'अठारहवीं ब्रूमेर' लिखी, जो न्यूयार्क म प्रकाशित हुई। वह पुस्तक उन्होंने डीन स्ट्रीट के हमारे छोटे से मकान म बच्चो के शोर गुल और गृहस्थी के झमेलो के बीच लिखी थी। मन मार्च तक पाण्डुलिपि की नकल तैयार करके उसे भेज दिया, लेकिन वह काफी दिन बाद छपकर निकली और उससे हम प्राय कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई।

१८५२ म ईस्टर के दिन हमारी नन्ही फ्रांसिस्का को सख्त ब्रांकाइटिस हो गई। तीन दिन तक वह जिन्दगी और मौत के बीच पड़ी रही। उसे भयानक कष्ट सहन पड़ा। उसके मर जाने पर उसके नन्हे-से निर्जीव शरीर को पीछे के कमरे मे छोड़कर हम आगे के कमरे म आ गये और रात को वही फर्श पर अपने बिस्तर लगा लिए। हमारे तीनो जीवित बच्चे हमारे पास लेटे थे और हम सभी उस नन्ही प्यारी बच्ची के लिए रोते रहे, जिसकी निर्जीव जद लाश साथ के कमरे मे पडी हुई थी। उस प्यारी बच्ची की मृत्यु कठोरतम अभावो के दौरान हुई, ठीक उस समय जब हमारे जर्मन मित्र हमारी सहायता करने म असमर्थ थे। एर्नेस्ट जोन्स ने, जो उन्ही दिनो हमारे यहा अक्सर और देर देर के लिए आया करते थे, हमारी सहायता करने का वायदा किया, लेकिन वे भी कुछ नहीं कर सके बहुत भारी मन से म झटपट एक फ्रांसीसी उत्प्रवासी के यहा गई, जो हम से बहुत दूर नहीं रहते थे और हम लोगो से मिलने आया करते थे। मैने उनसे उस भयानक विपत्ति म सहायता की याचना की और उन्होने अत्यन्त मैत्रीपूर्ण सहानुभूति के साथ मुझे फौरन दो पौण्ड दे दिए। उस धन का उपयोग उस ताबूत का दाम अदा करने म किया गया जिसमे मेरी बच्ची चिरशाति की गोद म लेटी हुई है। जन्म लेने पर उसे पालना नहीं नसीब हुआ और बहुत समय तक वह अंतिम विश्राम स्थल से भी वंचित रहा। कितने दुखी मन से हमने उससे विदा ली।

कम्युनिस्टों का मुकदमा, जो अब विख्यात हो चुका है, अगस्त १८५२ म खत्म हुआ। काल ने प्रशियाई सरकार की नीचता का पर्दाफाश करते हुए एक पैम्फलेट लिखा, जिसे शाबेलित्स ने स्विटज़रलैण्ड म छपवाया। लेकिन प्रशियाई सरकार ने उसे सरहद पर जब्त करके नष्ट करवा दिया।

क्लुस ने उसे फिर अमरीका म छपवाया और उस नए सस्करण की बहुतेरी प्रतिया यूरोप भर म वितरित हुइ।

१८५३ मे काल नियमित रूप से «*New York Tribune*» के लिए दो लेख लिखते रहे। उन लेखो ने अमरीका मे सनसनी पैदा कर दी। उनसे होनेवाली नियमित आमदनी की बदौलत हम किसी हद तक अपने पुराने कर्ज अदा करने और कम चितामय जीवन बिताने मे समथ हो गए। बच्चे अच्छे ढग से बडे हो रहे थे। उनका शारीरिक और मानसिक दोनो रूपो मे विकास हो रहा था, हालांकि हम अभी तग मकान मे ही रह रहे थे

उस साल का बडा दिन ही वह पहला उत्सव था, जिसे हमने लदन मे आनदपूवक मनाया। «*New York Tribune*» के साथ काल के सम्बध की बदौलत हमे रोज रोज की कष्टदायक चिताओ स मुक्ति मिल गइ थी। बच्चे प्राय गमिया भर पार्कों की ताजा हवा मे वक्त गुजारते रहे। उस साल हमारे यहा चेरिया स्ट्राबेरिया और यहा तक कि अगूर भी आए। बडे दिन को हमारे मित्र हमारे तीनो बच्चो के लिए तरह-तरह के खुशनुमा तोहफे–गुडिया, बदूकें रसोई के बतन, ढोल और तुरहिया–लाये। शाम को ड्रोंके* बडे दिन का फर वक्ष सजान आए। यह बहुत ही सुखद सध्या थी।

एक सप्ताह बाद एडगर मे उस असाध्य रोग के प्रथम लक्षण प्रगट हुए, जो एक साल बाद उसकी मृत्यु का कारण बना। अगर हम उस समय अपने उस छोटे स्वास्थ्यघातक मकान को छोडकर उसे किसी समुद्र तटी स्थान पर ले जा सकते, तो सभव था कि वह बच जाता। लकिन जो गुजर गया उसे लौटाया नही जा सकता।

सितम्बर १८५४ म हम यह पक्का इरादा करके डीन स्ट्रीट के अपने पुराने हेडक्वाटर पर लौट आए कि ज्यो ही एक छोटी-सी अग्रेजी विरासत की बदौलत नानबाई, कसाई, ग्वाले, किरान और सब्जीवाले तथा अन्य

---

*ड्रोंके, एर्नस्ट (१८२२–१८९१)–जमन सावजनिक लेखक, «*Neue Rheinische Zeitung*» का एक सम्पादक, १८४८–१८४९ की क्रान्ति के बाद राजनीतिक गतिविधियो स अलग।–स०

सभी 'शत्रुशक्तियों की' जंजीरों और बंधनों से मुक्त हो जाएंगे, त्यों ही वहां से उठ जाएंगे। आखिर १८५६ के वसन्त में हमें मुक्ति दिलानेवाली छोटी सी रकम प्राप्त हुई। हमने अपने सारे कर्जे चुकाए, गिरवीदार से अपनी चांदी की चीजें और कपडे-लत्ते छुडाए और नए कपडों से सज धजकर बच्चों का साथ लिये हुए मैं अन्तिम बार अपने प्यारे पुराने जन्म घर को रवाना हो गई।

उस साल का जाडा हमने घोर एकाकीपन में बिताया। हमारे लगभग सभी मित्र लन्दन छोड चुके थे और जो बच गए थे वे हमारे घर से बहुत दूर रहते थे। इसके अलावा यद्यपि हमारा छोटा सा सुन्दर मकान पहले के मकानों की तुलना में हमारे लिए एक महल के समान था, फिर भी उस तक पहुंचना आसान नहीं था। वहां चारों तरफ नई तामीरें हो रही थीं, ढंग की सडक नहीं थी, ढेरों मलबे को लांघना पडता था और बरसात में चिपचिपी लाल मिट्टी की परत जूतों पर इस तरह जम जाती थी कि बडी कशमकश के बाद ही बोझिल पावों से हमारे घर पहुंचा जा सकता था। फिर उन वीरान हलकों में घुप अंधेरा भी रहता था। इसलिए मलबे, कीचड मिट्टी और कंकड पत्थर के ढेरों से जूझने की अपेक्षा हर कोई गरम अंगीठी के पास बैठकर शाम गुजारना कहीं बेहतर समझता था।

उस जाडे में मैं बहुत बीमार रही और दवाओं की बोतलों में घिरी रहती थी। बहुत समय के बाद ही मैं उस एकाकीपन की आदी हो सकी। मैंने वेस्ट एंड की भीड भरी सडकों की अभ्यस्त लम्बी सैरों, सभाओं, क्लबों, सुपरिचित आपानशाला और उन हार्दिक वार्तालापों का अभाव अक्सर खलता था जिनमें कुछ समय के लिए जीवन की चिन्ताओं को भूल जाने में मुझे अक्सर सहायता मिलती थी। सौभाग्यवश मुझे «Tribune» को भेजे जानेवाले लेखों की नकल हफ्ते में दो बार अब भी उतारनी पडती थी, जिसकी बदौलत संसार की घटनाओं से मेरा सम्पर्क बना रहता था।

१८५७ के मध्य में अमरीकी मजदूरों को एक और बडे व्यापारिक संकट का सामना करना पडा। «Tribune» ने फिर से हफ्ते में दो लेखों के हिसाब से पारिश्रमिक अदा करने से इनकार कर दिया जिसके फलस्वरूप हमारी आमदनी फिर से बहुत कम हो गया। सौभाग्यवश उस समय न्यू यार्क से विश्वकोश प्रकाशित कर रहे थे, जिसके लिए मार्क्स से सैनिक तथा

आर्थिक प्रश्नों पर लेख लिखने का प्रस्ताव किया गया। लेकिन चूंकि यह काम बड़ा अनियमित था और बढ़ते हुए बच्चों और अपेक्षाकृत बड़े मकान के कारण खर्चे बढ़े हुए थे इसलिए हमारा यह समय किसी भी रूप में खुशहाली का नहीं था। वास्तविक अभाव तो नहीं था, लेकिन हम निरंतर तंगी में और छोटे छोटे अंदेशों और हिसाबों से परेशान रहते थे। खर्चों में बहुत कतर-ब्योंत के बावजूद हम उन्हें आमदनी के अनुकूल कभी नहीं बना पाते थे और हमारे कर्जे दिन-ब दिन और साल-ब-साल बढ़ते जाते थे

६ जुलाई को हमारी सातवीं सन्तान पैदा हुई लेकिन कुछ ही सांस लेने के लिए। इसके बाद वह कब्रिस्तान में अपने भाई-बहनों के पास पहुंच गई

१८६० के वसन्त में एंगेल्स के पिता की मृत्यु हो गई। उसके बाद एंगेल्स की आर्थिक स्थिति काफी सुधर गई हालांकि वे हर्मेन के साथ १८६४ तक रे प्रतिकूल समझौते से बंधे रहे। १८६४ से एंगेल्स हिस्सेदार के रूप में कारोबार के संचालक बन गए।

अगस्त १८६० में मैंने फिर बच्चों के साथ हैस्टिंग्स में एक पखवारा बिताया। लौटने पर मैंने कार्ल द्वारा फोग्ट तथा उनके साथियों के खिलाफ लिखी गयी किताब की नकल उतारना शुरू कर दिया। वह लन्दन में छपी और बहुत दौड़-धूप के बाद कहीं उस साल के अंत तक जाकर प्रकाश में आई।

उस समय मैं चेचक से बहुत बीमार रही थी और उस भयानक रोग से इतनी ही स्वस्थ हो पाई थी कि अपनी आधी अंधी आंखों से श्री फोग्ट' को पढ़ सकूं। वह बहुत ही मुसीबत का समय था। तीनों बच्चों का वफादार लीब्कनेख्त के यहां शरण और आतिथ्य प्राप्त हो गया था।

ठीक उसी समय उस महान अमरीकी गृहयुद्ध के प्रारंभिक पूर्वलक्षण प्रगट हुए, जो आगामी वसंत में छिड़ने को था। पुराने यूरोप और उसके तुच्छ, पुराने ढंग के छोटे मोटे झगड़ों में अमरीका की दिलचस्पी नहीं रह गई थी। «Tribune» ने कार्ल को सूचना दी कि आर्थिक कारणों से वह सभी संवाददाताओं से इंकार करने को मजबूर है और इसलिए अभी उनके सहयोग की आवश्यकता नहीं है। यह चोट इस कारण और भी अधिक महसूस हुई कि आमदनी के अन्य सभी स्रोत पूर्णतः सूख गए थे और कुछ भी काम प्राप्त करने के सारे प्रयत्न असफल साबित हो चुके थे। सबसे

यगा गात ना पट था कि उन पूण मगगगारमा ठार उा तिय तक
जब ग्गारा यग वच्चिया । प्रारभिक गारा ना सुन्दर सुगारा प्रायु म
रम्य। न्स प्रकार न्स फिर न न्स गात पन्त नना पद सुगारना, पर
प्रार महत्त्वमिवा (निगार ,। गए। भगर किन पर था कि जब (
६ सान ना वच्चिया । प्राया रूप । उन नना था प्रौर प्रब १५
१६ सान ना उम्र न जब कुछ ना नाना नयन हुए उ२ चलना था।
उन्ह न्मा रग जमा नगरा ना गाढ व्यवहार नमना कि
वच्चा–नाना पत्नातिया प्रार उन वच्चा–वगा पत्नातिया । १८६०
गमिया म हमन न्यारक्रिन ना ना मलान (लिए प्रयन वन रखा, क्या
उन बहुत बामार था।

१८६१ (वान । वाद जमना गए क्योकि प्राभिर सहायता प्रार
वरना निजाल प्रावश्यक हा गया था। प्रशिया (प्रतिभाशाली
वन्नाबाल प्रान्मात ना उन न्नि पर मत्यु हो गद था प्रौर नका न्हा
सुन्दर विल्हेल्म ना प्राप्त हुई था। सामान्य न श्राम माफा का घाषणा
की। बाल न जमना जान न्म न ना जाना ना दखन (लिए इस
अवसर का उपयोग किया। व बलिन म नासाल न घर ठहर प्रार काउटन
हातफल्त स प्रायः मिलत रह। उसक बाद व प्रान चाचा लप्रान फिलिप्स
स मिलन हालण्ड गए। चाचा न न्च्छा सज्जनता न साथ उह बिना
ब्याज न खासी रकम उधार द दी। काल ठार उन न्नि जाग फिलिप्स
पान बाम्मल न साथ घर लाट जिस दिन जेना का १७वा सालगिरह
थी। उधार की रकम की बदौलत हमारा नाजुक नया भवर स निकल प्राइ था
प्रौर हम कुछ समय तक प्रानन्द न तिरत रह, यद्यपि सन्न हा
जलाच्छादित चट्टाना प्रौर उथली रतिया न बाच, करिब्डिसा प्रार सिल्ला न
बीच, डावाडाल रहे।

हमारी बड़ी बेटिया न १८६० की गर्मिया म स्कूल की पढ़ाइ समाप्त
का प्रार कालज म कवल कुछ विषया न क्लासा म जाती रहीं, जा कालज

प्रशिया के फ्रेडरिक विल्हेल्म चतुथ १८६१ म मर गए प्रौर
विल्हेल्म प्रथम सिहासनासीन हुए।—स०

** लासाल की मित्र तथा सहपक्षी।—स०

म बाहर के विद्यार्थियों के लिए होते थे। मैं श्री गोखले और श्री गांगुली से भारतीयों और इंग्लैंड में भारतीय छात्रों पर बातचीत करती रही और जैसा १८६२ में श्री प्राण्णलीलीन्ड में ड्राइंग सीखती रही। ... में उन्होंने गाना सीखना शुरू किया

१८६३ के अगस्त भर उनका बहुत बीमार और निस्तेज डाक्टरों के इलाज में रही। ... भी बेहद परेशान थे। वे १८४० में नियमित रूप से हर साल इंग्लैंड में मिलने जाते थे और इस बार भी गए। वहां से लौटने पर भी उनका स्वास्थ्य कुछ बेहतर न था। इसलिए फिर हैम्पस्टिड में समुद्र तट पर और इसके किनारे दिनों में १२ दिन बाहर के साथ रहे। बाद इस सब प्रयास पर उनका स्वास्थ्य जरा गिरा हुआ नजर आया और उनकी तबीयत लगातार खराब रहा। अंत में उस साल के नवम्बर में यह पता चला कि वे अग्न्याशय नामक भयानक रोग से ग्रस्त हैं। उसी महीने की १० तारीख को भयानक फोड़ा ... ... उसके बाद भी बहुत दिनों तक उनका जीवन खतरे में रहा। स्वास्थ्य लाभ में पूरे चार हफ्ते लगे और उन्हें घोर शारीरिक कष्ट सहना पड़ा जिसके साथ ममभेदी मानसिक यंत्रणाएं भी जुड़ी रहीं। डाक्टर ने कहा कि जलवायु परिवर्तन से बाल को बहुत लाभ होगा और उनकी सलाह के अनुसार अभी पूरी तरह स्वस्थ हुए बिना ही बाद बार जाड़े में हमारी चिन्तामिश्रित हार्दिक शुभकामनाओं के साथ विदेश में अपनी मां के उत्तराधिकार की व्यवस्था करने के निमित्त जर्मनी के लिए रवाना हो गए। वहां वे अपनी बहन एमिली और बहनोई ... के साथ ठहरे और फिर अपनी बुआ से मिलने फ्रवपुल गए। वहां से वे अपने चाचा के यहां चेस्टर गए। उनके चाचा और नेल्सेन ने उनकी बहुत अच्छी देखभाल की क्योंकि उनकी बीमारी अभी समाप्त नहीं हुई थी और दुर्भाग्यवश उनके ... पहुंचते ही फिर बुरी तरह से उभर आयी, जिसके लिए डाक्टरी देखभाल और सावधान परिचर्या की आवश्यकता हुई। फलतः उन्हें बड़े दिन से लेकर १६ फरवरी तक मजबूरन हार्नेज में रखना पड़ा।

वह एकाकी उदास जाड़ा कितना भयानक था! उत्तराधिकार में अपने भाग के रूप में जो नकद रकम बाल लाए, उसने हमें ऋणों और गिरवीनामों, इत्यादि से मुक्ति पाने में समर्थ बनाया। सौभाग्यवश हम एक

बहुत सुन्दर और हवादार मकान मिल गया, जिसमें बहुत आनन्द और प्रफुल्लता अनुभव करने लगे। १८६४ में दुर्भाग्य पर हम सब का रोना रुका था कि उन गुणकारी धावक सहारा न उठ गए।

९ मई १८६४ को हमें अपने परम गुणवान मित्र का त्याग और मेहनती पुराने साथी वुल्फ मृत्यु समाचार मिला। कार्ल मार्क्स उनके मित्र को स्वास्थ्य में भी देखा और उनको रफ्तार साथ न उन्हें क्षम मार्क्स पहचान भी लिया। वुल्फ ने ९ मई को जब के लिए आंखें मूंद ली। अपने वसीयतनामे में उन्होंने अपना धन के कुछ भाग अधिकारियों के साथ कर्ज, कार्ल और हमारे बच्चों को अपना मुख्य उत्तराधिकारी नामजद किया था। हमें तभी पता चला कि उस गरीब, मितव्ययी, मेहनती व्यक्ति ने अपने अत्यधिक उद्यम तथा प्रयास से १ ००० पौंड की रकम जमा कर रखा था। उन्हें बुढ़ापे न शान्तिपूर्वक और आरामदेह ढंग से अपने परिश्रम का फल-लाभ नहीं बदा था। उसमें उन्होंने हमें सहायता, सुविधा और एक वर्ष की निश्चिन्तता प्रदान की।

कार्ल के स्वास्थ्य का ध्यान में रखते हुए जो अब भी खराब था, उनके लिए गर्मी में समुद्रतट पर जाना नितान्त आवश्यक हो गया था। वे जेनी के साथ रम्सगेट चले गए। कुछ समय बाद लारा और तुस्सी भी वहां पहुंच गई

उस साल के दौरान कार्ल अपनी अर्थशास्त्र सम्बन्धी बडी कृति* के लिए प्रकाशक प्राप्त करने में सफल हो गए। हेम्बर्ग के माइस्नर ने खासी अनुकूल शर्तों पर उसे प्रकाशित करने का वायदा किया। कार्ल उस पुस्तक को समाप्त करने के लिये जोरशोर के साथ काम करने लगे

---

*'पूंजी'।—सं०

जोज़ेफ़ वेडेमेयर के नाम जेनी मार्क्स का पत्र

२० मई, १८५०

प्रिय श्री वेडेमेयर

तब से एक मास होने को आ रहा है जब मुझे आपका और आपकी प्रिय पत्नी का इतना मैत्रीपूर्ण और हार्दिक आतिथ्य प्राप्त हुआ था, जब आपके यहां रहते हुए मैंने घर जैसा आराम महसूस किया था। इस पूरी मुद्दत में मैंने अपने अस्तित्व का कोई लक्षण नहीं प्रदर्शित किया है। आपकी पत्नी ने मुझे कैसे अपनेपन के साथ पत्र लिखा, लेकिन मैंने उत्तर नहीं दिया और आपके बच्चे के जन्म का समाचार पाकर भी मैं मौन ही रही। मेरा यह मौन मेरे लिए अक्सर बोझिल रहा है, लेकिन अधिकतर समय मैं लिखने में असमर्थ रही हूं और आज भी मुझे यह कठिन लग रहा है, बहुत कठिन।

लेकिन परिस्थितियां मुझे कलम उठाने को विवश कर रही हैं। प्रार्थना है कि «*Revue*» में जो भी रकम मिली हो, या मिलनेवाली हो, वह **यथासंभव शीघ्र भेजें**। हमें उसकी **बहुत ही आवश्यकता** है। हम पर निश्चय ही यह लांछन कोई नहीं लगा सकता कि हम बरसों से जो कुर्बानियां कर रहे हैं और मुसीबतें झेल रहे हैं, उनका कभी कोई दिखावा किया गया है। हमारी परिस्थितियों की जनता को बहुत कम या बिलकुल नहीं के बराबर जानकारी है। मेरे पति ऐसे मामलों में बहुत संवेदनशील हैं और वे आधिकारिक रूप से मान्य 'महापुरुषों' के जनवादी भिखाटन

अपना अंतिम पैसा तक कुर्बान कर गया बहादुर रमणी। लेकिन वे मेरे मित्रों में विशेष तौर पर मिलते हैं, अपने «Revue» के लिए लेख और बारबार मतलबी ढंग से पैसा रख गए थे। ऐसा पत्रिका का प्रकाशन बन्द करना पड़ गया है, जब «Neue Rheinische Zeitung» के लिए उनकी कुर्बानियाँ सर्वविदित हैं। लेकिन इधर बजाय छापेखाने और कर प्रबंध के काम कारोबार बिल्कुल तबाह हो गया है और यह कहना कठिन है कि पुस्तक विक्रेता, प्रबंधकर्ताओं अथवा दावेदारों के परिचितों की टालमटोल या जनवादियों की आम रूप से तबाही के लिए अधिक दोषी रहा है।

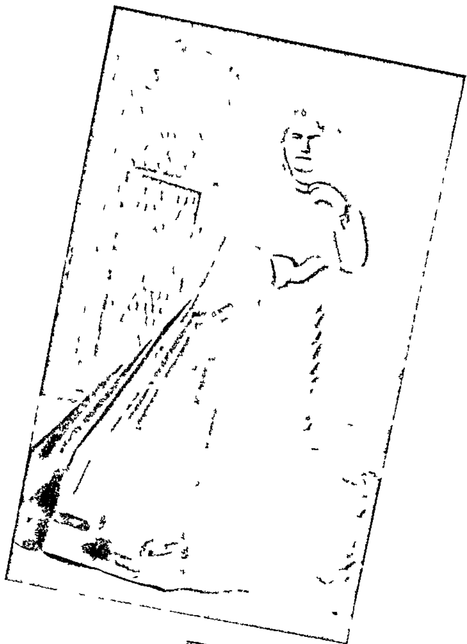
यहां मेरे पति जीवन की छोटी छोटी चिन्ताओं में प्राय अभिभूत हैं जिन्होंने ऐसा घिनौना रूप ग्रहण कर लिया है कि इसे रोज रोज के, हर घड़ी के संघर्ष में अपने को कायम रखने में ही उनकी सारी शक्ति उनके स्वाभिमान की सारी शान्ति, स्पष्ट और नीरव बनना लग जाता है। प्रिय वेडेमेयर, आप अखबार के लिए मेरे पति द्वारा की गई कुर्बानियों को जानते हैं। जब उसकी सफलता की प्रायः कोई आशा नहीं रह गई थी, तब उन्होंने उसमें हजारों की रकम लगाई, उन्होंने एक नेक जनवादियों की प्रेरणा से उसका मालिक बनना स्वीकार कर लिया, जिन्हें अन्यथा खुद उसके कर्जों के लिए जवाबदेह होना पड़ता। अखबार की राजनीतिक और कोलोन के अपने परिचितों की नागरिक प्रतिष्ठा की रक्षा करने के लिए उन्होंने पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले ली। उन्होंने अपनी छपाई की मशीन बिकवा दी, सारी आमदनी कुर्बान कर दी और नई इमारत का किराया और सम्पादकों की बकाया तनखाह आदि चुकाने के लिए वहां से हटने के पहले ३०० थालेर उधार तक लिये – यह सब बावजूद इसके कि उन्हें बलपूर्वक निष्कासित किया जाता था। आप जानते हैं कि हमने अपने लिए कुछ भी नहीं रखा। मैं चांदी की अपनी आखिरी चीजें गिरवी रखने फ्रैंकफुर्त गई। मैंने कोलोन में अपना फर्नीचर बिकवा दिया, क्योंकि मेरे कपड़े लत्ते तक के कुर्क हो जाने का खतरा था। प्रतिक्रान्ति के दुर्भाग्यपूर्ण दौर के शुरू में मेरे पति पेरिस चले गए, जिनके पीछे पीछे अपने तीनों बच्चों को लेकर मैं भी वहां पहुंची। लेकिन वे वहां अभी जमे ही थे कि उन्हें निर्वासित कर दिया गया और मुझे तथा मेरे बच्चों को भी उसके बाद वहां



कार्ल मार्क्स, १८६७



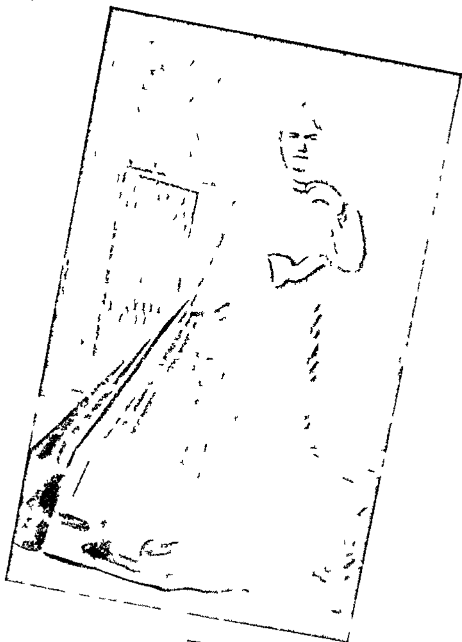
जेनी मार्क्स



कार्ल मार्क्स की बेटी जैनी



जेनी मार्क्स



काल माक्स की बेटी लौरा



कार्ल मार्क्स अपनी सबसे बड़ी बेटी जेनी के साथ

उठा ले जाने की धमकी दी। उस सूरत म मुये दुखती छाती क साथ अपनी ठिठुरती सन्ताना को लकर फश पर सोना पडता। हमारे मित्र श्राम्म हमारे लिए सहायता प्राप्त करन शहर भागे। लकिन व ज्या ही एक घोडा गाडी म सवार हुए कि घोडे बेकाबू हो गए और श्राम्म गाडी म से कूद पड। व खून स लथपथ घर वापस लाए गए, जहा म अपने ठड स कापते बच्च क साथ आमू बहा रही थी।

दूसरे ही दिन हम वह मकान छोड दना था। दिन सद और उदास था वारिश हो रही थी। मरे पति हमार लिए मकान तलाशन गय। चार बच्चा का ज़िक्र आते ही हम रखन क लिए कोई भी राजी न हाता। अन्त म एक मित्र न हमारी सहायता की। हमन किराया अदा कर दिया और मने दवाखानावाले नानवाई कसाई और ग्वाल का बकाया चुकान क लिए चटपट अपन पलग बेच डाले, क्याकि कुर्की की "गमनाक घटना स घबराकर व सभी अचानक अपने हिसाब की भरपाई क लिए मुझ पर टूट पडे थ। हमार बेचे गए पलग बाहर निकाले गए और उन्ह एक गाडी म लादा गया। इसक बाद क्या हुआ था? सूर्यास्त क बाद का समय था। हम अग्रेज़ी कानून की अवहेलना कर रहे थे। मकान मालिक दा पुलिसवाला का लिए हमारे यहा दौडा आया और यह दावा किया कि हम ब्रिटिश भाग जाना चाहते ह और हमारी चीज़ा म उसकी अपनी चीज भी हो सकती ह। कोई पाच मिनट म ही दो तीन सौ लोग, चेल्सी की पूरी भीड, हमार दरवाजे क इर्दगिर्द जमा गई। पलग फिर अन्दर लाए गए क्योंकि उन्ह खरीदारा को दूसर दिन सूर्योदय क बाद ही दिया जा सकता था। अन्त म अपना सारा सामान बेचकर ही हम कज की अन्तिम कौडी तक चुकाने लायक हुए। म अपने नन्हे मुन्ना क माथ न० १ लिस्टर स्ट्रीट लिसस्टर स्क्वयर पर एक जमन होटल क दो कमरा म उठ आई जहा हम इस समय ह और यहा ५ ५ पाण्ड फी हफ्ते पर कमोबेश इनसान की तरह रह रहे ह।

प्रिय मित्र आप मुये हमार जीवन क एक दिन क इस लम्बे और ब्योरेवार विवरण क लिए क्षमा कर। म जानती ह कि यह शालीनता नही है लकिन आज की शाम मेरा हृदय निढाल हो रहा है और म सबस पुरान, सबस अच्छे और सबस वफादार दोस्त क सामने कम स कम एक बार ता

अपने हृदय का बोझ हल्का कर लेना चाहती हू। यह न सोचे कि इन तुच्छ दुश्चिन्ताओ ने मुझे झुका दिया है म इस बात को बहुत अच्छी तरह जानती हू कि हमारा सघष एकाकी नही है और म तो खास तार स भाग्य शालिनी हूँ, सुखी हू, तकदीर की चहेती हू क्योकि मेरे प्यार पति मेरे साथ हैं, जो मेरे जीवनाधार ह। वस्तुत जिस बात से मुझे आतरिक पीडा होती है और मेरा हृदय विदीण हो जाता है वह यह है कि उह बहुत ही तुच्छ चीजा के लिए इतना अधिक कष्ट भोगना पडता है, कि उनकी इतनी कम सहायता की जा सकती है कि जिसने राजी खुशी स अनेक दूसरे लोगो की सहायता की अब वह खुद इतना असहाय है। लेकिन, प्रिय वेडेमेयर यह न सोचिए कि हम किसी स कुछ माग करत हैं। मेर पति ने जिन लोगो को अपन विचारा का भागी बनाया प्रोत्साहन दिया, समथन दिया, उनसे वे केवल इतनी ही माग कर सकते थे कि व अधिक कारोबारी जोश प्रदर्शित कर उनके «*Revue*» का अधिक साथ द। यह दावा तो म गव और साहस के साथ कर सकती हू। उतन स्वल्प के तो व अधिकारी थे और म समझती हू कि यह किसी के प्रति भी अयाय न होता। यही चीज मुझे दुखी करती है। लेकिन मेरे पति की राय भिन है। उहोने अधिकतम भयानक घडिया म भी भविष्य क प्रति अपने विश्वास अपनी खुशमिज़ाजी तक को भी कभी नही खाया। मुझे और लाड से मेर साथ चिपटते हुए अपने बच्चो को खुश देखकर व सन्तुष्ट रहते हैं। प्रिय वेडेमेयर, उह यह मालूम नही है कि अपनी स्थिति के बारे म मने आपको इतने ब्योरे के साथ लिखा है इसलिए आप इन पक्तियो का हवाला न द। उह केवल इतना ही मालूम है कि मन उनके नाम पर आपको यह लिखा है कि आप यथासभव हमारे पसा की वसूली और उह भेजन की जल्दी कर।

अलविदा प्रिय मित्र। अपनी प्यारी पत्नी का मेरा अधिकतम हार्दिक अभिवादन कह और अपन नन्हे मुने को एक ऐसी मा की तरफ स चूम ल, जिसन अपन बच्चे क लिए बहुत आसू बहाए ह। हमारी तीना बडी सन्तान सब कुछ के बावजूद बहुत अच्छी तरह ह। बेटिया सुन्दर स्वस्थ प्रसन्न और मिलनसार ह और हमारा गोलमटोल नन्हा बेटा विनोदप्रिय है और उसक दिमाग म बडे ही दिलचस्प विचार आते रहते ह। वह शनान बहुत

हमारे लन्दनवास के शुरूआती साल बहुत भारी गुज़रे। लेकिन आज मैं उन सारी गमगीन यादों की, अपने द्वारा उठाई गई सारी क्षतियों की चर्चा नहीं करना चाहती और न ही हमारे उन गुज़र गए प्यारे बच्चों को याद करना चाहती हूँ जिनकी सूरत मौन शोकपूर्वक हम अपने दिलों में अभी भी सजोए हुए हैं।

आज मैं आपको अपने जीवन के उस नये दौर के बारे में बताना चाहती हूँ जिसमें दुःख के काले बादलों के साथ-साथ कुछ सुनहले दिन भी मुस्कराये हैं।

अपनी तीनों बेटियों के साथ मैं १८५६ में त्रियेर गई। मेरी प्यारी माँ को उनकी नातिनों के साथ मेरे आने पर जो खुशी हुई, वह बयान के बाहर है। लेकिन दुर्भाग्यवश वह खुशी देर तक कायम न रह सकी। बहुत ही अच्छी और स्नेहमयी माँ बीमार पड़ गई और ग्यारह दिन के कष्टभोग के बाद मुझे और बच्चियों को अपना आशीर्वाद देकर उन्होंने अपनी प्यारी प्यारी थकी हुई आँखें सदा के लिए बन्द कर लीं। आपके पति, जो यह जानते हैं कि मेरी माँ कितनी स्नेहशीला थीं, मेरे शोक की गहराई को सबसे अधिक अच्छी तरह अनुभव कर सकेंगे। अपनी प्यारी माँ को दफनाने और उनकी स्वल्प मीरास को अपने भाई एडगर के साथ बाँट कर हमने त्रियेर को खैरबाद कहा।

उस समय तक हम लन्दन के बहुत ही मामूली-से दो कमरों में रहते थे। अपनी सारी कुर्बानियों के बाद माँ हमारे लिए जो कुछ सौ थालेर छोड़ गई थीं उनसे हमने सुन्दर हैम्पस्टेड हीथ के पास ही एक छोटा सा मकान किराए पर ले लिया और अब हम वहीं रहते हैं। हम जिन कोठरियों में पहले रहे थे, उनकी तुलना में यह सचमुच राजसी आवास है और यद्यपि नीचे से ऊपर तक इस सजाने में हमारा ४० पौण्ड से अधिक नहीं खर्च हुआ (गुन्डी बाज़ार से खरीदी चीज़ें इसमें बहुत काम आयीं), फिर भी मुझे अपने आरामदेह बैठकखाने में बैठकर शुरू में वैभवशीलता की अनुभूति होती थी। बीती शान शौकत के अवशेष कपड़े लत्ते और दूसरी चीज़ें रहनदार से छुड़ा ली गईं और मुझे एक बार फिर पुराने स्काटलैण्डी बेलबूटेदार दस्तमालों को गिनने का सुख नसीब हुआ। यद्यपि यह चमत्कार बहुत दिन नहीं कायम रहा क्योंकि एक एक करके चीज़ें फिर गिरवीदार के यहाँ

पहुच गयी, फिर भी वह आरामदेह जीवन सचमुच आनन्दप्रद था। तभी पहला अमरीकी सकट आया और हमारी आमदनी आधी हो गई। हम फिर तगस्त और ऋणी हो गय। ऐसा होना अनिवाय था क्योकि हम तीनो लडकियो की उन्ही दिनो प्रारभ की गई शिक्षा को जारी रखना था।

अब मैं हम लोगो क अस्तित्व क उज्ज्वल पक्ष अपने जीवन क रौशन पहलू—अपने प्यार बच्चो पर आती हू। मुझ यकीन है कि आपके पति, जो हमारी लडकियो को उनके बचपन म प्यार करते थे अब उन्ह सुदर तरुणियो क रूप म देखकर तो और भी अधिक प्रसन्न होग। अपनी प्यारी बेटियो का प्रशस्तिगान करके अब मुझे आपकी नजरो म स्नेहान्ध माता समझी जाने का खतरा उठाना पडेगा। व दोनो ही निहायत नेकदिल और खुशाला हैं, उनम सचमुच मोहक शालीनता और कुमारी-सुलभ लज्जाशीलता है। जेनी १ मई को १७ साल की हो जाएगी। वह बहुत आकषक है, सुदरी भी कही जा सकती है। उसके बाल सघन काले और चमकदार और ऐसी ही काली और प्यारी प्यारी आख ह और विशिष्ट अग्रेजी ताजगी लिए हुए सावला रग है। उसके सलोनुमा गाल गाल बालिका सुलभ मुख की प्यारी प्यारी सुशीला भावाभिव्यक्ति उसकी कुछ-कुछ ऊपर को उठी हुई नाक क दोष को छिपा लती है और जब उसक सस्मित अधर खुलते ह और सुन्दर दात चमक उठत ह तब तो उस देखते ही बनता है।

लौरा गत सितम्बर म १५ वष की हुई। वह अपनी बडी बहन स बिल्कुल भिन्न है, शायद उसकी अपक्षा अधिक सुन्दर और अधिक सुघड नाक-नक्शेवाली। वह जेनी की भाति हो लम्बी छरहरी और सुघड है किन्तु हर प्रकार स उसकी अपक्षा अधिक सुदर, अधिक चपल और अधिक शुभ्र है। उसक घुघराले शाहबलूती केश इतने मोहक उसकी प्यारी प्यारी हरिताभ आख जिनम मानो सदैव खुशी के दीपक जलते रहते ह इतनी रुचिर ह तथा उसका माथा इतना उदात्त और सुडौल है कि उसके मुख के ऊध्व भाग को रमणीय कहा जा सकता है। किन्तु उसके मुख का अधोभाग उतना सुडौल नही है और अभी पूण विकास को नही प्राप्त हुआ है। दोनो बहनो का रूप सचमुच खिलता हुआ है और दोनो ही नखरेबाजी से इतनी मुक्त है कि मैं अक्सर उनकी मौन सराहना करती हू इसलिए

हमारे लन्दनवास के शुरूआती साल बहुत भारी गुजरे। लेकिन आज मैं उन सारी गमगीन यादों की, अपने द्वारा उठाई गई सारी क्षतियों की चर्चा नहीं करना चाहती और न ही हमारे उन गुजर गए प्यारे बच्चों को ही याद करना चाहती हूं जिनकी सूरत मौन शोकपूर्वक हम अपने दिलों में अब भी सजाए हुए हैं।

आज मैं आपको अपने जीवन के उस नये दौर के बारे में बताना चाहती हूं, जिसमें दुःख के काले बादलों के साथ-साथ कुछ सुनहले दिन भी मुस्कराये हैं।

अपनी तीनों बेटियों के साथ मैं १८५६ में त्रियर गई। मेरी प्यारी मां को उनकी नातिनों के साथ मेरे आने पर जो खुशी हुई, वह बयान के बाहर है। लेकिन दुर्भाग्यवश वह खुशी देर तक कायम न रह सकी। बहुत ही अच्छी और स्नेहमयी मां बीमार पड़ गई और ग्यारह दिन के कष्टभोग के बाद मुझे और बच्चियों को अपना आशीर्वाद देकर उन्होंने अपनी प्यारी प्यारी थकी हुई आंखें सदा के लिए बन्द कर लीं। आपके पति, जो यह जानते हैं कि मेरी मां कितनी स्नेहशीला थीं, मेरे शोक की गहराई को सबसे अधिक अच्छी तरह अनुभव कर सकेंगे। अपनी प्यारी मां को दफनाने और उनकी स्वल्प मीरास को अपने भाई एडगर के साथ बांट कर हमने त्रियर को खरबाद कहा।

उस समय तक हम लन्दन के बहुत ही मामूली-से दो कमरों में रहते थे। अपनी सारी कुर्बानियों के बाद मां हमारे लिए जो कुछ सौ थालेर छोड़ गई थीं, उनसे हमने सुन्दर हैम्पस्टेड हीथ के पास ही एक छोटा-सा मकान किराए पर ले लिया और अब हम वहां रहते हैं। हम जिन कोठरियों में पहले रहे थे, उनकी तुलना में यह सचमुच राजसी आवास है और यद्यपि नीचे से ऊपर तक इसे सजाने में हमारा ४० पौण्ड से अधिक नहीं खर्च हुआ (गुदड़ी बाज़ार से खरीदी चीज़ें इसमें बहुत काम आयीं), फिर भी मुझे अपने आरामदेह बैठकखाने में बैठकर शुरू में वैभवशालता की अनुभूति होती थी। बीती शान शौकत के अवशेष कपड़े-लत्ते और दूसरी चीज़ें रेहनदार से छुड़ा ली गईं और मुझे एक बार फिर पुराने स्कॉटलैण्डी बेलबूटेदार दस्तमालों को गिनने का सुख नसीब हुआ। यद्यपि यह चमत्कार बहुत दिन नहीं कायम रहा, क्योंकि एक एक करके चीज़ें फिर गिरवीदार के यहां

पहुंच गयी, फिर भी वह आरामदेह जीवन सचमुच आनन्दप्रद था। तभी पहला अमरीकी सकट आया और हमारी आमदनी आधी हो गई। हम फिर तगदस्त और ऋणी हो गये। ऐसा होना अनिवार्य था, क्योंकि हम तीनों लड़कियों की उन्ही दिनों प्रारंभ की गई शिक्षा को जारी रखना था।

अब मैं हम लोगों के अस्तित्व के उज्ज्वल पक्ष, अपने जीवन के रोशन पहलू—अपने प्यारे बच्चों पर आती हूँ। मुझे यकीन है कि आपके पति जो हमारी लड़कियों को उनके बचपन में प्यार करते थे, अब उन्हें सुन्दर तरुणियों के रूप में देखकर तो और भी अधिक प्रसन्न होंगे। अपनी प्यारी बच्चियों का प्रशस्तिगान करके अब मुझे आपकी नजरों में स्नेहान्ध माता समझी जाने का खतरा उठाना पड़ेगा। वे दोनों ही निहायत नेकदिल और सुशीला हैं उनमें सचमुच साहब शालीनता और कुमारी-सुलभ लज्जाशीलता है। जेनी १ मई को १७ साल की हो जाएगी। वह बहुत आकर्षक है सुन्दरी भी कही जा सकती है। उसके बाल सघन काले और चमकदार और ऐसी ही काली और प्यारी प्यारी आखें हैं और विशिष्ट अंग्रेजी ताजगी लिए हुए सावला रंग है। उसके सरनुमा गोल गाल बालिका सुलभ मुख को प्यारी-प्यारी सुशीला भावाभिव्यक्ति उसकी कुछ-कुछ ऊपर को उठी हुई नाक के दोष को छिपा लेती है और जब उसके सस्मित अधर खुलते हैं और सुन्दर दांत चमक उठते हैं, तब तो उसे देखते ही बनता है।

लौरा गत सितम्बर में १५ वर्ष की हुई। वह अपनी बड़ी बहन से बिल्कुल भिन्न है शायद उसकी अपेक्षा अधिक सुन्दर और अधिक सुघड नाक-नक्शेवाली। वह जेनी की भांति ही लम्बी, छरहरी और सुघड है किन्तु हर प्रकार से उसकी अपेक्षा अधिक सुन्दर अधिक चपल और अधिक शुभ्र है। उसके घुंघराले शाहबलूती केश इतने मोहक, उसकी प्यारी प्यारी हरिताभ आंखें, जिनमें मानो सदैव खुशी के दीपक जलते रहते हैं इतनी रुचिर हैं तथा उसका माथा इतना उन्नत और सुडौल है कि उसके मुख के ऊर्ध्व भाग को रमणीय कहा जा सकता है। किन्तु उसके मुख का अधोभाग उतना सुडौल नहीं है और अभी पूर्ण विकास को नहीं प्राप्त हुआ है। दोनों बहनों का रूप सचमुच खिलता हुआ है और दोनों ही नखरेबाजी से इतनी मुक्त हैं कि मैं अक्सर उनकी मौन सराहना करती हूँ इसलिए

और भी कि यहा वात उनकी मा के लिए तब नही कही जा सकती थी, जब वह जवान थी और हल्का फुलका फ्राक पहन घूमती थी।

स्कूल म उन्हाने हमेशा प्रथम पुरस्कार प्राप्त किए। अग्रेजी भाषा पर उनका पूरा अधिकार हे और वे फ्रासीसी भी खासी जानती ह। व इतालवी म दात का समझ लेती हैं और थोडी स्पेनी भी पढ सकता ह। केवल जमन भाषा मे ही उनके लिए भारी कठिनाइ है, हालाकि म समय समय पर उन्ह पढाने सिखान की हर चन्द कोशिश करती हू। लेकिन वे तनिक भी इच्छुक नही ह और इस सिलसिले मे मेरा आदेश अथवा मेरे प्रति उनका आदर भी किसी काम नही आता। जेनी चित्रकारी म विशेष रूप स निपुण ह और उसक पेंसिल रेखाचित्र हमारे कमरा के श्रेष्ठतम अलकार हैं। लारा चित्रकारी के सम्बन्ध मे इतनी लापरवाह थी कि हमन दड के रूप म उसकी चित्रकारी की शिक्षा बन्द कर दी। इसक बदले वह लगन के साथ पियानो बजान का अभ्यास करती हे और अपनी बहन के साथ अग्रेज़ी और जमन म बहुत मनोहर ढग से युगल गान गाती है। दुर्भाग्यवश उनकी सगात शिक्षा बहुत देर से, केवल डेढ साल पहले, प्रारभ हुई। उनकी सगात शिक्षा का बोझ उठाना हमारे बस की बात नही थी। इसक अलावा हमार पास पियानो भी नही था। अब जा पियानो हे, वह किराये का है और उसे पियानो कहना तो उचित भी नहा होगा। दोनो लडकिया अपन मधुर शालीन स्वभाव के कारण हम बहुत सुख देती ह।

लेकिन उनकी कनिष्ठा बहन सारे घर की लाडली और दुलारी है। यह बच्ची हमारे प्यारे बेचारे एडगर की मौत के फौरन बाद पदा हुइ थी और चुनाचे भाई के लिए बडी लडकिया का सारा प्यार दुलार नन्ही बहन को मिल गया और वे प्राय मातृवत सतर्कता के साथ उसका लालन पालन करन लगी। हा, यह सच है कि उससे अधिक प्रियदर्शिनी, सुरूपा, सरल और हसोड बच्ची की कल्पना मुश्किल स ही की जा सकती है। प्यारी-प्यारी बात करना और किस्स-कहानिया का शौक उसकी सबसे बडी विशेषता है। यह विशेषता उसने ग्रिम बन्धुओ स पाइ है, जिन की पुस्तक स वह कभी अलग नहा होती थी। हम सभी थक जान तक उसे व कहानिया पढकर सुनात रहत ह और अगर 'कालाहला भूतना', 'राजा ग्रासल्वट' या 'बर्फ-सफेदा' के बारे म हम कहा एक शब्द भी भूल जायें,



कार्ल मार्क्स (आठवां दशक)



१८७० म क्रेज़ो धातुकम कारखान म मज़दूरा की हडताल

तो हमारी शामत समझिये। बच्ची ने इन्हीं कहानियों के जरिये अंग्रेजी भाषा के अलावा, जिसे वह यहां की हवा के साथ ग्रहण करती है, जर्मन भी सीख ली है और असाधारण रूप से सही तथा सटीक भाषा बोलती है। वह कार्ल की असली दुलारी है और उसकी चहक उनकी अनेक चिंताएं हर लेती है।

जहां तक गृहकार्य का सम्बन्ध है, हेलेन पहले की तरह ही वफादारी और ईमानदारी के साथ मेरी मदद करती है। उसके बारे में अपने पति से पूछिये और वे आपको बतायेंगे कि वह मेरे लिए कैसा कीमती हीरा है। उसने सुख-दुख में समान रूप से पिछले १६ सालों में हमारा साथ दिया है।

मैंने कार्ल की एक नई पुस्तक की पाण्डुलिपि की नकल तैयार करना अभी मुश्किल से खत्म किया था और वह अभी छापेखाने में ही थी कि मेरी तबीयत सहसा बहुत खराब मालूम होने लगी। मुझे बहुत जोर का बुखार हो आया और डाक्टर बुलाने की नौबत आ गई। डाक्टर २० नवम्बर को आये और बहुत ब्योरे तथा सावधानी के साथ मेरी जांच की। लम्बे मौन के बाद उन्होंने मुझसे कहा, "प्रिय श्रीमती मार्क्स, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि आपको चेचक है—बच्चों को फौरन इस घर से हटा दिया जाना चाहिये।" इन शब्दों ने घर में जिस सन्त्रास और रुदन-क्रंदन को जन्म दिया, उसकी कल्पना आप कर सकती हैं। हम कर ही क्या सकते थे? लीब्कनेख्त परिवार हमारे बच्चों को फौरन अपने यहां ले जाने को तैयार हो गया और उसी दिन दोपहर को बच्चियां अपना स्वल्प सामान लेकर घर से निर्वासित हो गईं।

मेरी हालत हर घंटे बद से बदतर होती गई। चेचक के दाने भयानक रूप से उभर आये। मैं घोर पीड़ा में थी। चेहरा दर्द से जलता जा रहा था और मैं सोने में बिल्कुल असमर्थ थी। मुझे कार्ल की बेहद मरणांतक चिंता थी, जो अधिकतम प्यार के साथ मेरी सुश्रूषा कर रहे थे। अन्त में मैं बाहरी तौर पर चेतनाशून्य हो गई, हालांकि मैं निरन्तर पूरी तरह होश में थी। मैं लगातार खुली खिड़की के पास लेटी रहती, ताकि मुझे हर घड़ी नवम्बर की सर्द हवा मिलती रहे, जबकि अंगीठी में आग धधकती रहती। मेरे जलते होठों पर बरफ रखी जाती और रह-रहकर मुझे

शराब की बूदे पिलाई जाती। मै मुश्किल स कुछ निगल सकती थी, मेरी श्रवण शक्ति अधिकाधिक कमजोर हाती जा रही थी और अन्त म मेरी आखे भी बन्द हो गइ। मै सोचने लगी क्या अब मेर लिय चिरन्तन रात ही बनी रहेगी!

मेरी मजबूत काठी ओर अधिकतम प्यार तथा सच्चे दिल से की गई सुश्रूषा की विजय हुई ओर अब म फिर पूणत स्वस्थ हू, सिवा इसके कि मेरा चेहरा चेचक के गहरे लाल दागा स विकृत है, ठीक जो रग आज फैशन म है, उसी "माजेन्टा' के रग के। बच्चिया कही बडे दिन की पूववेला म ही मा बाप के उस घर म वापस आ सकी, जिसके लिय वे इतनी उदास थी। हमारे पुनमिलन की हृदयद्रावकता श्रवणनीय थी। मुझे दखकर लडकिया भावाभिभूत हो उठी आर उनके लिए आसू राकना मुश्किल हो गया। पाच हफ्ते पहले म अपनी स्वस्थवदना बच्चिया के साथ बिलकुल सम्भ्रान्त दीखती थी। आश्चयजनक रूप से मेर बाला म कहा सफेदी नही था और मेर दात तथा शरीर की गठन भी अच्छी थी, जिससे लोग मुझे बहुत सजाई हुई स्त्री मानते थे। लेकिन अब वह सारी बाते अतीत की बन चुकी थी और खुद अपने का ही मै जगली जानवर जसी प्रतीत होती था, जिसका स्थान लागा के बीच नही वरिक किसी चिडियाघर म हाना चाहिय। लेकिन आप बहुत अधिक सत्रस्त न हा। अब हालत इतना बुरी नहा है दाग अब भरन लगे ह।

मन बिस्तर छोडा हा था कि मेरे प्यार काल बामार पड गये। आत्यन्तिक चिन्ताआ परेशानिया और नाना यन्त्रणाआ न उन्ह बिस्तर स लगा दिया। उनके दायमी जिगर रोग न पहली बार उग्र रूप ग्रहण किया। लेकिन खुदा का शुक्र है कि चार हफ्त का तकलीफ के बाद उनकी हालत सुधर गइ। इस बीच «*Tribune*» से हमारी आमदनी फिर आधी हो गई था और काल की पुस्तक के लिय पसे पाने के बजाय हम तमस्सुक के पसे भरन पड गये। इन सब के ऊपर उस भयानक बामारी का भारी खर्च सहना पडा। सक्षेप म, आप उन जाडा म हमारी स्थिति का अनुमान कर सकती ह!

इन सारी बाता के फलस्वरूप काल न अपन पुरखा के देश, तम्बाकू और पनीर का धरती, हालण्ड का एक सरसरी दौरा लगाने का फैसला

किया। वे देखना चाहते हैं कि उन्हें अपने चाचा से कुछ पैसे मिल सकते हैं कि नहीं। इस प्रकार मैं फिलहाल वियोगिनी हूँ और यह देखने की प्रतीक्षा में हूँ कि उनकी हालैण्ड-यात्रा क्या सफलता प्रदान करती है। शनिवार को मुझे ६० गुल्डेनों के साथ पहला किंचित आशापूर्ण पत्र मिला। जाहिर है कि ऐसे कामों में देर लगती है, चतुराई, कूटनय और सावधानी से काम करने की आवश्यकता होती है। फिर भी मुझे आशा है कि कार्ल वहाँ से कुछ न कुछ तो ले ही आयेंगे। हालैण्ड में कुछ सफलता मिलते ही वे थोड़े समय के लिये गुप्त रूप से बर्लिन जाकर देश की स्थिति और एक मासिक अथवा साप्ताहिक पत्र निकालने की संभावना टटोलना चाहते हैं। हम पिछले दिनों के अनुभव से इस बात के कायल हो गये हैं कि जब तक हमारे पास अपना अखबार नहीं होगा तब तक कोई प्रगति संभव नहीं है। अगर कार्ल को पार्टी का नया अखबार निकालने में सफलता मिल गई, तो वे निश्चय ही आपके पति से अमरीका के सम्वाद भेजने की प्रार्थना करेंगे।

कार्ल की रवानगी के प्रायः फौरन ही बाद हमारी वफादार हेलेन बीमार पड़ गई और यद्यपि अब वह अच्छी होने लगी है, फिर भी अभी बिस्तर नहीं छोड़ पायी है। इस कारण मेरे लिये ढेरों काम पड़े हैं और मैं यह पत्र बेहद जल्दी-जल्दी खत्म कर रही हूँ। लेकिन मैं लिखे बिना नहीं रह सकती थी, रहना चाहती भी नहीं थी और अपने सबसे पुराने और सबसे सच्चे दोस्तों के सामने दिल का बोझ हल्का करके मुझे बड़ी राहत मिली है। इसी लिये हर चीज के बारे में इतने ब्योरे के साथ लिखने के लिये आपसे माफी नहीं मांगती। लेखनी अपने आप ही दौड़ती चली गई और अब मेरी यही आशा तथा आकांक्षा है कि जल्दी में घसीटी गई ये पंक्तियाँ आपको उस आनन्द का कम से कम एक अंश तो प्रदान कर सकें, जो आपका पत्र पढ़कर मुझे प्राप्त हुआ।

तमस्सुक से सम्बन्धित मामला मैंने बात की बात में तय कर लिया और सारा काम ऐसे व्यवस्थित ढंग से निबटा दिया, जैसे कि मेरे प्रभु और स्वामी यहीं मौजूद हों।

मेरी बच्चियाँ आपके बच्चों को—एक लौरा दूसरी लौरा को प्यार और अभिवादन भेजती हैं और उन सभी को मेरी तरफ से चूमें। आपकी

हार्दिक अभिवादन, मेरी प्यारी सहेली! इन कठिन घड़ियों में बहादुर और साहसी बनी रहें। दुनिया निर्भीकों की है। अपने पति के लिये वफादार और दृढ़ सहारा बनें। शरीर और मस्तिष्क को स्फूर्तिमय रखें और अपने प्यारे बच्चों से अधिक सम्मान की माग न करनेवाली सच्ची साथी बनें। अवसर होने पर हमें फिर लिखें।

आपकी

जेनी मार्क्स।

कार्ल मार्क्स*

(चंद सरसरी विचार)

मेरे आस्ट्रियाई दोस्त चाहते हैं कि मैं उन्हें अपने पिता सम्बन्धी कुछ संस्मरण लिख भेजूं। वे मुझसे इससे अधिक मुश्किल मांग शायद ही नहीं कर सकते थे। लेकिन आस्ट्रियाई मजदूर-मजदूरिनें उस हेतु के लिये ऐसी शानदार लड़ाई लड़ रहे हैं, जिसके लिये कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन और कृतित्व अर्पित कर दिया था, कि उन्हें इनकार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार मैं उन्हें अपने पिता के बारे में चंद सरसरी, क्रमहीन विचार लिख भेजने की कोशिश करती हूं।

मार्क्स को बहुत ही कटु, कठोर, कभी न झुकनेवाले और ऐसे व्यक्ति के रूप में पेश किया जाता है, जिस तक किसी की रसाई न हो, जो मानो ओलिम्पस पर अलग-थलग और एकाकी बैठे जुपिटर की तरह हमेशा वज्रपात ही करता हो, मुस्कान से सर्वथा अनजान हो। मार्क्स के बारे में ऐसे मनगढ़न्त किस्से से अधिक हास्यास्पद और कुछ नहीं हो सकता। इस धरती के अधिकतम खुशमिजाज और हंसमुख, विनोद और जिन्दादिली से छलकते तथा संक्रामक और अप्रतिरोध्य अट्टहास के धनी एक व्यक्ति का, अधिकतम दयालु, भलेमानस और सहानुभूतिशील साथी का

---

*मार्क्स की पुत्री एल्योनोरा के संस्मरण १८९५ में प्रकाशित किये गये थे।–सं०

ऐसा चित्रण मार्क्स को जाननेवाले सभी लोगों के लिये सतत आश्चर्य और कौतुक का स्रोत है।

घर में और वैसे ही मित्रों, यहा तक कि मात्र परिचितों के सम्बन्ध में भी मार्क्स की असीम खुशमिजाजी और अपार सवेदनशीलता को ही उनकी मुख्य चारित्रिक विशेषताए कहा जा सकता है। उनकी सौजन्यता और धैर्यशीलता वस्तुत उदात्त थी। अपेक्षाकृत कम धैर्यशील व्यक्ति नाना प्रकार के लोगों द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले सतत व्याघातों और अनवरत मागो से अक्सर आप से बाहर हो जाता। क्या यह मार्क्स की शालीनता और भलमनसाहत के लिये चारित्रिक बात नही है कि एक बार जब कम्यून के एक शरणार्थी (प्रसगवश, वे असहनीय रूप से उबा देनेवाले व्यक्ति थे) ने मार्क्स के साथ बैठकर मरणान्तक रूप से ऊब भरे तीन घटे नष्ट करवाये और जब अन्त में उनसे यह कहा गया कि समय की तगी है और बहुतेरे काम करने को पडे है, तो उन्होंने इसके जवाब में कहा कि "प्यारे मार्क्स, मैं आपको माफ करता हू "

जैसे इस ऊब भरे व्यक्ति के प्रति, वैसे ही उन सब के प्रति, जिन्हे मार्क्स ईमानदार आदमी समझते थे (और वे अक्सर अपना बहुमूल्य समय ऐसे लोगों को दिया करते थे, जो उनकी उदारता का बहुत दुरुपयोग करते थे) वे सदा ही अधिक से अधिक सदभावना और सहानुभूति रखनेवाले व्यक्ति थे। उनमें लोगों से उनके मन की बात कहलवा लेने की, उनको यह महसूस कराने की अद्भुत शक्ति थी कि जिस बात में उनकी दिलचस्पी है, उसमें वे भी दिलचस्पी रखते है। मैंने अधिकतम विभिन्न स्थितियों और पेशो के लोगों को यह कहते सुना है कि मार्क्स में उन्हे और उनकी समस्याओं को समझने की अद्भुत क्षमता है। जब वे किसी को वस्तुत गभीरतापूर्वक आरजूमन्द समझते थे तब तो उनका धैर्य असीम होता था। तब वे किसी भी प्रश्न को तुच्छ न मानकर और किसी भी तर्क को बचकाना न मानते हुए गभीर उत्तर देते थे। ज्ञानातुर प्रतीत होनेवाले हर नर-नारी की सेवा में उनका समय और व्यापक ज्ञान सदा समर्पित रहता था।

* *

लेकिन मेरे खयाल म बच्चा व साथ माक्स के व्यवहार म ही उनका सर्वाधिक मधुर रूप दखा जा सकता था। निश्चय ही बच्चा को उनसे बेहतर खेल का साथी कभी नही मिल सकता था।

उनके बारे मे मेरी सबस पुरानी याद तब की है, जब मै तीन साल की थी और तब "मूर" (उनका यह पुराना घरेलू नाम मेरी जबान से बरबस निकल जाता है) मुझे अपने कधा पर बिठाकर हमारे ग्रफ्टन टिर्रेस वाले छोटे-से बाग मे घुमाया करते थे मेरी भूरी लटा म इश्कपचा के फूल खामा करते थ। मूर' निस्सदेह बेहतरीन घोडा थे। बहुत पहले मुझे याद तो नही लेकिन कहते सुना है—मेरी बहन और नहा भाई जिसकी मत्यु ठीक मरी पैदाइश के बाद हुई और मेरे माता पिता के लिय जीवन भर का दुख बन गई "मूर को कुसियो म जोत देते थे और उस रथ पर 'चक्कर' उनसे खिचवाते थे।

निजी रूप से मै उह सवारी का घोडा बनाना बेहतर समझती थी, शायद इस कारण कि मेरी कोई हमउम्र बहन नही थी। उनके कधे पर बैठकर, उनके वालो व उस सघन अयाल को जोर से पकड हुए जिसम सफेदी झलकन ही लगी थी ग्रफ्टन टिर्रेस वाले अपने मकान के छोटे से बाग और उसके इदगिद के उन मदानो म, जहा अब मकान बन गये है मने शानदार सवारी की थी।

अब "मूर' नाम क बारे म चद शब्द। हम सब के घरेलू नाम थे ('पूजी के पाठक जानते है कि ऐसे नाम देने मे माक्स कितने पटु थे)। मूर उनका वाकायदा प्राय आधिकारिक नाम था। कवल हम लाग ही नही बल्कि सभी निकट के मित्र भी उहे उसी नाम स पुकारते थे। लेकिन व हमार 'चाल्ली (मूलत शायद चार्ली का, जो काल का ही दूसरा पाठातर है निगडा रूप) और 'ओल्ड निक" भी थ। मा हमशा हमारी मेम था।

मरे माता पिता की आजीवन सच्ची मित्र, हमारी प्रिय हेलेन देमुत, अनेक नामा स गुजरन क बाद हमारी निम' बन गइ।

१८७० क बाद एगल्स हमारे जनरल हो गय और हमारी घनिष्ठ मित्र लिना श्योलर ओल्ड माल बन गइ।

मेरी बडी बहन जेनी 'चीनी सम्राट क्वि क्वि" और 'दि" था और मेरी दूसरी बहन लारा (श्रीमती लफाग) "हाट्टेनटाट' और "काकादू" थी।

म "तुस्सी' (यह नाम मेरे साथ लगा रह गया ह) और "बोना राजकुमार क्वा क्वो' थी। इसी तरह बहुत दिनो तक म 'निबेलुग गान' की 'बोना आरबेरिख' भी रही।

बहुत बढिया घोडा होने के अलावा 'मूर' मे इससे अच्छा एक और गुण भी था। वे कहानिया सुनाने म बेजोड थे, अनूठे थे।

मने अपनी बुआ लोगो को कहते सुना है कि बचपन मे व अपनी बहनो के लिये भयानक उत्पीडक थे। उन्ह व त्रियर म माकुसबग सडक पर अपने घोडो की तरह हाकते थे और उससे भी बदतर यह कि उन्ह गदे हाथो से बनाई गई गधे हुए गदे आटे की 'टिकिया" खाने को मजबूर करते थे। लकिन वे ऐसा करने के पुरस्कारस्वरूप कार्ल द्वारा सुनाइ जानेवाली कहानियो के निए चू तक किये बिना 'हाकना' भी झेल लेती थी और 'टिकिया' भी खा लेती थी।

उसके बहुत बहुत साल बाद मार्क्स अपने बच्चो को कहानिया सुनाने लगे। मेरी बहनो को (म तब बहुत छोटी थी) वे टहलने के समय कहानिया सुनाते थे और उन कहानियो की माप अध्यायो म नही, मीलो मे की जाती थी। लडकियो की पुकार होती थी, 'अच्छा, अब एक और मील सुनाइये।'

जहा तक मेरा सम्बध ह "मूर" द्वारा मुझे सुनाई गई अदभुत कहानियो म सबसे बढिया सबसे आनन्ददायक 'हास रयाक्स' की कहानी थी। वह महीनो चलती रहती थी वह कहानियो की एक पूरी शृखला थी। अफसोस कि ऐसी कवित्वपूर्ण सूक्ष्म व्यजनापूर्ण और विनोदपूर्ण कहानियो को लिख लेनेवाला कोई नही था।

खुद हास रयाक्स हाफमनी ढग का जादूगर था, जिसकी खिलौनो की दूकान थी और जो हमेशा तगी म रहता था। उसकी दूकान बहुत ही अद्भुत चीजो कठपुतलो कठपुतलियो, देवो-बौनो, राजा रानियो मजदूरो मालिको हजरत नूह की नाव के समान बहसख्यक चौपायो और चिडियो, मेजो, कुर्सियो, गाडियो, हर किस्म और हर पमाने के सदूको स भरी

हुई थी। लेकिन उसके ख़ुद जादूगर होने के बावजूद वह न तो कभी शैतान को, और न कमाई को ही कर्जा चुका पाता था और इस कारण अपनी मरजी के खिलाफ उसे निरंतर अपने खिलाने शैतान को बेचने पड़ते थे। लेकिन अनेक आश्चर्यजनक घटनाओं के बाद वे सारी चीजें फिर हास रयासले की दूकान में लौट आती थीं।

उन घटनाओं में से कुछ उतनी ही विकट, उतनी ही मन्त्रासकारी थीं, जितनी हाफ्मैन की कहानियों की घटनायें। उनमें से कुछ हास्यपूर्ण थीं लेकिन वे सभी अभिव्यक्ति की अनन्त ओजस्विता, प्रखरता और विनोदमयता के साथ सुनाई जाती थीं।

इसी प्रकार "मूर" अपने बच्चों को पढ़कर सुनाने के भी आदी थे। यों, जैसे मेरी बहनों को वैसे ही मुझे भी उन्होंने पूरे का पूरा होमर, पूरे का पूरा 'निबेलुंग-गान', 'गुद्रुन', 'डान क्विक्ज़ोट', 'अलिफ लैला' इत्यादि पढ़कर सुना दिया था। जहां तक शेक्सपियर का सम्बन्ध है तो उनकी कृतियां हमारे घर की इंजील थीं, जो शायद ही कभी हमारे हाथ या मुंह से अलग होती थीं। छै साल की होते होते मुझे शेक्सपियर के पूरे-पूरे दृश्य जबानी याद हो गये थे।

मेरी छठी सालगिरह पर 'मूर' ने मुझे पहला उपन्यास, अमर 'भोला पीटर'*, भेंट किया। उसके बाद मारियेट और कूपर की रचनाओं के पूरे के पूरे संग्रह आये और मेरे पिता मेरे साथ उन सारी कथाओं को पढ़ते थे, उनपर अपनी छोटी-सी बिटिया के साथ गंभीर विचार विमर्श करते थे। जब उस छोटी सी बिटिया ने मारियट की सागर-कथाओं से प्रोत्साहित होकर यह घोषित किया कि वह भी 'जहाज की कप्तान' (जिसका अर्थ वह पूरी तरह नहीं समझती थी) बनेगी और अपने पिता से पूछा कि क्या उसके लिये 'लड़कों जैसी पोशाक पहनना और "जंगी जहाज पर नौकरी हासिल करने के लिये भाग जाना' संभव होगा, तब उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि ऐसा सब कुछ संभव है, लेकिन सारी योजनाएं पक्की हो जाने तक इसके बारे में किसी से कुछ कहने की जरूरत नहीं है।

---

*अंग्रेजी लेखक फ० मारियट का एक उपन्यास।—सं०

लेकिन उन योजनाओं के पक्की होने से पहले ही वाल्टर स्काट का जादू सिर चढ़कर बोलने लगा और उस छोटी सी बिटिया ने त्रास के साथ जाना कि स्वयं उसका भी जुगुप्सित कैम्पबेल कुल से कोई दूर का नाता है। उसके बाद स्कॉटलैण्ड में विद्रोह की तैयारी और "पतालीस" (१७४५)* की पुनरावृत्ति की योजनाएं बनीं। मुझे इतना और जोड़ देना चाहिये कि मार्क्स ने वाल्टर स्काट की कृतियां बार बार पढ़ी थीं और उन्हें उतना ही जानते और सराहते थे, जितना बाल्ज़ाक और फील्डिंग की कृतियों को।

अपनी छोटी सी बिटिया से इन और अनेक दूसरी पुस्तकों की बात करते हुए, वे उसे दर्शाते थे, यद्यपि जिसकी अभिज्ञता उसे नहीं होती थी, कि उन कृतियों में जो कुछ सुंदरतम है, श्रेष्ठतम है, उसे कहां खोजना चाहिये उसे यह सिखाते थे—हालांकि उसे महसूस नहीं होने देते थे कि उसे शिक्षा दी जा रही है क्योंकि उसपर वह आपत्ति करती—कि वह खुद सोचने की, खुद समझने की कोशिश करे।

ठीक इसी प्रकार वह "कटु" और "कठोर" इनसान छोटी-सी लड़की से राजनीति और धर्म की बात भी करता था। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब मैं शायद कोई पांच या छे साल की थी और मेरे मन में धार्मिक संदेह पैदा हो गये थे (हम रोमन कैथोलिक गिर्जाघर गये थे, जहां के बढ़िया संगीत की मेरे मन पर प्रबल छाप पड़ी थी), जिनकी, ज़ाहिर है कि मैंने "मूर" से चर्चा की। उन्होंने हर चीज़ इतनी साफ़ और स्पष्ट कर दी कि तब से अब तक कभी कोई शंका पैदा नहीं हुई।

और उनकी धनिका द्वारा कहे बढ़ई की कहानी मेरे स्मृति पटल पर कैसे अंकित होकर रह गई है जिसे, मैं समझती हूं, कि उनसे पहले या उनके बाद और किसी ने कभी नहीं सुनाया होगा।

---

* वाल्टर स्काट के 'ववरले' नामक उपन्यास की ओर संकेत है, जिसमें स्काटलैण्ड में १७४५ की घटनाओं—ब्रिटिश राज के खिलाफ विद्रोह का वर्णन है।—सं०

और मार्क्स स्वय वह सकते थे 'बच्चा को मेरे पास आने दीजिये उन्हें रोकिये टोकिये नहीं', क्योंकि वे जहां कहीं भी जाते बच्चे भी किसी प्रकार उनके पास पहुंच जाते। अगर वे हैम्पस्टेड हीथ म, हमारे पुराने मकान से लगे हुए उत्तरी लंदन के विस्तृत खुले मैदान या किसी पार्क म जा बैठते तो बच्चा की टोली तत्काल ही उस लम्बे-लम्बे बालो वाले बडी दाढी और दयालु भरी आखो वाले बडे व्यक्ति को अधिकतम मैत्री तथा सकोचहीनता के साथ घेर लेती थी। इस प्रकार बिल्कुल अजनबी बच्चे उनके पास आते और अक्सर उन्हें सडक पर रोक लेते।

एक बार मुझे याद है कोई दस साल के एक स्कूली लडके ने इंटरनेशनल के भयावह नेता को बिलकुल बेतकल्लुफी से मेटलण्ड पार्क म रोक लिया और कहा «swop knives»। उसने मार्क्स को समझाया कि स्कूली बच्चो की भाषा म «swop» का अर्थ होता है बदलना। उसके बाद दोनो ने अपने अपने चाकू निकाले और उनकी तुलना की। लडके के चाकू म एक ही फल था जबकि मार्क्स के चाकू म दो। लेकिन वे मोथरे थे। बहुत बहस के बाद सौदा तय हो गया चाकू बदल लिये गये और इंटरनेशनल के "भयावह' नेता ने अपने चाकू के फल के मोथरेपन के बदले एक पेनी भी दी।

इसी प्रकार मुझे याद है कि किस असीम धैर्य और माधुर्य के साथ वे उस समय मेरे सारे प्रश्नो के उत्तर देते थे जब अमरीकी युद्ध* और नीली किताबो ने कुछ समय के लिये मारियट और वाल्टर स्काट की जगह ले ली थी। उन्होने एक बार भी यह शिकायत नहीं की कि मैं उनके काम मे बाधक होती हूं हालांकि अपनी महान कृति का प्रणयन करते समय एक नन्ही बच्ची की बकबक से उन्हें कुछ कम परेशानी नहीं होती होगी। लेकिन बच्ची को यह कभी महसूस नहीं होने दिया गया कि वह काम का हरज कर रही है। मुझे याद आता है कि उन्हीं दिनो मैं यकीनी तौर से यह महसूस करने लगी कि युद्ध के मामले म अब्राहम लिंकन को मेरी सलाह की बुरी तरह आवश्यकता है और मैं उन्हें लम्बे-लम्बे पत्र लिखने लगी,

---

*१९वी शताब्दी के सातवे दशक मे सयुक्त राज्य अमरीका के उत्तरी तथा दक्षिणी राज्यो के बीच हुआ गृहयुद्ध।—स०

जिन सभी का जाहिर है कि "मूर" को पढना और "डाक मे डालना" पडता था। वरसा वाद उन्होने मुझे वे बचकाने पत्र दिखलाए, जिन्हे उन्होने मनोरजक होने के कारण रख छोडा था।

तो बचपन और किशोरावस्था मे मार्क्स मेरे ऐसे आदर्श मित्र रहे थे।

घर मे हम सभी एक दूसरे के अच्छे साथी रहे और वे सदा ही सबसे अधिक सहृदय और खुशमिजाज रहे। उन सालो के दौरान भी, जब वे निरन्तर जहरबाद की यत्रणाओ के शिकार रहे, जीवन की अन्तिम घडियो तक

* * *

मैने इन बिखरी बिखरायी चन्द यादो को लिख दिया है, लेकिन अपनी मा के बारे मे कुछ बाते जोडे बिना तो ये भी बिल्कुल अधूरी रहेगी। अगर यह कहा जाय कि जेनी फॉन वेस्टफालेन के बिना मार्क्स वह कुछ नही होते, जो थे, तो इसमे कोई अतिशयोक्ति न होगी। किन्ही भी अन्य दो व्यक्तियो के जीवन, सो भी दोनो ही अनोखे जीवन, कभी इतने एकरूप और एक दूसरे के पूरक नही रहे।

असाधारण रूपवती जेनी फान वेस्टफालेन, जिनका सौन्दर्य मार्क्स के लिये अन्त समय तक गर्व और आह्लाद का कारण रहा और जिनके सौन्दर्य ने हाइने, हेर्वेग और लासाल जैसे व्यक्तियो से बरबस सराहना प्राप्त की, और जिनकी मनीषा और तीक्ष्णदिमागी भी उनके सौन्दर्य की तरह ही जाज्वल्यमान थी लाखो मे एक थी।

बचपन मे कार्ल और जेनी साथ-साथ खेले थे, तरुणाई मे—क्रमश १७ और २१ की आयु मे—उनकी सगाई हो गई और राचेल के लिये जेकब की तरह मार्क्स ने भी विवाह बन्धन मे बधने से पहले सात साल तक उसके लिए साधना की। उसके बाद दोनो ने अपनी वफादार और विश्वसनीय दोस्त हेलेन देमुत के साथ तूफानो और मुसीबतो के, निवासन, विकट दैन्य, अपवाद कठोर सघर्ष और साहसिक सग्रामो के आगामी बरसो मे अडिग, निर्विकार, हमेशा कर्त्तव्य और खतरे के स्थान पर डटे रहकर जमाने का सामना किया। मार्क्स ब्राउनिग के शब्दो मे सचमुच कह सकते थे

वह मेरी चिरप्रिय
जिसे अर्पित है मेरा प्यार,
प्यार जो ऐसा अमर अशेष
कि उसको घाल न सकता काल,
न परिवर्तित कर सकता योग।

मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि उन्हें आपस में बाँधनेवाली जितनी मज़बूत कड़ी मज़दूरों के हेतु के प्रति उनकी वफ़ादारी थी उतनी ही उनकी असीम विनोदप्रियता भी थी। उन दोनों से बढ़कर किसी मज़ाक का रस निश्चय ही किसी और ने कभी नहीं लिया होगा। मैंने उन्हें बार-बार, ख़ास तौर से जब अवसर मर्यादित और संतुलित व्यवहार की माँग करता था आँसू निकल आने तक हँसते देखा है और जो लोग इस प्रकार के मनमौजीपन पर नाक-भौं चढ़ाने की प्रवृत्ति रखते थे वे भी उनके साथ हँसने के सिवा और कुछ नहीं कर सकते थे। और कितनी बार मैंने यह भी देखा कि वे एक दूसरे की ओर देखने का साहस नहीं कर पाते थे क्योंकि दोनों ही जानते थे कि नज़र मिलते ही अदम्य ठहाका फूट पड़ेगा। इन दोनों व्यक्तियों को अपने सिवा किसी भी चीज़ पर नज़र गड़ाये और हँसी रोकने के कारण जो अंतत सारी कोशिशों के बावजूद फूट ही पड़ती थी, बिल्कुल स्कूली बच्चों की तरह घुटन महसूस करते हुए देखने की मुझे ऐसी याद है जिसे मैं उन लाखों-करोड़ों से भी बदलना नहीं चाहूँगी, जिन्हें विरसे में पाने का श्रेय कभी-कभी मुझे दिया जाता है। जी हाँ सारी तकलीफ़ों सारे संघर्षों और सारी निराशाओं के बावजूद वह जोड़ी ख़ुशमिज़ाज जोड़ी थी और "आक्रोशपूर्ण वज्रपाती जुपिटर" यह मात्र कपोल कल्पना है। संघर्ष के वर्षों के दौरान यदि उन्हें अनेक निराशाएँ हुईं, भारी कृतघ्नता का सामना करना पड़ा तो उन्हें ऐसे सच्चे मित्र भी उपलब्ध थे जो बहुत कम लोगों को नसीब होते हैं। जहाँ मार्क्स का नाम है, वहाँ फ्रेडरिक एंगेल्स का भी नाम है और जो लोग मार्क्स के घरेलू जीवन को जानते थे वे उस महिला—हेलेन देमुत—के श्लाघ्य नाम को भी याद करते हैं जिससे अधिक सदाशया कभी कोई न रहा होगा।

मानव प्रकृति के अध्येताओं को यह बात विचित्र नहीं लगेगी कि ऐसा जुझारू व्यक्ति साथ ही अधिकतम दयालु और कोमल भी था। वे समझ जाएंगे कि वे केवल इसी कारण इतनी घृणा करने में समर्थ थे कि उतना ही अधिक प्रेम भी कर सकते थे, कि अगर उनकी तीखी लेखनी दान्ते की तरह निश्चय ही किसी की आत्मा को नरकवास में धकेल सकती थी, तो केवल इसी लिए कि वे इतने खरे और दयालु थे, कि अगर उनका चुटीला व्यंग्य संक्षारी तेजाब की तरह जलाने की क्षमता रखता था, तो वही व्यंग्य दुखी और विपन्न लोगों के लिए शांतिप्रद भी हो सकता था।

दिसम्बर १८८१ में मेरी मां की मौत हो गई। उसके पंद्रह महीने बाद वह व्यक्ति भी उनका मरणसंगी बन गया, जो जीवन में कभी उनसे अलग नहीं हुआ था। जीवन के ज्वरावेग के बाद वे शांतिपूर्वक सो रहे हैं। अगर मेरी मां आदर्श महिला थी, तो वे—हां, वे

इनसान थे, हर चीज़ में इनसान,
होगा न कोई दूसरा,
उनके कभी समान!

एल्योनोरा माक्स-एवेलिग

फ्रेडरिक एगेल्स*

२८ नवम्बर, १८९० को फ्रेडरिक एगेल्स ७० साल के हो जायगे। ससार के सभी समाजवादी यह सालगिरह मनायेंगे। इस अवसर पर मुझसे «*Sozialdemokratische Monatsschrift*» (सामाजिक जनवादी मासिक) के पाठकों के लिए वतमान पार्टी के मान हुए अगुआ पर एक लेख लिखने को कहा गया है।

एस कठिन काम के लिए आवश्यक सभी विभिन्न गुणा म से म अपन म एक ही गुण के होने का दावा कर सकती हू और वह यह कि म उम्र भर स एगेल्स को जानती हू। फिर भी यह सदिग्ध बात है कि लम्बे और घनिष्ठ परिचय स कोई किसी का चरित्र चित्रण करन मे समथ हो सकता है कि नही। सबस अधिक कठिन तो होता है स्वय अपना वणन करना।

मावस और एगेल्स–इन दोना व्यक्तिया का जीवन और काय इतना घनिष्ठ रूप स सम्बन्धित है कि उह अलग नही किया जा सकता–की जीवन गाथा लिखने के लिए– कल्पनावाद से विज्ञान तक समाजवाद के विकास का ही नही, बल्कि लगभग आधी सदी स अधिक के दौरान पूरे मजदूर आदोलन का इतिहास लिखना पडेगा। कारण यह है कि य दोना व्यक्ति महज विचारधारात्मक नेता, ऐसे सिद्धात शिक्षक, ऐस दाशनिक नही थे जिहाने रोजमर्रा के कामकाजी जीवन स अपने को बेगाना और अलग रखा

---

*१८९० म प्रकाशित।–स०

हो। वे हमेशा योद्धा, हमेशा संग्राम की अगली कतार में रहे, क्रांति के सैनिक भी रहे और क्रांति की कमान के सदस्य भी।

एंगेल्स के जीवन के ब्यौरे अब इतने सुख्यात हैं कि उनका केवल संक्षिप्त उल्लेख करना ही पर्याप्त मालूम होता है। उनकी साहित्यिक तथा वैज्ञानिक कृतियां इतनी प्रख्यात हैं कि उनका विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास मेरी धृष्टता होगी, उनका केवल क्रमिक उल्लेख ही काफी होगा। लेकिन मैं यहां व्यक्ति के रूप में एंगेल्स का, उनके जीवन और काम करने के ढंग का संक्षिप्त रेखाचित्र प्रस्तुत करने की कोशिश करना चाहती हूं। मेरा खयाल है कि अनेक लोगों को इससे खुशी हासिल हो सकेगी।

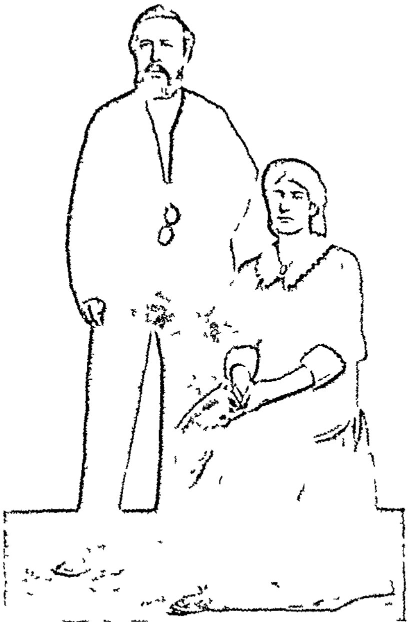
मैं यह मानती हूं कि एंगेल्स के समान जीवन का अध्ययन हम लोगों को, जो युवा हैं और उनके दिखाए रास्ते पर चल रहे हैं, मदद देगा और अनुप्राणित करेगा।

* * *

फ्रेडरिक एंगेल्स राइनी प्रदेश के बार्मेन नगर में २८ नवम्बर, १८२० को पैदा हुए थे। उनके पिता कारखानेदार थे। यह ध्यान में रखना चाहिए कि उस समय राइनी प्रदेश शेष जर्मनी की अपेक्षा आर्थिक दृष्टि से काफी आगे था।

उनका परिवार सम्मानित था। ऐसे परिवार में पैदा किसी पुत्र ने शायद ही कभी उससे इतना पूर्णतः भिन्न रास्ता अपनाया होगा। परिवारवालों ने जरूर ही उन्हें 'भोंडा बत्तखबच्चा' माना होगा। शायद वे लोग अभी तक यह नहीं समझते होंगे कि "बत्तखबच्चा" दर असल "राजहंस" था। जिस किसी ने भी एंगेल्स से उनके परिवार की चर्चा सुनी है, उसे यह स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी खुशमिजाजी अपनी मां से विरसे में पाई है।

वे आम ढंग से पढ़े और कुछ समय तक उन्होंने एल्बेर्फेल्ड स्कूल में शिक्षा प्राप्त की। पहले उनका इरादा विश्वविद्यालय में दाखिल होने का था, लेकिन वह इरादा कार्यान्वित नहीं हुआ। स्कूल की अन्तिम परीक्षा से एक साल पहले वे बार्मेन के एक कारोबार में दाखिल हो गए और फिर स्वेच्छा से एक साल तक बर्लिन में फौज में रहे।



विल्हल्म लीब्कनख्त और तुस्सी (एल्यानोरा मार्क्स)



कार्ल मार्क्स की सबसे छोटी बेटी एल्यानोरा

"तुम्हारी यह बात सही है!", इत्यादि इत्यादि।

लेकिन जो बात मुझे बहुत ही अच्छी तरह याद है, वह यह है कि एंगेल्स के पत्र पढ़ते हुए 'मूर' कभी-कभी गालों पर आंसू बह निकलने तक हंसा करते थे।

ज़ाहिर है कि मैनचेस्टर में एंगेल्स सर्वथा अकेले नहीं थे।

सबसे पहले तो "सर्वहारा वर्ग के निर्भीक, वफ़ादार, श्रेष्ठ योद्धा विल्हेल्म वोल्फ़ वहां थे", जिन्हें 'पूंजी' का पहला खण्ड समर्पित किया गया है और जिन्हें हम घर पर 'लुपुस' कहा करते थे।

बाद में मेरे पिता और एंगेल्स के वफ़ादार मित्र समुएल मूर (जिन्होंने मेरे पति के साथ मिलकर 'पूंजी' का अंग्रेज़ी अनुवाद किया) और प्रोफ़ेसर शोर्लेमेर, जो आजकल के एक सर्वाधिक प्रमुख रसायनशास्त्री हैं, वहां पहुंच गये।

लेकिन यह सोचना भयावह है कि इन मित्रों को छोड़कर, एंगेल्स जैसे व्यक्ति को बीस साल इस ढंग से गुज़ारने पड़े। यह बात नहीं है कि उन्होंने कभी इस बात की शिकायत की हो या इस पर कुड़बुड़ाए हों। कतई नहीं। वे अपने काम पर इतने प्रसन्न और शान्त रहते थे, जैसे कि नौकरी पर जाने या दफ़्तर में बैठने जैसा दुनिया में और कुछ हो ही नहीं।

लेकिन मैं उस समय एंगेल्स के साथ थी, जब उनके उस जब्रिया श्रम का अन्त हुआ और मैं यह समझ गई कि उन बरसों के दौरान उन पर क्या कुछ गुज़री होगी। सुबह अन्तिम बार दफ़्तर जाने के लिए जूते पहनते हुए जिस विजयोल्लास के साथ उन्होंने पुकार लगाकर कहा था कि "बस, अन्तिम बार!", उसे मैं कभी न भूलूंगी।

चन्द घंटों बाद हम गेट पर खड़े उनका इन्तज़ार कर रहे थे। हमने उन्हें उनके मकान के सामनेवाले छोटे-से मैदान में से आते देखा। वे अपनी छड़ी लहराते हुए गा रहे थे और उनका चेहरा ख़ुशी से चमक रहा था। फिर हमने जशन मनाने के लिए मेज़ लगायी और शम्पेन पीकर आनन्दित हुए।

उस समय मैं बहुत छोटी थी और यह सब कुछ समझ नहीं सकती थी पर अब, जब कभी इस बात को याद करती हूं, तो आंखों में आंसू आ जाते हैं।

उसके बाद, १८७० में एंगेल्स लन्दन आ गए और फ़ौरन इंटरनेशनल

द्वारा शुरू किए गए प्रचुर काम का एक अश अपने जिम्मे ले लिया। व उसकी जनरल कौंसिल के सदस्य और साथ ही बेल्जियम तथा बाद म स्पन और इटली के लिए पत्राचारी सदस्य थे।

इसके अलावा एगेल्स असाधारण रूप से अधिक और विविधतापूण लेखन काय करते थे। उन्होने १८७० से १८८० तक असख्य लेख और पत्रक लिखे।

लेकिन हर लेहाज से उनकी सर्वाधिक महत्त्वपूण कृति 'श्री यूजन ड्यूहरिग द्वारा विज्ञान म प्रवर्तित क्रांति' ह, जो १८७८ म प्रकाशित हुई। इस कृति के प्रभाव तथा महत्त्व की चर्चा करना आज ठीक उतना ही अनावश्यक है, जितना 'पूजी' के प्रभाव तथा महत्त्व की।

अगले दस बरसो के दौरान एगेल्स मरे पिता के पास हर रोज आते रहे। वे कभी कभी साथ टहलन निकल जात, लेकिन उतना ही प्राय व मेरे पिता के कमरे म ही, अपनी-अपनी तरफ की दीवारो के साथ-साथ एक सिरे स दूसरे सिरे तक चहलकदमी करते और कोन पर पहुचकर मुडते समय अपना एडी स गड्ढा-सा बनाते हुए बने रहत। इस कमरे म वे ऐसी ऐसी समस्याओ पर विचार करते जिनकी अधिकतर लोग कल्पना तक नही कर सकत। अक्सर वे चुपचाप कमरे क एक सिरे स दूसरे सिरे तक एक दूसरे की बगल म भी चहलकदमी करते थे। या फिर, उनमे स प्रत्यक उस प्रश्न पर बात करता, जो उस समय मुख्यत उसके मन पर छाया होता था और अन्त म दोनो आमने-सामन खडे होकर यह स्वीकार करते हुए हसन लगते कि पिछले आध घटे स प्रत्येक एसे प्रश्नो मे उलझा हुआ था जिनका दूसर क प्रश्नो से कोई सम्बध नही था।

अगर स्थान और समय की दष्टि स सम्भव होता, तो उन दिनो क बारे म मैं कितना कुछ लिख सकती थी! इटरनेशनल क बारे म, कम्यून के बारे म और उन महीनो क बार म, जब कि हमारा घर होटल बना रहा था, जहा हर उत्प्रवासी क लिए दरवाजे खुल रहत थ और उन सहायता प्राप्त होती थी।

१८८१ म मरी मा की मत्यु हो गई। मर पिता, जिनका स्वास्थ्य गिरता जा रहा था, चद महीनो तक ब्रिटेन स बाहर रहे। १८८३ म व भी चल बस।

हर कोई जानता है कि तब से एंगेल्स ने कितना कुछ किया है। उन्होंने अपना अधिकांश समय मर पिता की कृतियों को प्रकाशित कराने, नये संस्करणों के प्रूफ पढ़ने तथा 'पूंजी' के अनुवादों को देखने भालने में लगाया है। मुझे इस काम या उनके अपने मौलिक लेखन की चर्चा करने की जरूरत नहीं है।

एंगेल्स ने हर रोज जितना काम किया है, उसे वे लोग ही समझ सकते हैं जो उनको जानते हैं। अंग्रेज, जर्मन और फ्रांसीसियों की तो बात ही क्या, इतालवी, रूसी, डच, डेनमार्की और रूमानियाई लोग (एंगेल्स को इन सारी भाषाओं का पूर्ण ज्ञान है)—सभी उनके पास सहायता और परामर्श के लिए आते हैं।

हम सभी जो जनहित के लिए काम करते हैं, हर कठिनाई का सामना होने पर एंगेल्स के पास जाते हैं और उनसे हमारी कोई अपील कभी व्यर्थ नहीं जाती।

हाल के बरसों में इस अकेले व्यक्ति ने जितना काम किया है वह एक दर्जन साधारण लोगों के लिए भी अधिक होता। और एंगेल्स फिर भी काम करते जाते हैं, क्योंकि वे जानते हैं जैसा कि हम सब जानते हैं जो कुछ मार्क्स छोड़ गए हैं, उसे केवल वे ही सँवार कर दे सकते हैं। एंगेल्स को अभी हम लोगों के लिए बहुत कुछ करना है, और वे करेंगे भी।

यह उनके जीवन का महज रेखाचित्र है। कहा जा सकता है कि यह उस आदमी का ढांचा है, स्वयं वह आदमी नहीं है। उस ढांचे में प्राण फूंकने के लिए मुझसे, शायद हम में से हर किसी से, अधिक योग्य होना जरूरी है। हम उनके बहुत ही निकट हैं और इसलिए उनका असली मूल्यांकन करने में असमर्थ हैं।

* * *

एंगेल्स अब सत्तर साल के हो चुके हैं। लेकिन वे बड़ी आसानी से इतने बरसों का बोझ संभाले हुए हैं। उनमें शारीरिक और मानसिक उत्साह विद्यमान है। वे अपने छै फुट से कुछ अधिक लम्बे कद को ऐसे सम्भाले रहते हैं कि इतने लम्बे नहीं लगते। उनकी दाढ़ी, जो अजीब बात है कि

एक ही तरफ को बत्ती है, अब सफेद होने लगी है। इसके विपरीत उनके केशों में सफेदी का नाम निशान भी नहीं है। वे ज्यों के त्यों भूरे हैं। जो भी हो, पर खूब जांच करने पर भी कोई सफेद बाल नहीं मिला। केशों की दृष्टि से वे हम में से अधिकतर की अपेक्षा जवान हैं।

इतना ही नहीं, वे जितने जवान दिखाई देते हैं उससे भी अधिक जवान हैं। वस्तुतः मेरी जान पहचान के लोगों में तो वे सबसे अधिक जवान हैं। जहां तक मेरी याद साथ देती है, पिछले बीस कठिन वर्षों के दौरान वे जरा भी बूढ़े नहीं हुए हैं।

१८६६ में मैं उनके साथ आयरलैण्ड गई थी और उनके साथ उस देश को देखना बहुत रोचक रहा, क्योंकि वे "राष्ट्रों की निओबा"*, आयरलैण्ड का इतिहास लिखना चाहते थे। उसके बाद १८८८ में मैं उनके साथ अमरीका गई। १८८८ में भी वे १८६६ की तरह ही जिन्दादिल थे और जिस समूह या जिन लोगों के बीच होते, उनका केन्द्र बिन्दु और आत्मा बन जाते।

'सिटी आफ बर्लिन' और 'सिटी आफ न्यूयार्क' नामक जहाजों पर वे हर तरह के मौसम में डाक पर टहलने और गिलास भर बियर पीने के लिए हमेशा तैयार रहते थे।

कभी भी बाधाओं से कतराना नहीं, बल्कि उनपर से छलांग मारकर अथवा चढ़कर पार करना उनके जीवन का एक पक्का उसूल प्रतीत होता है।

यहां मैं अपने पिता और एंगेल्स के चरित्र के एक पक्ष का विवेचन करना और उस पर अधिक जोर देना चाहता हूं, क्योंकि बाहरी दुनिया

---

*पौराणिक कथा के अनुसार थीब राजा अम्फीओन की पत्नी निओबा ने अपने बहुसंख्यक बच्चों से गर्वित होकर लेतो देवी का उपहास किया, जिसके केवल दो बच्चे थे—अपोल्लो तथा अर्टेमीस। अतः निओबा को दण्ड देने के लिए लेतो की आज्ञा पर अपोल्लो तथा अर्टेमीस ने निओबा के सभी बच्चों को मार डाला और खुद निओबा को अश्रुप्रवाहिनी चट्टान में परिवर्तित कर दिया। यहां आयरलैण्ड की निओबा से तुलना की गई है।—सं०

उससे अपरिचित है और अधिकतर लोगों को वह अविश्वसनीय प्रतीत होता है।

मेरे पिता को हमेशा एक प्रकार के पुण्यद्वेषी, कटुभाषी, मित्र और शत्रु, सभी पर समान रूप से बिजलियां गिराने के लिए तत्पर जुपिटर के रूप में वर्णित किया गया है।

लेकिन जिस किसी को एक बार भी उनकी सुंदर भूरी आंखों में झांकने का मौका मिला जो अन्तर्मर्मस्पर्शी होने के साथ-साथ ही इतनी मृदुल, इतनी विनोदपूर्ण और सदय थीं, जिस किसी ने भी उनकी संक्रामक, मनोल्लासकर हंसी सुनी वह जानता है कि व्यंग्यपूर्ण जुपिटर एक कोरी कल्पना है।

यही बात एंगेल्स के लिए भी सही है। ऐसे लोग हैं जो उन्हें तानाशाह, स्वेच्छाचारी और छिद्रान्वेषी आलोचक के रूप में चित्रित करते हैं। लेकिन इस बात में कोई भी सचाई नहीं है

युवाजन के प्रति एंगेल्स की अजस्र अनुग्रहशीलता की बात करना मैं आवश्यक नहीं समझती। हर देश में ऐसे काफी लोग हैं जो उसकी गवाही दे सकते हैं। मैं केवल इतना ही कह सकती हूं कि मैंने उन्हें बहुत अक्सर किसी नौजवान की दास्ताना मदद करने के लिए अपने काम को ताक पर रखते देखा है और किसी नौसिखिए की मदद करने के कारण उनका अपना काम उपेक्षित पड़ा रहा है।

एक बात के लिए एंगेल्स कभी क्षमा नहीं करते और वह है धोखा धड़ी। जो व्यक्ति अपने प्रति कपटाचारी है और उससे भी बदतर अपनी पार्टी के प्रति कपटाचारी है वह एंगेल्स से यहां किसी दया का अधिकारी नहीं है। वे इसे अक्षम्य पाप मानते हैं

यहां मैं एंगेल्स के एक और लक्षण का उल्लेख करना चाहती हूं। यद्यपि वे संसार के अधिकतम सटीक व्यक्ति हैं और अन्य सभी की अपेक्षा उनमें कर्तव्य तथा सर्वोपरि पार्टी अनुशासन की भावना तो बहुत ही प्रबल है, तथापि वे लकीरपंथी कतिर भी नहीं हैं

एंगेल्स के युवकोचित जोश और उनकी कृपालुता के अतिरिक्त कोई चीज भी इतनी अदभुत नहीं है, जितनी उनकी बहुविज्ञता है। ज्ञान की प्रत्येक शाखा में—प्राकृतिक इतिहास, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान

भौतिकी, भाषा विज्ञान (आठवीं दशाब्दी में «Figaro» न f था, 'व बीस भाषाओं में हकलाते हैं"), राजनीतिक अर्थशास्त्र, अन्तत, किन्तु किसी भी अर्थ में कम महत्त्वपूर्ण नहीं, सैनिक पतरेबे में वे अपनी ज़मीन पर होते हैं। १८७० में फ्रांसीसी प्रशियाई युद्ध के दौ एगेल्स ने «Pall Mall Gazette» में जो लेख प्रकाशित करा उनकी बडी धूम रही, क्योंकि उनमें उन्होंने सेदान के संग्राम और फ्रांसी सेना के चकनाचूर होने की अचूक भविष्यवाणी की थी।

प्रसगवश कह कि उसी समय से उन्हें "जनरल" उपनाम दि गया है। मेरी बहन ने उन्हें «General Staff» घोषित कर दिया वह नाम उनपर चिपककर रह गया और तब से हम उन्हें "जनरल" पुकारते रहे हैं। लेकिन आज उस उपनाम का अर्थ व्यापकतर हो गय हैं एगेल्स हमारी मजदूर वर्गी सेना के वास्तविक जनरल है

एगेल्स के एक दूसरे रूप, और शायद सर्वाधिक तात्त्विक रूप क अवश्य ही उल्लेख किया जाना चाहिए। वह है उनकी नितान्त निस्स्वार्थता

उन्होंने कहा, 'मार्क्स के जीवन काल में मैं गौण भूमिका अदा करता रहा और मेरा खयाल है कि मैंने उसमें दक्षता प्राप्त कर ली है और मुझ बेहद खुशी है कि मुझे मार्क्स जैसा निपुण मुख्य वादक मिल गया था।" आज एगेल्स वाद्यवृन्द के निदेशक हैं। लेकिन उनमें वैसी ही नम्रता, सादगी और सरलता है, मानो वे उन्हीं के शब्दों में "गौण वादक' हों।

अनेक लोगों की तरह मुझे भी अपने पिता और एगेल्स की मैत्री की चर्चा करने का अवसर मिला है। वह ऐसी मैत्री थी, जो ग्रीक पुराण-कथाओं में वर्णित दामोन और पाइथियास की मैत्री के समान ऐतिहासिकता प्राप्त कर लेगी।

ये टीप उन दो मैत्रियों की चर्चा के बिना पूर्ण नहीं हो सकती, जो उन्हें मेरे पिता की संगति के फलस्वरूप प्राप्त हुई थी और जिन्होंने उनके जीवन और कार्य पर प्रभाव डाला है। पहली है मेरी मां के साथ उनकी मैत्री और दूसरी हेलन देमुत के साथ, जो इस साल ४ नवम्बर को चल बसी और माता पिता की बगल में हो सुख की नींद सो रही है।

मेरी मां की कब्र पर एगेल्स ने ये शब्द कहे थे

'मित्रो!

चडी लगा दी, सभी अखबारो ने एक होकर उन्हे आत्म रक्षा के प्रत्यक्ष साधन से वचित कर दिया, जिससे कि कुछ समय के लिए वे अपने शत्रुओ के सामने जिन्हे वे नफरत करने के सिवा और कुछ कर ही नही सकते, असहाय हो गए,—इन सारी बातो से उन्हे गहरा आघात पहुचा। ऐसी स्थिति बहुत दिनो तक कायम रही।

"लेकिन सदा के लिए नही। यूरोपीय सर्वहारा वर्ग ने फिर अपने अस्तित्व की ऐसी परिस्थितिया उपलब्ध कर ली, जिनमे वह कुछ हद तक स्वतन्त्र रूप से क्रियाशील हो सकता था। इन्टरनेशनल की स्थापना की गई। सर्वहारा का वर्ग सघर्ष एक देश से दूसरे देश मे फैलने लगा और उनके पति अग्रणी सघर्षकर्त्ताओ मे सबसे अग्रणी थे। उसके बाद उनके लिए ऐसा समय आया, जिसने उनकी कुछ कठिनाइयो की क्षतिपूर्त्ति कर दी। वे यह देखने के लिए जीवित रही कि जिस लाछना ने उनके पति को आहत किया था वह हवा के सामने भूसे की तरह उड गयी। वे यह देखने के लिए जीवित रही कि उनके पति की शिक्षा को जिसे दबा देने के लिए सामन्तो से लेकर जनवादो तक, सभी प्रतिक्रियावादी पार्टियो ने एडी चोटी का जोर लगाया था, सभी सभ्य देशो और सभी भाषाओ मे खुले आम प्रचार होने लगा। वे यह देखने के लिए जीवित रही कि सर्वहारा आन्दोलन, जो उनके अपने अस्तित्व के साथ एकरूप हो गया था, रूस से अमरीका तक के पुराने ससार को झकझोरने लगा और सारे प्रतिरोधो के बावजूद विजय मे अधिकाधिक विश्वास के साथ आगे बढने लगा। **और उनकी अन्तिम खुशियो मे से एक खुशी यह थी कि हमारे जर्मन मजदूरो ने राइखस्ताग के पिछले चुनावो मे अपनी अशेष जीवन शक्ति का ज्वलन्त प्रमाण प्रस्तुत किया।**

'ऐसी अन्तर्भेदी आलोचनात्मक मेधा, ऐसी राजनीतिक व्यवहार कुशलता, ऐसे ओजस्वी तथा तीव्रोत्साही चरित्र और अपने सघर्षमान साथियो के प्रति ऐसी निष्ठावाली इस महिला ने लगभग चालीस साल तक आन्दोलन के लिए क्या कुछ किया आम जनता यह बात नही जानता, हमारे समय के अखबारो मे उसका जिक्र तक नही है। इसे तो वही जान सकता है जिसे इसकी अनुभूति हुई हो। लेकिन मै इतना जरूर जानता हू कि अगर कम्यूनो के उत्प्रवासियो की पत्निया उन्हे अक्सर याद करेगी तो हम दूसरो को अक्सर उनकी गुनगुनी हुई और बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह का अभाव

चलेगा—उस सुलझी हुई सलाह का अभाव जो आडम्बरहीन होती थी, वह बुद्धिमत्तापूर्ण सलाह जो प्रतिष्ठा के किसी प्रश्न पर झुकना नहीं जानती थी।

"उनके निजी व्यक्तिगत गुणों की बात करना मैं आवश्यक नहीं समझता। उनके मित्र उन्हें जानते हैं और भूलेंगे नहीं। अगर संसार में कभी कोई ऐसी महिला हुई है, जिनका सबसे बड़ा सुख दूसरों को सुखी बनाना रहा, तो वह यही महिला थी।"

हेलेन देमुत की अंत्येष्टि पर एंगेल्स ने कहा

"मार्क्स अक्सर पार्टी के कठिन और पचीदा मामलों में उससे सलाह लेते थे ... जहां तक मेरा सम्बन्ध है, तो मार्क्स की मृत्यु के बाद से जो सारे काम करने में समर्थ हुआ हूं उसके लिए मैं बड़ी हद तक उस सुखद वातावरण और सहायता का ऋणी हूं जो उसकी उपस्थिति से मेरे घर को प्राप्त हुई, जहां मार्क्स की मृत्यु के बाद आकर रहने का उसने मुझे सम्मान प्रदान किया।"

मार्क्स और उनके परिवार के लिए वह क्या थी इसका केवल हम लोग ही मूल्यांकन कर सकते हैं और उसे शब्दों में तो हम भी नहीं व्यक्त कर सकते। १८३७ से १८६० तक वह हम में से प्रत्येक की सच्ची मित्र और सहायिका रही।

एडगर लाँगे

कार्ल मार्क्स के पारिवारिक जीवन के कुछ पहलू*

मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि कार्ल मार्क्स के पारिवारिक जीवन की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए मैं अनेक निजी यादों को आधार बनाता। किन्तु दुर्भाग्यवश ये यादें वर्षों के व्यवधान द्वारा और सबसे बढ़कर इस तथ्य के कारण धुंधली पड़ गई हैं कि जब मैंने अपने नाना को अन्तिम बार देखा था, तब केवल तीन साल का था।

लेकिन यह अजीब बात है कि न जाने क्या व्यक्ति के जीवन में घटनेवाली अनेक घटनाओं में से कुछ तथ्य दिमाग में नक्श रह जाते हैं।

इस प्रकार मुझे अपने नाना और भाई जॉन के साथ बाई द शाप्र की सैर की बहुत स्पष्ट याद है। तब, १८८२ के साल तक शतावरी खेतों और अंगूरी बागों से युक्त आर्जेन्त्योए दूरस्थ देहात जैसा लगता था। यह जुलाई १८८२ की बात है, जब मार्क्स मेरे माता पिता से मिलने वहां आए थे। कम्यून के भूतपूर्व सदस्य, मेरे पिता शार्ल लाँगे के १८८० के अन्त में निर्वासन से लौटने के बाद मेरे माता पिता उसी देहाती जिले में रहते थे।

---

*ये टीप फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य और कार्ल मार्क्स के नाती (यानी उनकी बेटी जेनी और शार्ल लांगे के पुत्र) एडगर लांगे द्वारा मार्च १९४६ में कार्ल मार्क्स की ६३वीं बरसी पर लिखी गई थी। उसी वर्ष फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की केन्द्रीय समिति के मुखपत्र 'कम्युनिज्म की कापियां' में प्रकाशित।—सं०

मेरे नाना ने मेरे बचपन के दिनों में मुझे जो खेदजनक, पर मानना पड़ेगा कि बिलकुल उचित, ख्याति प्रदान की, उसके लिए मेरे मन में कोई दुर्भावना नहीं है। ऐसा लगता है कि जब मैं कोई अठारह महीने का था, तो बहुत खाऊ था और इस कारण नाना जी मुझे "भेड़िया" कहने लगे। मार्क्स ने मुझे यह नाम इस कारण दिया कि एक दिन मुझे कच्चे गुर्दे के एक टुकड़े को चाकलेट का टुकड़ा समझकर चबाते हुए देख लिया गया और अपनी गलती के बावजूद उसे चबाता रहा।

बहरहाल, मेरी मां को लिखे एक पत्र में नाना जी ने मेरे प्रति अपनी उस राय को कुछ हल्का बना दिया था "जानी और हैरी' (मेरा छोटा भाई) 'और नन्हे 'भेड़िए' को, जो सचमुच बहुत बढ़िया बच्चा है मेरी याद दिलाना।"

नाती-नातिनों के साथ मार्क्स के सम्बन्धों पर मैं बाद को लौटूंगा। अभी तो उनके राजनीतिक जीवन को छुए बिना ही उनके पारिवारिक जीवन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना चाहता हूं।

* * *

संक्षेप में याद दिलाऊं कि त्रियेर नगर पर फ्रांस के कब्जे की समाप्ति के शीघ्र ही बाद १८१८ में मार्क्स का वहां जन्म हुआ।

उनके पिता ने, जो यहूदी थे और जिनके पूर्वजों में रब्बियों (यहूदी पादरियों) की एक लम्बी श्रृंखला शामिल थी, प्रोटेस्टेण्ट मत ग्रहण कर लिया था, जिससे उनके विचार में वकालत के पेशे में सुविधा होगी।

अठारह साल की उम्र में मार्क्स की मंगनी जेनी फान वेस्टफालेन के साथ हो गई, जो 'त्रियेर में सबसे अधिक सुन्दर मानी जाती थी'। उनका परिवार ब्रुंसविक से सम्बन्ध रखता था।

अपने नाना जी के जीवन का पहला हिस्सा, जो राजनीतिक दृष्टि से सुविख्यात है, मैं छोड़े दे रहा हूं और महज यह याद दिलाऊंगा कि वे १८४३ में पेरिस आए और जनवरी १८४५ में वहां से निर्वासित कर दिए गए (उसी पेरिस प्रवास के दौरान मेरी मां पैदा हुई और इस प्रकार वे जन्मना पेरिसवाली थीं)।

उसके बाद वे ब्रुसेल्स में रहे, लेकिन वहां से भी निर्वासित कर दिए गए और २४ फरवरी को निर्मित अस्थायी सरकार के नाम पर फ्लाकां द्वारा बुलाए जाने पर ५ मार्च, १८४८ को फिर पेरिस लौट गए।

अप्रैल में इस बात के कायल होकर वे पेरिस छोड़कर जर्मनी चले गए कि मेहनतकश वर्ग द्वारा सम्पन्न की गई फरवरी क्रान्ति ने पूंजीपति वर्ग को एक बार फिर सत्ता पर अधिकार जमाने और मजदूर वर्ग के खिलाफ इस्तेमाल करने की सम्भावना दी है।

जर्मनी में उन्होंने क्रान्ति का झंडा बुलन्द किया और उस दिन तक घनघोर संघर्ष करते रहे, जब प्रतिक्रिया विजयी हुई और उन्हें फिर से जलावतनी के लिए मजबूर होना पड़ा।

वे जून १८४९ के शुरू में पेरिस लौट आए और राजतन्त्रवादियों के बहुमतवाली विधान सभा की बैठक के समय वहां मौजूद थे।

एक महीना मुश्किल से बीता होगा कि उन्हें सौजन्यपूर्वक २४ घंटे के भीतर नगर छोड़ने को कह दिया गया। तब वे अगस्त १८४९ के अन्त में इंगलैंड चले गए और उसी देश में, जो उस समय संसार के सभी निर्वासितों का आश्रय स्थान था, उन्होंने अपना बाकी जीवन बिताया, चौंतीस साल गुजारे। शुरू में ही मैं यह कहना जरूरी समझता हूं कि अपनी निरन्तर गिरती हुई तन्दुरुस्ती (जिगर की बीमारी, दमे के रोग, फोड़ों के प्रायिक विस्फोटों) और आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद अगर वे अपने आरम्भ किए हुए कार्यभार की पूर्ति कर सके, तो इसका श्रेय फ्रेडरिक एंगेल्स को ही था।

मार्क्स और एंगेल्स की मैत्री ओरेस्तेस और पाइलादेस* की प्राचीन गाथा की तरह ही इतिहास में स्थान पाने के योग्य है। एंगेल्स ने अपने जीवन के अधिकतर भाग में मैंचेस्टर में अपने पिता के कारोबार की एक शाखा का प्रबन्धभार केवल इसलिए ढोया और एक ऐसा व्यवसाय, जो उनके लिए भारी बोझ था, इसलिए चलाया कि मार्क्स को अपना काम पूरा करने में सहायता दे सकें। इसमें तनिक सन्देह नहीं है कि एंगेल्स के बिना मार्क्स और उनका परिवार भूखा मर जाते।

---

*यूनानी पुराण-कथाओं में सच्ची दोस्ती की मिसाल।—सं०

म एक और व्यक्ति के बारे मे भी कुछ शब्द कहना चाहता हू, जिसने मार्क्स के जीवन और परिवार म महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। मेरा अभिप्राय साह्लादपूर्वक लेह्न्न नाम स पुकारी जानवाली श्रेष्ठ महिला हलेन दमुत से है।

वह आठ या नौ साल की उम्र म मेरी परनानी बैरनेस फॉन वस्टफालेन की सेवा मे नियुक्त हुई और मेरी नानी के विवाह के दिन से मत्यु के दिन तक उनक साथ हर जगह—पेरिस, ब्रसेल्स और लन्दन म—बनी रही।

उसन बच्चो की पदाइशें और मौत दखी, मार्क्स परिवार के साथ गरीबी, भूख और विपत्ति की यातनाए झेली, उनके बच्चो, मित्रा और सबत वचित उत्प्रवासिया की दखभाल की, हर चीज के गिरवी हा जाने की हालत म भी खिलान पिलान की गुजाइश निकाली, कपडे सीने और धाने अथवा बीमार होन की हालत म उनकी चारपाइयो के पास बठकर रात गुजारी। मेरे मन म उसकी अधिकतम ममस्पर्शी स्मतिया बनी हुई है।

वह श्लाघनीय महिला मार्क्स, उनकी पत्नी और उनके नाती हैरी के साथ लन्दन के हाईगेट कब्रिस्तान म दफनाए जान की पूर्णत अधिकारिणी थी।

लन्दन मे उत्प्रवासियो की गरीबी

अब म उन नितान्त साधनहीन लन्दन आनेवाले उत्प्रवासी और उत्प्रवासी परिवार के जीवन का सक्षिप्त विवरण देना चाहता हू। मार्क्स और उनके परिवार के लिए वहा दैन्य, यातनाओ और मुसीबता का जीवन प्रारभ हुआ और एगेल्स के नाम मार्क्स के एक पत्र के निम्न उद्धरण से बढकर उस जीवन की बेहतर रूपरेखा और किसी बात द्वारा नही प्रस्तुत की जा सकती कि "म अपनी पत्नी द्वारा रा रोकर गुजारी जानवाली सत्रासकारी रातो को अब और नही झेल सकता"

मकान से निकाले जान पर जून १८५० मे मार्क्स न अपने परिवार के साथ लिसेस्टर स्क्वेयर के एक मामूली होटल और बाद म डान स्ट्रीट मे शरण ली, जहा उनका वासा और भी अधिक अकिंचन था—एक कमरे के

साथ सलग्न एक कोठरी। चुनाचे वही एक कमरा रसोईघर, अध्ययनकक्ष और दीवानखान का काम देता था।

मुसीबत तो लगातार आती ही रही।

फ्रान्सिस्का के जन्म पर मार्क्स ने १८५१ में एंगेल्स को लिखा था '२८ मार्च को मेरी पत्नी ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे की पैदाइश के समय बहुत तकलीफ नही हुई। लेकिन वे शारीरिक कारणों से अधिक आर्थिक कारणों से अभी तक चारपाई से लगी है। मेरे घर में शब्दश कानी कौडी भी नहीं है, लेकिन दुकानदारों, गोश्तवाले, रोटीवाले आदि आदि के बिलो की मेरे पास कोई कमी नही है

तुम स्वीकार करोगे कि ये सारी बातें कुछ अच्छी तस्वीर नहीं पेश करतीं और मैं गले तक टुटपुंजिया दलदल में फसा हुआ हूं। इसके साथ ही मुझपर यह आरोप लगाया जाता है कि मैं मजदूरों का शोषण करता हूं तथा तानाशाही की तमन्ना रखता हूं। कितनी भयंकर बात है!"

इसी प्रकार ८ सितम्बर, १८५२ के पत्र में उन्होंने लिखा था "मेरी पत्नी बीमार है। जेनी" (मेरा मां) "बीमार है। हलेन को एक प्रकार का स्नायविक ज्वर है। मैं डाक्टर बुलाने में असमर्थ रहा हूं और अब भी हूं, क्योंकि मेरे पास दवा के लिए पैसे नही है। पिछले हफ्ते भर में अपने परिवार को रोटी और आलू खिलाता रहा हूं और मैं नहीं जानता कि आज के लिए कुछ और रोटी आलू मुहैया कर सकूंगा कि नही।"

जनवरी १८५५ को छठी सन्तान की पैदाइश हुई। वे उसे तुस्सी (मेरी मौसी एल्यानोरा एवलिंग) पुकारते थे। वह इतनी कमजोर थी कि उसके किसी भी दिन मर जाने की आशंका बनी रहती थी। उसके चन्द महीनो बाद मार्क्स पर उनके जीवन की एक सबसे बडी गाज गिरी उनका एकमात्र बेटा, एडगर, उनका 'मुश', कर्नल मुश" उनकी गोद में ही मर गया। बच्चा हफ्ता से मौत के खिलाफ संघर्ष करता आ रहा था और मार्क्स पत्रों द्वारा उसकी हालत की बेहतरी और बदतरी की सूचना देते जा रहे थे। लेकिन ३० मार्च के पत्र में मार्क्स ने एंगेल्स को लिखा 'बीमारी अन्तत उदर के निचले हिस्से की थाइसिस साबित हुई, जो मेरे परिवार की आनुवंशिक बीमारी है और डाक्टरों ने सारी आशा त्याग दी है मेरा हृदय रक्त के आंसू रो रहा है और मेरा सिर जल रहा है, हालांकि

मुझे शात रहना चाहिए। अपनी बीमारी के दौरान बच्चा अपने गुणो के अनुरूप ही रहा है—नेक और व्यक्तित्व गर्भित।"

बच्चा सचमुच ही बहुत जहीन था और अपन पिता की तरह किताबा का प्रेमी था।

१२ अप्रैल, १८५५ को बेचारे नाना जी ने एगेल्स को लिखा 'बच्चे की मृत्यु के बाद, जो घर की रूह था, हमारा घर नितात शून्य और उजाड हो गया है। म तुम से बयान नही कर सकता कि हर कही हम उसका अभाव कितना अधिक खटकता है। म तरह-तरह की यातनाए भोग चुका हू, लेकिन केवल अब जाकर ही मुझे यह पता चला है कि वस्तुत दुख क्या होता है। म महसूस करता हू कि मैं बिल्कुल टूट गया हू। सौभाग्य स दफन-कफन के दिन स ही मुझे ऐसा सिरदद रहा है कि मुझे मानो जिन्दा होन की ही चेतना नही रही।

इन दिना मने जो भयानक यातनाए भोगी ह, उनम तुम्हारी दोस्ती के खयाल और इस यकीन ने मुझे हमेशा सहारा दिया है कि हम दोना के लिए इस धराधाम पर अभी समझदारी का कोई काम करना बाकी है।'

चन्द हफ्तो बाद नानी जी की माता का देहात हो गया और उन्ह उत्तराधिकार म कुछ सौ थालेर प्राप्त हुए जिससे उनका परिवार ग्रैफ्टन स्क्वेयर के एक अधिक स्वास्थ्यकर मकान म जाकर रहने लगा।

मार्क्स की एक और सन्तान बहुत ही बचपन म मर गई। उसकी मृत्यु के साथ जुडी हुई परिस्थितिया घोर पाशविक थी और नाना जी पर उनकी ऐसी ददनाक छाप पडी कि वे 'कई दिनो तक अपने को सम्भाल नही पाये"।

अनेक वरसा तक मार्क्स और उनके परिवार के लिए जीवन वैसा ही कठोर बना रहा, पर शोक की घडिया कम आई।

«New York Tribune» मे छपनेवाले उनके लेखा की बदौलत उनकी आर्थिक स्थिति कुछ वरसो के लिए जरा बेहतर हो गई और उसके बाद फिर वही गरीबी, जो इतनी क्लेशकर थी कि मार्क्स ने एगेल्स को यह तक लिख दिया 'मेरा इरादा हो रहा है कि अपने बच्चा को कुछ मित्रा के हवाले कर दू, हेलेन देमुत को बर्खास्त कर दू, बीवी के साथ किसी मामूली होटल मे जा बसू और सामान्य खजाची का काम तलाश करू।

उनकी मा की मृत्यु के बाद १८६३ में उन्हे एक छोटा-सा दायभाग मिल गया। कुछ समय बाद उनके पुराने मित्र विल्हेल्म वाल्फ मर गए और अपनी छोटी जमापूजी उनके लिए छोड गए। इससे मार्क्स को अपने कर्ज, जिनमे *«Neue Rheinische Zeitung»* के लिए लिया गया कर्ज भी शामिल था, चुकाने और स्वास्थ्य को ध्यान मे रखते हुए अपने को यथासंभव पूर्ण वैज्ञानिक कार्य मे दत्तचित्त कर देने की सुविधा मिल गई। लेकिन उनका स्वास्थ्य बेहतर नही हुआ और उनका जीवन कई बार खतरे मे पडा।

उसके बाद से शायद ही कोई साल बीता, जिसके दौरान मार्क्स फोडो और गिल्टियो की व्याधि से ग्रस्त न हुए हो, जिनके अलावा जिगर की बीमारी भी परेशान करती रही।

कर्म और संघर्ष का अद्भुत जीवन

इस बात पर प्रकाश डालना दिलचस्प होता कि आर्थिक, नैतिक तथा शारीरिक कठिनाइयो से परेशान मार्क्स किस प्रकार ऐसे महान कार्यभार को साधने मे सफल हुए। लेकिन इन नोटो को बहुत लम्बी नही करना चाहता, इसलिए मैं महज इतना ही जिक्र करूगा कि मार्क्स पूरे का पूरा दिन, सुबह के १० बजे से शाम के ७ बजे तक ब्रिटिश म्युजियम पुस्तकालय मे नीली किताबो, संसदीय विवरणो और दस्तावेजो, सामाजिक तथा आर्थिक अध्ययनो इत्यादि के पन्ने उलटने मे गुजार देते थे और रात रात भर घर पर काम करते थे।

उन्होने अपने लेखन-कार्य द्वारा रोजी कमाने के अनेक प्रयास किए, लेकिन उनके लिए प्रकाशक पाना आम तौर से असभव रहा। इसके अलावा उनका गौण महत्व के कार्यों पर समय गवाना एगेल्स को बर्दाश्त नही था और वे उन्हे हर उपलब्ध क्षण को अर्थशास्त्र सम्बधी महान कृति की तैयारी मे लगाने के लिए प्रेरित करते रहते थे। इसी प्रयोजन से वे मार्क्स की निरन्तर सहायता देते रहे।

लेकिन वह सहायता नाकाफी थी।

«Neue Rheinische Zeitung» से वे महज ऋणग्रस्त हो हुए। यही कारण था कि उन्होने १८५१ मे *«New York Tribune»* के लिए

काम करना स्वीकार कर लिया। इस कारण उन्हें अनेक तरह की सामग्री का अध्ययन करना पड़ा, जिसमें से कुछ उनकी मुख्य वैज्ञानिक कृति में फिट बैठ गई। वे लेख निश्चय ही आधुनिक युग के सामान्य तथा आर्थिक इतिहास के लिए मूल्यवान देन थे।

दुर्भाग्यवश आर्थिक दृष्टि से उन्हें उन लेखों के ततीयांश के लिए ही पैसे प्राप्त हुए, क्योंकि बाकी लेख संपादक ने प्रकाशित नहीं किये, अस्तु उनके पैसे देने के लिए भी वे अपने को बाध्य नहीं समझते थे।

यह कहना जरूरी है कि उस आभारहीन साहित्यिक कार्य के प्रति, जिससे उन्हें अपने परिवार का भरण-पोषण करने की भी सुविधा नहीं होती थी, मार्क्स ने बहुत भारी मन से अपने को अर्पित किया था।

१८५२ में उनका अधिकांश समय कम्युनिस्ट लीग के कोलोनवाले तथा दूसरे सदस्यों की गिरफ्तारी और उनके खिलाफ चलाए गए मुकदमे में लग गया। मार्क्स ने लंदन में अपने मित्रों के साथ मिलकर यह साबित करने के लिए अथक रूप में काम किया कि मुकदमा पुलिस और सरकार की साजिश के सिवा और कुछ नहीं है।

यहां इस बात का उल्लेख भी जरूरी है कि इसी समय जब मार्क्स कठिनाइयों के बोझ से पिसे जा रहे थे, उन्होंने अपनी अध्यवसाय-साध्य उदात्त और सूक्ष्मदर्शी कृति 'अठारहवीं ब्रूमेर' की रचना की थी और उस पूरे दौर में मार्क्स घर से बाहर नहीं निकल सकते थे, क्योंकि उनके सारे कपड़े गिरवी हो चुके थे।

और साल बीतते गये। ऐसी ही आर्थिक कठिनाइयों में, लम्बी बीमारियों में, बेतहाशा काम की अवधियों में, और इन सभी चीजों के बावजूद उनकी महान कृति जारी रही। वह एक योद्धा, एक चिंतक और एक स्रष्टा की कृति थी, क्योंकि मार्क्स ने अध्ययन-कक्ष तक ही अपने काम को सीमित न रखकर अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संघ के संचालन में भी अपने को निरन्तर उतना ही खपाया, जितना अपनी प्रकाण्ड सैद्धान्तिक कृति की रचना में।

सब कुछ होते हुए भी उनका घर, खास तौर से जब वे मेटलैंड पार्क में रहते थे (नाजी बमवर्षकों ने उसे भी नहीं बख्शा), सभी उत्प्रवासियों और सभी संघर्षशीलों के लिए आश्रय-स्थान था, चाहे वे अंग्रेज हों या विदेशी।

बचपन से ही मेरे मानस-पट पर उस घर का व्याप्त वातावरण अंकित है, जिसमें मार्क्स अपनी पत्नी – जो बच्चों की मौता और यातनाओं के बावजूद हमेशा अपने मेहमानों का, जिनमें से अधिकतर उत्प्रवासी होते थे, मुस्कुराती हुई स्वागत करती थी – और अपनी पुत्रियों – जेनी, लौरा (बाद को पाल लफार्ग की पत्नी) तथा एल्यानोरा – के साथ रहते थे। उनकी तीनों पुत्रियां अपनी मेधा और शिष्टता शालीनता के कारण असाधारण थीं और उनमें से प्रत्येक का अलग अलग जीवन चरित लिखा जाना चाहिए।

मार्क्स की बेटियां उनकी आराधना करती थीं, वे स्वयं बच्चों के प्रति अनुरक्त थे और यह समझना आसान है कि उनके लिए सन्तान विछोह का दुःख कितना दारुण रहा होगा। हां, मार्क्स बच्चों के दीवाने थे और उनके साथ सदा स्नेहशील और आनन्दित बने रहते थे। उस दुर्द्धर्ष योद्धा के अंतस्तल में संवेदनशीलता, दयार्द्रता तथा कोमल समर्पणशीलता का भंडार था।

वे बच्चों के साथ इस तरह खेलते थे, जैसे स्वयं बच्चे हों और उस समय इस बात की तनिक चिन्ता नहीं करते थे कि उनकी मर्यादा को कोई धक्का लग सकता है। अपने नगर खण्ड में वे "मार्क्स बप्पा" के नाम से प्रख्यात थे और इन महाशय की जेब में नन्हे मुन्नों के लिए सदा मिठाई रहा करती थी।

बाद में उन्होंने अपना यह स्नेह अपने नातियों पर लुटाया। "तुम्हें और तुम्हारे नन्हे मुन्नों को अनेक चुम्मियां," उन्होंने मेरी मां को लिखा था। उनका कोई पत्र ऐसा नहीं होता था, जिसमें बच्चों की चर्चा न हो

'जान और तुम्हारे दूसरे बच्चे जो कुछ करते रहे हैं, अब उन सब का मुझे विवरण लिखो।"

मेरी मां को १८८१ में लिखे गये एक पत्र में उन्होंने कहा था

"एंगेल्स की मदद से तुस्सी ने अभी अभी बच्चों को बड़े दिन के उपहारों का पार्सल भेजा है। हेलन खास तौर पर तुम से यह कहने को तावाद करती है कि वह हैरी" (मार्क्स की मृत्यु के शीघ्र ही बाद वह भी चल बसा था) "के लिए फ्राक, एड्डी के लिए ' (मेरे लिए) 'फ्राक और पा' (मेरा भाई मार्सेल) "के लिए एक टोपी भेज रही है। पा के लिए लौरा एक नीला सूट भी भेज रहा है। मेरी तरफ से प्रिय जानी के लिए एक नौसैनिक वर्दी है। मां अपने जीवन के बिलकुल अन्तिम दिनों में

लौरा से यह कहती हुई कितने आनन्दपूर्वक हसा करती थी कि जॉनी के साथ हम और तुम किस तरह एक सूट खरीदने पेरिस गए थे, जिसे पहनकर वह «Bourgeois Gentilhomme» जैसा दीखने लगा था।"

चूकि जॉनी सबसे बडा था, इसलिए वही सबसे अधिक उनके पास जाता था।

एक दूसरे पत्र म उन्होंने मेरी मा को लिखा था, "जॉनी को बताना कि कल जब म मेटलैण्ड पाक मे टहल रहा था, तो रखवाले ने अपनी पूरी गरिमा के साथ आकर मुझसे पूछा कि जॉनी के क्या हालचाल हैं।"

अपने नाती-नातिनो के बारे मे वे जो शब्दावली इस्तेमाल करते थे वह अक्सर उतनी ही मौलिक होती थी, जितनी रोचक

'जानी, हैरी और नेक "भेडिये' का ढेरा-ढेरा चुम्मिया। जहा तक "महान अज्ञात" का सम्बन्ध है, उसके साथ म ऐसी आजादी नही ले सकता।" (उनका आशय मेरे भाई मार्सै से था जा अप्रैल, १८८१, मे पदा हुआ था और जिसे उन्होन अभी देखा नही था।)

नाती नातिना के प्रति उनके स्नेह को व्यक्त करन क लिए नानी जी की मत्यु के कुछ ही दिन बाद मेरी मा को लिखे गये उनके एक पत्र के अन्तिम वाक्य को उद्धत करने से बेहतर और कुछ नही हो सकता

"म तुम्हारे साथ अनेक मधुर दिन गुजारन और नाना के रूप मे अपने कत्तव्य की ढग से पूत्ति करने की आशा करता हू।"

अफसोस है कि वे अपनी यह आकाक्षा पूरी न कर सके।

बार-बार की बीमारिया से आक्रान्त और अपनी पत्नी की मृत्यु से बिलकुल टूटे हुए माक्स को चन्द महीने बाद ही, जनवरी १८८३ मे, अपनी सबसे बडी बेटी, मेरी मा, जेनी लॉगे की मृत्यु का जबदस्त धक्का सहना पडा। यातनाओ और दुर्दैय के अनेकानक बरसा के ऊपर इस अतिम चोट ने प्रतिभा के धनी उस इसान को १४ माच, १८८३ का मत्यु की गोद म पहुचा दिया, जिसने सवहारा वग की मुक्ति की तयारी मे अपना जीवन उत्सग कर दिया था और जो मानवजाति के सुख के लिए अपनी अतिम सास तक लडता रहा था।

फ्रेडरिक एगेल्स ने उनपर मिट्टी डाले जान के बाद ठीक ही कहा था

"उनका नाम और काम युग-युगो तक अमर रहेगा!"

आत्मस्वीकृतियां*

आपका अभीष्ट गुण	सादगी
पुरुषों के लिए	सबलता
स्त्रियों के लिए	दुर्बलता
आपकी मुख्य चारित्रिकता	उद्देश्य की अनन्यता
आपकी नज़र में सुख क्या है	संघर्ष
आपकी नज़र में दुःख क्या है	परवशता
आपके निकट क्षम्य दोष	सहजविश्वास
आपके निकट घृण्य दोष	चाटुकारिता
आपके लिए असह्य	मार्टिन टप्पर**
प्रिय काम	किताबें चाटना
प्रिय कवि	शेक्सपियर, एस्कीलस, गेटे
प्रिय गद्यकार	दिदेरो
प्रिय वीरनायक	स्पार्टकस, केप्लर**

---

*१८६५ की ये आत्मस्वीकृतियां मार्क्स द्वारा दिये गये उन प्रश्नों के उत्तर हैं, जिनकी उस समय ब्रिटेन और जर्मनी में काफ़ी चर्चा रही। कुछ हद तक मज़ाकिया होते हुए भी ये उत्तर मार्क्स के चरित्र चित्रण की दृष्टि से दिलचस्प हैं। सं०

**टप्पर, मार्टिन (१८१०–१८८९)–अंग्रेज़ लेखक, जिसे मार्क्स थोथेपन का अवतार मानते थे।–सं०

**केप्लर, जोहान (१५७१–१६३०)–जर्मन ज्योतिषी जिन्होंने कोपरनिकस की शिक्षा के आधार पर ग्रह-गति की खोज की।–सं०

प्रिय वीरनायिका	ग्रेत्खेन *
प्रिय फूल	दाफ्ने
प्रिय रंग	लाल
प्रिय नाम	लौरा, जेनी
प्रिय खाद्य	मछली
प्रिय सूक्ति	Nihil humani a me alienum puto **
प्रिय आदर्शवाक्य	De omnibus dubitandum ***

काल मार्क्स

---

* ग्रेत्खेन – गेटे के 'फाउस्ट' की मर्गारीता के नाम का लघु रूप। – स०

** जो कुछ, जैसा है इनसान, मैं हूं सब उससे अनजान। – स०

*** अच्छी तरह जानो, फिर मानो। – स०

मार्क्स के महान चरित्र की कुछ लाक्षणिकताएं*

मेरे पिता अपने विद्यार्थी जीवन में कार्ल मार्क्स के उत्साही प्रशंसक बन गये थे। वे 'नोर्मानिया' नामक एक विद्यार्थी-क्लब के सदस्य थे और उसी क्लब के एक अन्य सदस्य, माइकेल, से मार्क्स का लंदन का पता प्राप्त कर उन्होंने मार्क्स को पत्र लिखा। मार्क्स का उत्तर आने पर उन्हें बेहद खुशी हुई और धीरे धीरे दोनों के बीच नियमित पत्राचार शुरू हो गया। मार्क्स को "ए० विलियम्स" के नाम से पत्र भेजे जाते थे, क्योंकि उनके पत्राचार की सरकारी तौर पर जांच की जाती थी, पत्र खोलकर देखे जाते थे और अक्सर रोक लिए जाते थे। ठीक इसी कारण मेरे पिता अपने पत्रों में मार्क्स को उनके नाम से न सम्बोधित करने की एहतियात बरतते थे और उन्हें "मेरे आदरणीय और प्रिय मित्र" के रूप में संबोधित करते थे।

और जब बाद, जब मार्क्स ने लिखा कि वे यूरोप आने का इरादा कर रहे हैं, तो मेरे पिता ने, जिन्होंने अब तक शादी कर ली थी, उन्हें अपना आतिथ्य स्वीकार करने को लिखा और मार्क्स ने चन्द दिनों के लिए वह निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

---

*कुगेलमान फ्रांसिस्का — मार्क्स और एंगेल्स के एक मित्र, जर्मन डाक्टर लुडविग कुगेलमान की बेटी। सन् १९२८ में लिखित उनके संस्मरणों का एक अंश प्रकाशित किया जाता है। — सं०

हुई और विस्मृति के कुहासे से कभी भी आच्छादित न होनेवाली दीप्तिमान पहाड़ी चोटियों के समान था

मार्क्स केवल हमारे पारिवारिक क्षेत्र में ही घुले मिले और प्रातिवर नहीं होते थे, बल्कि मेरे माता पिता के परिचितों के साथ भी हर चीज में दिलचस्पी लेते थे और जब वे किसी व्यक्ति द्वारा खास तौर से आनंदित होते अथवा कोई व्यंग-चातुरी की बात सुनते, तो अपना एक शीशेवाला चश्मा चढ़ाकर सम्बन्धित व्यक्ति को दोस्ताना दिलचस्पी से देखते।

उनकी नजर कुछ कमजोर थी, लेकिन वे चश्मा केवल तभी लगाते थे, जब उन्हें देर तक पढ़ना या लिखना होता था। मेरे माता पिता उनके साथ सवेरे-सवेरे हुई बातचीतों को, जब वे सर्वथा निश्चिन्त होते थे, विशेष आनन्द के साथ दोहराया करते थे। इसीलिए मेरी मां बहुत सवेरे ही उठकर नाश्ते से पहले घर का सारा काम-काज निबटा दिया करती थी। वे अक्सर कॉफ़ी की मेज के गिर्द घंटों बैठे रहा करते थे और जब मेरे पिता को अपने काम के लिए उठकर जाना पड़ता था, तो उन्हें हमेशा अफ़सोस होता था।

वे मार्क्स के आन्तरिक जगत और उनके बाह्य जीवन की परिस्थितियों के बारे में ही नहीं, बल्कि कला, विज्ञान, कविता और दर्शन के सभी क्षेत्रों के सम्बन्ध में भी बातचीत किया करते थे। मार्क्स जितने सज्जन और शालीन थे, उतने ही महान भी, वे कभी भी विद्या-दम्भ का लेश तक नहीं प्रदर्शित करते थे। मेरी मां की दर्शन में बड़ी दिलचस्पी थी, यद्यपि उसका कोई गहरा अध्ययन उन्होंने नहीं किया था। मार्क्स ने उनसे कांट, फ़िक्टे और शापनहावर और कभी-कभी हेगेल के बारे में भी बात की। जवानी में मार्क्स हेगेल के उत्साही अनुयायी रह चुके थे। उन्होंने स्वयं हेगेल की इस उक्ति का हवाला दिया कि उनके विद्यार्थियों में एकमात्र रोजेनक्रान्त्स ने ही उन्हें समझा था, सो भी गलत

मार्क्स को भावुकता से गहरी घृणा थी, जो वास्तविक अनुभूति का महज विकृत रूप होता है। समय-समय पर वे गेटे की इस उक्ति का हवाला देते रहते थे "भावुक सज्जनों के बारे में मेरा कभी ऊंचा ख्याल नहीं रहा है, अगर कोई घटना हो जाए, तो निश्चय ही वे बुरे साथी साबित होंगे।" अगर उनकी उपस्थिति में कोई अतिशय भावुकता का प्रदर्शन करता तब वे हाइने की ये पंक्तियां दोहराते थे

कितनी घोर पीडा और भय से अभिभूत खडी
सागर के तट पर बेचारी एक बालिका।
किन्तु उसको क्लेश, दुख हो रहा किस बात का?
मात्र इसी बात का कि सूर्यास्त हो गया।

हाइने को मार्क्स व्यक्तिगत रूप से जानते थे और उस अभागे कवि से उनके जीवन के अंतिम दिनो मे पेरिस मे मिले थे। उनकी यंत्रणाए इतनी प्रबल थी कि छुआ जाना भी उन्हे असह्य था और नर्सें उन्हे चादरो के सहारे बिस्तर पर पहुचाती थी। लेकिन ऐसी हालत मे भी हाइन की विनोदप्रियता कायम रही थी और उन्होने मार्क्स से कमजोर आवाज मे कहा था "देखिये, प्रिय मार्क्स, महिलाए अब भी मुझे उठाये-उठाये फिरती है।"

हाइने के चरित्र के बारे मे मार्क्स की राय बहुत खराब थी। उन्होने कवि की सहायता करनेवाले मित्रो के प्रति उनकी कृतघ्नता के लिए विशेष रूप से उनकी भर्त्सना की। मिसाल के लिए क्रिस्टिआनी के सम्बन्ध मे इन पंक्तियो का व्यंग "इतने प्रियकर तरुण के लिए कोई भी प्रशसा न अधिक है', इत्यादि।*

मार्क्स के लिए मैत्री पुनीत थी। एक बार उनके पास आए हुए एक साथी ने यह रायजनी करने की आजादी ली कि फ्रेडरिक एंगेल्स काफी सम्पन्न व्यक्ति हैं और इसलिए मार्क्स की विकट धनाभाव की दिक्कतो से उन्हे बचाने के लिए और अधिक सहायता कर सकते थे। मार्क्स ने इन शब्दो के साथ उन्हे चुप कर दिया कि मेरे और एंगेल्स के सम्बन्ध इतने आतरिक और स्नेहमय है कि किसी को उनमे हस्तक्षेप करने का अधिकार नही है। जब कोई उनसे अप्रिय बात कहता तब वे आम तौर से मजाक मे जवाब देते थे। सामान्यत वे कभी भी प्रतिवाद के भाडे साधन नही अपनाते थे बल्कि ऐसे तीखे कटाक्षो द्वारा प्रतिकार करते थे, जो सीधे अपने निशान पर बैठते थे।

---

*हाइने के नजदीकी दोस्त रुडोल्फ क्रिस्टिआनी को अर्पित हाइने की व्यंग कविता से अभिप्राय है।—स०

विज्ञान का शायद ही कोई क्षेत्र रहा हो, जिसमे उनकी गहरी पैठ न रही हो, कोई भी ऐसी कला नही थी जिसके वे अनुरागी न रहे हो और प्राकृतिक सौदर्य का कोई भी ऐसा रूप नही था, जिसपर वे मुग्ध न हुए हो। लेकिन वे मिथ्याचार, कृत्रिमता, जीटवाजी और छल छद्म नही झेल सकते थे।

दोपहर के खाने से पहले वे लगभग डेढ घटे तक अपने खाने के कमरे से सटे हुए कमरे मे या तो पत्र लिखते थे, या काम करते थे अथवा अखबार पढते थे। वही पर उन्होने 'पूजी' के पहले खण्ड का सम्पादन भी किया था। वहा बुद्धि की देवी (माइनर्वा मडिका) के चिह्न—लघु उलूक—सहित उसकी एक मूर्ति रखी थी। मार्क्स ने, जो मेरी मा की नेकदिली, उनकी समझ बूझ तथा सौहार्द, उनके ज्ञान, विशेषत काव्य और साहित्य के ज्ञान के, जो उनकी आयु को देखते हुए व्यापक था, बडे प्रशसक थे, एक बार हसी हसी मे ही कहा कि आप तो स्वय ही बुद्धि की तरुणी देवी है। मेरी मा ने उत्तर दिया, "नही, मै तो मात्र वह लघु उलूक हू, जो उसके चरणो मे बैठा सुनता रहता है।" इसी कारण वे मेरी मा को कभी कभी "मेरी प्रिय लघु उलूक" कहा करते थे, जो नाम उन्होने बाद मे एक छोटी सी बच्ची को दे दिया, जिसे वे बहुत प्यार करते थे और जो उनके घुटनो पर चढी बैठी उनके साथ खेलती और बतियाती रहती थी।

मेरी मा लोगो से मिलने-जुलने मे बहुत सलीके से काम लेती थी और या भी तौर-तरीके वाली महिला थी, इसलिए मार्क्स उन्हे "श्रीमती काउटेस" कहने लगे थे। जल्दी ही वे हर किसी की उपस्थिति मे उन्हे केवल इसी नाम से पुकारते।

वैसे मार्क्स परिवार मे लोगो को उपनाम देने की एक आदत सी थी। खुद उन्हे उनकी बेटिया और उनके मित्र "मूर" कहकर पुकारते थे। उनकी दूसरी बेटी लौरा, श्रीमती लफार्ग आम तौर से «Das Laura» या एक पुराने उपन्यास के फैशनी दर्जी के नाम पर "मास्टर काकादू" कहलाती थी, क्योकि वे बहुत ही सुन्दर और सुरुचिपूर्ण ढग से पहनती ओढती थी। मार्क्स अपनी सबसे बडी बेटी जेनी को "जेनीहेन" पुकारते थे। मेरी मा ने जेनी के उपनाम की भी चर्चा की थी, लेकिन वह मुझे याद नही रहा। उनकी छोटी बेटी एल्यानोरा सदा "तुस्सी" कहलाती थी।

माक्स ने मेरे पिता को वेत्सेल नाम दे रखा था। कारण यह था कि उन्होंने माक्स से एक बार कह दिया कि प्राग मे एक गाइड न उन्हे दो बोहेमियाई शासको, एक अच्छे और दूसरे बुरे वेत्सेल, के बारे मे बहुत बता दिया था। बुरे वेत्सेल ने सत नेपोमुक को मोल्दवा मे फेंकवा दिया था और अच्छा वेत्सेल बडा ही धर्मात्मा था। मेरे पिता अपने सहज समर्थन तथा सहज विरोध के बारे मे अत्यन्त स्पष्टवादी थे और माक्स उन्हे उनके रुख के अनुसार अच्छा या बुरा वेत्सेल कहते थे। बाद मे उन्होंने मेरे पिता के नाम "अपने वेत्सेल को" समर्पित अपना एक फोटो भी भेजा था।

वे मेरे माता-पिता के मित्रो और परिचितो को उनकी अनुपस्थिति मे अक्सर दूसरे-दूसरे नाम देते रहते थे और कहते थे कि वे ही उनके असली नाम होने चाहिए, हालाकि वे प्राय ऐसे ही नाम चुनते थे, जो बहुत लाक्षणिक नही, बल्कि आम होते थे। फलत हर बार जब माक्स का परिचय हमारे किसी परिचित से कराया जाता, तो बाद मे मेरे पिता उनसे पूछते "हा, माक्स, उसका असली नाम क्या होना चाहिए था?"

माक्स सदा उल्लसित रहते थे, मजाक करने और छेडने के लिए तैयार और जब कोई भोडे ढग से उनकी शिक्षा के बारे मे कुछ पूछ बैठता, तब उनका मन सर्वाधिक उचट जाता था। वे ऐसे सवालो का जवाब कभी नही देते थे। परिवार मे वे अपनी बाबत इस कुतूहल को निकम्मा जिज्ञासा कहा करते थे। लेकिन ऐसा बहुत कम होता था।

एक बार किसी सज्जन ने उनसे पूछ लिया कि भावी राज्य मे जूते कौन साफ करेगा। उन्होंने चिढकर उत्तर दिया, "आप करेगे!" फूहड प्रश्नकर्त्ता समझ गए और चुप्पी साध गए। वह शायद एकमात्र अवसर था, जब माक्स आपे से बाहर हो गये थे

हर कही से, अक्सर सुदूरतम स्थानो से, पार्टी के साथी माक्स से मिलने आते थे। वे उन सब से अपने कमरे मे मिलते थे। राजनीति पर अक्सर लम्बी बहसे शुरू हो जाती थी जो बाद को मेरे पिता के अध्ययनकक्ष मे जारी रहती थी

विज्ञान और ललित कलाओ की भाति ही कविता मे भी माक्स की रुचि सर्वाधिक परिष्कृत थी। उनका ज्ञान भण्डार असाधारण था और स्मरण

शक्ति ग्रद्भुत थी। यूनान के क्लासीकी महाकवियों, शेक्सपियर ग्रौर गटे के व मेरे पिता की तरह ही बडे प्रशसक थे ग्रौर शमिस्सो ग्रौर र्‍याक्त* जैसे कवि उन्हे प्रिय थे। व शमिस्सो की ममस्पर्शी कविता 'भिखारी ग्रौर उसका कुत्ता' के ग्रश उद्धृत करते रहते थे। व र्‍यक्त की लेखन-कला के, विशेषत ग्रपनी मौलिकता म ग्रद्वितीय 'मकामेहरीरी' के उनके श्रेष्ठ ग्रनुवाद पर मुग्ध थे। सालो बाद मार्क्स ने वह कृति उन दिनो की याद मे मेरी मा को भेट की थी।

भाषाग्रो के लिए मार्क्स की प्रतिभा ग्रदभुत थी। ग्रग्रेजी के ग्रलावा व फ्रान्सीसी इतनी ग्रच्छी जानते थे कि उन्होंने 'पूजी' का फ्रासीसी म खुद ग्रनुवाद किया।** ग्रीक, लातीनी, स्पेनी ग्रौर रूसी भाषाग्रो का उनका ज्ञान इतना ग्रच्छा था कि व उन्हे ऊचे-ऊचे पढते हुए साथ ही साथ जर्मन मे ग्रनुवाद भी कर सकते थे। जब वे जहरवाद स ग्रस्त थे, तब उन्होने "मनबहलाव के साधन' के रूप मे रूसी ग्रपने ग्राप सीखी थी।

उनकी राय थी कि तुर्गेनेव*** ने स्लावी ग्रावृत भावुकता से पगी रूसी ग्रात्मा की विलक्षणताग्रो का ग्राश्चयजनक रूप से सही चित्रण किया है। उनके विचार से शायद ही किसी लेखक ने लेर्मान्तोव**** स ग्रधिक सुदर प्रकृति वर्णन किया हो, उनकी बराबरी भी बहुत कम ही कर पाये ह।

---

* शमिस्सो, ग्रदालबत (१७८१–१८३८)–जमन रोमानी कवि, ग्रपनी कविताग्रो मे सामन्ती प्रतिक्रिया पर बरसे। र्‍योक्त, फ्रेडरिक (१७८८–१८६६)–जमन रोमानी कवि तथा पूर्वी कविताग्रो के ग्रनुवादक। –स०

** 'पूजी' के पहले खण्ड का ग्रनुवाद फ्रासीसी म मार्क्स न नही किया था, बल्कि उन्होंने जामिनी रुग्रा के ग्रनुवाद का, जिससे व सन्तुष्ट नही थे, सावधानी के साथ सम्पादन किया था।–स०

*** तुर्गेनेव, इवान सेर्गेयेविच (१८१८–१८८३)–महान रूसी लेखक।–स०

**** लेर्मान्तोव, मिखाईल यूर्येविच (१८१४–१८४१)–महान रूसी कवि।–स०

शक्ति अदभुत थी। यूनान के क्लासीकी महाकवियों, शेक्सपियर और गेटे के वे मेरे पिता की तरह ही बड़े प्रशंसक थे और शमिस्सो और रयाक्‍त* जैसे कवि उन्हें प्रिय थे। वे शमिस्सो की मर्मस्पर्शी कविता 'भिखारी और उसका कुत्ता' के अंश उद्धृत करते रहते थे। वे रयाक्‍त की लेखन-कला के, विशेषतः अपनी मौलिकता में अद्वितीय 'मकामेहरीरी' के उनके श्रेष्ठ अनुवाद पर मुग्ध थे। सालों बाद मार्क्स ने वह कृति उन दिनों की याद में मेरी मां को भेंट की थी।

भाषाओं के लिए मार्क्स की प्रतिभा अदभुत थी। अंग्रेज़ी के अलावा वे फ़ांसीसी इतनी अच्छी जानते थे कि उन्होंने 'पूंजी' का फ़ांसीसी में खुद अनुवाद किया।** ग्रीक, लातीनी, स्पेनी और रूसी भाषाओं का उनका ज्ञान इतना अच्छा था कि वे उन्हें ऊंचे-ऊंचे पढ़ते हुए साथ ही साथ जर्मन में अनुवाद भी कर सकते थे। जब वे जहरबाद से ग्रस्त थे, तब उन्होंने "मनबहलाव के साधन" के रूप में रूसी अपने आप सीखी थी।

उनकी राय थी कि तुर्गेनेव*** ने स्लावी आवृत भावुकता से पगी रूसी आत्मा की विलक्षणताओं का आश्चर्यजनक रूप से सही चित्रण किया है। उनके विचार से शायद ही किसी लेखक ने लेर्मोन्तोव**** से अधिक सुंदर प्रकृति वर्णन किया हो, उनकी बराबरी भी बहुत कम ही कर पाये हैं।

---

*शमिस्सो, अदालबर्त (१७८१–१८३८)–जर्मन रोमानी कवि, अपनी कविताओं में सामंती प्रतिक्रिया पर बरसे। रयोकेत, फ्रेडरिक (१७८८–१८६६)–जर्मन रोमानी कवि तथा पूर्वी कविताओं के अनुवादक। –सं०

**'पूंजी' के पहले खण्ड का अनुवाद फ़ांसीसी में मार्क्स ने नहीं किया था, बल्कि उन्होंने जामिनी रूआ के अनुवाद का, जिससे वे सन्तुष्ट नहीं थे, सावधानी के साथ सम्पादन किया था। –सं०

***तुर्गेनेव, इवान सेर्गेयेविच (१८१८–१८८३)–महान रूसी लेखक। –सं०

****लेर्मोन्तोव, मिख़ाईल यूर्येविच (१८१४–१८४१)–महान रूसी कवि। –सं०

स्पेनियो म उनके प्रियपात्र काल्देरो* थे, जिनकी कई कृतिया वे अपने साथ लाये थे और हम पढकर सुनाया करते थे

हमारे मकान म पाच खिडकिया वाला एक बडा-सा कमरा था जिसे हम हॉल कहते थे और जहा हम सगीत का अभ्यास किया करते थे। घनिष्ठ मित्र उसे ओलिम्पस कहते थे, क्योकि वहा दीवारो के साथ साथ यूनानी देवताओ की मूर्तिया रखी हुई थी। और उन सब के ऊपर आसीन थे जीयस ओत्रिकोलस।

मेरे पिता का विचार था कि मार्क्स जीयस से बहुत मिलते जुलते थे और इस बात पर बहुत से लोग सहमत थे। प्रचुर केशराशि मडित दोना के बडे-बडे सिर थे, चितन रेखाओ सहित भव्य ललाट थे रोबीली किन्तु सदय मुखाभिव्यक्ति थी। मेरे पिता का खयाल था कि मार्क्स का शात, किन्तु जोशीला एव जीवत स्वभाव, जिसम न अन्यमनस्कता थी और न ही शून्यमनस्कता, उन्हे उनके प्रिय ओलिम्पियाइयो की समरूपता प्रदान करता था। व इस जुगुप्सा के कि 'क्लासीकी देवता रागहीन शाश्वत शाति ह" मार्क्स द्वारा दिए गए यथाचित उत्तर का हवाला दना पसन्द करते थे। मार्क्स का उत्तर यह था कि "उल्टे वे अशातिरहित शाश्वत राग ह। मेरे पिता उन लोगो के बारे म अपनी राय प्रगट करते हुए बहुत उत्तेजित हो जाते थे, जो पार्टी की राजनीतिक कारवाइया म मार्क्स को घसीटने की कोशिश करते थे। वे चाहते थे कि देवताओ और मनुष्यो के ओलिम्पियाई पिता की भाति मार्क्स रोजमर्रा की कारवाइयो मे अपना अमूल्य समय न गवाकर केवल ससार म अपना विद्युत्स्फूरण और यदाक्दा वज्रस्फलिंग प्रक्षेपित करते रह। गम्भीर चर्चाओ और हसी मजाक मे दिन उडते चले गये। मार्क्स स्वय इस दौर को अवसर अपने जीवन के रेगिस्तान का नखलिस्तान कहते थे।

दो साल बाद मेरे माता पिता को फिर मार्क्स का आतिथ्य-सत्कार करने का सुख प्राप्त हुआ। इस बार उनकी सबसे बडी बेटी जेनी भी उनके साथ थी, जो काले घुघराले बालो वाली आकर्षक छरहरी लडकी थी और

---

*काल्देरो, पेद्रो (१६००–१६८१)–प्रसिद्ध स्पेनी नाटककार। –स०

स्वभाव तथा रूप मे अपने पिता से बहुत मिलती-जुलती थी। वे खुशमिज़ाज, ज़िदादिल और सौहादपूण तथा अपने तौर-तरीका म बेहद परिष्कृत और सलीकेदार था। वे हर अशिष्ट और दिखावटी चीज़ से नफरत करता था।

मेरी मा की झटपट उनसे दोस्ती हो गई और जेनी के प्रति उनका स्नेह जीवन पयन्त बना रहा। मेरी मा अक्सर कहा करती थी कि जेनी न कितना अधिक पढा हे, उसका दष्टिकोण कितना व्यापक है और हर उत्कृष्ट एव सुदर चीज के प्रति उसे कितना अनुराग है। जेनी शेक्सपियर की बडी प्रशसिका थी और निश्चय ही उनम नाटकीय प्रतिभा रही होगी, क्योकि एक बार लदन की किसी रगशाला मे उन्होंने लेडी मक्बेथ की भूमिका अदा की थी। एक बार हमारे घर पर भी, लेकिन केवल मेरे माता पिता और अपन पिता की मौजूदगी म, उन्होने पत्र के पशाचिक दश्य म वह भूमिका अदा की थी। लदन के उपरोक्त अभिनय द्वारा अर्जित धन से उन्होंने उस वफादार परिचारिका के लिए एक मखमली कोट खरीदा था, जो उनके परिवार के साथ त्रियेर छोडकर ब्रिटेन आई थी और जिसका प्रेम और लगाव सुख दुख तथा अभावा के दौरान भी उन सभी के प्रति अडिग रहा था।

मार्क्स परिवार मे पैसो के मामले म किसी को भी किफायतशारी अथवा व्यावहारिकता का गुण नही प्राप्त था। जेनी ने बताया कि उनकी मा को अपनी शादी के फौरन ही बाद कुछ विरासत मिली। युवा दम्पत्ति ने पूरी सम्पत्ति नकदी के रूप मे ली और उस दो हैडला वाली एक छाटी-सी तिजारी मे डाल लिया, जिसे कोच मे रखकर वे अपनी मधुमास का यात्रा के दौरान विभिन्न होटलो मे, जहा-जहा वे ठहरे, लिये फिरे। जब ज़रूरतमद दोस्त या हमखयाल मिलन आते तो व अपने कमरे म तिजोरी को खालकर मेज़ पर रख देते, जिसमे से कोई भी मनचाही रकम ले सकता था। जाहिर है कि तिजारी जल्दी ही खाली हो गई। बाद का लदन म उन्ह अक्सर कठोर अभाव झेलने पडे। मार्क्स ने बताया कि अक्सर उन्ह अपने पास की हर कीमती चीज़ गिरवी रखने या बेचने के लिए मजबूर हाना पडा। फान वेस्टफालेन परिवार की आगिल्ल के ड्यूको के साथ दूर का रिश्तदारी थी। जब जेनी फॉन वेस्टफालेन ने मार्क्स से शादी की, ता उनके दहेज म चादी की ऐसी चीजें भी शामिल थी, जिनपर आगिल्ल का कुल चिह्न अंकित

था और जो लम्बे अर्से स फान वस्टफालेन परिवार [illegible] थी। एक बार स्वय मार्क्स चादी व चन्द भारी चम्मच [illegible] उनस इस बात की सफाई मागी गई कि उन [illegible] वाली व वस्तुए उन्ह किस प्रकार प्राप्त हुई। [illegible] उन्ह कोई कठिनाई नहीं हुई।

जब उनक एकमात्र पुत्र की मत्यु [illegible] कि कफन-दफन का खच भी [illegible] सफल हो गए

जेनी न अपनी हनोवर का [illegible] आत्मस्वीकृति-पुस्तिका कहलानवाली [illegible] फिर जमनी म तब एसी पुस्तिकाओ का चलन [illegible] के नाम स नमूदार हुइ। मार्क्स का हा उसम सबस [illegible] थे और जेनी न पहल पष्ठ पर उनक लिए [illegible] लकिन मार्क्स ने उनके उत्तर नहीं दिय थ। [illegible] लिखित आत्मस्वीकृति जेनी के स्वभाव के [illegible] म उसकी नकल यहा दे रही हू।

जेनी न अग्रेजी म लिखा था क्योकि व जमन म अग्रेजी बहतर लिख सकती थी। उन्होने बताया कि जमन म व चार पन्नो पर जितना लिख सकती थी, अग्रेजी म उतना ही लिखन क लिए एक पन्न पर्याप्त था क्योकि अग्रेजी सक्षिप्ततर, अधिक सटीक और प्रासगिक है। व अपने अतरग पत्र फ्रासीसी म लिखती थी जिसे व हार्दिकतर और निजी या भावनाओ की अभिव्यक्ति के लिए अधिक उपयुक्त समझती थी। उनका जमन भाषा का उच्चारण उनके पिता की भाति ही शुद्ध राइनी प्रदेश का था। व कभी राइनी प्रदेश म रही नहा थी लकिन उन्होन बचपन म अपने माता पिता और वियर की वफादार परिचारिका म वही उच्चारण सुना था।

उक्त आत्मस्वीकृति को समझने के लिए चन्द बातो का स्पष्टीकरण आवश्यक है। जेनी का कहना है कि नारी के लिए उनका प्रिय गुण निष्ठा

---

*ऐसी ही प्रश्नावली के मार्क्स द्वारा दिय गय उत्तर प्रस्तुत पुस्तक क पष्ठ २३०–२३१ पर दिय गय ह। – स०

है। जिस शाम को उन्होंने यह लिखा था, तब बातचीत धम पर चल रही थी। मार्क्स जेनी और मेरे पिता आज़ादख़याली के हामी थे, जबकि मेरी मा किसी प्रकार की कट्टरपथी और जडसूत्रवादी सकुचित मनोवृत्ति का नापसन्द करते हुए भी धम के बारे म उनस भिन्न विचार रखती थी

मेरी मा इतनी सादगी, सजीदगी, साफदिली के साथ और बनावटी जाश के बिना बोलती थी कि हर कोई प्रभावित हो जाता था। इसी बात का ध्यान म रखते हुए जेनी न लिखा था कि नारी क लिए उनका प्रिय गुण निष्ठा था।

पिता-पुत्री दोना ही नेपोलियन प्रथम स घणा करते थ जिसे वे महज बोनापात कहते थ। लेकिन वे नपोलियन ततीय स इतनी अधिक नफरत करते थ कि कभी उसका नाम तक नही लेते थ। इसी कारण जेनी न लिखा था कि जिन ऐतिहासिक हस्तिया को व सबसे ज्यादा नापसन्द करता थी व बोनापात और उसका भतीजा थे

जेनी अपन पिता के समान ही क्लासीकी सगीत से प्यार करती था, दाना ही हेण्डेल की कृतिया को निश्चयात्मक रूप से क्रातिकारी मानते थ। जेनी अभी वैग्नर स सवथा अपरिचित थी उन्हान हनोवर म ही पहली बार तहजर का उत्कृष्ट प्रस्तुतीकरण सुना और इतनी आनन्द विभोर हुइ कि वग्नर को अपन प्रिय स्वरकारा म मानने लगी। आत्मस्वीकृति म उनकी प्रिय सूक्ति काई उद्धरण प्रतीत हाती है, क्योकि वह उद्धरण चिह्ना के भीतर लिखी गई है। उन्हान सुख और दुख के बारे म अपने विचार नही लिखे थे। म अनुवाद न करके मूल की नक्ल दे रही हू

आपका अभीष्ट गुण	
पुरुषा के लिए	मानवीयता
स्त्रिया के लिए	नतिक साहस
आपकी नजर म सुख क्या है	निष्ठा
आपकी नजर म दुख क्या है	
आपके निकट क्षम्य दाप	
आपके निकट घण्य दोप	फिजूलखर्ची
आपके लिए असह्य	ईर्ष्या
	अमीर उमरा, पुरोहित, सनिक

प्रिय काम	पढना
एतिहासिक व्यक्ति जिन्हे आप सबसे अधिक नापसन्द करते है	बोनापार्त और उसका भतीजा
प्रिय कवि	शेक्सपियर
प्रिय गद्यकार	
प्रिय स्वरकार	हेण्डल बाथोवेन
प्रिय रग	लाल
प्रिय सूक्ति	«To thine own self be true»*
प्रिय आदर्शवाक्य	सब एक के लिए और एक सब के लिए

हमारे यहा जोजेफ रिग्स जो बढिया गायक थे अक्सर गान सुनाया करते थे। उनकी असाधारण शक्तिवाली विस्तृत आरोह अवरोह की गम्भीर ध्वनि थी और वे बहुत प्रतिभाशाली थे। प्रसगवश यह कि उन्होंने *Irish Harp»* नाम से अपने अनुवाद तथा स्वर सयोजन के साथ टामस मूर** के आयरी लोकगाता की एक पुस्तकमाला प्रकाशित करायी था। एक पुस्तक मेरे पिता को समर्पित थी। अभागे उत्पीड़ित आयरलैण्ड के प्रति उनके पूरे परिवार की भाति मार्क्स की भी जबर्दस्त हमदर्दी थी और उन हृदयग्राही गीतो को वे बहुत चाव से सुनते थे। आयरलैण्ड के प्रति अपनी हमदर्दी व्यक्त करने के लिए तुस्सी ने अपना मनचाहा रग हरा बना लिया था और वह अधिकतर हरे कपडे पहनती था।

आयरी स्वतत्रता के लिए लडनेवाले ओ डोनोवान रास्सा को जब जेल में बन्द कर दिया गया और अग्रेजो ने उनके साथ गर्हित व्यवहार किया तब जेनी ने, जिन्होने उन्हे देखा तक न था अपने जे० विलियम्स उपनाम से उनकी दृढता की सराहना करते हुए उन्हे पत्र लिखे। श्रीमती रास्सा को जब यह मालूम हुआ कि उन पत्रो की लेखिका एक लडकी है तो बहुत हे कि उन्हे बडी जलन हुई और मार्क्स को यह सुनकर बडा मजा आया

---

* शेक्सपियर 'हैमलेट'।—स०

** मूर, टॉमस (१७७९–१८५२)—ब्रिटिश रोमानी कवि जन्म से आयरिश, आयरी जनता के राष्ट्रीय मुक्ति सघर्ष के प्रवक्ता।—स०

की तरह ही बेहद प्यार करती थी। वे बहुत जहीन, स्नेहमयी और इतनी साफगा थी कि जो कुछ ठीक समझती वह हर किसी से शिष्टाचार प्रदशन के बिना कह डालती थी, चाहे किसी को बुरा लगे या भला।

मार्क्स पहले की तरह ही थे—देखन मे भी जस के तस। उहान उस स्वास्थ्य स्थल पर देश देश के लोगा के जीवन को दिलचस्पी के साथ देखा और कुछ अधिक ध्यान आकर्षित करनेवालो को अपनी आदत क मुताबिक चटपटे उपनाम प्रदान किये।

वनाच्छादित पवता की विभिन सुदर गुजरगाहो का, विशेषत एगेर्ताल को, देखकर वे बहुत आनन्दित हुए। दन्तकथाओ ने वहा की कुछ विचित्र आकारवाली चट्टानो का वयक्तीकरण कर दिया है और उनका नाम हान्स हाइलिग की चट्टाने पड गया है।

कहा जाता है कि हान्स हाइलिग एक युवक गडरिया था, जिसने एगेर नाम की एक सुदर जलपरी का हृदय जीत लिया था। जलपरी ने भयानक प्रतिशोध का भय दिखाकर शाश्वत वफादारी की माग की। हान्स हाइलिग ने उसे कभी न छोडने की कसम खाई, लेकिन चद साल बाद उसने अपनी कसम तोड दी और गाव की एक लडकी से शादी कर ली। क्रोधोन्मत्त जलपरी शादी के समय सहसा नदी मे से प्रगट हुई और पूरी बारात को पत्थर मे परिवर्तित कर दिया।

इन चट्टाना म बारात के आगे आगे चलते तुरही और मिगावादको, दुलहन की बग्गी और कोच म चढने के लिए अपन स्कट को समटती हुई सुदर कपडो से सजी एक वद्धा क आकार खाजन म मार्क्स आनन्द लेते थे। साथ ही वे तीव्रप्रवाहिणी फेनिल नदी की कल छल सुनते, जो उस जादुई घाटी म पुरुष की चलचित्तता पर निरतर रुदन करते किसी अमर प्राणी का प्रतिनिधित्व करती मानी जाती है।

डाल्वित्स म हमन क्योनर के बलूत देखे, जिनके नीचे प्रख्यात कवि ने गभीर जख्मो के भरने के दौरान अक्सर अपना समय बिताया था और 'बलूत के वक्ष' नामक अपनी सुदर कविता रची थी।*

---

*जमन रोमानी कवि क्योनर (१७६१–१८१३) स अभिप्राय है, जिहोन नेपोलियन के विरुद्ध मुक्ति-सघर्ष म भाग लिया।—स०

आइग्र म माक्स न चीनी मिट्टी क बनाना क कारखाने त
दिलचस्पी ली और चीनी मिट्टी क बनन बनन गए।
लवीत्स्की द्वारा निर्देशित बन्धिया ... ...
से सुनते थे। जहा तक गभीर राजनीतिक ... ...
मामलो पर बहस का सम्बन्ध था ... ...
अपने अन्य परिचित व्यक्तिया के साथ ... ...
ही सीमित रखते थे। उनके परिचितो म ... ...
प्लेटर थे, जो अपने विचारो द्वारा इतने ... ...
म भाग लेना उनके लिए प्रत्यक्ष ही ... ...
दायरे अथवा स्त्रिया की सुखद सगति म ... ...
ही आग्रह करते थ। बाल वाला बात का ... ...
थ। मेरे पिता के मित्र ऐतिहासिक विषयो ... ...
की राय थी कि अगर किसी म पूछा जाता ... ...
काउट है, तो वह निश्चय ही मार्क्स का नाम ... ...
सम्बन्धी बात करना मार्क्स अक्सर पसन्द करते थे। ... ...
विभिन्न सुखद व्यस्तताओ म बीत गए।
वही, अतिम दिनो म मेरे पिता और मार्क्स ... ...
अचानक उनके बीच कोई मतभेद पैदा हो गया जो ... ...
हुआ। मेरे पिता न उसका केवल अस्पष्ट इशारा ही किया। ... प्रतीत
होता है कि उन्होने मार्क्स को हर प्रकार के राजनीतिक प्रचार म परहेज
करके हर चीज स पहले 'पूजी' के तीसरे खण्ड को पूरा करने के लिए
समझाने-बुझाने की कोशिश की थी ... बाद म मेरे पिता अक्सर कहा करते
थे कि 'मार्क्स अपने युग स सौ साल आगे है लेकिन जो लोग अपने युग
के साथ है उन्हे तात्कालिक सफलता मिलने की अधिक सभावना है जो
लोग बहुत दूर तक आगे देखते हैं वे पास की चीज अनदेखी कर जाते
है जिन्हे कम दूरदर्शी लोग अधिक स्पष्ट रूप म देखते है।
शायद मेरे पिता उस समय कुछ कुछ 'बुर्जुआ' ... की भाति
अध्याग्रही थे। अपने से कमउम्र व्यक्ति की यह बात मार्क्स नही सहन
कर पाए और उसे अपनी आजादी म हस्तक्षेप समझा। फलत उनका
पत्र व्यवहार भी बन्द हो गया। तुस्सी कभी-कभी लिखती रहती थी पर

मुझे नही मालूम कि जेनी भी वसा करती थी कि नही। तुस्सी सदा अपने पिता को शुभकामनाए लिखती रहती थी, जो मेरी मा के साथ हुई पहल की बातचीत की यादगार म उन्ह पुस्तक भी भेजते थे मकामहरीरी के रयोकेत कृत अनुवाद, शमिस्सा की कृतिया और ई० टी० ए० हॉफमैन का 'नन्हा त्साखेस'। पुराख्यान के रूप म यह व्यग्य रचना मार्क्स को खास तौर से पसन्द थी। स्वय उन्होन फिर कभी पत्र नही लिखा। सभवत व मेरे पिता की उपेक्षा करके उन्ह आघात पहुचाना नहा चाहत थे, फिर भी वे उस घटना को नही भूल सके।

मेरे पिता बाद म भी पहले की तरह ही *मार्क्स* का आदर करते रहे और एक ऐसे मित्र के साथ विच्छेद की वेदना से कभी भी मुक्ति नही पा सके। फिर भी उन्होने सुलह-मेल के लिए कभी कोई कोशिश नही की, क्योकि वे अपना विश्वास नही बदल सकते थ। मार्क्स की मत्यु के बाद मेरी मा को कभी-कभार केवल तुस्सी के पत्र ही मिलते रहे

मार्क्स के साथ मेरे माता पिता के सम्बन्ध, जिन्ह वे इतना प्रिय समझते थे कि उनके प्रत्येक ब्योरे को सदा स्नेहपूर्वक याद किया करते थे, शिलर के इन शब्दो मे व्यक्त किए जा सकते है

काल तेज चाल से भाग रहा है,
स्थायित्व की खोज म।
स्थायी होकर
तुम उसे बाध लोगे—
सदा सवदा क लिए।

नि० मोरोज़ोव

कार्ल मार्क्स से भेंट*

दिसम्बर, १८८० मे मैं लन्दन की यात्रा को और 'नरोदनाया वोल्या'** के अपने एक साथी, लेव हार्टमैन, के साथ मार्क्स से मिलने गया, जो अक्सर उनके यहा जाया करते थे। हम लदन की मेट्रोपालिटन रेल गाडी से गए, जो तब भाप के इजिनो से चलती थी। उस समय मार्क्स अपनी बेटी एल्योनोरा के साथ अकेले रहते थे।

---

* मोरोज़ोव, निकोलाई अलेक्सान्द्रोविच (१८५४–१९४६) – रूसी क्रान्तिकारी आदोलन म सक्रिय रूप से भाग लेनेवाले, नरोदवादी। सोवियत काल म सोवियत विज्ञान अकादमी के सम्मानित सदस्य, रसायनशास्त्री, खगोलशास्त्री। प्रस्तुत सस्मरण १९३५ मे प्रकाशित हुए।–स०

** 'नरोद्नाया वोल्या' (जनता की आजादी) – १८७९ मे स्थापित क्रान्तिकारी बुद्धिजीवियो (नरोद्वादियो) का गुप्त राजनीतिक सगठन। काल्पनिक समाजवादी होते हुए भी जारशाही स्वेच्छाचारी शासन का तख्ता उलटने और राजनीतिक आजादी प्राप्त करने के लक्ष्य से नरोदवादियो ने राजनीतिक सघर्ष का पथ अपनाया। वैयक्तिक आतक का रास्ता अपनाकर उन्होंने जार अलेक्सान्द्र द्वितीय की १ मार्च, १८८१ को हत्या की। इसके बाद जारशाही सरकार ने उक्त सगठन को कुचल दिया। नवें दशक के उत्तरार्द्ध तक इस सगठन का बिल्कुल अन्त हो गया।–स०

हाटमैन के तीन बार दरवाजा खटखटाने पर जब नौजवान नौकरानी ने दरवाजा खोला, तब उन्होंने पूछा, "क्या श्री मार्क्स घर पर हैं?"

उसने उन्हें पहचान लिया और बताया कि मार्क्स अभी ब्रिटिश म्यूजियम से नहीं लौटे हैं, लेकिन उनकी बेटी घर पर है।

बैठकखाने में हमारे प्रवेश करते ही उनकी बेटी, एक जर्मन नाक नक्शेवाली छरहरी आकर्षक लड़की, दाखिल हुई। उन्हें देखकर मुझे रोमानी ग्रेत्खेन, अथवा 'फाउस्ट' की मार्गरेट की याद आ गई।

हमारी बातचीत अंग्रेजी में शुरू हुई। लेकिन मैंने किसी अंग्रेजी शब्द के सम्बन्ध में कठिनाई अनुभव की और उसके बजाए फ्रान्सीसी शब्द का इस्तेमाल किया। तब एल्योनोरा ने फौरन पटरी बदल दी और हमारी बातचीत फ्रांसीसी में चलने लगी।

एल्योनोरा ने दोहराया कि उनके पिता अभी ब्रिटिश म्यूजियम में हैं और शाम से पहले घर नहीं लौटेंगे। हम आध घंटे बाद चल दिए और दूसरे दिन नियत समय पर फिर आए।

मुझे अच्छी तरह याद है कि मार्क्स को देखकर मेरे मन पर पहली छाप यह पड़ी कि वे अपने चित्र से कितने मिलते जुलते हैं! पहले परिचय के बाद हम एक छोटी सी मेज के गिर्द दीवार से लगे सोफे पर बैठ गए और मैं अपने मन पर उनकी छाप की बात कहकर हंस पड़ा। वे भी हंस पड़े और बोले कि उनसे ऐसा अक्सर कहा जाता है और चित्र के अपने अनुरूप होने के बजाय स्वयं के चित्र के अनुरूप होने की अनुभूति कुछ विचित्र सी होती है।

वे मुझे किसी कदर मझोले कद, लेकिन चौड़ी काठी के व्यक्ति प्रतीत हुए। वे हम दोनों के साथ अधिकतम सौजन्य से पेश आए। लेकिन उनके प्रत्येक हाव भाव और शब्दों से आदमी को फौरन महसूस हो जाता था कि वे अपने असाधारण महत्त्व को पूर्णतः समझते थे। मैंने उनमें उस गैरमिलनसारी अथवा उदासीनता का लेश भी नहीं पाया, जिसकी बाबत मुझसे किसी ने जिक्र किया था। उस समय लन्दन में कुहरा छाया था और सभी घरों में लैम्प जल रहे थे। मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि मार्क्स के घर जलनेवाले लैम्प का शेड हरे रंग का था। लेकिन उस रोशनी में भी मैं उन्हें और

उनके अध्ययनकक्ष को बिलकुल अच्छी तरह देख सकता था। तीन तरफ की दीवार किताबों से ढकी हुई थी और चौथी पर चित्र टंगे हुए थे।

एल्योनोरा के सिवा और कोई कमरे में नहीं आया और मुझे लगा कि परिवार के अन्य सदस्य घर में नहीं हैं। एल्योनोरा जब-तब कमरे में आती और सोफे पर कुछ किनारे बैठकर बातचीत में हिस्सा लेती रही। हमारे लिए चाय और बिस्कुट लायी गई।

बातचीत मुख्य रूप से 'नरोदनाया वोल्या' के मामलों पर होती रही, जिसमें मार्क्स ने बहुत दिलचस्पी प्रदर्शित की। उन्होंने कहा कि अन्य सभी यूरोपीयों की भांति वे भी तानाशाही के खिलाफ हमारे संघर्ष को अकल्पनीय आख्यान जैसी कोई चीज़, किसी काल्पनिक उपन्यास जैसा समझते थे।

दो दिन बाद, लंदन छोड़ने से पहले मैं फिर मार्क्स से मिलने गया और उनके तथा उनकी पुत्री के साथ कुछ समय बिताया। जब मैंने उनसे अलविदा कहा, तो उन्होंने पांच या छै किताबें दीं, जिन्हें उन्होंने मेरे लिए पहले से ही तैयार कर रखा था। उन्होंने यह भी वायदा किया कि उनमें से जो किताब हम छापने के लिए चुनेंगे, उसकी भूमिका भी लिख देंगे।

जब उन्होंने सुना कि मैं दो या तीन सप्ताह में रूस वापस जा रहा हूं, तब उन्होंने बड़ी हार्दिकता से हाथ मिलाया और रूस से मेरी सकुशल वापसी की कामना की। हम दोनों ने पत्र लिखने के वायदे किए, पर वे वायदे पूरे नहीं हुए। जेनेवा में लौटने पर मुझे पेरोव्स्काया* से एक पत्र मिला, जिसमें मुझे बताया गया था कि अनेक उन घटनाओं का, जिनके लिए तैयारियां की जा रही हैं, तकाज़ा है कि मैं फ़ौरन लौट आऊं। मैंने अपना सामान बांधा और चल पड़ा। लेकिन जब २८ फरवरी को मैं जनेवा विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी, लाकिएर, के नाम से सीमा पार कर रहा था, तब मुझे गिरफ़्तार करके वार्सा के किले में पहुंचा दिया गया। वहां

---

* पेरोव्स्काया, सोफ्या ल्वोव्ना (१८५३–१८८१) – रूसी क्रान्तिकारी, 'नरोद्नाया वोल्या' नामक गुप्त संगठन की प्रमुख कार्यकर्त्री, ज़ारशाही सरकार ने उन्हें मौत की सज़ा दी। – सं०

17

मुझे वगल की कालकोठरी म वद तदेउश वलीत्स्की नामक एक साथी के
दीवार पर थपथपी मारन के इशारा से १ माच की घटनाओ की खवर
मिली।

शुरू म मुझे पीटर और पॉल किले के अलेक्सयव्स्की दुग प्राकार म
कद रखा गया और फिर श्लिसेलवग किले मे। १९०५ म रिहा होने के
समय तक माक्स के साथ मरी वातचीत के नतीजे क वारे म मुझे कुछ पता
नही था। सच तो यह है कि १९३० तक उसके वारे म मुझे कोई खवर
नही थी, जवकि राजनीतिक वदी समिति के एक प्रकाशन, ''नरोदनाया
वोल्या का साहित्य' म 'सामाजिक क्रान्तिकारी पुस्तकालय' द्वारा प्रकाशित,
जिसकी स्थापना म मने भी योगदान किया था, 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र'
की माक्स लिखित भूमिका अकस्मात देखने को मिली। उसे दखकर
मेरे मन मे अनक स्मतिया जागत हो गइ।

माक्स और उनकी पुत्री से अपनी मुलाकाते याद आयी और याद
आया कि किस प्रकार जेनेवा से जल्दी-जल्दी रूस के लिए रवाना होते समय
मने सामाजिक क्रान्तिकारी पुस्तकालय' के एक कायकर्त्ता को (मेरा खयाल
है कि वे प्लेखानोव थे) जो वहा रुक रहे थे, माक्स का 'घोषणापत्र' तथा
अन्य पुस्तके रूसी म अनुवाद के लिए दी थी।

माक्स लिखित जिस भूमिका का अभी अभी मैंने जिक्र किया है, उसमे
इन शब्दा को पढकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई

ज़ार को यूरोपीय प्रतिक्रिया का मुखिया घोषित किया गया था।
आज* वह गात्चिना मे क्रान्ति का युद्धवन्दी है और रूस यूरोप म
क्रान्तिकारी आदोलन का हरावल है।"

---

*यानी १८८१ म। (मोरोजोव का नोट)

एडुअर्ड एवेलिंग*

एंगेल्स घर में

१

सारे ससार के समाजवादी और अन्य अखबारो ने उस महान समाजवादी के जीवन और कामो के विवरण प्रस्तुत किए है, जिनकी अभी हाल म मृत्यु हुई। इस लेख मे म उनके जीवन के अन्तरग पक्ष की कुछ बातो का जिक्र करूगा।

जिन लोगो से मैं अब तक मिला हू, उन मे से कार्ल मार्क्स, चार्ल्स डार्विन, फ्रेडरिक एगेल्स और, जीवन के बिलकुल दूसरे ही क्षेत्र मे, हेनरी इर्विंग** सर्वाधिक उल्लेखनीय है। चारो ही व्यक्तियो मे महान बौद्धिक शक्ति के साथ महान शारीरिक गुण जुड़े हुए थे। जहा तक मार्क्स और डार्विन का सम्बन्ध है, यद्यपि मुझे उनके लिखित और व्यावहारिक कृतित्व की कमोबेश जानकारी रही है, तथापि उनसे मिलने का महान सौभाग्य मुझे केवल एक या दो अवसरो पर ही मिला है। मैंने जीवित मार्क्स को केवल एक बार तब देखा था, जब मने नौउम्री मे हैवरस्टाक हिल स्थित अनाथ

---

* एवेलिंग, एडुअर्ड (१८५१–१८६८)–ब्रिटिश समाजवादी, लेखक, मार्क्स की बेटी एल्योनोरा के पति। प्रस्तुत सस्मरण १८६५ म प्रकाशित हुए।–स०

** इर्विंग, हेनरी (१८३८–१६०५)–प्रसिद्ध अंग्रेज थियेटर निर्देशक और अभिनेता जिन्होंने शेक्सपियर के कई दुखान्त नाटको म अभिनय किया।–स०

व्यावसायिक स्कूल के बच्चा के लिए "कीडे मकोडे और फूल" विषय पर एक भाषण दिया था। स्कूल के उत्सव का दिन था और बच्चो के अलावा श्रोताओ मे ऐसे लाग भी थे, जिनकी उक्त विषय म दिलचस्पी थी। भाषण समाप्त हाने पर सिहीय सिरवाले एक वद्ध सज्जन ने एक महिला तथा एक नवयुवती के साथ आगे बढकर मुझे अपना परिचय दिया। ये सज्जन काल माक्स, महिला उनकी पत्नी जेनी फॉन वेस्टफालेन और नवयुवती उनकी पुत्री एल्योनोरा थी। माक्स ने अत्यधिक प्रशसा तथा प्रोत्साहन के जो अनुग्राही तथा उदारतापूण शब्द कहे थे, वे मुझे आज तक याद हैं। दूसरी बार मैंने उन्ह तब देखा जब वे चिर निद्रा म सा चुके थे। लेकिन उनकी महान शारीरिक शक्ति की छाप, जो मुझपर पडी थी, वह अब तक बनी हुई है

एगेल्स छे फुट से जरा अधिक लम्बे थे और अन्तिम बीमारी के समय तक सिपाहियाना ढग से तनकर चलते थे और सत्तर साल स अधिक का बोझ उनके लिए भारी नही हुआ। फुर्तीले लचीले कदम के साथ उनकी फौजी चाल-ढाल उनके "जनरल" उपनाम क बिल्कुल अनुरूप थी। अपने अन्तरग मित्रा मे वे सदा इसी नाम से पुकारे जाते थे।

इस नाम का उद्भव-स्रोत १८७० के फ्रासीसी प्राशियाई युद्ध के दौरान *«Pall Mall Gazette»* को लिखे गए उनके उल्लेखनीय लेख थे। उनम से एक मे, २ सितम्बर से कोई आठ दिन पहले, उन्होने सेदान म फ्रासीसियो पर जमनो की निणयात्मक विजय की भविष्यवाणी की थी। कुल मिलाकर उन लेखा ने युद्धकला के ज्ञान का ऐसा परिचय दिया कि जनता उन्ह किसी बडे प्रामाणिक सैनिक अधिकारी द्वारा लिखित समझती थी, जसा कि सचमुच वे थे भी। लेकिन वे बडे प्रामाणिक सनिक अधिकारी समाजवादी निकले।

बाद को इस उपनाम ने अधिक गहन अथ प्राप्त कर लिया, क्योकि माक्स की मत्यु के बाद पूजीवाद के खिलाफ समाजवादी सना का लडाई मे उन्होने ही प्रधान सेनापति का पद ग्रहण कर लिया था।

रीजेण्ट पार्क रोड के १२२ नम्बरवाले मकान में रविवारों को जो शानदार महफिल जमती थी, उनमें एक बार भी शरीक रहनेवाला व्यक्ति उन्हें कभी नहीं भूल सकता।

मार्क्स उनकी पत्नी और एंगेल्स की भी मित्र, हेलेन देमुत तब जीवित थी। वह उनकी गृह प्रबंधिका थी तथा न केवल दैनिक जीवन के मामलों में, बल्कि राजनीति में भी उनकी परामर्शदात्री थी। उसकी कुशाग्र बुद्धि व्यावहारिक ज्ञान, लोगों और चीजों के बारे में उसकी समझ ने उसे राजनीति तक में मार्क्स और एंगेल्स जैसे दो महारथियों की भी सहायिका बना दिया था।

मामला कुछ कुछ पचमेली भीड़ जैसा होता था, क्योंकि वहां केवल हमी लोग नहीं होते थे जो दर असल उनके परिवार में शामिल थे बल्कि दूसरे देशों के समाजवादियों ने भी १२२, रीजेण्ट पार्क रोड को अपना मक्का बना रखा था।

एंगेल्स उन सब से उनकी ही भाषाओं में बात कर सकते थे। मार्क्स की तरह वे भी जर्मन फ्रांसीसी और अंग्रेजी बहुत अच्छी तरह बोलते और लिखते थे, प्राय उतनी ही अच्छी तरह इतालवी, स्पेनी और डेनमार्की भी। लातीनी तथा यूनानी की तो चर्चा ही क्या, वे रूसी पोलैण्डी और रूमानियाई भी पढ़ लेते थे और उनमें काम चला लेते थे।

हर रोज, हर डाक से उनके घर सभी यूरोपीय भाषाओं के अखबार और पत्र आते थे और यह सोचकर हैरत होती थी कि अपनी इतनी व्यस्तता के बावजूद वे उन्हें पढ़ने, सलीके से रखने और उन सभी में लिखी मुख्य बातों को याद रखने के लिए किस तरह समय निकाल पाते थे। जब उनकी या मार्क्स की कृतियों में से कुछ अन्य भाषाओं में अनुवादित होने को होना था, तब अनुवादक हमेशा अनुवाद को उनके पास नजरसानी और इसलाह के लिए भेजते थे। फ्रेनॉलाजी* के वैज्ञानिक महत्त्व से भला

---

*फ्रेनालाजी – पूंजीवादी शरीररचनाशास्त्रियों की प्रतिक्रियावादी 'शिक्षा' जो कपाल के बाह्य रूप तथा बौद्धिक और नैतिक गुणों के सम्बन्ध पर जोर देता था। – सं०

कौन इनकार कर सकता है, जबकि यारमाउथ के एक कपालवैज्ञानिक ने एंगेल्स के कपाल के उभारो की परीक्षा करने के बाद कहा था (जिसे सुनकर उनके साथियो को बेहद मज़ा आया था) कि ये साहब "अच्छे कारोबारी हैं लेकिन भाषाओ के लिए इनके पास प्रतिभा नही है!"

एंगेल्स तो बहुत ही अच्छे मेजवान थे। रविवार को छोडकर सप्ताह के कोई दिन अगर हम म से कोई उनसे मिलने और उनके साथ दिन या शाम का खाना खान न पहुच जाता, तो वे हफ्ते भर असाधारण किफायत से रहते थे। लेकिन रविवारो को यह देखते ही बनता था कि अपने मित्रो के बीच उन्हे अच्छे से अच्छा खिला पिलाकर खुश करते हुए उन्ह कितना सुख मिलता था!

रूसी स्तेप्न्याक* भी कभी-कभी आते थे और ब्रिटेन आने के बाद से वेरा ज़ासूलिच** निरंतर आनेवालो म रही, जिनके लिए निमंत्रण की कोई आवश्यकता न थी। उनके वफादार दोस्त और सहकर्मी गेओर्गी प्लेखानोव, जो एक सुयोग्यतम विचारक और पार्टी क अधिकतम व्यग्यकुशल लोगो मे से थे और जिनसे अराजकतावादी शायद किसी भी जीवित लेखक से अधिक डरते थे, अपने सक्षिप्त ब्रिटेन प्रवास के दौरान हमेशा एंगेल्स के यहा होते थे

अमरीका के एक मित्र का उल्लेख भी उचित प्रतीत होता है, जिन्हे अटलाटिक महासागर ने एंगेल्स के घर से दूर कर रखा था, लेकिन जो उनके अधिकतम वाछित और स्थायी पत्र व्यवहार करनेवालो म से थे और जो मार्क्स तथा एंगेल्स के अन्तिम वरसो के दौरान उन दोनो के घनिष्ठतम मित्रो म स थे। उनका नाम है फ्रेडरिक अदोल्फ जोर्गे जो न्यूयार्क के निकट होबोकेन मे रहते थे। १८८८ मे एंगेल्स और रसायनशास्त्रिया,

---

* क्रवचीन्स्की, सेर्गेई मिखाइलोविच (साहित्यिक उपनाम – स्तेप्न्याक) (१८५१–१८९५) – रूसी सार्वजनिक लेखक, आठवे दशक के क्रान्तिकारी नरोद्वाद के विख्यात प्रतिनिधि। – स०

** ज़ासूलिच, वेरा इवानोव्ना (१८५१–१९१९) – नरोदवादी, फिर सामाजिक-जनवादी आदोलन की प्रमुख प्रतिनिधि। – स०

समाजवादियो तथा नेक दोस्तो के सरताज स्वर्गीय प्रोफेसर शोलेंमेर के साथ मने और मेरी बीवी ने जो यात्रा की उसकी सवाधिक रुचिर स्मतिया म जोर्गं के साथ हमारी मुलाकात और उनके साथ बिताया हुआ समय ही है

जाहिर है कि मार्क्स की पुत्रियो उनके पतिया – पान लफाग और इन पक्तियो के लेखक, कम्युनिस्ट घोषणापत्र के होना लेखरा के पुरान, आज़माए हुए और विश्वासी मित्र समुएल मूर और कार शोर्लेमर जसा की ब्यारेवार चर्चा की यहा जरूरत नही है।

अगर म उन सभी आते-जाते समाजवादियो की बात करने बैठ जो ब्रिटेन की अपनी सरसरी यात्राओ म एगेल्स स मिलने आते थे तो समय और स्थान मेरा साथ नही दे सकगे। यह बात ध्यान म रखनी चाहिए कि वे केवल प्रमुख कायकर्त्ताओ से ही नही मिलते थे बल्कि "जनरल के घर के दरवाज़े फौज के हर सैनिक के लिए खुले रहते थे।

साथ ही हम यह भी नही समझना चाहिए कि उनकी महमाननेवाजी या दोस्ती की भावना सभी के लिए समान थी। वे ऐसे किसी से भी नही मिलना चाहते थे और न मिलते थे, जिसका उन्हे एतबार न हो। कम से कम एक ऐसी घटना तो मुझे याद है, जब कोई साहब विदेशिया के एक शिष्टमडल के साथ आए थे और एगेल्स न उन्ह फौरन लौटा देने मे कोई आगा-पीछा नही किया था।

३

मेरा खयाल है कि जिन लोगा का ज़िक्र मने किया है उनम शायद ही कोई मेरी इस बात से सहमत न हो कि एगल्स दुनिया के अधिकतम सहायतातत्पर व्यक्तियो मे से थे। उनकी उपस्थिति मात्र प्रेरणादायक होती थी। वैसी ही थी उनकी दुर्द्धप साहसिकता और आशावादिता। नौजवानो म से कुछ के हताश हो जाने पर भी वे अपराजेय योद्धा कभी हिम्मत नही हारते थे और हमेशा दूसरो का हौसला बढाते थे। हम म से उन लोगा के लिए, जो उनसे अपने जीवन के हर रविवार को और अक्सर सप्ताह म कई बार मिलते थे, मैं कह सकता हू कि उनके अभाव की पूर्ति बिलकुल नही हो सकती।

वही ऐसे व्यक्ति थे जिनसे नाना प्रकार की कठिनाइयो मे सलाह ली जाती थी और उन्ही की सलाह का अनुसरण किया जाता था। उनका सवव्यापक नान सदा उनके मित्रो की सेवा मे अपित रहता था। विशेष विषयो के ज्ञाता भी यह पाते थे कि एगेल्स उनकी अपेक्षा उस विषय को बेहतर जानते है। इस प्रकार जहा तक प्रकृति विज्ञान का सम्बन्ध है, उसकी किसी भी शाखा अथवा उस शाखा के किसी भी अग के बारे म यदि उनसे कोई प्रश्न किया जाता था, तो वे सदा कोई न कोई नया विचार, कुछ न कुछ सहायता देने म समथ होते थे।

रही राजनीति, जो उनके सभी मित्रो का सवसामान्य विषय था, तो सभी उनके पास पथप्रदशन के लिए आते थे। वे हर देश के आर्थिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक आन्दोलन के केवल आम उसूल ही नही, बल्कि अधिकतम सूक्ष्म ब्योरे भी जानते थे।

मसलन इगलैण्ड के आन्दोलन का उनका ज्ञान असाधारण रूप से गभीर और सूक्ष्म था। अग्रेजो के लिए यह स्मरणीय बात है कि १८६० के प्रथम प्रदशन से लेकर १८६५ तक, जबकि उनके गिरते हुए स्वास्थ्य ने उन्हे ऐसा नही करने दिया, वे आठ घटे के कानूनी काय दिवस के लिए किये गये हर प्रदशन मे शामिल हुए और अन्तर्राष्ट्रीय मच पर उपस्थित रहे।

समसामयिक राजनीति और उसके अध्ययन म उनकी दिलचस्पी अन्तिम समय तक बनी रही। पिछले चन्द साल की घटनाओ के बारे म उनकी अन्य सारी आलोचनाओ की तरह चीन और जापान के युद्ध* पर उनकी तीखी आलोचना भी दूरदशितापूण थी। उनकी आलोचनाओ की अगाधता और हर बात तथा हर बात की आपेक्षिक स्थिति की उनकी आश्चयजनक पकड देखकर आदमी का चकित रह जाना पडता था। जब व आलोचनाए राजनीतिक घटनाओ की भविष्यवाणी का रूप ग्रहण करती थी, तो असाधारण ढग से सही सिद्ध होती थी।

उनकी अतिम राजनीतिक बातचीत इन पक्तियो के लेखक की पत्नी के साथ २८ जुलाई को हुई थी (एगेल्स की मत्यु ५ अगस्त को हुई थी)। वे उस दिन नाटिघम से वापस आई थी और उन्होने एगेल्स का वहा की

---

* १८६४–१८६५ म।–स०

स्वतंत्र लेबर पार्टी के आदोलन की बाबत बताया था। वे तब बोलने मे बिलकुल असमर्थ हो चुके थे। लेकिन अपनी स्लेट और पेंसिल की सहायता से माकूल और सूक्ष्म प्रश्न पूछते हुए उन्होने उक्त विषय पर उत्साहपूर्ण और बेहद दिलचस्प बातचीत की।

एंगेल्स बेहद नफरत भी कर सकते थे, जो वास्तव मे हर उस व्यक्ति का लक्षण है जो खूब प्यार करने मे समर्थ है। जब वे यह महसूस करते थे कि कोई गलत काम किया गया है, तो कभी-कभी आपे से बाहर हो जाते थे, जिससे आम तौर पर लाभ ही होता था।

यह बात सुनने मे विचित्र लग सकती है कि वे कुछ बातो मे एक ही ढर्रे पर चलनेवाले आदमी थे। वे आदत के पाबंद थे। वे कुछ चीजो का रोज रोज एक ही वक्त पर और एक ही तरीके से किया जाना पसन्द करते थे।

लेकिन उनकी विश्वसनीयता, उनकी ईमानदारी, नपी-तुली कारोबारी आदतो, सटीकता का बयान करने के लिए शब्द नही है। इन बातो का वे श्रेष्ठतम अर्थों मे अपने राजनीतिक तथा सामाजिक सम्बन्धो मे ढालते थे। जैसा कि अभी कुछ दिन पहले वेरा जासूलिच ने कहा था, वे अनेक बार हमे इस चेतना से कि 'इसके बारे मे जनरल क्या सोचेगे?' गलत काम करने या गलत बात कहने से बाज रखते थे।

उनसे अधिक स्पष्ट और कुशाग्र मेधा की कल्पना करना कठिन है। जिस किसी विषय को भी वे छू देते थे, वह प्रकाश से जगमगा उठता था और आप जो कुछ पहले नही समझे होते थे, वह समझ जाते थे और समझी हुई बात और अचूक ढंग से समझ मे आ जाती थी। आलिवर गोल्डस्मिथ* के बारे मे लिखा गया है, 'उन्होने जिस भी चीज को छुआ वही सुंदर हो गई", और एंगेल्स के मित्र उनके बारे मे लिख सकते है कि "उन्होने जिस भी चीज को छुआ, वही प्रकाश से जगमगा उठी। लेखक के रूप मे जर्मन और अंग्रेजी दोनो भाषाओ मे उनकी शैली स्पष्ट सजीव और पैनी थी।

---

*गोल्डस्मिथ, आलिवर (१७२८-१७७४) – ब्रिटिश लेखक, ब्रिटेन मे पूजीवादी शिक्षा के प्रमुख प्रतिनिधि। – सं०

इन सारी असाधारण खूबियो के साथ उनमे विनोद का विरल और निवारक गुण था। वे हर भाषा म मज़ाक का आनन्द लेते थे। वे अधिकतम खुशमिजाज साथी थे। उन अविस्मरणीय रविवारो को अधिक्तर बात अनिवायत राजनीति और पार्टी के मामला पर होती थी। हम सभी वहा कुछ सीखने आए होते थे। लेकिन काफी वाते अधिक से अधिक हल्की-फुल्की किस्म की होती थी और हसी दिल्लगी और ठहाका का खूब दौर दौरा रहता था।

जब कभी वहा थोडे लोग होते थे, तब वे आधी पेनी की दजन क "ऊचे" हिसाब स कृत्रिम सिक्के दाव पर लगाकर ताश के खेल खेलना पसन्द करते थे और खेल म ऐसे खो जाते थे, जसे कि उसी पर राष्ट्रो के भाग्य निभर हो

जमनी के चुनाव हमारे लिए बहुत बडी घटना थे। तब एगेल्स न खास जमन बियर का एक विशाल पीपा खरीदा, विशेष भोजन का प्रबन्ध किया और अपन नितान्त अतरगो को निमन्त्रित किया। देर रात गए तक जमनी के सभी भागो से तारा की बौछार होती रही, "जनरल" हर तार को खोलते, उसे ज़ोर स पढकर सुनाते और जीत होती या हार, हम हर तार पर पीते।

जैसा कि म कह चुका हू, १८८८ मे हमने उनके और शोर्लेमेर के साथ अमरीका और कनाडा की यात्रा की। हमारे दल म एगेल्स सबसे अधिक नौजवान साबित हुए। जहाज पर सीट के गिद चक्कर काटकर गुजरने के बजाय वे उसे छलाग मारकर पार करना बेहतर समझते थे। साधारण यात्रिया की तरह वे बात-बात पर झल्लाते नही थे, केवल दो बार ही उन्ह गुस्सा आया। एक तो तब, जब अपने नाश्ते से पहले उन्होने मच्छरा के काटने के अडसठ निशान गिने और दूसरी बार तब, जब हमारा सामान न्यूयाक और खुद हम बोस्टन पहुच चुके थ।

ईस्टबोर्न मे उनकी आखिरी बीमारी क दौरान सारे दद और सारी कमजोरी के बावजूद उनम पुरानी ज़िन्दादिली और खुशमिजाजी की कौंधें मौजूद थी। जीवन की अन्तिम घडी तक वे दूसरा के बारे मे सोचत और

उनकी चिन्ता करते रहे। यह स्थान उस कृपालुता और उदारता का जिक्र करने के लिए उपयुक्त नही है। उनका प्रत्येक मित्र उस बेजोड उदारता और कृपालुता से परिचित है

एगेल्स नास्तिक थे। उन्हे भगवान की तनिक भी आवश्यकता नही थी और इसी कारण यह ससार ही उनका आशा-केन्द्र था।

एगेल्स का जीवन बहुत ही कमाल का था और व उसे प्यार करते थे अपने ज्ञान, अपने ध्येय के औचित्य के विश्वास, आन्दोलन के भविष्य के सम्बन्ध मे दृढ आस्था, अपनी मित्र मडली–जिसमे मार्क्स, बेशक, प्रथम, अतिम और सब कुछ थे–, अपनी अत्यधिक खुशमिजाजी के साथ एगेल्स सही तौर से जीवन को दूसरे लोगो से अधिक प्यार करते थे, उसके प्रति उन्हे बहुत मोह था। इसका मतलब, बेशक, यह नही है कि उन्हे मौत से क्षण भर के लिए भी, लेशमात्र भी भय था।

अग्रेजो को याद रखना चाहिए कि ससार के लिए मार्क्स और एगेल्स ने *अपना काम मुख्यत* इसी छोटे-से देश मे किया और वे दोनो यही मरे। यह सम्मान दुनिया के सभी राजाओ और विजेताओ की कब्रो और समाधियो द्वारा प्रदत्त सम्मान से कही ऊचा है। मतको के जिन समाधिस्थलो की भविष्य मे सर्वाधिक यात्रा की जाएगी, वे होगे हाईगेट की कब्र और वोकिंग * के चीडो के बीच सादी-सी छोटी इमारत।

---

* हाईगेट–लन्दन का कब्रिस्तान, जहा मार्क्स की कब्र है। वोकिंग–लन्दन के निकट का श्मशान है, जहा एगेल्स का दाह-सस्कार हुआ।–स०

फ० म० श्रवचोंस्काया

कुछ यादें

प्लेखानाव सेर्गेई मिखाइलोविच* को जानते थे और उनसे पत्र व्यवहार रखते थे। सेर्गेई मिखाइलोविच को उनका एक पत्र मिला, जिसमे अन्य बाता के अलावा उन्होंने लिखा था "आप लदन मे रह रहे हैं। आप वहा क्या कर रहे है? क्या आप जानते है कि वहा एगेल्स रहते हैं? ऐसे व्यक्ति अक्सर नही पैदा होते। इसी लिए म आग्रह करता हू कि आप उनसे परिचय कीजिए और मुझे रिपोर्ट भेजिए। यह तो बडे अफसोस की बात हे कि आप अभी तक उनसे मिलने नही गए। आपको लाजिमी तौर से उनके पास जाना चाहिए।"

एगेल्स एक बडे मकान मे रहते थे, जिसके दरवाजे रविवार को मुलाकात के सभी इच्छुको के लिए खुले रहते थे। समाजवादियो, आलोचको और लेखको से घिरे एगेल्स से हर रविवार को उनके बडे हाल म मिला जा सकता था। जो कोई भी उनसे मिलना चाहता, वह सीधे जा सकता था।

एक रविवार को मेरे पति और म मार्क्स की पुत्री एल्योनोरा के साथ एगेल्स के यहा गए।

इन अदभुत वद्ध सज्जन की मेरे दिल पर बहुत ही गहरी छाप पडी। म बहुत सकोचशीला थी और उन्होंने मुझे अपने बिलकुल पास ही बैठाकर

*क्रवचोन्स्की, सेर्गेई मिखाइलोविच (स्तेप्न्याक) – लेखिका के पति। –स०

मेरी उलझन बढा दी। मै मार्क्स की पुत्री के निकटतर खिसकती और एगेल्स से बात करना बचाती रही। लेकिन वे एक अच्छे मेजबान की भाति मुझे खिलाने पिलाने लगे। म कोई भी विदेशी भाषा नही बोल सकती थी, इसलिए मरी एक ही चाह थी कि मुझे शान्तिपूवक बठने दिया जाए। एगेल्स फ्रासीसी, जमन और अग्रेजी बोलते थे। बातचीत सभी सभव विषया पर, मुख्यत राजनीति पर, हो रही थी। तक वितक चल रहे थे।

उनकी गृह प्रबन्धिका सदा की भान्ति मेज के दूसरे सिरे पर बैठी थी। वह हर आगन्तुक को खुले दिल स खासी बडी मात्रा म गोश्त और सलाद देती थी तथा गिलासो को शराब से भरती रहती थी।

महमानो के बीच गर्मागम बहस चल रही थी जो उत्तेजित होकर चिल्लाते थ और एगेल्स स समस्या का समाधान देने का अनुरोध करते थे।

अकस्मात एगेल्स मेरी तरफ मुडे और यह ध्यान मे रखते हुए कि मैं कोई विदेशी भाषा नही जानती, रूसी म बोलने लगे। उन्होने पुश्किन के 'येव्गेनी ओनेगिन' की बहुत सी पक्तिया जबानी सुना दी

उनका कविता पाठ समाप्त होने पर मने तालिया बजाइ लेकिन एगेल्स बोले, "ओह, मेरा रूसी का ज्ञान यही तक सीमित है।"

मेरे मन पर उनकी अमिट छाप अकित हुई। वे बहुत ही मिलनसार और मुक्त हृदय थे। चन्द दिन बाद वे हमारे यहा आए, लेकिन बहुत देर नही रुके। स्पष्ट ही परिचय बढाने के लिए आए थे। मने फिर कभी उन्ह बडी मण्डली म नही दखा। वे और मेरे पति एक दूसरे से मिला और विभिन्न राजनीतिक विषयो पर बाते किया करत थे। उनम कभी-कभी बहस और गलतफहमिया भी हो जाती थी।

* * *

एगेल्स के प्रति मेरा रुख शायद भावुकतामय था। इस बात म म और मेरी मित्र वेरा जासूलिच एक थी। हम दोना कभी-कभी मिला करती थी और जब हम एगेल्स की बात करने लगती थी तो रुआसी हो जाती थी, क्योकि एगेल्स उन दिनो बहुत बीमार थे।

एक बार काउत्स्की आयी और बोला कि उन्ह कही जाना है और मुझस कहा कि म चन्द घटो के लिए एगेल्स के यहा चली जाऊ। मन

लगभग तीन घटे एगेल्स के साथ गुजारे। मेरे लिए उन्हें देखना कष्टकर था। मुझे पहचानकर उन्हें खुशी हुई और उन्होंने मुझे वे सारी कुर्सियां दिखाई, जिनपर मार्क्स कभी बैठे थे। उन्होंने मार्क्स के पत्र, उनके कुछ फोटो और व्यंग्यचित्र भी दिखाए। यह सब कुछ उन्होंने अधिकतम हार्दिकता के साथ किया और मैं थी कि उन्हें देखती और देखकर दुखी होती रही, क्योंकि जब मैं पहली बार उनसे मिली थी तो वे बहुत ही स्वस्थ थे और अब बहुत बीमार और असहाय। उनकी बीमारी खतरनाक थी—गले का कैन्सर।

फिर भी अन्त समय तक सभी घटनाओं में उनकी दिलचस्पी बनी रही थी और उन्होंने बहुत कुछ लिखा। वेरा जासूलिच अक्सर उन्हें देखने जाती थी और उनके प्रति अपनी भावनाएं मुझे बताती थी। उन्हें चाहनेवाले सभी लोग अक्सर उनके पास जाते थे और उनके साथ घंटों बिताते थे। लेकिन यह सभी जानते थे कि उनका अन्तकाल आ गया है